

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ اَبْصَحَا

الحمد لله الذي رساله مؤلفه في فضل عصر علامه بهر مولانا امين الدين مرحوم مخلص به امين -



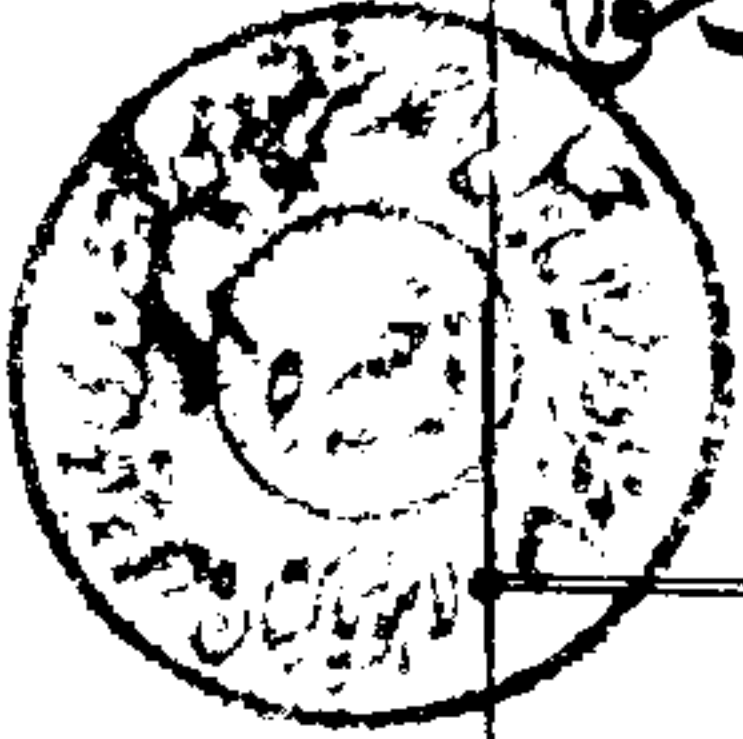
بايتام تام

في فضل اجل وعالم بي بدل مولانا مولوي تليطف حنين سلمه الله تعالى في الدارين

دَمَّعَ اَنْزِي اَوْقَعُ فَمَا لِيْكَ اَدْرَاةُ
دَمَّعَ اَنْزِي اَوْقَعُ فَمَا لِيْكَ اَدْرَاةُ

60122

تحمید قصید اعظمی کہ باصطلاح شعر انرا تشبیب خوانند



بسم اللہ الرحمن الرحیم

<p>چہ دلبر اند کہ دل می برند پنهانی بنور حق ہمہ ہر صفت کردہ پیشانی بخوش ادائی برتر ز حد انسانی بمعنی ہمہ تصدیق ہائے ایمانی بہ پاک دامن از اہتمام حد ثانی گرفتہ تربیت اندر کنار رتانی نہ در میان پرینوادگان و حورانی چون خجہا سے ثواقب برجم شیطانی شدند نور فشان در حجابان ظلمانی سواد چشم تماشا کنند از زانی برند آب زبرد و رنگ مرجانی کشند جدول کحلی بعین فتانی زنند غمزہ بہ تبذیع آل مردانی</p>	<p>مخدرات سرا پرده ہائے قرآنی بہفت پرده درخشان چو دید ہائے نجوم فلکذہ بر سر و خسامہ معراج مبارز بصورت ہمہ آیات صنع یزدان است بدو مان قدم جملہ ثابت لہنسب اند یقینم آنکہ زبالا سے عرش می نازند چنین جمال نخیز و میان انس و ملک یکان دوکان ہمہ نجما بجلو افروزی فرود آمدہ چون منہ بجلو ناموس بہ تخت عاج نشینند و زلف بکشایند بوسمہ کہ بجات ابروان بستند دوات کحلہ و کلک میل برگیرند کشند زبرد بر پیش چشم مرزگان را</p>
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

جلاد ہند تو کوئی بلوچ عنوانی الف کشیدہ زبینی بروی نوزانی فتادہ برورق گل نقطہ اگر دانی بخندہ روزنی در تلک بخشانی متودہ رنگ مسی شدہ ہای دذاتی کہ شستہ اند باب چہ ز نختہ انی فتادہ عقل بگرداب ہائے حیرانی شکستہ قطعی الماس و در عماتی	بکار بردہ بر رخ غارہ ہائے گلگون باب لو لولا لا درنگ زرمذ اب ز خالہا کہ بر خسارہ مشک ساگردند ز تنگی دہن از بہر صفر آہ کینند ہفتہ در عربیے حلقہ ہند بفریبند بنیخ حسن خط او خطان چہ دامانہا بوصول فصل کہ در غیب قن دارند ز گوشہا سے صدف پارہ بز شوشہ نور
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ابتدائی مخلص کہ شعرای فارسی آترا گر نیر گویند

حدیث مورچو در حضرت سلیمان ز دہنہائے عرق صفحہ کردہ افشانی ترا کہ گفت کہ این راہ رو باسانی نہ حدتت کہ در مدح ما سخن رانی نکرده از لب عطشان خود مگس رانی مگر نہ واقفی از حفظ داب سلطانی کہ نامہائے خدائش کنند در بانی طباب آن ز رازل تا ابد بطولانی مگر شہر طہارت ز خبت جہانی بہ سج مطرب طاؤس ہائے بتانی نمودہ از رگ جان مسطر خیابانی ز دست بردن گلچین بہ نزع شیطانی	بہیچ پست من آمد بگوش شان اینک بشرم شوخی تشبیب و بن کردند کہ لے غریب تنک مایہ ناتوان کابل نہ و سمع نت کہ از حسن ماشوی آگہ چشیدن عمل شان ما ہوس داری مگر نہ آگہی از رفعت منازل ما حریم محترم ما چنان نست عالی شان نہ نور یافتہ جبل المیتین خیمہ ماست ادویہا سے سراوق مساس نتوان کرد کہیت گلشن ما قاریان خوشخوانند بہ سطر بندی گلزار ما ہزار راستند اگر گلیم و گر غنچہ باک دامانم
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

بیاض ماکه کند علم غیب رضوانی درین حرم نه بند پا مگر بنا دانی بزور عقل نه و قوت سخندانی که مرسل اند بوقیف شرح رحمانی که رہنماست همچنان را بنور فرقانی	بسیج زانچه برد الهوا گذر نکند چه لعلی زمانه چه و اصف مطری که محرمیت این راز نامی سر بسته مگر بوسطنه لطف محرمان سرا خصوصاً آنکه سر محرمان حضرت است
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ابتدای لغت بزبان مخدرات

به لغت خاصه ترین خویش نزدانی که شست از حرم کعبه حبس او نمائی کریم و صا خلق عظیم و حقانی بکافه ناس بشیر و نذیر عریانی به برقمیص مطرز بامی غسفرانی باخرین رسد نیک کرده جو بانی تمام کرد جو او عهد ه گنبدانی گرفت ساحایمان فسخ ایوانی کند شفاعت امت باذن حقانی کمال وستی او کمال ایمانی	عنان بگیر و بران شهب قلم زینجا نبی امی مرسل به کلمه توحید امین و مؤمن خلق و صاق مصدق بر اس رحمت عالم خدا فرستادش بسر عماد تشریف حبیب اللہش ز راعیان نخستین برد عصا سبق کریم لغت خود را تمام کرد برو بامروہنی که در بارگاہ دین اورست پر روز حشر که انگذہ سرمه مانند زجب اوست کشایش به سینہ مؤمن
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ارشاد مخدرات

بذاب این رواج و طرز حسانی قصیده تو کند دعوی مستطانی رشدی تو فکرت بدان باعدانی	طراز بیت سخن گزینج او سازی عروس فکر تو پوشد شعار اسلامی سلام بر تو ز رخسار رسد امید این است
پذیرفتن شاعر ارشاد مخدرات را	

<p>باہتر از در آمد جناح رو حاتی بدان امید کہ توفیق گردد ازانی بپای سہی فرو بستہ خف تکلاقی اگر چه دشت دل وسینہ صد پریشانی کہ نیست برد را و قد گوہر کانی</p>	<p>چو این ترانہ خوش مرغ جاہن بشنید بدان نوید کہ تا نید غیب خواهد بود سراجا بہت فرمان براہ آورد م بس جواہر معنی ہر صفحہ کہ دم جمع کہ تا بہ بدیہ بر ہم سوی در گہ والا</p>
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ابتدای نعت بزبان شاعر

<p>نظیر او نبود در حد و دامکانی بہمہر عربی خیر آل عدنانی بہ جسم غایت تکوین ملک جسمانی کمالش اول کلک قلم رو جانی شجاعت و کرم اورا طبیعت ثانی نوامی اوست پنا گاہ انسی وجانی چہ خونہا پر از ایوان نامی مہمانی یکی بہت دیدہ بنیا چشم عمیانی برو حرام شود شعلہ نامی نیرانی کہ قدر ذرہ از ویافت نور ایقانی زبان او بود اندر شناسے ربانی شفاعت امم اورا مقام فیضانی کہ یافته است بہ محشر بوعہ قرآنی چہ مذنبین معذب بدرک نیرانی کنند جملہ با حسان او شناخوانی</p>	<p>فرو د گاہ ملا یک امید گاہ بشر خلاصہ دو جہان حضرت ابوالقاسم بروح مایہ ایجاد عالم ارواح جمالش اول شمع است انوریش را بحسن صورت و سیرت یگانہ عالم امان دہ و جہان است سایہ علمش مرتب بہت در ایوان دعوت ماش بشرع او کہ جان را محبت لبیضاست ہر آنکہ کلمہ پاکش بصدق دل خواند در بہشت کشاید بران سعادت مند لولے حمد بہ شمش بود بروز جزا فراز کرسی عزت عین عرش مکانش چہ آن مقام مرا و را مقام محمود است چہ حجر مان محاسب بنامہ اعمال بزند بہرہ بہر حال از شفاعت او</p>
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

زبان خلق شود خشک تر ز طمانی که داده است خدایش نفس قرانی زمر قداو بدر آید تخت فرحانی دمی که حشر جہانی شود به عریانی بکار او همه آیات حق نمایانی کنون کمیت قلم کرد عزم جولانی	چو آفتاب شود گرم تر بوقف حشر بمومان برساند ز حوض کوثر آب بفتح صور نخستین جهان شود بیدار به جاہای ہستی تنش بپوشان زبد و مولد او تا بہ منتہای حیات بکام صدق و بکام حق اندرین میدا
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

آغاز حال مولد نبی صلی اللہ علیہ وسلم

بہ عہد معدلت دولت نوشروانی گذشتہ بست ز ایام ماہ نیسانی شب دوشنبہ و وقت سحر صوفیانی کہ نام مستترش دار خیزران خوانی باہتر از در آمد ز کتم زہد اتنی برون ز بردہ شد آن شمع شبتانی کہ قصر شام بید آمد آمنہ بتا بانی کنار دایہ او غیرت گلستانی سقوط کنگرہ ہا و شکاف ایوانی تبان بخاک فگندند روی خذلانی شدن مژدہ رسان از قدم فیضانی نشان ہر شب مولد لہیب عطستانی ز فیض لہم روای حق بشادانی چہ راز ہا کہ درین بردہ ہست کتانی	پس از گذشتن پنجاہ روز عام لہیل بوسے کہ گرفت آفتاب برج حمل ربیع اول و تاریخ آن دو از دہم میان مکہ بدر محمد یوسف چو نور دیدہ کہ جنبش پی تماشاکرد چنانکہ در مستیم از صدق برون آید چنان فروختہ آفاق از تلاؤ او حریم بام شدش رشک خانہ خورشید نوید مولد پاکش رساند کسری را نہ مانند آب بہ جیرہ نہ آتش فارس چہ راہبان صوامع چہ کاہنان نجوم ابولہب کہ بدین مژدہ دایہ کرد ازاد ستودہ نام کہ عبدالمطلبش نامید چہ رمز ہا کہ درین نام پاک مرموز ہست
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

گروه سینه میست که کی کند در گوش
 تمام کرد و چو چهل سال کا مران گردید
 بر مرزیم میانش رسیده شمش زیم
 بصدر حاش میان و میم راس و کمر
 حد و حد و عزم رانی از ان سر کرد
 نقش دال که در پای نام فدا ده است
 که داد دولت دین چار دانگ نیارا
 تها م سوله و ما شتم نسب محمد نام
 بر کارش همه گونی که بود مادر زاد

به چشم کرد و چهل سال ماه دورانی
 بدخ بندگیش کرد ز سب پیشانی
 به بست بر کمر خود نطق فرمائی
 چه حکمت است که دارد حواس حیرانی
 بهشت حل که بر حرب کرد حولانی
 دقیقه گنمت آشکارا گردانی
 بدو دمای جهان کرد نیک درمائی
 بدان صفت که خدایش کند شنا خوانی
 فواش قدیه از مبداء هولانی

آغاز حال شیر خوارگی آن سرور

پس از تویبیه نبی حله حلیمه مکید
 ز کله تا بر بایند شیر خواران را
 ز کله تا بر برین گوهر شیم نظر
 قضا بد ایگنی دولتش تنگا بو کرد
 بدان سبب که رضیعی نیایش بکنار
 میان خرقه جمال محمدی را دید
 به برگفتش و شیرش بداد و گشت سوا
 به سحره شارف فاد زین شرف بجا آورد
 به شایب میجو که دایه میدیدش
 بن کلمه زین غیر بیسی را
 حلیمه را بگفت آن میان رسید ازو

چو آمد او ز هوا زن به جمع نسوانی
 ز نقد اجر گران پر کند همیانی
 بر آمدند همه از درش بخرمانی
 حلیمه را بدیش باز داد رجحانی
 گرفته شرم زد دیگر زنان حیرانی
 ز اختیار بد رشتند به مهر جنبانی
 بیشتر خود و بر عزم باز گردانی
 بسوی کعبه و در سیر کرد سرعانی
 دوران زمانه که می خورد شیر ستانی
 که تا کند حق همشیر را شهبانی
 که رفت بر راهش رشت کهای حیرانی

ومی که دایه بر رسم فظام او کوشید

زبان کشاد به تکبیر جبل سجانی

<p>که بود نخل مراد و نه سال آمانی کشید سرو بلند سن بخوش خرامانی که آفتاب بفت بود و گرم سوزانی بهر پیش موافق چو مهر شامانی بی نشا طنه از مهر لعب بهیانی که نختن همه کوه دکان حوالی چنانکه صاحب قریان به قصه قربانی سینه تا بن زایش دریده کیانی زوده آینه سینه زنگ سیوانی بنور حلت کردند هر چسپانی به مهر شانه پاکش نموده المعانی ز مهر یوسه بر ویش زدند پیشانی مذیده اش شده گریان سینه الانی ببادش سپردند از هر اسانی چرا شدند موسوس بس شیطانی نه از نزول ملایک بعظمت شانی سپرد مادرش او را بحجر جبرانی کشید رخت اقامت ز عالم فانی</p>	<p>شتابتر قد دلجوی او همی بالید در آن زمانه که از مهد ناپی غرتار به نیم روز برون بر دروزی شمارش با بر باره دیدش که سایه می افکن بجار سالگی از خانه شد برون وزی که ناگهان دو سه تن قصد سوی او کردند سفید جامه بکف طشت و آفتاب و کار بروی خاک فلکند و پاک شستندش بطشت اشاره نمودند و نور پر کردند سترده از دل او نقطه سویدار را توید ختم نبوت باور سانسند بیکشیده ز مهرش و داع خود گفتند نبود هیچ گزندیش نما ندیج نشانی گرفته غم پذیر و مادر صناعتی ترا چرا بسایه و آسیب دیو ترسیدند مگر بفال نبوت نبوده اند آگاه مدینه برده بازش بکه آورده بسال داد ز عمرش بمنزل ابوا</p>
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

احوال هر روز بعد از وفات مادرش تا دوازده سالگی

گرفت بعد ازین ام المینس بکنار
 دو سال در کتف مهر حد چنان میماند
 حساب عمر صد و یازده چو کرد آن پیر
 کشاده دل به طلبگاری ابوطالب
 ولی برو نه پسندید کلفت لغتایم
 نه مکتبش به نمود و نه پیشه اش آموخت
 که رفته بود بگلک ازل که آن امی
 ز فیض علم لدنی شود دلش معمور
 سنین عمر شریفش دوازده گردید
 برد همه خود در تجارت پیشش
 ولی بگفت بجز از راه گردانش
 که این نبی زمان خاتم النبیین است
 بسوی این همه حالات او اشاره کرد

بهر کرد و را خدمت و کجانی
 که نوز دیده بماند چشم اعیانی
 ز محبس بدنش است جان زندانی
 ز مهر بر سر او کرد بال جنبانی
 که دشت از شفقت همچو بید لرزانی
 نه زیر دست فلاش کرد و تهبانی
 شود رسول خدا و کند جهانسانی
 شود معصمت بعلم اتقانی
 بعقل و راستی و رشد کرد جولانی
 بی معامله بنجی جنس و کانی
 که بود راهب دانا بعلم رهسانی
 به ارزش ملک بود دانش باز گردانی
 الیم تحبذک شیئا کلام منانی

احوال حضرت بعد از دوازده سالگی

خدا چو عزیمتی زبال او بکشود
 بسال پانزدهم خراج خود زعم برداشت
 بسال بیست بحرب انجبار با اعمام

کشاد باز وی کسب شباب بیعانی
 که پست کسب بود به زنان اجسانی
 برفت در سخت و شکست قسینی

تمهید نکاح سرور با خدیجه الکبری

بن خمس و عشرون و طالع میمون
 عیش بر در حریم خدیجه الکبری
 سخت قافله سالار کاروان کردن

بقال روزهایون سعادت آنی
 که بود ظاهره نامش بعرف لشوانی
 که امتحان فزونی کند ز نقصانی

نشست زیر درختی که بدبیا بانی
 کزان قدم دران عرصه نشت نگرانی
 زیامی دیده بھر سوکمان شتابانی
 بجز نبی نه نشیند درین بنه ثمانی
 کرا بخدمت او هست الفت جانی
 همان که حضرت صدیق اکبر شخوانی
 که نیک نیک همی کرد حال جویانی
 چهار الف درم را سپرد همیانی
 کند براه خدای کار ایمانی
 همه بسود خوش امین ز شتر خسروانی
 خدیجه کرد به قصر اعتمالاتی
 که دید خسر و خود را بر فعت شانی
 ازین عجب فرو ماند شد بحیرانی
 که بود بنده خاصش مطیع فرمانی
 نمود عرض بشارت بحن تبیانی
 دران حیل زر همان دقح کمانی
 باز روی سعادت نه میل شهوانی
 که بود هم نسبت هم شرف هم خوانی
 دلش شده گل و سینه چمن بجزدانی
 بخواند خطبه تزویج با خوش الحانی
 اگر چه بود سر بر نیاز را بانی

چو رفت قافلہ سالار تا حد بصر می
 قدم قافلہ دریافت راهب لسطور
 میان قافلہ و جستجوی او گردیده
 گفت کیت که زیر درخت منی بنم
 کدام هست میان شما که مخلص است
 بعد کعبه که عبد اللہ بن ہمیسر خواند
 رسید مژده و بشنید و دید راهب را
 گواه کرد بر ایمان خود و لسطور
 که چون بدعوت ایمان علم بر افرازد
 از ان سفر که مع الخیر باز گردیدند
 خیر ازین باز گشت گشت بلند
 بسوی قافلہ میدید بادل شیرین
 بزیر سایه پر دوتن فرشته سرش
 که میسر زوردوش نمایان شد
 سلام کرد و زمین بوسج و داد دعا
 که دیده بود و شنیده بحق آن سرور
 فتاده در دل آن بیوه چهل ساله
 که در جباله آن سرور زمان آید
 چو گشت اگر ازین آرزو ابوطالب
 بر برد با همه اخوان و خویش سرور را
 بتاجداری الفقیر فخر سے آن سرور

ولی ز سہمت فاقہ خدائش کرد غنی بسال محتظ کہ در مکہ بود ابو طالب علی و جعفر و عباس را از ولستاند بسی و پنج ز عمرش قریش نو کردند پست خاص نصیب کرد سنگ سود	بالہاسے خدیجہ بدان فراوانی سٹوہ آمدہ از خجج سعت خوانی بخوان خویش نمودی ہمیشہ ہمانی بناو خانہ کعبہ چنان کہ میدانی میان رکن عراقی بہ سنگ صدرانی
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ابتدائی وحی

بسال چہلم ازان پیش کا یدش جبرئیل براستی ہمہ رویاں صبح صادق بود ازان سپس دل داناں گشت خلودوست بس ازہی کہ بہ شبہا تعبد آنجا کرد سپیدہ دم کہ فرو درآمد از سما جبرئیل سہ بار اقرؤ ولا اقرؤ در میان آمد بلرزہ آمد و سوی حرم روان گردید بجنت پاک بگفت آنچه رفت پوش حسیب خدیجہ با ورقہ گفت ماجرا سے نبی بعلم با خبر از ما کیوں و ہر ما کان بگفت ایچ میدیش کو نبوت یافت در بیغ پیری خود خورد و صد تمنا کرد برو ہر چہ کہ دعوت کند اجابت کن	شدی بخواب بشر جو صبح خدائی بواقعی ہمہ بر مطلع فروزانی گزید خلوت غار حرا بویرانی دمید صبح سعادت بہ فیض حنائی بہ پنج آیہ اقرؤ وحی قرآنی بیر کشید بزورش پے سبق خوانی چو بر لبش ہمہ آیات کرد جریانی نہفت زیر ہنالین تنش تہرسانی کہ زادہ عم او بود و مرد حقانی بزہد صاحب تقوی بدین نصرانی فرشتہ بود کہ آورد وحی یزدانی کہ کاش دیدمی عہدش بعرشبتانی بہ بند با سہر اخلاص عقدہ ایما کنی
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ما مورشدن رسول عم برای دعوت خلق لبوی ایمان

بخانہ آمد و دیدش فرشتہ باز آمد
کہ خیزد ترا چند رخ پوشانی

<p>زبان کنایه به تکبیر مجرب بانی بخواند همه جبریل پنج احیانی سپس علی مکرّم بسن علمانی بر در ره دین امتثال فرمانی کسی نبود چو در خورد میرسامانی به شمع دین خودش کرد جان فروانی صد قشش بخلافت دلیل اذعانی کشید سوی پمیرز مام عثمانی بکله در نظر آمد رجو م شیطانی گرفت خلق مسلمان شدن به پنهانی همه شدند مسلمان و لے پختانی رسید صد چهل مرد از و بیایانی بکعبه رفت لے خطبه مسلمانانی به پنج نوبت اسلام کرد اعلانی که هست بهر خلافت قیاس برمانی</p>	<p>به بیم دادن خلق خدا علم بردار چو گشت فرض همان روز پنجگانه نماز خدیجه وقت نخستین شرف ایمان یافت بمنزب آمده زید ابن حارثه مویش بکارگاه نبوت طفل بندہ وزن شبانه خاٹہ بو بکر را منور کرد به بست او کمر حبت در صداقت او بکار برد و در دچنانکه می بالست چو هفت مرد بدین آمدند زین گونه بسوی دعوت دین اہل مکہ پی برند همین طریقه دعوت سه سال ماند بجا که شد دعای نبی در حق عمر مقبول بقوت عمری دعوت آشکارا کرد نماز جمعه ادا کرد با شرایط آن قیاس کن که چو شد شوکت عمر زینجا</p>
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

<p>تمهید بجزرت اولی که اکثر مسلمانان در حبشه رفتند</p>	
<p>بهم برآمده رفتند راه طغیانانی سکوہ آمده کردند طبع نجانی گهش به پشت نهادند سقط بخندانی غبار رفتند ازینها گرفت ہیجانی کشاده بر عطا هم زبان ہز مانی</p>	<p>قریش از حسد دین و کین دیدار آن تخت قصد محاجات بانہی کردند کہ از رداش گرفته گلو با سہزرا ولید امیہ بو جہل عقبہ عقبہ ہشام کشیدہ بر صغفار عذاب میگردند</p>

قطیبه صلوات بر محمد کرده با خویشان
شبهید کرد زنی را بحال بدبو جهل
ولی ز دین خدا هیچ کس نه برگردید
بلی ولی که ز ایمان خوش است کی بخند
بجز نبی که ابوطالبش محافظ بود
وگرنه هیچ کس امین ز خویش و بیگان
ندید چاره بجز هجرت آن سرور
گردی در حبشه هفت سال بجموحی

بچند راه سپردند گام عصیانی
بمال از ستم کودکان بیامانی
کشیده کشمش ارتداد و کفرانی
هزار کاسه زهرش اگر بنوشانی
و جز عیتق که بودش حفاظ اخوانی
ز جور دست لعین و زبان لعانی
برای دین گزیدند خانه دیرانی
بسی ز مردوزان اندر رکاب عثمانی

هفته معجزه قمر

سال هشتم وحی اشقیای چپ نفر
چو از رسول طلبگار معجزه گشتند
دو پاره گشته و یکپاره ماند بر سر کوه
با بل که بفرمود تا نظر بازند
چو این مشاهده کردند بک زبان گفتند
بنده اند مگر قابل کرامت و خرق
دستم چو آمد ابوطالب و خدیجه مانند
ندید سرور عالی مقام خود نجبا
براه زیر درختی که خواند قرآن را
بکه باز بر نهار مطلع هم بن عدی

همه ز شعله کین کرده سینه نوزانی
با شقاق در آمد قمر باسانی
سید پاره دیگر بسمت تختانی
بهر دو پاره که تختانی است فوقانی
که کرد این ابی کبشه سحر بینانی
چنانکه طائفه لمحدان یونانی
که بود عام حزن از هجوم احرانی
بطایف آمده و باز گشت سرعانی
رسیا طائفه سخن به فخر ایمانی
چاندویاز و هم سال کرد پابانی

آغاز قصه معراج سرور

بدست و پنجم ماه رجب شب فرخ
به مسجد حرم کعبه ناف عمرانی

<p>نہضتہ چھو خورو ماہ رو و پشپانی بہ پشت زین براتی سفید نورانی بریق برق ز نعل انگنان ہویانی ر بود گوئی فلک را بہ خم چو گانی کہ زور روح ندارد قوای نقسانی کہ رہ بدان نبرد افتام ازمانی بقوت ملکی و جناح طیرانی کہ مانند راہ برو بار کی ز جولانی چو تنگ قافیہ شد از فسخ میانی ولی ز حصر برون خوانہ نامی مھمانی بید و اسبج نہ در چشم ز بے و طغیان ولیک دید خدا را بہ چشم اعیانی شد بے ہمیردوران گر وہ لقمانی کہ بد ز مبد و وحی عادت مسلمانی</p>	<p>رو کشید ہ سر خواب برودہ بر بالین کہ جبریل عنان کش شدش پی معراج فلک نورد و جھان کرد باد پیمانی بچارسم کہ درین چار سو تنگ آمد بسرعتی کہ باندیشہ فلک ناید بہ نیم لحظہ رساندش بہ مسجد اقصی عروج کرد از انجا بعالم بالا بہرسمامندرج گذشت آثار فرغ بسیار گاہ حسبال آن ستودہ تہنا عجیب کہ یک تنہ ہمان و میزبان تہنا بخورد و زلہ خوان بخش کرد برت اگر چه عقل نہ باور کند کہ چون بود بلی کہ راز خدا اگر بعقل بکشود نماز فرض ہمان پنج فضل پنجہ ہفت</p>
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

بہتید ہجرت ثانیہ کہ ان سرور بہ مدینہ نہضت فرمود

<p>گرفت خون دل دشمنان بچو شانی نمود دعوت دین بر حواج بلدانی ز لہن خزر جیان و نزا و مدیانی نوید دولت و اقبال شاہ شامانی بسوی مکہ پہلے حج بو سہم نانی کہ تا کند ہدینہ قدم ارزانی</p>	<p>بلند گشت چو در مکہ قصہ معراج ز کمیان شدہ نوید سرور عالم نخست شمش نقر شیرے بدین آمد چو باز گشت نمودند در مدینہ رسید بر آمدند ز شیربہ دوازدم شرف اگر زیہ دین نبی عرض آرزو کردند</p>
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

روانه همره شان کرده ^{مصوب} داد
 بکلیان جفاگر شد این خبر معلوم
 که دست قتل کشانید بر بنی زمان
 بنی آگه از اندیشه بدندیشان
 ز دشمنان به نهفتند در بن غاری
 سحر گه بان که خود ان به فکر بدفتند
 نشسته بود به بستر علی مردانه
 چون امر او شدند در تلاش افتادند
 اگر چه بر سر آن غار حبت و جو کردند
 که ز تخم کبوتر چشمشان افتاد
 ازین معامله صدیق بسکه ترسان بود
 نبیش گفت که غمگین مشو خدا با هست
 چون مدبران فرومایه باز برگشتند
 بر آمدند براه مدینه چارم شب
 بهم پیرو صدیق و عامر و یک تن
 ره سواحل دریا گزیده می رفتند
 فرود آمده آنجا که شیر و لحم خردند
 که بار در بدش جمله گوسپندارم

که بر حک زندا و نقد رست پیمانی
 در آمدند به فرمان کید شیطانی
 کشند نور خدا را بیاد بهتانی
 شب آرفت برون بار فوق لانی
 که بوده هست پراز حجرهای تبتانی
 بخواب گاه بنی خانه ام مانی
 بیست که زند رسیم سجستانی
 گرفته راه مدینه بسین رکبانی
 ولیک هیچ نبردند جز پیشانی
 ز پرده مانی غائب غنا عمیانی
 بکار سرور دین داشت چشم گرانی
 قرار گیر بخطر جنود رحمانی
 مانند هیچ نهیق خسران پالانی
 ز نور بر شتران بلند کومانی
 اجیر عهد ره بردن و شترانی
 بقرب قبه که بدام معبدش بانی
 ندشت هیچ ولی آن زن بیابانی
 زخمیه دور ترش هم چرائی حلالی

ذکر معجزه شیر و شیرین سرور

بجل از رومه و اما نده ما و وضائی
 خودش بنام خدا کرد شیر و شانی

نشسته دید چو سر در بجانب خمیه
 بخوابش زام معبد و نمود اعجاز

مسافران همه خود ند شیر و شیر شدند که شوهرش ز برون آمد و معاینه کرد حکایتش همه کرد آنچه دید زان سر	گذشتند پراوند های البانی گفت این همه شیر از کجاست ایجانی گفت باز نما و صفش آنچه می دانی
---------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------

بیان حلیه مبارک آن سرور

گفت هست درخنده روی نیکو برنگ سرخ سفید و آب و تاب طبع سرش بزرگ و کشیده عنق سیه گیسو دو ابرو اش دراز و دقیق و پیوسته بسی صفاست سواد و بیاخت چشمش را نکرده سرمه و چشمانش سرمه آگین بود دراز بینی و ناریک و در میان خم دار خدایناه دهد در غضب اگر آید دین فراخ که در عرف عرب مدوح است کلان چو دانه در سمین دندانش محاسنش متزین بطول و انبوی هم او تقیم و بسم و و سیم در خوبی پراز و قار نماید اگر خمش ماند میان جمع هماناست سر و ز و مخموم ندید چشم سبز بن چو او بخوش خالی شید این همه اوصاف گفت ابو معبد	تمام تر به جمال و کمال انسانی به چهره بد منیر و کثاده پیشانی قدش بلند و تناور شکم به چسبانی فراخ چشم و بانوه موی مژگانی خطوطها به سپیدیش احمر قانی چو تیر رست نمایان مژه بطوانی دو استخوان خدش با عذار کیسانی شود سطرگ ابرو و چهره رمانی لبان او همه رنگین برنگ مرجانی کشاده گاه تبسم چو برق تابانی سترگ بین و رش شانه در نمایانی هم او فصیح و بلیغ و بدیع بقیانی پراز بها به سخن گر کند در افشانی با مر اور فقار ابر شتابانی میلزست بحقیقت او ز بطلانی بحق که او ست نبی قریش اقرانی
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

احوال سیدین سرور در مدینه

بسال سیزدهم نیروز دوشنبه
 مدینه گشت منور ز مقدم سرور
 بخانه بن کثوم منزل اول کرد
 بحکم او شده آن مسجد قبا تعمیر
 بر روز چارم مورد نشسته بر نایقه
 که تا کجایش رساند که خانه آید
 بهر طرف که گذشتی رئیس آن بقعه
 به بقعه که شد آخر بقعه الحینه
 فرود آمده آنجا خانه ایوب
 خرید کرد و بنا کرد مسجد و خانه
 لقب نهاد پس اهل مدینه را انصار
 مهاجران همه پیش و پس نبی رفته
 عمر بلبست سواران ز پیش آمده بود
 نبی میان قبا بود کس علی پوست
 بکه باز بر فتنه زید و بوراغ
 همه عیال نبی را مدینه آوردند
 بخانه خودش آمد ز خانه ایوب
 چون حکم رفت که تاریخ سال نو سازند
 از ششده غره ماه ربیع اول شد
 ولی عمر شروع عمر مش نبوت
 حرام و محترم آن ماه بود پیش عرب

ربیع اول و ثانی ز عشره ثانی
 بشا دیانه زن و مرد در خوشانی
 میان قوم بنو عمر روز چندانی
 که یافته است ز تقوی اسام بنیانی
 ز کف گذشتت مہارش بفان حمانی
 بھر کجا که نشیند کند شبستانی
 بارزوی شرف کردی عرض سگانی
 بروک با برکت کردام بعرانی
 که خانهای جدش را بدار عن ایطانی
 نمود مال ابو بکر صرف اثمانی
 بحال و جان که بودند گرم معوانی
 بهم شدند به نثر و ولی بیاشانی
 پس بقافلہ خود رئیس عفانی
 سپرده از طرقتش مودعات نهانی
 چو خانه یافت عمارت به نیک سامانی
 بهم عیال ابو بکر را به آسانی
 بیامت بقعه ویرانه حسن عمرانی
 حساب نو کند از دولت مسلمانی
 ز روز هجرت خاص سول نیردانی
 که بود مبدع هجرت بقاصی دانی
 در آن گذشت بسی واقعات ورنی

<p>کہ عام کر و حساب ثواب ہجرتی بہ بہت دہشت خزا کرد نشخ ادیانی زکی و مدنی داد قرب اخوان بہ بہت عقد مواخات و نیک پمانی کہ بود دختر صدیق از اقم رونق بہ منزل شرف خود چو باہ و برانی بی بہت گرفتند بدش بطولانی پس از خدیجہ بخلوت ولی ہمان ثانی بسوسے خانہ مقدس با مردیانی کہ بود قبلہ خاص خلیل رحمانی چهار گانہ بجز فجر شد ز دو گانی</p>	<p>نفاذ یافت ہمان کش عمر مقرر کرد ز روز مقدم خود زندہ ماندادہل باہ ہجرت میان ہر دو گروہ میان شان کہ ز ہر سو بدینہ چہل مہ ہنم نہ سالہ یعنی عایشہ را پس از سہ سال نکاحش با مرحق آورد بخانہ نبی آنوقت سودہ بانو بود اگرچہ عقد نکاحش پس از حمیرا بود مدینہ آمد و قبلہ ز کعبہ برگردید باہ ہفت و ہم باز کعبہ شد قبلہ باہ چند ز مقدم نماز فرض میم</p>
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

انماز کیفیت جہاد و قتال

<p>چو کا فان بگرفتند راہ عدوانی چو شد مدینہ با سلام دارشایانی روانہ کرد پیکے کاروان خذلانی ز شام کرد سوی مکہ باز گردانی خرید در حد مکہ بصد شتابانی بغرم جنگ برآمد براہ فتانی باد و کرد روانہ عبیدہ را ثانی فاد عکرمہ بی جنگ در گریزانی نمود از پیکے بجز قریش جولانی</p>	<p>فرود آمدہ من بعد وحی اذن قتال نمگر بہ مصلحت دین کہ فرض گشت جہاد نخت امیر می سی مرد حمزہ را بختید وران زمانہ کہ سالار مشرکان پہل ز خوف لشکر اسلام رفتہ کوچ کوچ نمکہ عکرمہ پورش چو باد و نیست سوا نواسے ابیض و معلوم بہ کلمہ توحید بشخصت مرد ہاجر رفت صف است پس سر یہ سعد بن ابے وقاص</p>
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

خبر رسید که در راه مرز بانانند بغروه که خشتین برآمد آن سرور	که با قریش بدیشان آراه پنهانی بصلح یافت امان مرزبان و دوانی
----------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------

آغاز احوال سال و م هجرت

بمبدن ثانی که در مشاوره حبت نخواه های صی با اذان مقرر شد سه بار باد و صد آغازیان بغرم پیش بزینهار خود آورد قوم بلج را میان طایف و مکه اخیر ماه حجب رئیس قافلہ عمر ابن حضرمی گشت مدینه برو ز مال و شتر غنیمت ما ز شام قبله سوی مکه گشت روز برآ	برای جمع مصلین طور ایدانی نماند رنج تحین بدرک احیائی بواطرفت و عشره و بدر صفوانی بشرط آنکه کتد انقیاد فرمانی منو و عبد له بن جحش چون سپهانی اسیر باد و تن آمد حکیم کیانی اسیر و خمس نبی را رساند فرحانی چو روزه رمضان فرض اخیر شعبانی
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

آغاز قصه جنگ بدر

اوایل رمضان کاروان بوسفیان نفر رفت میان مهاجر و انصار برآمده سه صد و پانزده جوان عالی دو نیت سی نفر انصار و مکیان باقی خبر ز بهضت سه ورشیده بوسفیان مدونه مکه طلب کرد و عهدگان پیش بکاروان نرسیده بیدر افاقا و ند صد هپ و هفت صد شتر میان اینان رسید شکر اسلام تا صدر و حا	بیدر کاه از شام کرده رجائی بکلمه سرور عالم و وحی یزدانی روا کشد بر کاب سعادت اقرانی سه هپ نامی و هفتاد راس بجزائی براند غیر ز راه کنار عمانی برآمده همه جز بولهب بقبضائی هزار تن بگلی را جملان و کبائی کنار آب گرفتند و دشت قیعائی که منکشف شده حال گروه طبعائی
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

بی ثبات دل غازیان نصر شجاری
 بوعدہ حق و رویای صادق آنچه گزاشت
 چو یافت سرور عالی جناب از انصاف
 براندشکر والا بجنگ بدکیشان
 نہ خاک بستہ نہ آب و ان در آنجا بود
 بر مل خشک فرورفتہ پای تازانو
 نہ آب بر شتر آب کش نہ در ابرق
 بداد و سورہ شیطان دورین فرست
 کہ بحر رحمت حق جوش زد پی امداد
 نشست از ان تله ریک و سخت شد چو
 ز آب پاک بستند جامہ و تن را
 بجنگها و اوانی ہم آب پر کردند
 بروز جمعہ کران ماہ بود ہیز و ہم
 ہمہ بجنگ ہیا بزور خود نازان
 پناہ و رایت و شکل سراقہ بن پاک
 بگفت پشت پناہ شما منم امروز
 چو دید لشکر اسلام پر ملا یک شد
 ولید و عتبہ و شیبہ ز سر کشان قریش
 برآمدند از انصار برگزیدہ کس
 چو یافتند بگفتند ما طلبگاریم
 شنید سرور و فرمودے عبید بن جریج

بداد سرور دین مژدہ مائی رحمانی
 خبر سورہ انفال و آی قرآنی
 بجنگ چست میان درشت بمانی
 فرود آمدہ بالاسے ریکستانی
 کہ دہشت ریک وانی و آب فغانی
 نہ زانوئی شستن نہ پاسی رملانی
 نہ بد بطور جنابت نہ رسی عطشانی
 بعد بعض مسلمان برنگ زندانی
 فرود آمدہ کرد ابر آب بارانی
 ثبات یافت قدمای کب در جلالی
 بحوض سیر شد نہ شتران طمانی
 ملا گرفت خلائے قراب و کنیرانی
 غبار کینہ ز کفار یافت ثورانی
 فادہ بخیر اندر غرور شیطانی
 گرفتہ آمد و ابلیس در سخن رانی
 قوی بہت دست شمار گردہ لسانی
 ز مشرکان شدہ بیرون بقصر ہمانی
 درآمد مبارز طلب بوچانی
 شدند در بر انہا حریف میدانی
 بقرشیان زرہ ہم سری و ہمشانی
 بخیر حمزہ بخیر اسے علی شتابانی

مبارزان چو پی خون مشرکان حبسند
 علی کشت و لید ابن عبته رافی الفور
 بید عبته که پوز و برادرش مردند
 عبیده را مدد حمزه و علی آمد
 بهم برآمده کفار حمله ما کردند
 زنگی و مدنی کس نماند در نگاه
 مکریمیر و بو بکر پیش خدمت او
 گرفته از ره اعجاز منقر اسلام
 اشاره کرد و برافکند بر سر کفار
 خودش به سجده و تسبیح حق شد مشغول
 که جبرئیل جنود ملایک آورده
 بسر عامه به برجامه در کمر شمشیر
 مدور سید و داده زدند بر کفار
 بسی تیغ ملک سر بریده و مفصل
 بسی به بند کند او فاده نرم آواز
 شکسته گشت چو تیغ عکاسی سدی
 چو او گرفته پله کارزار بر گردید
 همیشه بود بدستش بناده نامش عون
 چو منهنم شده رفتند مشرکان از بند
 بدندگشته صنادید مشرکان بنهاف
 میان جفیه مردار امیه و بو جهل

روایت است محقق ز پور سلمانی
 چنانکه حمزه بشیبه به تیغ برآنی
 برزد بیای عبید و وزخم اشخانی
 بدستش عبته ابن ربیع کشد فانی
 شدند لقمه تیغ گروه ایمانی
 بهم شدند دو لشکر به تیغ افشانی
 بسایان عریشی و ظل رحمانی
 بشکر بیزه کف رست کرد طمانی
 رسید روئے نمودند در گریزانی
 به جهد دست بر آورد و دروغا خوانی
 هزار تن همه بازیر و فر فرسانی
 سپید پوشش و بر ابلقان بکرانی
 زبان سیف کشاده دمان ثعانی
 بسی ز آدمیان خورده تیر سیکانی
 بسی کتف برهن بسته گرم نالانی
 غایتش شده چو بی خشک عیدانی
 بدست او شده آن چوب تیغ برآنی
 بین به معجزه شد چو بآهن کانی
 و فا گرفت همه و عده های نیروانی
 همان قدر بشماره اسیر زندانی
 اسیر آمده عباس همچو چندانی

<p>چو جثه با سیران ببند خدائی بگور خاص همه تن شد پنهانی بروز عید رسیدند خانه فرحانی گرفته فدیہ و کشته دو دشمن جانی بگفت بیج نیاورده ام که بتانی بگفت پس چو گدا در بدر بگردانی که خود سپرده آن ز رورابه کتانی بگفت اشهد بالله انت حقانی برفت مکہ پے کشف سر پنهانی زن یهودیہ عصا بنت عمرانی او اخر رمضانش بعین خوابانی کہ بود پیر صد و بست ساله وفانی برای جنگ نبی آن یهود و هقانی بمرد رفته بخانه به آه واقفانی کہ دختر دوش بود و جنت عثمانی</p>	<p>بچاه بدر فکند ذبیحہ کفار بغازیان هگی چارده شهید شدند ز جنگ کرده فراغت مطفر و منصور مدینہ آمدہ سرور زمانہ سیران را چو بست اوقیہ ز رحبت فدیہ زعبال زمانہی کثمت تا نمید ہی فرمود اشارہ کرد کہ از پیش ام فضل بیار بگفت با تو کہ گفت این بگفت گفت خدا چو داد فدیہ و ایمان گرفت و حضرت بدین و کیش مسلمان کہ طعنہ میزد بمشتمش عمر بن عدی بحبت کثمت رسیدہ سالم ابن عمیر کہ بر بوغیگ بہ شعر و رجز کفار بر غسانیدی رساند بر جگرش زخم بر زمین افتاد وفات یافت بغیبت اوقیہ بنت حل</p>
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ذکر فرزندان رسول صلعم

<p>بورشیت سبے زاوستہ ولدان دگر سعی جد خویش بدیقین دانی بہ لفظ طیب و طاہر و القتب عالی ز لطن ماریہ قبلیہ غیر اثانی شتا فکند بخت بسن صبیانی</p>	<p>کنون شنو کہ ز لطن خدیجۃ الکبری نخت قاسم و زان شد نبی ابوالقاسم از ان سبب کہ ولادش پس از نبوت سیوم پسر کہ نبی را بدست ابراهیم خدا چو ختم نبوت بخوت بر سرور</p>
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

<p>که در نکاح ابو العاص نسبت یکسانی یکی بعقبه دیگر با عقیبه ارزانی گذشتند زنان راز راه غضبانی با درو پدرشان نوید نیرانی چو مرد با زام کاشوم کردش ارزانی بدان شرف شده شبان جمع آنی به پیش چشم نبی بود پاره جانی به فضل او نرسد غیر بنت عمرانی خطاب رفت چنین نسبت حکم آبی ولی نبی شده آگه بوحی یزدانی تخواند خطبه شادی به جمع حنلانی بروز عید دیگر رسم کرد قربانی</p>	<p>چهار دختر پاک و مهین شان نسیب و گر رقیه سیوم زن میان ام کلثوم که هر دو از پسران ابی لهیب بودند در آن زمانه که ثبت یدافرو داد رقیه را پس از آن عقد بست با عثمان از آن سبب لقبش کرده اند ذوالنورین از آنکه خاطر زهر را پس از نبوت زد لقب بتول و بخوبی یگانه عالم ز سرورش کبر او هستند بعد از بدر علی بجزات این کارگوتامل داشت علی چو خواست بفرمود امر حق این است زکوة فطر همان سال یافته تشریح</p>
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

انما زفقه غر وة السوین

<p>شد این حرب بنفرت جمع خوانی برو جنگ اگر خود تو مرد میدانی مدو گرفتن ازین ما و قرب سنواری رفت و کشت در اطرف چند بهقانی فساد کرد نمایان بنانه سوزانی بسوی مکه دیگر بار گشت سرعانی تعاقبش به نمودند در گریزانی که بود زاده ره لشکر بوسیانی</p>	<p>چو منهنم شده در مکه مشرکان رفتند محمد است بجا جمله یگزبان گفتند به طیش آمد و شوگند خورد و کرد حرام دو صد سوار از خویش و تابان گرفت مدینه نامد و در ناحیه بز و داشتش حلال کرد پیوگند و از نبی ترسید دو صد مهاجر و انصار در رکاب نبی نیافتند جز اینانهای پست براه</p>
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

غنیمتش به نمودند و مؤمنان خوردند	سویق نام شد آن غزوہ را بدینسان
بمقتضای دوم سال دان که زبیر را	بجائہ علی آمد قرآن سعدانی
سال بست و یکم بد علی عالی قدر	سال با نزهتم بود فخر نسوانی
براعتا و موہب گردیدہ ام در سال	روایت طبرکے خواہ نقل طبرانی

ابتدای احوال سال سیوم ہجرت

ز غزوہ ہامی سوم سال ایچہ بوخت	میر سرور دین بر دیار عطفانی
بدن سبب کہ بنو ثعلبہ محاربان	شدند جمع بد عشور را و غیرانی
میان نجد و مدینہ کنند تا افسار	زندہ راہ چو شیطانہای غولانی
نبی پچار صد و چند غازیان رفتہ	گرفت ناحیہ نجد را آسانی
گر بختند ہمہ ہرمان و عشوی	خریدہ در درہ کوه و کہف غیرانی
رسیدہ بد نام باران بجامہ سرور	میان چند درختان ام عیدانی
باضطجاع بزیر درخت تنہا بود	و برد تاہ علی و وجہ تحقیقانی
شناختند خود دیدند دشمنان از دور	رسید بر سرش آن پہلوان بٹانی
کہ ام از منست آمد و باز دار گفت	بدیدہ گفت خدا یم کند نگہبانی
کہ جبرئیل فرود آمد و ز دش برصدہ	بلرزہ آمد و تن داد در فرومانی
گفت سرورش از من ترا کہ دار دبا	گفت ہیج و بدین آمدہ شتابانی
برفت و لشکر خود را بدین حق آورد	مدینہ را یت منصور کرد رجعانی

مہتد جلا وطن شدن بنو قینقاع

وگر شنو کہ ز گرد مدینہ تا مکہ	ہمہ یہود و پرستندگان اوتانی
چارگونہ معاملہ بدند با سرور	بصلح و جنگ سکوت و نفاق شانی
بنو قریظہ بنو قینقاع و قوم بضر	ہمہ یہود و منودہ عہود بیانی

<p>قریش از پی جنگ بنی کلبه بنو خزاعه خمس یک خیر خواه بدل نخت عهد بنو قینقاع بشکستند که رفته بود بدانسان بن مسلمانان بخواست پرده ندرودیش کشیدن آن برخ کشتنش آن پارسا چو شد مانع رسید کار بسامان وزن ز جابر خا به خشم آمد و بر کرد نامه و فریاد بجوم کرده بکشتند آن مسلمانان همه مهاجر و انصار با بنی رفتند ستوه آمده در قلعه صلح خواه شدند ز راه چهل گزیدند قتل بر اسلام زبون شدند چو مردان برمی کشیدند ستاد ابن ابی سلول کرده الحاح بگفتش همه را عفو کرد و جان بخشید باذرعات برفتند در نواحی شام بسی سلاح در آن قلعه یافتند که بود چه عبرت است بی ملک و ارد کرد</p>	<p>ساقیان مددشان نموده پنهانی چنانکه قوم بنو بکر فتنه خوانانی خبر از آن دشت گریه بپوشتانی نشست از بے کاری بنو ذکوان که دشت جوش جوانی و میل شهوانی ببست بر کمرش طرفهای دامانی زدند قهقهه بر پیشگاه عریانی برحیت جسته مسلمانان خون دکانی بهر طرف شده بازار فتنه ارزانی حصار گیر شدند آن گروه طغیانی برفت حکم که یا قتل یا مسلمانان امان گرفته بمال و نسا و ولدان برفت حکم معلی بشد کتفانی که بد معا بد ایشان دوست پنهانی نفاذ یافت بر آنها جدای اوطانی ملف شدند در آنجا بصدر پشانی ز تیغ و گرز و کند و دروغ خفانی که ملک رفت بیک کار بستگانی</p>
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

احوال کشته شدن کعب بن اشرف شاعر کافر

<p>پهوناسره کعب ابن اشرف شاعر بکه رفته به تخریب مشرکان پر خست</p>	<p>که داشت در فن شعر ادعای سبحانی به شعر طعن زنانه بر گروه ایمانی</p>
------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------

<p>که دشت دوستی و نمان با اعلانی بهم به مسلک او چار یار سلکانی بدا و سرور وین نشان دعای شادانی شفا گرفت زرقیش چو کرد درمانی شدند مجتمع اندر حد و دبحرانی گرفتند همه سولبو به شستانی بصد سوار پئے کاروان صفوانی به شام به تجارت نفود اشمانی قریش رفت برون با حرست حانی نیافتند غنیمت بدان فراوانی</p>	<p>بوحی حق شده آگه نبی بر او پیش بکشتنش به فرستاد ابن سلمه را سرش بریده بیک توبره در آورد زنوک تیغ که بر حارث ابن اوس خبر رسید که قوم بنی سلیم بر اند موکب والا برای راهن نشان مدینه آمد و بفرست زید حارثه را که ره بود ز راه عراق بوسفیان چو غازیان بر رسیدند دغیر گرفتند حساب خمس شد از نقره بست انف درم</p>
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

آغاز قصه جنگ احد

<p>ز مکه این نبا عباس داد پنهانی به سه هزار نفر لشکر بوسفیانی برون ز حد مدینه به کینه خوانانی بکار جنگ عیار و رسم جو پانی بزرگ دید بقتل حرس بقیانی دو دست خوابان حصرین بستانی مدینه در مع حصین است در گهبانی بسنگهای فلاحن رتیر پیکانی که با شویم صف آرا بجنگ میدانی ضلاف درک گردند یک نفسانی</p>	<p>قریش مستعد اند و همی روند جنگ که گفت اول شوال ثالث هجرت رسید تا حد کوه احد بیک فرسخ صحابه را جنگی جمع کرده آن سرور خبر از خواب در تعبیر خواب نقشه جنگ بیف رخنه و گاو ان کشته را دیدم کس از قریب من و مؤمنان شهید به است آنکه میان مدینه جنگ کنیم ولی صحابه گفتند در متنا یوم مگر بدو قی شهادت و جوشش نیکیت</p>
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

نماز جمعه ادا کرد و عصر فرحانی
 برای بستن دستار و خت پوشانی
 زد و شکر کرده حایل به سیف المعانی
 شدند گرم عریض پس از پیشانی
 بکار بند همه هر چه نیک و والی
 سلاح بسته کشا دن ز کار شایانی
 بدامن احد آمد رئیس و حدانی
 که بدینا فوق خالص بوحی قرآنی
 زد دشمنان همه مقصد بدند ز ایشان
 بدند پانزده همه ز خیل نسوانی
 و در مقدمه ارطاط کرد جولانی
 به میمنه شده ابن الولید پویانی
 یکی باوس و دیگر بجز خراج ارزانی
 بدست حیدر که از رفعت شانی
 که زورش نشان به مثل زور و سپهرانی
 به پشت لشکر دین تا کند نگهبانی
 شویم گر چه صیود و خصوم بیزانی
 و نیز مال غنیمت بصدف سوادانی
 بدون حکم نبایست پای نغزانی
 که صبر بایه نصر است و لطف یزدانی
 که گیرش که کند حق او نگهبانی

شنید حکم میباشند بدیشان داد
 بخانه رفت و عتیق و عمر خدمت
 بداد برتن خود زرب خود و خندان
 چو آفتاب بر آمد ز خانه دیدنش
 که راس ما همه آنست هر چه فرمائی
 خطاب کرد که بی حکم حق نبی ز نیست
 بیکهزار صحابه روان شده شکیب
 بچند صد نفر ابن ابی بکر دید
 ز غازیان همه صدمه در از ره برتن
 میان نشان دو صد سپان و سه هزار شتر
 بنام طلحه علم دار مشرکان بوده است
 بکرمه بن بو جهل میسر شد دست
 میان لشکر دین پروران سه است
 سیوم برای مهاجر که داشت آن را
 بنی گزیده به پنجاه مرد تیر انداز
 ریاست همه ابن جمیر را بخشید
 ز جامی خویش بفرمود با مجنبا بد
 و گشت کست حریفان شمانظار کنیند
 طمع گزین کند در دل شما ز بهار
 بغازیان همه فرمود صبر باید کرد
 گرفته سرور دوران بدست تیغی گفت

<p>از آن به اسب یکی هم نکر و از زانی ز قتل باز همان گفت تانه و اما آن که تا حلال ندانند پشت گردانی عصا به بست بسرگش اجمرتانی مگر بوقت جدا دست دلب سجاعتی فادشکر کفار در پریشانی بجست حمزه برار طاط و کشت عانی چو پور طلحه علم دار کفر شد ثانی چو رست شد سستی بی گزانی چو غازیان به نمودند تیغ فسانی کشتاد دست بتالیح فوج ایامی به جمع این جبر او فاده نقصانی شتا فتد براه خطا و نسیانی که یافت جنگ احد عکس بدریایانی بامرو را می بنی کرد کشف رجحانی بکار خویش نباشند باز تازانی برای معرفت خیر و شر انسانی نماند حفظ خدا از خلاف زمانی ز میان شده خالی گشت جوانی گذشت کار ز عد تقابل اردانی شهادت جمله شدند از قضای زردانی</p>	<p>بسی بار زوش رفته حق نپرسیدند ابودجانہ چو پرسید داد در دستش نمود رمز و اشاره بغازیان گوئی گرفت تیغ و بنجر کنان بیدان بی گفت خدا خوش ندارد این رفتار برفت و کشت بهر دشمنی که پیش آمد بدست شیر خدا طلحه پاره پاره شد ز تیغ حمز قلم کرد هر دو دستش را ز دست حنظل آمد ستوه بوسیان میان لشکر دشمن چلا چل افاده رجال شان بفرار و زنان بواویلا فرار دشمن و تاراج مال را دیده طمع گرفته ز حکم بنی بدر رفتند چنانکه معده حرب منقلب گردید خدا که مالک فتنه و شکست هر جنگ است که تا مهاجر و انصار را شود تنبیه بی تمیز میان منافق و مؤمن ز بند نزول ملائک بشوم خود رانی چو دید خالد ابن ولید جانب کوه سپاه عکرمه هم رفتند آن طرف با او بچند بار که این جبر قایم بود</p>
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

بگشت لشکر کفار حمله آوردند
 سبا بحمزہ در افتاد و حمزہ کشت او را
 شهید حمزہ شد از دست آن لعین
 و میکہ حنظلہ در حمله بر ابوسفیان
 نزول کرده ملائک جو غسل دادند
 شهید کرد و چون تمیہ مصعب را
 میان برد و گروہ اشتباه پیدا شد
 درین زمان کہ دل غازیان مشتعل شد
 کہ مؤمنان عقب خویش را خبر کردند
 قتال از غلط افتاد در مسلمانان
 ازین سبب متفرق شدند از میدان
 نبی بخار و صحابہ گریه قائم بود
 میان جمع ابو بکر و ہم عمر حاضر
 چو سیف دست علی در میان صف
 بذوالفقار جو امر وی آشکارا کرد
 میان ترکش سعد بن ابی وقاص
 نبیش چیدہ بسی تیر دشمنان میداد
 چو این دو مرد درین وقت فرود کردند
 ز دشمنان همگی سوی خمیہ مارفتند
 ز سرور روز ابو بکر و ز عمر رسید
 آبگشت گفت میان قریش کین هر

بہاوت کرامت اسلام رو بویرانی
 بخت وحشی از ان پس جا پنهانی
 چو کرد بر بدش زخمها فراوانی
 ز زور ضربت شد او کشته بدفانی
 غسل شد لقبش نه ان جمع جانانی
 محمدا قیل گفت از خروشانانی
 کہ بودہ اند پنهان در لباسانی
 شنید گوش مسلمان ندای شیطانانی
 ز دشمنان ہمہ کردند روی گردانی
 شدند قاتل و مقتول خود ز نادانی
 بسی مدینہ رسیدند زین پریشانی
 ولیک بود بسی را گمان فغانی
 بخاک بوعلی پیش سعد و سعدانی
 و را بگردنبی ذوالفقار از زانی
 بلافتی شدہ بالائے جملہ فغانی
 نماندہ تیر چنان کرد تیر بارانی
 و گشتی از رم فداک ایے علانی
 نمود کار ز دشواری رو بہ پشانی
 رسیدہ باز بو سفیان بحال جوانی
 بدشتند ز امر نبی بہ کمانی
 شدند کشته کتون نیست کینہ خوانی

<p>به غیرت آمده گفتش عمر که ای کذاب زمان ز غصه بدر آمده شمشیر را شکم دریده دل حمزه را بر آورده</p>	<p>ز عم تو همه چی انداخته بمانی بکاسته الف و شسته با بی ذالی چون شکر تو دندان شده ندخامانی</p>
<p>کیفیت شهید شدن دندان مبارک</p>	
<p>بچند یار نبی حال گشتگان می جست بن قیامه و ابن هشام و آن عبته ز سنگ عبته که بر جانب نبی فکند زنگ ابن هشامش جریب و جبهه شست ابو دجانم به پیش آمد و ترس کرد چو کا فران همه زمین کارزار گشتند ز حرب گاه نبی را بیک طرف بردند ز غازیان همه معاد و ذو شهید شدند نبی بکشت ابی ابن خلف را در جز چو بود عبدالله بن جحش مثل حمزه قتل بدانکه واقعه جنگ روز شنبه بود براه مکه برون بر و روز یکشنبه که تا نبیب به برگشتگان مکه رسد براه معویه ابن میخیره را گرفت ز حکم دین که درین سال یافته حکام تولد حسن ابن علی درین سال است چو پوه شد حفصه آنکه بود بنت عمر</p>	<p>که آمدند سه کا فر به در عهد خراانی که بد بر ادر و قاص و سعد عیانی لبس نجست و با عبه رست و تحانی ز سنگ ابن قتیبه چنانکه پیشانی علی و طلحه زیبا لغزیش نگهبانی به جنگ وعده نمودند درین شانی رسید فاطمه زهر ایدرد و در رانی ز مشرکان همگی بستند و چو پنهانی بحسب وعده که کردش بکار ازانی نبی برد و بیک گور کرده بیتهانی مدینه باز جهان روز کرد و حیاتی بنغازیان احد با تحمل شالی ز دشمنان به بر و امین رشت حیاتی به بست و گشت چنانش که گاه قویانی حرام خمر شد از حکمات قرآنی بخلاق مشهور رسول میرانی رشد عیسی در آن زمان با مرعی قانی</p>

تکر و اجابت ابو بکر را نہ عثمان را بعقد خویش ہمین سال سرور آوردن	بداد پیر پیر رضایتش و انی به نسبت و چارز تار پیمانای شعبانی
---------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------

ابتدای حوال سال چهارم ہجرت

به بد و سال چهارم بوادی عرفہ کہ ہتر ہدی جنگی سرور بود بقلمش ابن انس از مدینہ تہارت	چو فوج جمع شد از اہتمام سفیانی بخوشیت تا بکند بر مدینہ تا زانی بکشت و بر دسرش در مدینہ بہانی
------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------

مہتد کشتہ شدن شش اصحاب از بست عسفانیان

گروہی از عفضل و قارہ بانہی گفتند برائے تربیت ما معلن را وہ بنی ہشش کس از اصحاب ہم نشان کرد براہ ندر نمودہ صحابہ را کشتند	کہ آمدند در اسلام قوم لہجانی کہ تا کنیم عمل بر فروغ ایمانی روان شدند چو چہمان برای ہمانی رسیدہ تا حد آب رجوع عسفانی
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

مہتد کشتہ شدن چہل کس از اصحاب صفہ

ابو بکر ایہود آمد از بنو عامر امید خویش بعرض بنی رساند چنان برای دعوت دین جمع دعویان بفرست ز ندر نجد بفرمود خاطر امین نیست چہل صحابہ از اصحاب صفہ را بگزید رئیس بر ہمہ کس عمر ابن منذر را رسید پیر معونہ بنامہ سرور نخواند نامہ و بر جبت کشت قاصد بپاس عہد ولی کرد با بنو عامر	کہ بودہ اند ہمہ نجدیان عطفانی کہ نجدیان بپذیرند دین اگر خوانی کنند افادہ احکام و درس فرقان بہ قسم کرد دست عہد چست پیمانی کہ بودہ اند ہمہ قاریان قرآنی روان شد و ہمہ اورا مطیع فرمانی بہ برد جانب عامر خزام لمجانی نفیر کرد بہ جنگ گروہ ایمانی ابو بکر از برد از غم پشیمانی
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

<p>بنو سلیم و عقیه و رعل و ذکوانی برون شدند ز عمرانی و کلبستانی همه شهید شدند داده داد شجاعتی بزسیت کعب هم از خستگان میدان گرفته عهد نبی کرده باز گردانی که بسته بود ز قید گروه عطفانی گرفته کین چهل کس رسید فرحانی ز درک قتل معا بد شدش پشیمانی</p>	<p>هم شدند بان مهتر بنو عامرند بکشتی که توان گفت فوج مویس طرح صحابه تیغ کشیدند و مردمی کردند مگر که عمر امیه اسیر گشت و برست با عتذار دو کس رفته از بنو عامر بره زابن امیه دو چار گردیدند ز عهد نبی خبر آن هر دو عامری را چو شرح قتل بعرض نبی رساند آخر</p>
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

مهدی اجمالی بنو نضیر از دیارستان

<p>که یا بمریده یادیت کن از زانی مدد طلب بنمود از یهود و جیرانی حصون شان بنو احمی حنین بنیانی قبول کرد او فرموده را با اعلانی که تا کنند ز بالاش سنگ بارانی که تا کیش پس دیوار خویش نشانی که جان ما و جهان را از غصه برانی بجاجتی شده بیرون ز جمع خدانی که هم زمان همه باز آمدند جویانی که هست را می یهودان نقض بیانی بگو که دور شوند از دیار مدیانی شدند جمع یک قلعه از پریشانی</p>	<p>بر رسول سوال آمد از بنو عامر بدادن دیت هر دو کشتگان سر بنو نضیر سرشان حیی اخطب بود بچند یار بنی خود قدم فرمودش همان ولیک بدانند شکی جان کردند بخلوت آمده گفتند این خطب بود بهست گر کنی این مرد را بان تدبیر نبی شنیده ز جبریل مضمرا نشان مدینه آمد و آنجا درنگ چندان کرد صحابه رسبب بازگشت کرد بیان بعمر سلمه فرمود رو به بدعه ان ز منع ابن ابی آن گروه نشیند</p>
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

که گفتند ای شیخ و بنو قریظه یکیم چو مؤمنان چه کرد حصار گرفتند نکر و ایستادنی بنو قریظه مدد	به جنگ یاور و با هم تبرک او طاف بریده گشت بسی نخلهای ستانی شدند جانب خیر خانه ویرانی
--------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------

از کفر و غزوه ذات الرقاع و پیر عسکری

و اگر چهارصد از غازیان سفر فرمود بنو مویز از آن کج کرد بنو ثعلب بیاد کمان همه بر پائی خرقه بر بستند گرفتند و غنیمت گرفته باز آمد نکر بدان سبب این نام غزوه و راد او ند بحسب عده زر و زاهدین از کیسالی ولی بیافیه از مشرکان کسی آسما همش هم سکه جفت گشت چارم سال و یکسالم ساکن زینب از نسی عقد	برای جنگ دو لطن از گروه غطفان که می زدند دم دشمنی با علاتی که بد ز شدت گرما بدشت تابانی گرفت غزوه ذات الرقاع بانی که خرقه ها بقدها بدست بچانی به بدر رفت نکو کرده ساز و سامانی مدینه کرد مع الخیر باز گردانی هم آنکه زینب بنت خزیمه اش دانی دو ماه ز لیت و شده زیر خاک سپرانی
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

آغاز حال سال پنجم هجرت

بال پیغم از اعراب و مته آمدند نشسته اند چپ و بر سر شاه شام سواران از همه نای شاران چون از روانند آخر تا به پیغم اول شد گذاشتند و پیغم را در میان او کوفتند و در میان او حضور بسیار از ایشان و در میان پیغم	خبر رسید که جمع اند بهر طغیان همی زنده ره سالکان با کمانی که گله بره از آنها سب و دوانی بیکهزار مسلمان رسول پیغم دانی براهبان بدو امینی ز لیرانی نهان شدند به لجاجی نامی کنانی نمانند مگر چند کس بچو با نانی
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

<p>بسی گرفته عنایت ز گل و چو بان</p>	<p>باینه باز رسیدند بستم ثانی</p>
<p>آغاز کیفیت جنگ مرسیع</p>	
<p>بدانکه جنگ بنی مصطلق به پنجم سال و گردان که همین غزوه مرسیع است خبر ز حارث ابن ابی ضرار رسید به عزم جنگ بنی جمع کرد لشکر را بنی عبیده ابن خطیب را فرمود عبیده رفته و تقسیم عزم جنگش را بفر کرد بنی جمله کله گویان را شدند بمره سرور منافقان بسیار درین سفر حفصه بود و عایشه هم ز صیت و بدیه و رعب لشکر سلام بقوم خویش روان آمد و صف آرا شد بلند کرد و او امی مهاجران بو بکر چو ابر لشکر اسلام گردا دعا شد گرفت کار چو از تیغ بگرفتند گروه مصطلقی کشته و اسیر شدند گرفته جمله عنایت مظفر و منصور</p>	<p>بیز و اهل مغازلیست قول بجمانی که جنگ بر لب آن آب یافتن پامانی که آن رئیس بنو مصطلق ببرد ان ز قوم خویش و دیگران زبان چیرانی که رو ب حارث و دیبا به هر چه بتوانی رساند پیش نبی بازگشته سرعانی چه دوستان زبانی بختن حانی بجزرها جر و انصار خالص ایمانی نشسته هر یکی بر مویج جدا گمانی جدا شدند ز حارث عرب بیاشانی بی مقابله غازیان شعبانی چنانکه رایت انصار سعدیشانی کمان کشیده نمودند تیر بارانی ز تیغ هم بگذاشته ب بند کتفان نماند امن بال و شمار و ولدانی روانه سرور درین شد بغرم جغان</p>
<p>قصه افک که منافقان بر عایشه زنی آمدنها فر کردند</p>	
<p>فرد آمده در منزله چو کرد حیل غبار افک بدامان عایشه افکند</p>	<p>وزید بر حرم پاک با و بیتانی نفاق ابن اکتی آمده بشورانی</p>

بدان سبب که بوقت رحیل صحرا رفت
 قضای حاجت خود کرده آمد از میدان
 که نظم آن همه از بی بیانی بود
 بی تجسس گم گشته باز صحرا رفت
 چو باز آمد و کس را ندید و گم گشت
 شناخت رفته برام مؤمنان صفوان
 شتر نشاند ز راه ادب زد تن تکبیر
 سوار بر شترش کرده خود کشتد مهنا
 منافقان جهان سوز افرا کردند
 که بود مرد عرب پارسا نکو کردار
 با فک آمده حسان و مسطح و حمنه
 مدینه آمده هر کس بخانه آسودند
 و لیک بنجر از قیل و قال قصه فک
 نیافتی ز بی آن تفقد و تیمار
 که نشست یک مه و آن مه هنوز بود در
 شنیده تا همه شب مانده دیده اش گریان
 بخانه پدر و مادر از اجازت رفت
 بگریه برده همه شب چو روز شد آمد
 در آن میانه که این چارتن بهم بود
 نشست و گفت که ای عایشه شنیدم
 نیامده است در نیاباب هیچ امر خدا

بی قضای حوائج که هست انسانی
 نیافت چون شده از صدر سلک جانی
 جواهریکه بود نام آن سلیمان
 که بود حش کبشیدند از مشتایانی
 گرفت خویش و آمد سحر بخدانی
 که بعد کوچ همی کرد و لقطه جویانی
 ز خواب آمده آن طاهره بقیطان
 بر و تا بلب بود حش با علانی
 برام مومن و صفوان برشت حسابی
 بعمر خویش گزیران ز قرب نسوان
 که هر سه یافت عذاب الیم اگر دانی
 مریض گشت حمیرا بعرض جسمانی
 که داشت طهر سرد رازان پریشانی
 که پیش این مرضش کردی با و از زانی
 که ام مسطحش افگند کلف بهتانی
 صبح آمده سرور بحال پریشانی
 حدیث افک ز هر کس شنید یکسانی
 ز گریه اش زن انصاری بگریانی
 رسید سرور عالی بحال جویانی
 همان حدیث که آنرا شنیده گریانی
 نشان نشت مرائج و کار صفوانی

<p>اگر تو پاک ازانی خدا کذب است که توبه تو پذیرد خدا نمی بخشند گفت عایشه صدیق را جوش داده اشاره کرد بپادر که او جواب دهد گفت یا نبی او خود جواب بخیز که در ضمیر شما مضمهر است این هتده نه باور آید اگر گویم از طهارت خود پرستی است میان من و شما آن حال چو گفت روی به پچید و خفت بر پهلوی که وحی آمد و حال نبی تغییر یافت بخواند آیت تطهیر و گفت عایشه ز راه مهر بگفتند مادر و پدرش گفت شکر خدا می کنم نه شکر شما</p>	<p>و گرنه توبه بکن ز ابستای عصیان قبول توبه عاصی است شان جان گفت چسیت جواب رسول یزدانی بر آنچه گفت پدر گفت امرومانی که وزن آن نکند جز حکیم منیرانی بقول من نه شود کشف حق باستانی نه عتراف کنم عکس علم ربانی که گفته بود به تجلیل پیر کفانی زنا توانی بحق و ز تکذ را جانی چو متقسی شده آمد لبش بخدانی که یاد کرد خدایت بپا که امانی که خیز و پیش نبی رود بشکر جهانی که پاک کرد مرا ز ایتها بدستانی</p>
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ابتدای قصه غزوه خندق

<p>حدیث لشکر اعراب و غزوه خندق حتی اخطب از آن پس که رانده با قوم بنو نضیر و بنو وایل از سر فساد حتی اخطب و معد و چند هر دو گروه که ما به نصر شما می کنیم استیصال بخوشدای همگی مشرکان پذیرفتند و میدید بود فسونی که در میان قریش</p>	<p>بچند بیت نویسم که از برش خوانی برفت خیبر و اندخت طرح الطیالی بهم شد ندبی اتباع شیطان بکه رفته نمودند عرض معوان شکوه یثربی و شوکت مسلمانی حتی رفت از آن پس بقوم غطفانی همان دید بگوش گروه عنیدانی</p>
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

نشند این همه اختراجهای که بر سر ایشان
 که چیت مصلحت وقت چون شدیم
 دوران جماعتی که بر سر همه سال
 قوی بود بخیر و روزگار جوانان بود
 از آنکه نسل شقیقتش بنامش است
 زوایا بر سر بعضی نبی رساند انوش
 تفرک در میان مهاجر و انصار
 زمانه آن سه هزار آمد در میدان
 بنوده اند تبر و در و بیلد از آنجا
 بد او قطعه چل فرسخ را پرده کس
 شاع رفت میان مهاجر و انصار
 مرافقه به نبی رفته و نبی فرمود
 بقطعه که نبی خود بدش بسلمان داد
 خودش تراب بر وی از نبی ^ع

شنیده کرد نبی اجماع حسدانی
 که کار سخت از آن رو بند باسانی
 شرف گرفته بازادی و مسلمان
 که نام آن سره سلمان فارسی نامی
 در اصل بود منوچهری سپاهانی
 که گردش خود خذقی بکندانی
 پسند کرده درین باب رای سلمان
 کشیده خط حصار می رسول نیرانی
 که رفتی از شرفا کارهای بهتانی
 گرفت از نبی خود قطعه جداگانی
 بهر جماعتی اشتراک مسلمان
 که اوست ازین و از اهل بیت و عیار
 بنه مهاجر و انصار کردش اعرانی
 بر جزیره بودی دل مومنان بقرنی ^ط

ذکر معجزه سرور که در حدوق روداد

قرب بود که حدوق بالقرام رسد
 ز سختیش چو شکایت بر نبی برسد
 فرود آمده بگرفت معول از سلمان
 چو خست آن حجر سخت بست ق شرا
 قصور شام و مفا تیج آن یار بست
 چو لث صخره بیدخت زد کلند در

که صخره شده پیدا دران زینهای
 که شد شکسته از آن آله نابرانی
 زدش بنام خدا خست سنگ ندانی
 ز قال فتح بتکبیر کرد جولانی
 بدید از نظر معجزه بتا بانی
 نموده باز زالد اکبر اعلمانی

<p>کلید کشور کسری بدست خود می بد بضربت وومی هم صحیح شد تقسیم بزد جو فاس سوم باز خوانده هم بلند کرده به تکبیر فتح ملکین میان فوج بشارت فتح شد مشهور</p>	<p>در آمدند و باز انگران به بر قانی بماند و رفت از ان لاجه ثلث ثلث شدش پدید هم یواهنه می صنعانی بر خیت صخره و بالا شده بشانی شنیده اهل نفاق و گروه یقانی</p>
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ذکر معجزه دیگر

<p>و گز معجزه این مقام ان بود است ضیافتی کن و چیزی خورش همیا کن گفت نیست جز آن آرد جوین کصاع گفت آرد خمیرش کن و بسوزنش چو گوشت را به پزایند و آرد کرد خمیر که لحم بچ میش و دقیق جو یکصاع نبی میان همه دوستان صلا دروا ولی گفت بجا بر که تا رسیدن ما نبی بخانه او با هزار یاران رفت دعایی برکت کرد و گفت تا دوس نه شد خمیر کم از نان و هی نه و گیتی روایت است که می گفت جابر بن عجم</p>	<p>که جابر آمده در خانه گفت کاجانی که هست سرور دنیا و دین بخوانی که بهر نشت همیا بحر ز انبانی بگشت همه پرورده را شتابانی بحضرت بنومی بر و عرض بهنایی برای نشت همیا و هر کرا خوانی که جابر آمده آماده کرد همانی نه دیگ بر زمین آری نه نان بنانی نفس مید بدیگ و خمیره نانی پزند نان و بیارند پیش سرعانی شدند سیر همه مومنان سخانی بجلفا کرده مو که بحسن تیبانی</p>
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ثمره خندق

<p>چو کار خندق از ان پس انصرام سید بده هزار نفر آمده ابوسفیان</p>	<p>که بست روز کشید ندرنج چندانی فرود آمده بر جمع گاه سیلانی</p>
-----------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------

بگفت سرور دین را که من مسلمانم
 به بنده هر چه که فرمائی آن بجا آرم
 خوش آمدی نبی از راه لطف فریب
 فریب کرده خلافتی میان شان انداز
 نفیم رفت میان بنو قریظه و گفت
 چو اعتراف نمودند گفت می ترسم
 اگر قریش رود و بخدیان کجا مانند
 شما که جمله وطن و اردو هم گران بارید
 نه روی صلح شمارانه طاقت بیکار
 شریک جنگ نباشید تا ضمان ندهند
 که در میان شما جا بود کفیلان را
 بنو قریظه چو این رای را پسندیدند
 گذر نمود از آن پس بر ابوسفیان
 حقوق دوستی قریشان که برین است
 بنو قریظه به ترس انداز مسلمانان
 پسند در صد و آن که از شما گیرند
 برند پیش محمد گرفته آنها را
 چو این فسانه اثر کرد در ابوسفیان
 بگفت زانکه شما و منیم از یک اصل
 بگفت بر سخن گفته با ابوسفیان
 چو اتفاق بدل شد میان شان بیافوا

ولیک دین من از کافرانت پنهانی
 که هست در همه اعدا مرا چه روانی
 به بر زره همه ما را اگر تو بتوانی
 مباح معنی الحرب خدعه روانی
 که عهد دوستیم با شماست طولانی
 که بی ستیزه رود و لشکر بوسیلتی
 جریده اندر و نذازمیان باسانی
 مال و ذرع و مویشی و اهل غلامانی
 ز دست فوج مسلمان رسد بر شانی
 بچند عمده کس از قریشان و غطفانی
 بدین سبب نتوانند باز گردان
 از آن میانه برون رفت شاد و توانی
 بگفت آمدست بهر خیر خواهانی
 همین است وقت که آنرا کنم گهبانی
 زیادوری شما نیند در پشیمانی
 ز خاصگان دوسه تن را برسم ازانی
 بکار خویش نمایند عذر خواهانی
 سومی عینیه و عارث گذشت شانی
 ادا کنم سخنی را که هست از عانی
 شدند محتر از یکدیگر بدینانی
 ز کین بوین در آمد عان فرسانی

آنکه نوفل محزون می از میان فرست
 بخش سوار رسیدند بر سر خندق
 بر کنار رود بهشتن فرس بستند
 زود اسپه سال که ز خندق می جوید و رویش
 ز راه میان که در آن زمین سوار است
 پیشتر گفت که این قدر خورد و نوشتم
 بگفت این سخن را می بیند استاین گوید
 بگفت که تو سید و درین اسلانی
 بگفت و در آن جنگ من میدان می
 بگفت که چه ترا نیست خوابش قلم
 هم بر آمد ازین حرف و جبت از مرکب
 دو پهلوان بهم آمیختند و گشت علیش
 جهانند سپ چون نوفل فاد در خندق
 ستوه آمده گفتا که تشنه تیغم
 بخورد و تیر دران جنگ سعد این معاف
 بریدش اخیل و خوش ماند از سیلان
 پس از فرار قریش و بلاک قوم قریش
 جو در محاصره بگذشت و زبست چهار
 ز کوه و شام و زمین گرفت باد صبا
 بروی لشکر اعدا رسیده می شدتند
 بنمای خیمه و خرگاه از زمین بر کند

و عبید و ذک که بعرف عمر عرش خوانی
 زوند خنده که این است کید ایرانی
 بدید عمر زهی تنگ بهر و شیانی
 به سینه که شدش مانده پاهای پویانی
 رسید حمید که از جمع شجاعانی
 که از دو خواست یک گروه از نوزانی
 چه از ز دست ترا آن بگو که لبانی
 بگفت هیچ مرا حاجتی ازین مانی
 بگفت نیست بقتل تو فرج روحانی
 ولی مرست بقتل تو رحمت جانی
 پای و گشت علی هم چو در میدان
 کشد به پیل مانی چو شیر غزانی
 ز مومنان بسرش رفت سنگ برانی
 ز بر گشت و را با علی بجزلانی
 ز دش بن العرقه عامری عدنانی
 خودش به تیر و عا کرد باز جریانی
 وفات کرد و بجنبید عرش حانی
 بشی رسیدد و از جنود ربانی
 که بود پشت پناه گروه ایمانی
 که هیچ قهر خدا بود و با و ذلالانی
 لودید شد همه در نور کند پنهانی

بچشم ریگت بسرنگ ریزه می افتاد
 درآمده تن اعدا بلرزه از سرما
 زبرد و بارگی و بارکش همی مردند
 زگرد و باو که بر هر سینه توجج کرد
 هنوز صبح نگر دیده بود آن شب
 جریده رفت سوار و پیا ده لشکر
 پوشد حدیفه ابن الیمان حکم بود
 رسید و دیدوشنید آنچه بود و برگردید
 چو روز شد همه بنگاه شان بغارت
 بچارشنبه بست و سیوم ز ذمی القعه
 بچهره آمده سرور ز تن سلاح کشا

بگوش صوت سلاح و بدل هر اسانی
 بسینه ز لرزه رعب داد لرزانی
 فسر و آتش پیکار و جنگ خوابانی
 ثقیل گشت نهان و خفیف پیرانی
 که الفرار بر آورد فوج طسمانی
 گذاشته یکی بار از پریشانی
 بر قریش در آن وقت جان جویانی
 خبر رساند که بگریخت فوج عدوانی
 غنیمت آمده اموال شان فراوانی
 برآمدند ز خندق مدینه فرحانی
 کشاد رخت و در آمد بگردشویانی

قصه قتل بنو قریظه و دستیصال آنها

ز نسل کرد فراغت که جبرئیل آمد
 که خیز و زود سپهر بنو قریظه بران
 بنی شنیده ندا کرد اهل ایمان را
 علم سپرده علی را روانه کرد از پیش
 فرود آمده بالای چاه آن کفایت
 ز غازیان سه هزار از مدینه شد بیرون
 بنو قریظه چو از رعب بد خویش شدند
 نه طاقت آنکه بر آیند از حصار بیرون
 برآمده چو بر نیگونه پا نزد خورشید

عامه بسته مسلح بوحی یزدان
 خودش بر اشترار باب کرد جولانی
 کنند عصر ادا در حدود ایشان
 گرفته فوج خودش نیز رفت عالی
 ر عصرتا بشارت فوج یکسانی
 میان شان سی و شش سبب بوتازان
 شدند جمع و نشستند جمله عزولانی
 نه در محاصره سامان قوت چندانی
 میان قوم شده کعب رای جوانی

که از قضا و قدر هر چه هست می بینید
 سه کار بهر شما مصلحت همی بینم
 نخست آنکه پذیرا کنید دین نبی
 کنید رحم بجان خود و بجان ^{عیال}
 جواب این سخن آن مدبران ^{گفتند}
 گفت ورنه زمان را کشید طفلان را
 بجنگ چست بکشید هر چه با داباد
 شنیده روی به پیچید این سخن پرس
 اگر بجنگ بکشیم و با ظفر ایم
 گفت این هم اگر نماید از شما مشب
 شدند در پی انکار کین نه دیندار است
 گروهی پیش ازین احرام یوم ^{الست}
 شنیده همه مسوخ و بوزنه گشتند
 گفت کعب که از روز زادن مادر
 جو کعب دید کنز نهانه بیخ کاراید
 بنو قریظ ز پیش نبی طلب کردند
 رفاعه رفت و با الحاج آمدنش پیش
 که بهر ما چه بود ای ابالبابه گو
 چو او ندانست بافتشای این نهان ^{حضرت}
 به مسجد نبوی رفت و خوشتر است
 گفته تا نه پذیرد خدای تو به من

بلا بر آبرو و جان و مال یکسانی
 یکے ازان سه توان کرد از شما بانی
 که صدق او هست عیان در کتاب ^{عمرانی}
 زیند در کتف دین با من و آمان
 که مرگ هست نکوتر قلب ادیانی
 برون شوید تپی دل ز رخ ایشان
 ز کار جنگ بنیاست پشت گردانی
 که هست کشتن بیچارگان ز نادانی
 چه کابلے زن و فرزند عیش اربانی
 که غافل اند به شیخون کشید جولانی
 که سبت را بفشاد آوریم ز بیانی
 گذشتند بے اصطیاد حقیانی
 بیافتند زیزدان نکال عدوانی
 نیافتند شاعر عقل جز بسو لانی
 گزید صبر که جشنی است مرگ طوفانی
 رفاعه را پی شوری رفاه خواهانی
 زنان باه و فغان کودکان بگرانی
 بگردان اشاره زرقت بخلق برانی
 کشید در دم از ایمان خود پشیمانی
 رسن گرفته بر کتی میان ارکانی
 نمی روم من از اینجا مگر شوم فانی

اشعید سرور و فرمود که من گفتی
 ولی کون که چنین عهد بست نکشایم
 گذشت سته لیالی که توبه شد مقبول
 بنو قریظ در قلعه را چو آوردند
 که هر چه حکم رود بهر شان بزنند همان
 شنیده این خبر انصار و سیان حبتند
 که پیش حضرت تو او سیان و خزرجان
 چو یافت از تو بنو قینقاع جان بخشی
 گفت امیر شمارا که هست سعد معاذ
 بنو قریظ و انصار شادمان گشتند
 در مسجدش سواری خرد آوردند
 زول کرد و بشریف او بنی فرمود
 چو یافت قوت تحکیم خود ز هر دو طرف
 که گردن همه مردان آن گروه زبید
 نبی گفت بهفت آسمان همین حکم است
 برون ز قلعه بودند جمله مردان را
 مدینه برده بیک خانه بنو نجار
 برفت حکم که غاری کنند در بازار
 زدند گردن یکیک ر بوده از زندان
 در آن جماعه زبیر این ناطیا بود است
 برفت ثابت بن قیس هر دیدن او

تخت خواستی از خدای عفرانی
 ز بند خوشتنش بی قضای یزوانی
 کشاد سرورش از بند صبح گالان
 ز بون زگر شگی آمده و طهمانی
 نهند گردن خود را بلوع فرمانی
 ستاده پیش نبی خواستند آسانی
 برابر اند به لشریف و حرمت شانی
 کتون موالی ما را همان کن از زانی
 همی کنم حکم حکم کار ایشان
 حق ساعده را کان کند نگهبانی
 که بوده است جریم و جسم و کحانی
 قوموا لیسید کم جمله را با عدلانی
 بگرد حکم در آن قوم مرد حقانی
 به بند بندگی آرید نسل و نسوانی
 همین است حکم موافق تعب کرمانی
 که بوده اند ز شمش صد فرود کجانی
 تمام شب همه را داشتند زندانی
 شوند جمع تماشا سیان عمرانی
 ز جیفه ما شده بر قعر غار خذلانی
 ز عمر خود شده فر توت ذوقی فانی
 که داشت بر سر از و بار دست سیانی

که کرده بود در مالیش گرفته روزی عایش
 همی شناسیم ای شیخ تا بتش چون گفت
 بگفت گفت چو با او شد منتت خوایم
 برفت ثابت و پیش نبی بعرض رسانید
 بگفت باز چو گفتش که شد سهل خونت
 بسرو از زن و فرزند او سخن هم را
 زیر گفت چو زین کردش اگر ای ثابت
 برفت ثابت و در خواستت از نبی
 و گریز حضرت بگفت با ثابت
 چه حال کعب که مرآة چینیش رخ بود
 چه شد حی سرجله حاضر و با وی
 دو مجمع قرطی را بگو چه پیش آمد
 بگفت جمله تریغ مؤمنان گشتند
 همین تقای احبا جزای من ز تو پس
 نه گشته شد ز زنان بنو قریظ زنی
 بدان سبب که بخلا دین سوید خلید
 از آن زنان همه ریخته را نبی بگریید
 دیگر زنان و همه بچکان و مال و مال
 بد آنکه یافت عنیمت شریعت تقسیم
 دو حصه از پی اسپ و یک از پی مردان
 بسه هزار و هفتاد و دو بهام رسید

بر روز جنگ بنواوس و خزرجیانی
 بگفت چون من و چون تو و چهل عرفانی
 که الکریم یحزری الکریم زنیسانی
 شنید عرض و با و کرد خوش از زانی
 که چسیت بی زن و فرزند زنیانی
 بگفت بر توبه بخشیدم و تو برمانی
 که ام خانه کنی مال باقیش دانی
 بگفت مال همه با تو کردم از زانی
 چو بر وجهه تماشا را بسامانی
 که دیده می شد از آن رو با بتانی
 هم آن غزال خرامان بقدم رجوانی
 چه گشت حال فلانی و کار چغانی
 بگفت پس به برم هم به جمع خدانی
 به برد ثابت و زد گردش باسانی
 مگر زن حکم اندر قصاص خدانی
 ستان آن زن و کشتش زخم خدانی
 که شد زتش پس از ایمان خدانی
 در آمد بتوریت و ملک شجانی
 گرفته خمس میان رجال و فرسانی
 سه سهم بهر سواران یکی بر جلانی
 ز مرد و اسپ به تقسیم ثلث دثنانی

<p>ز حکم شرح درین سال گننه اندخیزین نکاح کرد درین سال هم جویریہ را چو گشته شد پدرش حارث آن امیر آمد چو شد غنایم آنجا بغازیان مقصوم پس زاده بذل کیزی آمدنگ ز مکاتبه کرد از نبی گرفته ادا خبر شنیده همه مؤمنان را کردند و گریزین بنت امیه عمه او</p>	<p>نیم آمده و حج بیت ربانی که بوده است زن سافعی بن صفوان بروز جنگ بنو مصطلق بخذلانی بهم ثابت بن قیس گشت از زانی ببست عقد کتابت بهر انبشانی بنییش با نومی خود ساخته پیشانی ز بند بندگی آن قوم را نتابانی بجای کرد خدایش بنض قرآنی</p>
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

آغاز احوال سال ستم هجرت

<p>چون پنج سال ز هجرت با نضام رسید که قید آمده از حرب گاه قرطانی سویج اول سال ششم حیان بنود مبطن انگه با پدرش خون نشستن باران دو صد سوار و پیاده گرفته همراهِ بقریب بیر معونه کنار آب رجیع نبی بران شه دارقت و ترحم کرد گر خنیز شنیده خبر بنو لحيان بجست و جو همه سوراند و فوج سویج نیافت</p>	<p>تمامه اخطی یافت مسلمان دران سریه که سی مرد کرد و جوانی که سوی شام روان شد رسول و لاری سنزای غدر رساند بقوم لحيان فرود آمده بر رود بار عسانی که بود مشهد چل قاریان قرآنی برای شان شده مشغول در دعا خوانی بنان شدند به پنهانگه کهستانی مدینه کرد رجوع از نواح عسفانی</p>
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ذکر غزوة الغابة

<p>و گز غزوه درین مه بغابه بود کرن ز نایب نامی نبی بست راس آنجا بود</p>	<p>بیک برید بداهل مدینه بعدانی بنی جریدین و یکم دوزن بچوپانی</p>
------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------

عینة ابن حسین فراری آگه شد
 اسیر کرده زن و کشته مرد چو با بزا
 شب ز غفلت ایان نشسته بر نامه
 شنید سرور و مقدار را ببارش
 سوار شد پس از ان با جماعه مردان
 رسید بر سر اعدا بحیل خود مقدام
 عکاسه کشت ابان را چو شد مقابل
 پیاده گشت روان سلمه بن الکوع
 گذشته ده شتر ز اشتران نبی
 گرفته آن شتران را مراجعت کردند
 بنی عنیمت سپ و سلاح مسعوده را
 مدینه آمد و یک شتر بهر صد واد
 عکاسه اسدی شد سر چهل مردان
 بنوا سده همه کردند زان مقام فرا
 دیگر محمد بن مسلمه بدو مردان
 یک جماعه صد بدویان چو بر خوردند
 سوز مهر که بر دوشش مسلمانان
 ابو عبیده جراح را روان فرمود
 چو بر مصارع آن کشتگان گذشت آب
 به بند آمده یک بدوی و مسلمان شد
 بسی ز مال و مویشی عنیمت آوردند

تباخت با چهل از فارسان عیلاتی
 بنوم خویش برانند فوق ایلاتی
 روان شد آن زن و آمد مدینه یونانی
 روانه کرد که در یاب فوج عدوانی
 بر آمده همه پانصد ز خیل حقانی
 بکشت مسعوده را بوقتا ده سرعانی
 ز مومنان شده محرز شهید میدانی
 بران گروه بسی کرد تیر بارانی
 گریختند از آنجا بار من عطفانی
 بدی قر و ز بنی یافتند لقیانی
 بدید و داشته بر بوقتا ده از زانی
 که غازیان بگشند و خوردند بریانی
 سریه برد بسوی عنوم غولانی
 رجوع کرد گرفته دو نیست بعرانی
 شبانگهی سوی ذمی بقصد رفت تبارانی
 خودش حبیح شد و جمله همزمان فاد
 رساند تا بدینه بصد پریشانی
 بهمربیش چهل مرد کرد جولانی
 گریختند با فتادگی و خیزانی
 بدین بهانه را شد ز بند خذلانی
 سوی مدینه نمودند زود رجحانی

دیگر شنید که درین سال زید حارثه شد
 تخت تاخت و آورد از گروه سلیم
 دیگر براند به قتا در اکبان بر عمر
 گرفته چند سیران و نفره صفوان
 از آنکه آمد ابو العاص در اسیرانش
 شنیده دخت نبی زینبش شفاعت کرد
 بهم شدند ابو العاص و زینب از فرمان
 دیگر با نژده صحاب تاخت جانب
 دیگر برفت با نصد سپاه بر حصی
 که برد و حیه کلبی بنامه سرور
 هفتاد جمله متاعش گرفته در حصی
 بنو طبیب شنیدند و پیش رفته هفتاد
 رسید حیه مع ایجر در مدینه و گفت
 روانه کرد بنی زید را سوی حصی
 رسید وقت سحر زید فوج و غارت
 هزار پیش صد اطفال و زن بدست و
 که زید ابن رفاعه بر نبی آمد
 بنی زید و ما نید زید را زن مال
 دیگر بر سم تجارت جو عزم شام نمود
 بیرون مال خود و مال دوستان همراه
 رسید تا حد وادی القریه به هم نشب

امیر بیخ سرایا به نیک ساسانی
 گرفته مرد وزن و چارپا فراوانی
 که سوی مکه همی برد مال صفوانی
 بحضرت نبی آورده شاد و خندان
 که بوده هست نبی را همین جانی
 چو یافت امن مشرف شد از سلمانی
 برفت کلفت فرقت از الفت جان
 گرفته بست شتر از گشت عمارتی
 سبب بیان کتمش مختصر ز طولانی
 بسوی قیصر و در دهن صله رحمانی
 که بوده است یکباره از زبان فتالی
 متاع حیه کشیدند از و با ساسانی
 حدیث راه به پیش رسول بزوانی
 شبانه رفتی و ششستی روز پنهانی
 هفتاد و یک پسرش کشته شد شتابانی
 سوی مدینه نمودند باز گردانی
 نمود کاغذ عهدی که کردش از زانی
 بسی زرستی عهد گشت فرحانی
 برآمده ز رجب روزهای چندانی
 بضاعت دیگران داشت از قرآوانی
 که اسم گرفته بد آنجا رئیس دورانی

بنو فزاره بغارت گرمی کمر بستند
 درآمدند و بگشتند و مال را بردند
 بدید سرور دین حال زید و کرد و فرستاد
 پس از همی که شفا یافته زره بخوری
 رسید بے خبر و کرد جمله را محصور
 نموده فتح چنان برد در بنی آمد
 سریه بن عوف آنکه عهد چنان بود
 نشانده در بر خود بست بر سر شتر
 رفت پیش بنو کلب دو مته الجندل
 گرفته اصبح بن عمر و چند کس اسلام
 نکاح خویش همان روز با تمام بست
 علی ابن ابی طالب اندران ایام
 از آنکه در وسط خیبر و فدک بود
 ز شاهان دو هزار و ز اشتران پانصد
 و گرسریه عبداللہ عتیک شنوید
 برون ز حصن سه یاران خویش را بنشانید
 بگشت رفته ابو رافع یهودی را
 جوان رئیس چنان مرد اسیر بن زمام
 شنید سرور و ابن رواحه را آنجا
 ز راه خزع بگفتند اسیر را که نبی
 بسی سوار روان شد ازین طمع آمد

که بوده اند و رانا بعان بقعانی
 جمیع آمده زید از میان گزیرانی
 شتاب کرد بتدبیر زخم دوزانی
 کشید فوج بوادی القری با کمان
 گرفته گشت بان پیر زین بدشان
 نبی بفرح کشیدش بسینه چپانی
 روانه سرور دین کرد ماه شعبانی
 بگفت رو بجاد و بدین خواهانی
 سه روز کرد همی دعوت مسلمان
 که بوده اند همه کلبیان نصرانی
 که بود دختر اصبح رئیس ایشان
 رفت سوی بنو سعد با صد عوانی
 بر آنکه خیبر باین را شوند معوانی
 عنیت آمد و آن قوم شد گزیرانی
 که رفته بود به خیبر به طرز اکمانی
 شبانه رفت خود اندر حصا پنهانی
 بخوابگاه سه زخمش زده بکمانی
 بجای او شد و آمد بر زم جو یانی
 روانه کرد بسی غازیان بسرعانی
 ترا بخواند کند بر تو کار از زانی
 رو یف هر کسین بضاریان شجانی

مدینہ باز رسیدند شاد و فرحانی
 بجائے ہشت کس از سارقان نوقالی
 جامعتی بمدینہ نزل قحطانی :-
 بہ صدق دل چو نمودند عرض ایانی
 بچند روز کہ خواندند درس قرآنی
 کہ تاروتد بمرعای نوق البانی
 شدند مرتد و گشتند مرد جوانی
 درآمدند براہ وطن بویانی
 برفت دیافت و بگرفت و کرد جان
 گذشتند ہمہ را بریگ تابانی
 سیاست ہمہ گشتہ شدند زنیسانی
 کہ رفتہ بدبد و کس سوی مکہ نہانی
 بیک نفر کہ بنی را کشد با کماتی
 کہ آمدہ مگر این مرد عذر جوانی
 فنا دبر زمین آخر زد دست لرزانی
 بگفت یافت ز سرور چو ہن ملکاتی
 بعد امید فرستادہ بوسفیانی
 بیک رفیق پی قتل دشمن جانی :-
 ولی معاویہ بشناختن شتابانی
 برہ دو چار شدند و فنا دجیرانی
 اسیر زندہ و گر گشت از ہرسانی

براہ رفتہ ردیفان بہر یکے گشتند
 و گر سریہ کہ ز ابن جابر تہرے
 کہ از بنوعونہ آمدند پیش ازین
 نبی بصفہ مسجد نشاند البشان را
 شدند چون ز ہوائی مدینہ مستقی
 بی معاویہ نشان نبی چنان فرمود
 چورفتہ شیر شتر خوردہ یافتہ آرام
 بہشت اشتر معے کہ بود بگر فتنہ
 بچند مرد روان کرد کر ز اسرور
 بریدہ دست و دگر باو چشم بر کندہ
 رشتگی ہمہ مردند و در سقر رفتند
 و گر سریہ عمر بن امیہ شنود
 از ان سبب کہ فرستادہ بود بوسفیان
 چورفت پیش بنی با صحابہ گفتہ
 کشیدہ آسید چو بستش گرفتہ خنجر بود
 چو مرد را بگر فتنہ از پے تفتیش
 کہ من ز کہ پے کشتن تو آمدہ ام
 گذشتن بنی و عمر را روان فرمود
 رسید مکہ و می کرد طوف کعبہ نہان
 گر نختند و دو جاسوس در پے افنادند
 نمودہ حملہ یکی را ازین دو کس گشتند

گرفته همزه خود آن اسیر را بردند

شنیده قصه بی آمده بجزالی

آغاز قصه صلح حدیبیه

میان روز و شبانه بلال ذی القعدة
پی زیارت کعبه به نیت عسره
زمؤمنان دو هزار و چهار صد مرد
رسید تا بحدیبه مهتابه حرم
که ناقه اش پشت و خلاف عادت
بنی بگفت خدایم که دش از رفتار
چو یافت منع خدائی مقام کرد آنجا
بر آنچه بود در آن آب برگرفتیش
کشید از رد معجزه جعبه یک تیری
بدیل بن ورقا آمده درین اثنا
بگفت کعب و دیگر مکیان همه جمع اند
اگر بخنک در آئی نه روی برتابند
بنی بگفت که با هر خنک نامده ایم
قریش را که پروبال خنک بکنند
اگر مصالحه خواهند ما قبول کنیم
بکار خویش نشینند و کار ما بینند
اگر به غلبه بر ایم بر همه اطراف
قریش را بدو کار است اختیار وقت
بلند قدر شوند از بدین ما آیند

روانه شد ز مدینه رسول ربانی
نه بهر خنک پرستندگان اوثانی
جلوگران رکابش ز رکب و جلای
ز کمه دور بنه میلهائی در عانی
ز زجرهای فراوان نمود خوابانی
نداشت ورنه چنین خوی خیر نوانی
که آب چشمه آنجا نداشت جریانی
شنید شکوه بنی از گروه عطشان
بنا و دروین شان شدند ربانی
بچند مرد خزاعی بخیر خوانانی
رسیده اند بروی تو خنک جویانی
بکعبه ره ندهندت ولی باسانی
رسیده ایم بی طوف بیت یزانی
کشیده اند پس از خنک پارسایانی
به مدتی که بر آرد بال پرانی
بقوم باسه و گر چون رسد بیایانی
شوند آن همه ما را منطیع فرمانی
که اندر سنت فلاح و صلاح الشیانی
و گرنه زلیست نمایند با تن آسانی

وگرنه صلح را امر سهل انگارند
 بدیل آن همه بشنید و گفت فرمان
 گرفت اجازت و آمد میان جمع قریش
 شنیده خاصه برپای عروه مسعود
 که ای قریش مرا چون پذیرید شما
 نه انگید شما از خلوص باطن من
 به سخن که به پرسید چون بلی گفتند
 رضا دهید که پیش محمد آرم رو
 گرفت رخصت و آمد بر نبی و براند
 شنید از نبی آن جمله که بدیل شنید
 که جنگ را دو سرست و بهر دو سر اینجا
 اگر ظفر رسد بر قریش و قتل شوند
 شنیده که کسی قوم خویش را بر کند
 و گردگشود از هر طرف فرار کنند
 چو این شنید ابو بکر داد و شناس
 ایاز جنگ فرومایگان فرار کنیم
 گفت عروه اگر بر منت نه حق بودی
 خطابهائی نمی راستنیده لطفی
 گفت بهر شما ای قریش خوش گفته است
 بجان و دل همه یارانش دوستند او را
 اگر لعاب دهن افکنند همه گیرند

بر ب کعبه که ما یم و تیغ برانی
 که ما رویم در آن جمع پندگویانی
 بگفت پندبنی را به حسن تبیانی
 ساده پیش قریش و بگفت قریش
 نیم بجای پس از مودت جانی
 نه بر شماست مراع حق خانه ویرانی
 بگفت پس به پذیرید صلح عجلانی
 بنامی صلح پسندیده را شوم بانی
 ز بر نشیب و فراری کلام طولانی
 چو حرف جنگ در آمد بگفت اعلانی
 مال کار بود عار تو اگر دانی
 زد دیگران بن آبای خویش کنذانی
 به هیچ از من از امتداد از ماننی
 ترا گذشته این قومهای شتانی
 که ای کمینه کس بطرلات مضانی
 را کنیم رکاب رسول حقانی
 بدادمی بگو اینک جواب شایانی
 چو کرد عروه لبومی قریش جوانی
 ز کار صلح نبایست روی گردانی
 همی کنند به تعظیم او نگهبانی
 بدست خویش با لند رو و پشانی

با عقدا تبرک برند آب وضویش
 با تمثال او امر ستاده اند همه
 به پیش او نکلند هیچ کس صدای بلند
 بفوج قیصر و کسری و خیل نجاشی
 شنیده باز یکی از نوکندان بخواست
 چو دید سرورین از دور گفت بیایان
 به پیش او همگی اشتران هدی برید
 چو دید و رفت و بگفت از قریش ^{لا نیست}
 به بدنه با همه لبیک گفته میرانند
 شنیده مکر زین حفص هم جاریست
 نبی چو دید بگفت این هست مکرز فاجر
 در آن میان که می کرد گفت گو مکرز
 نبی بگفت که سهل از سهیل باشد کا
 بر آنکه دایره دولت نبی امسال
 میان مکه در آیند سال آینده
 سلاح جنگ و لیکن نه بر میان بندند
 بیکدگر نه لغرض کنند تا ده سال
 اگر گریخته زین سور و کسی آن سو
 نوشته خوشت برین گوی صلح ^{سهیل} نامیم
 نخست بسمله بنویس از همان الفاظ
 سهیل گفت که بنویس لبیک اللهم

به قطره قطره نمایند دیده شویانی
 همین دزنگ که آید لبش به چینیانی
 بروی او نکلند کس نظریه ظنیانی
 ندیده ایم چنین احترام سلطانی
 ز مکیان که رود رسم صلح جو یانی
 که این فلا نشت که آمد از آن طرف ^{نایان}
 که هست معتقدند نه ما سے قربانی
 که منع هدی کنیم از حریم رتانی
 قلاده بسته بگردن شکسته کویانی
 که یابی کند او هم دمی سخن رانی
 که هست طرز کلامش دروغ گو یانی
 طلوع کرده سهیل آمده نمایانی
 رسید و صلح از ویافت ساز و سالیانی
 کند ز حد حدیبیه باز گردانی
 کنند کعبه زیارت سه روز فرحانی
 نهند تیغ و کمان در خلاف جلیانی
 بهم شوند قریش و گروه ایجانی
 دهند باز بفرست یا مسلمانانی
 نبی بگفت علی را نویس زمینسانی
 که هست بر سر سرپوره نامی فرقانی
 که نیست عرف قریش از حریم درحانی

<p>که نیست فرق میان دو جمله خندان بکلم سرور و گفتش سهیل خندان چرا بجنگ می استادمی بدنیانی که کرده تو بدان وصف کلک جانی اگر چه نیست شمار اعیون عرفانی علی نکرد ولی نحو نقش حقانی نوشت تا همه مطلب گرفت پایانی رسید سلسله بر پا و دست جناب سهیل کرده بدش بهر زهر زندانی و گرنه این ورق صلح باز گردانی نداد داد ابو جندل از پریشانی با عتداء خود و اتهام عثمانی که مشتعل شده در اختلاط اخوانی که قتل کرده به عثمان گروه عدوانی بی قبال زهر مومنان شجاعانی اشاره کرد که این است عثمانی خبر شنیده و عثمان رسید قرطانی بی عمره سما نجا نموده قربانی</p>	<p>نبی ز بحث سهیل این سخن پذیرا کرد نوشت وصف محمد علی رسول الله گرش رسول خدا اعتقاد می کردیم محمد ابن عبد اللهش نویسنده آنجا بی گفت که حقانم رسول الله به نحو لفظ رسول امیر شد ز سهیل نبی بدست خودش محو کرد و گفت درین بند که پور سهیل ابو جندل بدان سبب که پذیرفته بود ایمان سهیل گفت که این را مدار بازیده بنی که مصلحت وقت صلح را او نیست بر قریش فرستاده صلح نامه نبی چو دیر رفت که عثمان مراجعت نمود چنان به لشکر اسلام شتهما افتاد نبی بزیر درخت نشست و بیعت خواست گفت شمال بدست یمن بگرفته تمام شد چو بدینگونه بیعت الرضوان مراجعت نمودند روز دیگر صلح</p>
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

احوال نامه های سرور که بشایان طرف نوشت

<p>ز فقره ساخته انگشترین سلطان نکین سیم بدینگونه کرد کندان</p>	<p>چو نوشت نامه نوشتن بقیصر سری رسول وسط و در وسط محمد و الله</p>
---------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------

<p>که بوده اند یهود و مجوس و نصرانی بسومی صاحب بصری ز راه آسانی نخواستند و گشت مسلمان ولی پنهان خودش رساند به پسر و نیشاه ایرانی بصد ز نام نبی نام خود با پایانی شدش ز خجر شیر و به معده درانی ز تخم هائی کیانی و نسل ساسانی که داشت ملک پیامه مطیع فرمانی بشرط آنکه کنی ملک نعیم ارزانی بنام حارث شامی رئیس عنانی نداد هیچ جواب و نکرد طغیانی بجیف و عهد شریکان و ملک عنانی ولی گریز ندیدند از مسلمانانی بنذر بن ساوی رساند سرعانی از آنکه هست رسول رسول نیردانی ولی تو کار مجوس و یهود را دانی به جزیه صلح یهود و مجوس سبتانی بجسته برده و دادش بخواند قرانی نوشت نامه تسلیم دین با علانی بر مقوقس قبطی بمصر ریانی ولی نمود بحق نبی شناخوانی</p>	<p>بهشت یاد شهان هشت نامه بفرست بدست دجیه فرستاد نامه قصر رساند صاحب بصری هر قل را نامه برد این خدافه بنامه کسری گرفت نامه و ناخوانده چاک کرد نبی شنیده دعائی بدش نمود کران بچند سال بدر رفت تحت تاج عجم رساند نامه سلیط ابن عمر بر هود جواب نامه نوشت آنکه برم فرمان سومی دمشق شجاع ابن سنیب کتاب نیامد از طرفش هیچ خبر و شریب رساند عمر بن العاص نامه سرور میان برد و برادر بسی مشاوره رفت علای حضرت می آورد نامه در بحرین نخواست نامه و تکریم حضرت می نمود جواب نامه نوشت آنکه با مطیع تویم برفت حکم که هر کس که شد مسلمان چو عمر ابن امیه کتاب احکم را بلا تردد و رود بدل مسلمان شد چو حاطب ابن ابی بلتع رساند کتاب اگر چه میل مسلمانیش نشد پیدا</p>
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

<p>بجست خاطر سرور بیدیه های گران زهدیه هاشمی بوده است دل کثیر و کرد و جاریه سیرین و ماریه کاهنا بنی نجلوت خود خاص کرد ماریه را درین سنه شده رسم صلوة ^{سنتقا} ام صیه که بود است نام او رمله ز که در حبشه رفت با عبید الله بماند رمله مسلمان بدین حق محکم عبید مرد و حکم رسول نجاشی قرار یافته کابیش چار صد دینار مدینه کرد روان هر و شتر حبیش</p>	<p>جواب نامه نوشتش بحسن بیانی نبی بچیدر کرار کرد ارزانی بدند در نسب قبطیان اعیان نخواهرش دل حسان کرد شانی شد از دعای بنی نیک آیت بارانی زن عبید بد و دختر بوسفیانی میان خیل مسلمان به هجرت ثانی ولی عبید بن جحش گشت نصرانی لکاح رمله بسرور بست فرزانی نخواند خطبه تزویج و کردش از زانی میان سال ششم اینست قول حجازی</p>
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

قصه جنگ خیبر

<p>بیا شنو خبر از جنگ خیبرت گویم بد از مدینه سوی شام سوی دو فرسخ نظاۃ ابی و زبیر و سلام و ناعم اخیر ماه محرم بید و هفتم سال روانه شد بر کابش هزار و ششصد رسید در حد خیبر شام و کرد مقام گرفته بیل و سبه از درش بدر گشتند نشان شکر اسلام در نظر دیدند بنی باخریت خیبر از تفول گفت</p>	<p>که بود شهریه بود ان فراخ عمرانی در ان بهم شده ده قلعه با اتقانی مقوص و صععب و وطیح و بر او شوق دانی منو و سرور دین آن طرف سپهرانی همه پایده و وسد فارسان بچولانی گرفت ساحت آن قلعه صبح گالانی برای کار کشا و ز چند و بهقانی زدند لغزه الحبیش را با اعلانی که آمدش به نظر آله هاشمی ویرانی</p>
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

خبر به خیر باین رفت و قلعه را بستند
 قیام شکر دین بدر قلعه دو ترک
 بگفت سرور دین روزی با همه یاران
 که اوست پیش خدا و رسول او محبوب
 میان معرکه گزار غیر فرار است
 که فتح قلعه بدستش خدا کند بر ما
 بحسب وعده دلیران بر نبی رفتند
 کجا علی است بفرمود کس طلب دارد
 علی رسید و نبی داد بقیق در چشمش
 غنایش پس ازین کرد رایت منصوب
 علی به حمله در قلعه را چنان بر کند
 روایت است که آن در چو بزرگین
 بر خینند و صف آرا شدند قلعه گدا
 شکسته بسته بود آن کناره گشودند
 یگان یگان شده آن قلعه با همه مقنوم
 گذاشتند از آن ده دو قلعه را بی جنگ
 شهید گشت درین جنگ پانزده مؤمن
 غنیمت همگی قلعه کو دکان و زنان
 فراهم آمده تقسیم یافت بر شکر
 ولی صفیه بنت حنیّی اخطب را
 نکاح کرد نبی با صفیه بر تخریر

شدند جمله مهیا بجنگ جو یان
 نموده حمله همی کرد باز گردانی
 لا عظیمین غدار استی بشجانی
 و رست حب خدا و رسول یزدانی
 بجمه یک اسدی از اسود در بانی
 رسد ز مردوش این کار با آسانی
 که تا که اشرف وعده گرد دار زان
 شیند که ز مرد اور است دیده نالانی
 گرفت آب و با نسش شفای عجلانی
 بروی قلعه روان شد به جمع خطلانی
 که ماند چشم و دل دشمنان حیرانی
 نکرد باز بهنقا و مرد جنبانی
 ز قلعه کار در آمد بجنگ میدانی
 درآمدند در آن مؤمنان بسعسانی
 بدست آمده اموال با فراوانی
 به نصف مال نمودند عذر خواهانی
 ز کافران نمود و سه شدند نیرانی
 متاع ظاهری و مال با بی نهانی
 بر سهپ و مرد پس از خمس ثلث ثلثانی
 بنی گزید پلے خود ز خیل سنوان
 به مهر عشق پذیرفت شاد و خندان

چه رست آمده بعیر خواب آن بانو
 کنانه بن ربیع آنکه در سلام بود
 هنوز رسم عودی تمام ناکرده
 لطیفه که پس از فتح خیبر آمد پیش
 زنی یهودیه جفت سلام بن شکم
 بدست و شانه آن شاة کرد تعبیم
 نبی گرفت از آن گو سپندیکه سستی
 چو لقمه پیشش خورد و همیشنان نم
 نبی بگفت بیاران که دست بزارید
 بر دهر که از آن گوشت خورده بد چیز
 بتی از آن زن دهر کس که بود همراز
 جواب آن گفتمند کا متحان کردیم
 اگر نبی بگفتی ضرر نخوابی یافت
 قدم جعفر طیار شد درین اثنا
 نبی چوزان بنه عزم مرجعت نمود
 که مابقی یهودان در آن عمل دارند
 مراجعت بنمود و برفت سوی فدک
 بدست آمدش آن صنعه بی سترزه و ب

که آمده بکنارش قمر ز فوفانی
 رئیس وقت بدش شوی از پنجره
 قاتل گشت بچنگ گروه ایماق
 کنون شنو که همش معجز نبی دانی
 هدیه پیش نبی برد شاة بریانی
 که بود زهر پلاهل برگ عجلانی
 بقیه جانب حضار کرد از زانی
 شد آن ذراع بسرو و بر از گویانی
 شنیدم اینک ازین دست حال نهانی
 مگر رسول که کردش خدا نگهبانی
 سوال کرد چو از وجه زهر پاشانی
 بدعوت که بحق است یا سبطلانی
 و گرنه باز نهیم از تو خلق رنجانی
 ز هجرت جثه باعیال خلانی
 گذشت مطه مدک را بدلسنان
 همیشه نصف خورشید سوزانی
 که بود صنعه مزروع و ارض لسانی
 موز خاص بی خویش و آل و سنوانی

غزوه وادی القری

اگر وقت خطه وادی القری می آسانی	و اگر چو فوج کشتی در جادی لاخر می کرد
عمل نموده بیک هفته کرد جانی	که از محاصره چار روز شد مفتوح

مدینه آمده بر سر سرب کرد روان
 عمر نخست هوازن برفت و باز آمد
 دیگر سرب صدیق بر فراره گذاشت
 سیوم سرب بشر بن سعد انصاری
 روانه گشت بسی غازیان جنگ نمود
 سپس بدو صدوسی مرد عا لیشی
 هجوم کرده بران قوم گشت جندی
 چو بشر سعد از ان خرم تندرستی یافت
 که بود ناحیه از زمین دران شد جمع
 شنیده آمدن بشر منتشر گشتند
 وفات یافته بنت رسول ام کلثوم
 چو دید بر دل عثمان غمش بنی فرمود
 سه درجه منبری آرست مسلمی می
 به مسجدش به نهادند و از بی خطبه
 که یک ستون ز ستونهای مسجده عالی
 همان ستون که بران به خطبه شریف
 بلرزه آمد و ترکید و ناله کرد آغاز
 فرود آمده بگرفت سرورش بکنار
 ازین قیاس بسی معجزات سرور است
 که یافت است حیوة و تحرک گفتار

که تا کند همه ما را مطیع فرمان
 گریختند چو کفار شر به سرعانی
 شدند قوم کلابی قیتل و زندان
 سوئی فدک به نومره ماه شعبانی
 جمیع آمده بشر از قتال میدانی
 بسوی ناحیه سجد کرد و جولانی
 گرفت خیل مواشی و گله صنای
 جبار رفت بسده صد جوان سحجان
 برای غارت میزب گروه عطفانی
 گرفته مال بسے کرد باز گردانی
 پس از رقیه که بوده است جفت عثمان
 بدادی بتوگر بودی دخترم ثانی
 ز چو بهای درختی که بد بیابانی
 بنی بر آمده بالای آن بشادانی
 که بوده اند همه نخلهای بستانی
 بدشتی شرف اعما دارزانی
 چنانکه سینه عاشق بدر دهرانی
 قرار یافت ز نالانی و ز لرزانی
 که هست در بر اهل حدیث اذغانی
 بسا جماد و نبات و صنوف حیوانی

قصه سفر که برای قضای عمره که در صد و بیست و یک سال گذشته از ان باز ماندند

چو دیده شد بدینه هلال ذی القعدة
 گنذ تا سفر مکه را همیاساز
 شد ندبعتیان حدیبیه همراهم
 بدو هزار مسلمان روانه شد سر و
 سلاح بر شتران بار کرده هم برود
 بذی الحلیفه چو احرام بست از پی بد
 چو کرد پیش روان اسلحه و سپار
 گفت بیشتر ک برده با دو پایان را
 به بشر سعد شد ایما که اشتران سلاح
 باهل مکه خبر شد که آمد آن سرور
 بنی رسیده خود آنجا مقام کرد که تا
 برون شدند همه یکیان ز مکه سرور
 بذی طوی به فرستاد بدنه با اول
 خودش بناقہ قصوی رکوب و هم
 میان مکه درآمد بنی ز راه حجون
 رسید کعبه بران ناقه تلبيه گویان
 بیوس سنگ میه کرد او ابدین گو
 بگرد کعبه بر اشتر نمود هفت طواف
 حریم کعبه همه پر شد از مسلمانان
 بوستان پی کشف جلادت قوت
 طواف کعبه چو شد بر صفا و مروه گذ

برفت حکم بنی در گروه یمانی
 شوند بهر قضا باز عمره را بانی
 گو کسی که درین عرض کشته بدانی
 صد هب پیشکش با تجمل و شانی
 چه نیزه با چه کما هبا چه خود و خفاتی
 نمود شصت شتر افلا ده پوانی
 بذی الحلیفه رسید رسول بانی
 گنذ محمد بن مسلمه نگهبانی
 برانده پیش بجای فرخ بنشانی
 چو خیل اسب در آمد بر ظهرانی
 قریش باز گذارند شهر سرعانی
 بگو هبا بنشستند و جامی ویرانی
 به بطن نا حج ازان پس سلاح روانی
 کشیدش ابن زبیر بر جز گویانی
 گرفت دیده نظارگی فروزانی
 مساس کرد حجر را از چوب چو گانی
 سپس نموده ز لبیک خموشانی
 روانه زیر بغل بر کتف چو شجانی
 بجز بنی همه کردند طواف جلانی
 سه شوط گفت که سازند طور ملامی
 بهفت سعی فرغت نمود ز بسانی

زومی طومی شمران را بمره طلبید
 سه روز با همه یاران بکده ماندندی
 بخوست خست رجعت بکعبه چارم
 ز حکم سرور دین چند اندرین است
 حرام خوردن لحم خزان الهی کرد
 حرام کرد دادن را از چارپا و طیور
 نمود همه زبیح مغایر شکر
 درین سفر بجاعت قضای صبح بخورد
 بجز صیفیه زمیمونه شد کجای
 رفت با تن پنجه بن ابی العوجار
 شدند گرد برو کافران زهر جان
 ز کشته پشته دوسو بسته گشت درین
 مدینه در سفر سال ششمش بردند
 سر بر برد درین ماه غالب لیشی
 بتاخت وزود عینت گرفته باز آمد
 سومی فدک و صدم و همدان مبارک
 که بشهر سعدان قوم خسته آمده بود
 علی الصباح بران قوم غالب کرد
 ز که سومی مدینه درین مه آمده اند
 بن الولید بن العاص و بن طلحه
 نجاع بن وهب اندرین جمع اول رفت

همه بنام خدا کرده نحر و قربانی
 رساند هر تشنگ عمره را با پایانی
 رجوع کرد و مدینه رسید فرحانی
 وقوع یافته تکیه به خیرش دانی
 نه گور خر که بود وحشی و بیابانی
 گریست مخرب دران و تاب برانی
 نکرده بخش میان رجال و زنان
 پس از اذان و اقامت برسم اعلام
 بکه از پس عمره بقول بر قانی
 بذی سلیم و سن مهنت یافت پایانی
 در آمدند بی کشت و خون بهجانی
 امیر لشکر دین زخمی اندر ایشان
 دو چار هر سالش او فغان و خزان
 سومی گدی بختک ملوسیان دانی
 چو قوم آن طرف افتاد در گریزانی
 بگوشمال بنومره کرد جو لانی
 کشیده بود در انجا بسی پریشانی
 بدتش آمده از چارپا فراوانی
 سه کس بی طلب دولت مسلمانان
 بنام خالد و عمرو سمی عثمانی
 بسومی ذات عرق بر طریق الکافی

<p>بر بیت و چار نفر بخت بر هوازبان عقینت غنم و اشتران بدست آورد برفت کعب غفاری بپانزده مرد به منتهای گذرگاه ذات اطلاق نگرد و هیچ کسی اندرین قتال ایفا</p>	<p>نمود غارت اموال صبح گامانی مدینه پانزدهم روز کرد در جانی مبشرش از حد اطلاع یافت پایانی بهم خورد به جمع کثیر عدوانی مگر بخت امیر گروه ایمانی :</p>
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

قصه شهید شدن زید ابن حارثه و جعفر طیار و غیره

<p>روانه کرد بنی سوی مویته البلقا بدان سبب که فرساده بود حاشا فرود آمد در مویته از موضع شام بنی شیند و چنان شکری مرتب است و آن گفت که گزید کشته خواهد شد پس بعد از آن روانه سردار سینه شد از بصره که این روانه هم مقول بر که راست همه مومنان گزیده کن بنی مشایخه فرید و تائینیه و داع بزید وقت و داع آنچنان وصیت کرد نخست دعوت اسلام لشکارا کن اگر بسهل نگیرد دین اسلامی بجزیه هم بزنند سر اجابت را روانه لشکر دین کشته با تحمل و شان دوید بر شرف و جمع کرد لشکر را</p>	<p>سریه سه هزار از رجال در کبابی بنامه جانب بصری بشاه نصرانی که خوش بخت شرییل سفله غسانی بزید حارثه میرایش کرد ارزانی به جعفر ابن ابی طالب است سخانی شود جنگ چو جعفر شهید میدانی گفتند امیر یکی را از فوج سخانی بدست هر که خوش آید ز مام رضوانی که بود جامی لقا و وداع خدایان که چون رسی بد پار گروه غسانی به کس که گزاید بدین حق خوانی بخواه جزیه از ایشان چیست بحالی بلوش به قتال آنچنان بود آن خبر رسید پیش امیر سرعانی بصد هزار رسانید فوج احوالی</p>
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

بشام و روم خبر رفته منتشر گردید
 بعد شکوه و تجمل نشست در بقیع
 رسید لشکر اسلام در معان و شنیدند
 دو شب مقام نمودند از بی شومی
 بران شدند که چندی بر راه نشینند
 و لیک ابن رواحه ندا داد این ^{صت}
 بر اند لشکر اسلام تا حد موده
 گرفت زید لوای محمدی در دست
 چو گرم گشت بهر سوی آتش بکار
 نمود زید بسی مردی و شهیدش کرد
 گرفت جعفر از ان پس لوای اسلامی
 بجنگ آمده پے کرده بای شقرارا
 به تیغ یک شقی دست او جدا گردید
 شدش بریده چو دست دگر به تیغ
 هجوم کرد بران مشرکان در فغان
 شهید شدند و چند زخمها خورد
 بگفت با همه یاران شهید شد جعفر
 گرفت ابن رواحه لوای بن زین
 لو اگرقت پس اقدم بجنگ کفار
 رسید نوبت خالد که او گرفت لوا
 جدا شدند و لشکر زید گرفت

هر قتل آمده بالک سواد انسانی
 که تا حد و عمل را کند نگهبانی
 خبر ز کثرت اعدا خلاف حسابانی
 که تا چه مصلحت آید نظر با معانی
 طلب کنند مدد از رسول ربانی
 دلیر کرد همه را بجنگ خوانانی
 که شد مقابله با مشرکان غسانی
 بهر کنار ه صف ارا گروه شجاعانی
 ز تیز نیزه همی شد حیات جوانی
 رسید نیزه دشمن بسینه دوزانی
 فرود آمده از پشت اسپ چو کانی
 بسی بکار شجاعت نمود جولانی
 لو اگرقت بدست دگر بجهلانی
 ز پای بود به پیش لوا بو پایانی
 به نیزه ماش گرفت و تیغ برانی
 بنیش دیده میان ملک بطیرانی
 که هست جامی دو دستش دو بان برانی
 هم او شهید شد آخر حکم زیدانی
 شهید گشت شتاب اشجاع کجملانی
 گرفت بعد از نیکار جنگ با یانی
 کس نه فتح و نه همت نه بد سخن رانی

زمین معرکه گویا بر بنی برودند
 بگفت برو چو یعلی بن ائیه خضر
 بگفت آری بفرما بگفت بی کم دست
 چو این قضیه باه جمادی الاولی افت
 نبی سریه عمر ابن عاص کردرون
 بسوی ذات سلاسل بوده اند آنجا
 رسید عمر بن العاص دید کشت شان
 دو صد هاجره و انصار کشند رفتند
 درین سریه که بو بکر و هم عمر اید
 جواب شد تو امیری مامدو گایم
 باتفاق بر اعدا رسیده جنگیدند
 چو دشمنان به پراگندگی در افتادند
 ابو عبیده جراح با سه صد مردان
 که بوده اند در آنجا بنو جهینه مقیم
 بر اشتران جو و گندم بکرمی بردند
 ابو عبیده قتال جهینه در سر وقت
 ز روی صلح ندانم که از طمع شد
 گذشت پانزده ایام و رفت غیر و نیز
 باند لشکر اسلام در تحبس شان
 گذشت کار ز بسبت و تمشتر خوردند
 از آن بغزوه خط این سریه شد مرد

چشم معجزه بخش نامد پنهانی
 تو یابده خرم یا ز من تو بتانی
 بگفت اتم بالله جمله میدان
 ز موده لشکر دین کرد باز گردانی
 به سه صد آدمیان و سی سپه زانی
 بنو قزاعه بغارت گری شتابانی
 مدد طلب بنمود از رسول ربانی
 ابو عبیده جراح امیر ایشان
 بگفت عمر امیر یدیا که اعوانی
 شنیده عمر بن العاص گشت جوان
 فتاد لشکر کفار در پریشانی
 نموده لشکر دین در مدینه رحبانی
 روانه شد به قبیلہ کنار عمان
 همی شدند مسافر بر راه طغیان
 از آن طرف شده غیر قریش سیرانی
 و لیک دشت بران غیر چشم دوانی
 مرجع است که باشد بی نگهبانی
 گریختند جهینه به ترک اوطانی
 فتاد از طرف زاد در پریشانی
 نامد قوت بجز برگ ام غیلانی
 که بهر تغذیه کردند برگ ریزانی

ستوه آمده لشکر زبرگها خوردن
بنام عنبر و در جبهه بود یک کوهی
ستاده کرده کسی یکد و خار بپوش
تمام گشت درین ماجرا چو ماه خب
چو در مدینه رسیدند قصه سر کردند
بسوی خضره بخدی بپا نزدده مان
برفت و گشت و به بت و غنیمت
ابو قتاده و گرفت سوی بطن صم
بعامر بن اضبط دو چار چون گشتند
بطن کفر محکم بگشت عامر راه
بهی کردن تکفیر آنگه گفت سلام
بر نبی چو محکم رسید و آیه شنید
نبی دعای بدش کرد و او ز جابر خا
زمین فلکده برونش چو گور کردندش
برادرش شنیدند و آمدند بهم

فلکده دایه دریا بشکل حیاتی
که تا دو هفته بخوردش گروه ایانی
در از بد ز بعیر بلند کوهانی
ابو عبیده به شرب نمود در جانی
از ان بخورد بشی هم قاید لحنانی
ابی قتاده روان شد بجاه شعبانی
دو صد غنم دو صد شتر ز قوم غطفان
محلّم ابن جهمه بدش زاعوانی
سلام خواند بر اهناباد ایانی
ز راه بحیردی گشت و عیظ لفسان
نزول کرد درین شان وحی نیروانی
بگفت در حق من کن دعا عفرانی
میان هفته بردانه هجوم گریانی
دو بار رفته چنین قهرمان یزدانی
یزیر سنگ نمودند برده پنهانی

قصه فتح مکه معظنه

رسید وقت که از فتح مکه بکشایم
چو فتح مکه کردوشد بلند دین خدا
در آمدند کروما گروه در سلام
نشان کفر نگویند و محو شدن فتح
ز شرط صلح حدیبیه بود تا نکلند

در سخن به کلید درست بیانی
زمین با من رسید همان بامانی
ز کعبه شد بخش شرک و حس او ثانی
بلند شد علم دولت مسلمانانی
معاهدان کمی را در گسترانی

رود بجهت خواه در امان قریش
 بنو خزاعه همه عهد با بنی بستند
 و لیک این دو گروه از زمانها دور
 جماعه زبنی بکر از پس این عهد
 با خنده جمع خزاعیان شبگیر
 فروختند بر آب و تیر استخک
 قریش کرد بنو بکر را مدد بسلاح
 مدینه عمر بن سالم خزاعی رفت
 بنی شنیده بگفت عمر را کنیم مدد
 شنیده قول بنی باروان ابوسفیا
 که هر چه رفت ز ما یک شبانه عذر بنی
 بنی نکرد پذیرا سوال بوسفیان
 بنی بعایشه فرمود ساز ساز سفر
 بخانه ساز سفر ز آورده هیاستند
 چو دید آمده صدیق گفت عایشه را
 کنون که جنگ بنو الاصفهست دور از وقت
 بگفت عایشه و الله من نمیدانم
 چو خاصه گان متفرس شدند و پیدا
 بحاطب ابن ابی بلتعہ گذشت خیال
 نهان بطره طرار یکز فی کوش
 بلیست ناو در هوار بود حش بست

بر آنکه خواسته باشند قوم شتانی
 شد از قریش بنو بکر عهد خوانانی
 بهم محاربه می داشتند و عدوانی
 که بود نوفل دایم ریس ایشان
 بکشتن کیکی آمد فتن بقیطانی
 قتال تا بمرم هم نیافت پایانی
 شریک جنگ شدند در شبان کمان
 خبر رساند ازین گونه نطقن بمانی
 اگر قریش نمودند عذر زینسان
 برفت سوی مدینه به عذر خوانانی
 جدید عهد و پیمت اگر تو بستانی
 بکه آمده بیدل بصد هر اسانی
 ولی نگفت بعزمی که دشت پنهانی
 نهان زد دیده عامی و عین اعیان
 که نور چشم من این چیست تازه سانه
 کجاست عزم بنی باز گو چه میدانی
 به پرس خواهی اگر از رسول نزدانی
 تر و سفر از چارسو نما یانی
 نوشت نامه سوی کیان زنانی
 به بود جی بنشانند ز پرده کمانی
 روانه کرد شبانکه بکه سرعانی

بنی بو حنی خبردار شد روان فرمود
 بتا ختنه علی وزیر با مقداد
 چنانکه گفت بنی یافتند آنجا پیش
 نوشته بود که عزم سفر نبی دارد
 ز اہتمام سفر ہر چه بہت میدانم
 من این خبر بنوشتم کہ تا شوید اگر
 کتاب خواندہ بجاطب نبی طلب نمود
 نیز کرد از ان پس میان شہر و دیار
 دوروز از رمضان بدگذشتہ یادہ روز
 بدہ ہزار جوانان روانہ شد سرور
 بنی رسید بر آب کدید کرد افطار
 رسید نخست افطار روزہ داران را
 بہ جحفہ آمدہ عباس با بنی پیوست
 جو ابن حارث عم رسول بوسفیان
 براہ آمدہ پوزشک نمود بخشدیش
 خود اور رسید با بیان و پورا و جعفر
 جیوش عالیہ در منزل قدید رسید
 بجز مہاجر و انصار بود شش شکر
 غفاری و مزنی و سلیمی و اسلم
 در ان زمانہ کہ رایات لشکر عالی
 بزینبار گرفت رسید بوسفیان

سہ مرد را پی آن زنکہ صبحکا مانی
 بسوی روضہ خاخ آمدند جو بان
 گرفتہ نامہ نمودند باز گردانی
 و لیک نیست میرش بجد اعلانی
 برو بنگ شام فوج مای طوفانی
 ز من بحق شما خاست دست احسان
 چو خواہست عذر نبی کرد و غفوش از زانی
 ز ہر طرف عرب آمد بر سم اعوانی
 کہ کرد لشکر دین از مدینہ جو لانی
 زد و ہزار و گرشد براہ لقیانی
 کہ بودہ است میان قدید و عسفانی
 کہ شدت سفر آید از ان باسانی
 زنکہ با ہمہ اہل و عیال فرحانی
 کہ کردہ بود ہجائی رسول ربانی
 گذشت معملہ یوسفی و اخوانی
 ہم ابن عاکبہ عمہ اش بدینیان
 بداد ہر یکی راریت جدا گانی
 نظیر یکدیگر اندر تخیل شانی
 عماید جہنی و انسجے سبحانی
 بلند گشت بہ میدان مرقطہرانی
 پی قریش کہ بودند جملہ ترسانی

قرادلان بر سرور گرفته بر دندش
 خطاب رفت بعباس تا بوسفیان
 که تا نظاره کند شان لشکر اسلام
 گذشت در نظرش عسکر مددگاران
 گذشت لشکر انصار و بس گران دیش
 بگفت سعد عباده چنان بوسفیان
 سوار گشته میان مهاجران سرور
 رساند باز بعرض نبی ابوسفیان
 بنی بگفت که امروز روز مغفرت است
 بخوف غلبه انصار بر قریش بگفت
 چو غزل منصب نصب علم سعد نمود
 بداد رایت خود را بنی بدست زبیر
 بفوج گفت بنی جمله احتیاط کنند
 امان بهر که با ستار کعبه خجک زند
 به بست هر که در خویشتن پناه در است
 بنی بنا و مقصودی سوار اسامه دلف
 مهاجران پس و انصار پیش میرفتند
 شکوه دیده بعباس گفت بوسفیان
 بگفت و خجک ملکش مگو نبوت خوان
 بجمله فوج مدد برد خالد ابن ولید
 بنو زبیر و بنو بکر مجتمع آخبا

بمیس گفت پذیرفت او مسلمان
 فراز صحره پائین کوه نشانی
 یگان یگان همگی فوج را برش خوانی
 بید و کرد ز هر قوم نام پرسیانی
 بدست سعد عباده لوای ایشان
 که این است روز قتال حرم یزانی
 بصد شکوه در آمد چو شاه شاهان
 شنیده بود ز سعد آنچه حرف طغیان
 شود بکعبه ز تعظیم جامه پوشانی
 برو علی و لواری از سعد بستانی
 بقیس داد که بد پورا و شتابانی
 بگفت تا بچو نشستاده گردانی
 بقتل کس نکند بدو تیغ افشانی
 امان بهر که رود خانه بوسفیانی
 بخجک هر که در آید شود همان فانی
 عشیق جانب یکدست آید در ثانی
 در آمدند ز اعلامی مکر خسانی
 که ملک ابن خث شد عظیم سلطان
 که یافته است بالظافهای حمالی
 ز اسفل حرم از هتال فرمانی
 که بوده اند برای قریش اعوانی

بشورش آمده کردند جنگ با خالد
 در آمدند گریزان بجانه مائی قریش
 عروج کرده ببالای کوه بوسفیان
 قتل شد ز بنی بکر بیست و سه نفر
 روایت است که بابوهریره گفت
 چو آمدند به قتل قریش ایما کرد
 روان شدند بفرمان دهر که ایست
 شنید و آمد و نمود عرض بوسفیان
 چه خواستی که نماند قریش بعد ایوم
 بنی بکفت که کن منع جنگ از او باش
 بیستم رمضان روز جمعه کرد بنی
 چو روز سال بتان بوه اندسه صدو
 نه طوف خانه نه قربان کس بنام خدا
 که ای خدای بر من چند این بتان داری
 رسید و حی که اصنام را بر اندازد
 سر عصار زده بر روی چشمهای بتان
 باین اشاره بتان بر زمین فتادندی
 شکست هربت و پرده خست خانه از اصنام
 بنو خزاعه همان بت همی پشیدند
 بلند کردند بنی پایه علی احسان
 گرفته آن بت روئینه را علی انگند

گریختند چو گشتند گشته چندان
 درین میان بسی فتنه یافت ثورانی
 برای بستن در شد بلند افغانی
 گرفت بر در مسجد قتال پایانی
 برو بیار با بضار یان حسدانی
 از آن مردم او باش و سفله خوئی
 کشیده تیغ بگردند خوش زبانی
 که یافت خون گران قریش از زاری
 ز لطف است که این حکم را بگردانی
 بهت آنکه در قوم را به بندانی
 طواف خانه کعبه و کسره او ثمانی
 بنام هر بنی قومی بطوف و قربانی
 ز حال کعبه در آمد بشکوه گویانی
 ز بندگان خود اصنام را پرستانی
 بنی گرفته بدست آن عصای چو گانی
 بگفتی آمده حق و برت بطلانی
 بدند کوبیدند ابا حسان
 مگر بیتی که بدش فوق خانه سگانی
 که بود از همه اش پایگاه فوقانی
 علی نمود ز دستش بسفت چو گانی
 بقوت حق اعلی بسوی ستمانی

چه معجزه که فداآت را شکست بچوید
 کلید خوست ز عثمان طلحه مجببی
 که تا کشاده در کعبه را ازان مفتاح
 بجد گرفته ز ما در بدست سرور داد
 ورون خانه نبی با اسامه رفت و بلا
 بنی نماز و دعا خواند چون بر آید شد
 که جبرئیل فرود آمد و فرود آورد
 بنی سپرد نمود آن کلید عثمان را
 بنی بروز دیگر خواند بر صفا خطبه
 ز انفعال عرق گشت آبروی تیر
 چو شد ز بیعت مردان فرغش حاصل
 میان خیل زنان بند نیز نهان بود
 کمیده بود دل حمزه را بروز احد
 نبی گفت که شرک خدا نباید کرد
 گفت هر چه ز مردان بعد از گزفتی
 بعدشان بجز اسلام بوده است
 بنی گفت بنایست مال کس در دین
 که هست مردی و خیر و یوسفیان
 مرا حال بود یانه این نیدانم
 شنید گفت سخنانی او ابو سفیان
 بنی بخند و آید زین سوال و آ

چه قوتی که کرانی گشت ز اسنان
 که داشتند دست سوری و نیاکان
 درون خانه رو و از بی دعا خوانی
 ولی برسم امانت گفتت استانی
 خرید عاجب و در بست از شتابان
 کلید خوسته عباس و کار در بان
 پی ادای امانات وحی قرانی
 ز صدق خواند هم او کلمه مسلمانی
 بعفو کرد بدل انتقام عصیانی
 درآمد در ایمان رجال و نسوانی
 نمود پیر زمان شرط عقد ایمانی
 که بود دختر عقبه زن یوسفیانی
 ازان سبب ز نبی بدو پیش برسانی
 شنید و آمده بیاب در سخن رانی
 بجهت ما همه بجا یگان تو خوانی
 شرط عهد زنان را کن آنچه توانی
 سوال کرده بر آورده سر با عدلی
 همی رسم بنال فیل ازینها کن
 زمان چه گونه نامند خانه ما مانی
 نسبت بر چه سخنان کنی و با اینستان
 گفت ای تو که نسبت عده را مانی

بگفت آری منم بند عفو کن تقصیر
 نبی بگفت که هرگز زنا نباید کرد
 نبی بگفت که اولاد را نباید کشت
 بگفت ما همه اطفال را به پروردیم
 شنیده این سخنش بر بدبختی او
 بقتل حنظله کرد این کنایه کاندرد
 نبی بگفت که بهتان را نباید بست
 چگونه زاده کشت را بدگیری بنیم
 نبی بگفت که عصیان دین نباید کرد
 گرفته همراه خود مادر و پدر را شاد
 نبی نجاست و پوزش نمود گفت
 بسا قریش درین روزگان مسلمان
 بچند کس که نبی گفته بودند نیستان
 ازان میانه هلال بن حنظل بود است
 به ملک خود دو کینه مغنیست داشت
 بوقت فتح با ستار کعبه در پوست
 ازان دو قینه یکی قرینه این پذیرفت
 علی بگشت شتابان بشارت ابن لقیط
 چون عکرمه بن ابی جهل یافتند اسلام
 هم ابن سعد ابی سرح نامش عبدالله
 چون فتح مکه شد الضاریان بهم گفتند

ترا خدای بپوشد بذیل عفرانی
 بگفت حره کذب هیچ میل بازانی
 که هست کشتن اولاد جهل و نادانی
 شما به تیغ بکشید عهد شبانی
 عمر به قهقه در آمد نبی بخندان
 قتل کشته بد آن زاده بوسفیانی
 بگفت و التذرشت است کاهتانی
 که این ست فتنه و مامور شد نمایانی
 بگفت با تو نشینیم و باز عصبانی
 ز دور آمده بو بگردد نمایانی
 گذشتی نه مرا بر دید ایشانی
 بساز مردم بیرونی و بیابانی
 میان حل و حرم حال شان کنونی
 بگشته مسلمی برگشته از مسلمان
 بهجور سرور عالی غزل سرایانی
 بگشتش آخر ابو ذر به تیغ برانی
 دگر قرینه که کشتندش از بد الحاقی
 تمیله گشت به مقیس هم از شتابانی
 بسیار وحشی و کعب وزنان چندان
 گرفته دین بتایید ما ی عثمانی
 مگر نبی نکند در مدینه رجوانی

<p>بقوم خویش اقامت کند بشادانی شنید سرور دین این سخن از پیشانی که لے رسول خدا وقت شب کجائی میان خیف کنم منزل شبستانی دو هفته با همه اعرابان و خلفائی</p>	<p>بلکه خانه آبا می خود کند آبا و بگفت نزد لیکن و مردنم میان شبستانی بروز فتح اسامه جواز نبی پر رسید بگفت خانه عقیل از برای من بگذا برون شهر بگرد منی اقامت کرد</p>
<p>قصه شکستن پتیا که برین مکه بودند</p>	
<p>بنی شکستن عزتی شد امر او عانی بنو کثانه بران بت بدند جیرانی شکست آن بت و برگشت زود و جان بگفت ایچ نه گفت برو بسر عانی بکش در او براند از پنج شیطانی زنی سیه تر و مولیش بصد پریشانی بویل و و ابه سر و سینه ست کوپانی گر لیت خادم آن بتکده بنا لانی برفت سوی بنی کرد داستان خوانی یقین که او ست پرستار ریو و شآبی که پیش ان بنیادی هرزل پیشانی ز خادمش که مکن قصدا و که نتوانی بگفت چیت نبی چشم و گوش و ترانی چو دید خادمش آمد بنی مسلمان برفت سوی مشال به بست سانی</p>	<p>بماند از رمضان پنج روز خالد را با حرام فزون تر بدان صنم زبانی بسی سوار روان شد بنخله عزتی بنی بگفت که چیزی خیال هم دیدی که تا به چشم تو یک پیکر سے پیدا برفت خالد و تبعی کشید و دید آنجا چنان دژم که گریزد نظر زودیدارش بزور تیغ زودش زود و بزمن اقیان دو باره گردش و جانش برون ترا کسی که غیر خدا را کند پرستاری چو عمر عاص روان شد بهدم در سواع پس از سه میل بران صنم رسید و شنید بگفت بهره گفتا که او کند منعت زودش بنام خدا و شکست که دش خرد گرفته سعد بن زید اشهلی فرمان</p>

<p>که داد عاریت و صدور و عتق به مغر و زره معرایت صفوانی زهر دو سوشده احوال فوج جوانی سپاه دین ز کثرت بفرزندان که فخر بنده نایب جلال ربانی که کرد لشکر اسلام پشت گردانی زدند بکه بانوه تیر پیکانی رمد چنانکه ز ابر تگرگ بارانی مگر بر استر و دل رسول یزدانی ولیک بود بروی عدوش جولانی علی و فضل بکار قتال پویانی سه چار مرد دگر هم ز خیل خاصان رسان شتاب بگوش سپاه ایمانی برای جنگ بیایند باز سرعانی دوید سایه نشینان ام عینانی چنانکه بر بچگان مادران جوان ز دل هر اس برون شد ز پامی نخلانی به نیزه و تبر و گرز و تیغ برانی برین اسلحه گویا و قود نیرانی گذرند بدملک الموت را باسانی گوی که زده گاهی که شاد و پشمانی</p>	<p>رئیس آنند صفوان بن امیه است بنی گرفت و تن غازیان پوشانید به پنج روز نبی در حد حنین رسید فآذ تفرقه از رعب در دل کفار بنی شنیده بعباس منع کرد از فخر بوقت صبح مقابل شدند در میدان ز سوی لشکر کفار تیر اندازان بنو سلیم زمینان تخت رم کردند ز کمی و مدنی هیچکس نه قایم ماند غافلش گر چه کشیدی بسوی خود عباس رکاب در کف سفیان ابن عارث بود بدند اسامه و بوبکر و هم عمر آنجا بنی بگفت به عباس کن بلند آواز که جنگ قایم و سرور بجاست ایضا رسید تا بنی اس اهل بیعت صفوان شنیده صوت ابو الفضل منعطف بدل قرار رسید از ضد ابامی ثبات چو غازیان همه برگشته سخت جنگیدند گشت عرصه پیکار گرم چون تنور بهر دو سوزره و خود بود حصن حصین سلاح مویک کاهوش بکوه آهنین</p>
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

در کار جنگ بدین گونه آمد او گرفت
 در کار فتنه آنی سنگ ریزه را افکند
 از آنجا که در آنجا بود او جو و از خست
 از آنجا که در آنجا بود او جو و از خست
 از آنجا که در آنجا بود او جو و از خست
 از آنجا که در آنجا بود او جو و از خست
 از آنجا که در آنجا بود او جو و از خست
 از آنجا که در آنجا بود او جو و از خست
 از آنجا که در آنجا بود او جو و از خست

به حمله حمله و وسویه بدند کوشانی
 بروی شکر اعدا بدست افشانی
 نزول کرده طایک نمود معوانی
 بفتح شکر دین حرب یافت پایانی
 ز کافران شده هفتاد و چند تن فانی
 عنیت آمده پیش و شتر فراوانی
 بدند بیست و چهار الف اسب عربانی
 بدانکه او قیبه چل در هم است نیزانی
 که منتصر شد از الطافهای حسنی
 کنند جمع و بدارند از نگهبانی

قصه جنگ و طاس

در میان جوانان شده در او طاس
 که بود عمر ابی موسی الاشعری دانی
 مبارزانه نمودند جنگ خوانانی
 ز یک پدر همه را بود قرب اخوانی
 خودش زد دست دهم شد شهید مدانی
 نمود جنگ و بیاورد اسیر خندان
 حلیمه را که بدان وخت شیرستانی
 رسید مالک بن عوف در مسلمانان
 بسوی ارض جهیمه بروشتابانی
 ز چوب ساخته دست بت یرستانی

شکسته بسته همه جمع از یرستانی
 که بود عمر ابی موسی الاشعری دانی
 مبارزانه نمودند جنگ خوانانی
 ز یک پدر همه را بود قرب اخوانی
 خودش زد دست دهم شد شهید مدانی
 نمود جنگ و بیاورد اسیر خندان
 حلیمه را که بدان وخت شیرستانی
 رسید مالک بن عوف در مسلمانان
 بسوی ارض جهیمه بروشتابانی
 ز چوب ساخته دست بت یرستانی

نوده کار بطالیف رسی بشکر ما	سایر همه خود فوج هر چه برین
برفت و سوخت و همراه چار صد مردم	از قوم خویش بطالیف رسید عانی

قصه غزوه طالیف

بنی نموده فراغت فتح جنگ خنین
 که بلده است سه منزل ز ملک جانبش
 به قلعه که بد آنجا فراخ و مستحکم
 که گر محاصره یک سال نیز روی بد
 پس از مقدمه الحایش خالد بن لید
 بطالیف آمده کردند قلعه را محصور
 شدند قلعه گیان هم بجنگ امانی
 زیر قلعه دیران شهید می گشتند
 بنی بقطع درختان بوستان فرود
 چو غازیان به بریدند بوستانها را
 بر بنی ز پی صلح التجا بروند
 قریش و مانع ز آل زبیه و مضریم
 بنی شیند و ترحم نمود و فرمان داد
 رضای شاکر اسلام چون بصله نمودند
 شدند رضی ارمین حرف و خیز بستند
 قتل گشت در آنجا دوازده مردم
 بنی رسیدند جعرانه آن عنایم را
 بقرشیان نوایمان ولی از آن بسیار

عنان عزم بطالیف نمودند
 ز سویه ما و فواکه بهشت بنی
 برزق و اسلحه جنگ در آنجا
 نه جنگ تنگ کنده شان برزق نقد
 روانه سرور دین شد لیسان ساه
 ز شجیق نمودند سنگ باران
 و قلعه تیر و فوج شمشیر بران
 می رسید تیر و بکار چند
 که تا ستوه شوند از جنگستان
 بالهای معیشت رسیدند
 که رحم کن پذیر التماس ما ای
 حاصل یک شجره رسته چند غنای
 بغازیان که ببندند دست رحمانی
 کفایت باز بیایم جنگ ایشان
 بنی درآمد ازین ما هر آنکه
 جمیع هم شده جندی بر آنجا
 نزد خویش میان سپاه نمودن
 بر داری می تا ایف قلب از آن

<p>بذوق ترش عطا یابی قرشیان آمد که مالهای غنیمت قریش را و هنوز بنی سنینده و انصار را طلب نمود نه را ضیید مکر تا قریش را باشد بیک زبان همه گفتند را ضییم بن جو روز چند آنجا گذشت خوش است گذشته بود روز ذی القعدة سیده ایام رسید و عمره نمود و گرفت خست مدینه آمده قیس ابن سعد را فرمود پادشاه ۱۵ و چهار صد سواران را بره زیاد حدائے جو دیدش کرا رسید پیش بنی گفت قوم را آیم هر چه گفت بنی عرض او پذیرا کرد بر بنی شرفائی دیار را آورد</p>	<p>بشکایت انصاریان جنبانی ز تیغ ماست چکان خونهای شیبانی بگفت اے همه انخوان دین و خلاص نصیب مال و شمارا رسول بزوانی که این است دولت باقی آن شود مدینه را بکنند از قدم نورانی که بهر عمره شد احرام کعبه را بانی مدینه با همه یاران رسید فرحانی روان بنا حیه از زمین شتابانی که بر قبیلہ صیدا کنند تازانی که در سفارت شان بود راه پویانی بدین تو چو سپه را تو باز گردانی برفت و آمده آن قوم در مسلمانی بنخشد لی همه بستند عقد ایمانی</p>
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

شرح حال واقعات سال هم

<p>در ابتدا اے نهم سال آنکه تقیارت روانه کرد بنی بر بنو تمیم او را ولی نه ایچ یکی از مهاجر و انصار رسید شکر و دیدند و جمله رم کردند چومروه بود زن یازده و سی طفلان بر بنی ز تمیم آمدند و اشرف</p>	<p>عیینه ابن حصین فرار شش دانی بر اے تاخت به پنجاه مرد فرسانی بدند جمله عرب از گروه شتانی مگر که چند کس آمد به بند خد لانی گرفته کرد عیینه مدینه رجبانی بی خلاص رجال و نساء و ولدانی</p>
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

دران عطار دو وقعقاع وزیرقان
 زجره اش بندائی بلندے خواندند
 بنی شنیدہ برنجید و رفت بہر نماز
 عطار و آمدہ پیش بنی دگر خطاب
 جواب ثابت بن قیس داووحی آمد
 رسید وحی و رہا کرد آن اسیران را
 خزاعیان بنو مصطلق مسلمان کثیر
 پئی گرفتن مال زکوٰۃ شان زبنی
 و یک دہشت از ان قوم پیش از اسلام
 روانہ گشت دران ناحیہ بچند سپاہ
 کہ تابند با عزارش و باستقبال
 بسی جزو روغنم نیز پیشکش بردند
 زد و دیدہ و لید آن جامعہ را دہشت
 بحال شان نہ رسید و رزاهہ برگردید
 بنی شنیدہ سخہنائی او ہیا کرد
 خبر شنیدہ بمصطلق فرستادند
 چو آمدند بگفتند حال پیش بنی
 کہ گوش بر خبری فاسقی نباید کرد
 رسد مباد ضرر زان خبر گروہی را
 بنی جو آتہ بر شان بخواند شاد شدند
 برت عبد بن عوسجہ باہ صفر

چنانکہ قیس و اقرع بند زشتیانی
 بر آمد و بگرفتند در سخن را نی
 ادائی ظہر نمود و نشست غضبانی
 بنی بگفت ز ثابت جواب بستانی
 بقوم بی خردان از خدہست غفرانی
 بنو تمیم رسیدند در مسلمانانی
 بند مسجد سلام را ہمہ بان
 گرفت عہدہ ولید ابن عقبہ فرحانی
 عداوتی کہ ہنوزش بدہشت پہنانی
 شنیدہ بیست کس آمد برای تھیانی
 پئے رضائی خدا و رسول نیز دانی
 کہ تا فرج رسدش دیدہ ساز ہمانی
 کہ قاتلان وینداز فریب شیطانی
 بحضرت بنی آمد بداد خوانانی
 سریراکہ و بدشان سزای عدانی
 جامعہ را کہ از ان شد ولید ترسانی
 نزول کرد درین باب وحی قرآنی
 پئے عمل نرسد تا بحکم ایقانی
 ز کار کردہ از ان پس رسید پشمانی
 عباد بشر روان شد بصحب الشیانی
 بقوم حارث بن عمر بند گویانی

صحیفه نبی از هر دو عورت اسلام
 دعای با خستگی خرد بر ایشان کرد
 جهان دعای بی مستجاب شد که سوز
 دیگر بست جهان طلبه این عامرست
 میان ناحیه پیشه سخت جنگیدند
 بیج اول آن سال سرور عالی
 سریه بفرستاد هر دو عورت دین
 بنو کلاب که ضحاک هم از یهناان بود
 بهم رسیده بود که در جنگ در قتل
 گرفته مال غنیمت ز قوم خود بسیار
 دیگر علقه ندی روان فرمود
 رسید بر سر آن جیشیان بسه صد
 نشست علقه آنجا ز مصلحت خرد
 با او علقه ز خصمت بهر که حجت خوا
 بجز مرحله سوئی مدینه طے کردند
 علاج و مضحکه با بین آن جوانان بود
 در وقت و در اندوخته حطب آتش
 رئیس شان این حذافه گفت نیند
 بویگزبان همه گفتند ما مطیع تو ایم
 از آن میان کی خواست کا تمثال کند
 بودید این حذافه بگفت بان نشین

بدادشان و نکردند میل ایمانی
 بی نیافت چو زینها بدین میلانی
 از آن گروه توان زدوش نیادانی
 برای غارت خشم به او جولانی
 چو یافت فتح و غنائیم نمودرجانی
 سوی کلاب که بودند نسل عدنانی
 امیر کرده بضحاک پور عثمانی
 بی محاربه گشته راه پور پانی
 شکست خورده نمودند پشت گزانی
 مدینه آمده بضحاک باز حذانی
 بیک جزیره از جیشیا خلدانی
 شدند آنهمه بے جنگ در گزانی
 بے شدند پے باز گشت عجلانی
 امیر کرده با بین حذافه زایشانی
 برون شدند ز راه کنار عجمانی
 بدان طریق شدند شتغال جمانی
 بگرد آن بنشستند بهر تا بانی
 شما او امر ما را مطیع فرمانی
 بگفت همین که بر آتش کبید قصانی
 بست بر کمر خویش عطف دامانی
 که این ز راه مزاج هست و طرز خدانی

بنی شنیدہ بفرمود اظہار عتذوالامر
 بنام فلس تہی بود در قبیلہ طہی
 بنی شکستن آن بت علی عالی شد
 علی جو با ہمہ انصار یان برفت شکست
 سفاقتہ دختر حاتم بہ بندیان آمد
 شنیدہ خلق بنی راعدی بن حاتم
 کون بگویت از بہتان کعب بن ہیر
 ز راویان احادیث بشنوانکہ ز ہیر
 ہمیشہ با علمائی کتاب صحبت داشت
 خبر ز مبعث سرور بگوش او بودست
 بخواب اورسنی ز آسمان فرو آمد
 نیافت آن رسن و کرد خواب تعبیر
 بوقت مرگ بابنا خود وصیت کرد
 ببحیر و کعب ز انبائی او بدند آنوقت
 ببحیر پیش بنے آمد و مسلمان شد
 کہ ہر کہ از شعر اکر دہ بود ہجو بنی
 بکہ از شعرائے قریش زندہ مانند
 کہ ہر دو از حرم مکہ کردہ اند فرار
 اگر تو عافیت خویش را ہی خوبی
 کہ ہر کہ بر در سرور رسد نیاز ہند
 و گرنہ راہ فرار از مقرر خود ہما

درست نیست پی کار کفر عصیان
 کہ حاتم است از ان یادگار از زمان
 امیر کبیر و پنجہ سوار بعرانی
 بگشت اسیر و مواسی گرفتہ شادانی
 بنی نمودر مالیش ز بند خذلانی
 ز خواہر آمدہ در عزت مسلمانی
 کہ شد قصیدہ بانس سعادت رسانی
 ز شاعران عرب بود مردمان چنانی
 چہ جردین بودی چہ قس نضرائی
 کہ عنقریب شود دشت چشم نگرانی
 بجواستش کہ بگیرد ز دست طولانی
 کہ پیش بعت بنی زمان شود خانی
 بانقیاد بنی اخیر دورانی
 کہ فتح کرد بنی مکہ را باسانی
 نوشت سوی برادر بصد ہر اسانی
 بگشت آنہما مارا رسول ربانی
 مگر ہیر کیے این ز بصری ثانی
 فتادہ اند با کناف در پیشانی
 بیاب بارکہ دین جو طبرستانی
 بعقومی کنش محو نقش عصیان
 نجات نیش ہجو ہر کجا کہ جوانی

کنایه کرد بهجور رسول میزدانی
 مباح کرد بنی قتل او بغضبانی
 که من بدین خدا تو بدین او ثانی
 جماد را بنود بر قدر رجحانی
 نوشت خون تو شد بدرتینج شجانی
 سر ازها جبر و انصار دار پنهانی
 به فکر رفت که جان را کند نگهبانی
 همان قصیده لایه کش همی دانی
 که بود آن جنی مرد نو مسلمانی
 بعدر خواستن آمد به نیک عنوانی
 رسیده است بر من بعدر خوانانی
 کند توبه و اسلام عفو جو یانی
 بنی چو گفت نغم کعب گفت فرحانی
 کشیده ام ز علمهای خود پشیمانی
 نبیش کرد بیک بیت برده ارزانی
 باند تاسن نهضد بجز شانی

نظم کعب بر سلام او نکوش کرد
 بسیران غزل کعب خواند پیش بنی
 نوشت باز همیش جواب نظم به نظم
 چه کار روز جزا خیزد تزلزل و ثبات
 تمام کرد چو ابیات را بدان مضمون
 ترا از جمله مسلمان کناره باید ماند
 شنیده کعب به تشویش و خوف جاافتاد
 بحد سرور دین گفت و عذار گناه
 مدینه آمده همان دوستی گردید
 ببرد همیش آن مرد در حضور نبی
 گفت اے بنی آن کعب کوستان
 اگر بیارمش کنون برت بهت عذار
 معاف دارش و توبه اش کنی مقبول
 گای نبی خطا بخش این منم آن کعب
 قصیده پیش بنی خوانده و مسلمان شد
 به بیت الف درم کش معاویه بخرید

نظم کعب بر سلام او نکوش کرد
 بسیران غزل کعب خواند پیش بنی
 نوشت باز همیش جواب نظم به نظم
 چه کار روز جزا خیزد تزلزل و ثبات
 تمام کرد چو ابیات را بدان مضمون
 ترا از جمله مسلمان کناره باید ماند
 شنیده کعب به تشویش و خوف جاافتاد
 بحد سرور دین گفت و عذار گناه
 مدینه آمده همان دوستی گردید
 ببرد همیش آن مرد در حضور نبی
 گفت اے بنی آن کعب کوستان
 اگر بیارمش کنون برت بهت عذار
 معاف دارش و توبه اش کنی مقبول
 گای نبی خطا بخش این منم آن کعب
 قصیده پیش بنی خوانده و مسلمان شد
 به بیت الف درم کش معاویه بخرید

آغاز قصه عزوه تبوک

که هست عزوه عسرت بعرفانی
 بموسمی که تیف بود مهر تابانی
 ز قحط آدمی و چار پایه بیکانی
 جان طعام موطف نمود فقذاتی

حدیث معتبر عزوه تبوک بشنو
 بلال ماه رجب دیده شد ز سال نهم
 کنار رود شد و قصر چاه ز آب هتی
 غذا نماند جز در میان مسلمان جهان

مکید تشنه لب آب از شکبه اشتر
 خبر رسید بنی را بوقت این عسرت
 ز شام سوی مدینه بخت می آیند
 نصیر کرد میان مدینه و اطراف
 هم از پی مدد خرج مفسدان عذراة
 بخت و جوی رضائی خدا و حبس
 هزار شتر و هفتاد سب و اد بفرج
 شنید ام که زودینار دود هزار بخت
 چو صیرفی بی آن زربکف همی گرداند
 منافقان همه از بهر شدت گرما
 چنانکه از پی تقضیح آن گروه خبیث
 ز مومنان هتدست چند کس ز رسول
 بهم رسانده شش اشتر بداد شش کس را
 بنی نه برد علی را درین سفر همراه
 که تو ز من به مقامات مارون از موی
 هلال بود و بوخیشم مراره کعب
 و یک بود و بوخیشم به پیوستند
 بنی چو دید بره بود غفاری را
 بگفت این زید و میرد از کسا تنها
 دعا سرور دین شد بحق او مقبول
 بسی هزار جوانان و ده هزار سپاه

گرفت گرسنه دانه ز شیک نوقالی
 که روم جمع شده با هر قتل نصرانی
 شنیده لشکر اسلام را بجو عانی
 طلب نمود ز بطحا و مکه اعوانی
 ز اغنیای زمان کرد نفقه خوانانی
 بکار رفت سخا و عنای عثمانی
 تهنی نمود ز دینار چند همیانی
 بچادر و بکنار رسول نیز دانی
 همی نمود به عثمان دعائی عسقرانی
 بخانه باز نشستند عذر گویانی
 نزول کرد بسی آیه های فرقانی
 بخواستند که مرکب نماید از زانی
 بقیه باز گشتند دیده گریانی
 گماشت بر سر اهل از پی نگهبانی
 خوش است گریه مدینه بجای من بانی
 تحلف آمده زین مخلصان ایمانی
 براه سرور دین را بزرگ مذمانی
 که می رود شده تنها ز فوج ایمانی
 چنانکه می رود اکنون ز فوج حدانی
 بزیست در ریزه همچنان نشدانی
 همین قدر شتران رکوب و حملانی

روانه سرور دین شد براه شام نشین
 بعضی بناقده صالح نبی قوم نمود
 نبی بگفت که تنها کسی برون نرود
 یکی به حستن اشتر ررون شد از لشکر
 زیاد تند شیا طین بکوه طی افیاد
 قضائے حاجت خود را و گر بیدان
 گونشده چومرده براه دیدندش
 رسید شکر عالی بنتهای توک
 هر طرف که خبر در نواح شام رسید
 رئیس ابله و جربا و اذرح آمده پیش
 مگر اکید رسالار و مته الجندل
 بیگ او بفرستاد زود خالدر را
 بگفت وقت پس در شکار گمانی
 چورفت خالده دیدش بصید مشغول
 که هر دو در پله گاو سے بدند ^{جان}
 میان خیل خودنش خالده آتجان بگرفت
 برادرش شده مقتول خود را سیر آمد
 بجانش داد امان و به برود پیش نبی
 بر آنکه داد و الفاشتر و فرس مشهد
 نوشت نامه بسوی هر قل سرور دین
 تمام کرد میان او ان که آنجا داشت

رسید در حد حجر آنکه یافت و میرانی
 با نفلح در آمد ز قبر نرودانی
 که این دیار پرست از فاشیطانی
 فتاد و کشتش گرد باد غولانی
 نبیش یافت به شرب چو کرد جانی
 چو دیر کرد شدندش آنچه جویانی
 و عاش کرد نبی شد در باز غشیانی
 که بدیره زد عشق و مدینه و سطلانی
 بر عب گشت دل دشمنان بر اسانی
 قبول جزیه نمودند و صلح خوانانی
 که داشت عظمت ملکی و دین نصرانی
 نبی بخار صد و بیست مرد فرسانی
 تو اش شکار کن و پیشم آرسرانی
 همش برادر دیگر سمی حسانی
 بوقت روز که گسترده ماه تابانی
 که تنگ گشت بر و چار سو میدانی
 گونختند همه همزمان خاصانی
 به صلح یافته این عزمه نیز پایانی
 چنانکه چار صد از رح و خود و خضانی
 مدینه با طفر و فتح کرد رجانی
 مدینه فاصله راه ساعتی دانی

شنیده اهل مدینه بر سر استقبال
 به مسجدی که خدا مسجد خراش خوانند
 که تا مقابله با مسجد قباش کنند
 بمضمرات بدشان بنی شده آگ
 بداد حکم که آن را شکسته سوزند
 منافقان همه اظهار توبه می کردند
 بر دو عبدالله ابن ابی ابن سلول
 بنی کفن ز بنی خوشت پیرین سپرس
 ز خلق خوشت بنی تا کند نماز برود
 بنی جو خواند نمازش بجهت خیر
 بگفت قطعه لغت بنی عمش عباس
 بلال و کعب و مراره قبول توبه خویش
 روایت آنکه در گفت کس مسلمانان
 با عتراف تخلف بر بنی رفتند
 جو پیرشان بنی اعراض کرده استغفا
 خدای توبه آن مجزمان پذیرا کرد
 روانه کرد ابو بکر را بموسم حج
 امیر موسم حج کردش از پی حلیم
 براه بود ابو بکر کشش علی آمد
 رسول آمده یا امیر پرسیدش
 مرست حکم که خوانم میان تجمع نام

بسای دیده دو دیدند جمله فرحانی
 بدند اهل نفاقش بغیرم بدبانی
 بدل کنند با بادیش ز ویرانی
 دران مقام بایون بوحی قرآنی
 مالک بن دحشم و معن عجلانی
 ولیک سووند بردند چر پیشانی
 که بود ز اهل نفاق و درین ایشان
 بنی بداد و گرفتش عمر بسر عانی
 عمر بمنع درآمد به جده چندان
 رسید بنی نمازش بوحی یزدانی
 بداد و او بلاغت به حسن بیانی
 بیاقتند یزدان بنص فرقانی
 که بوده است رفاعه یکی از ایشان
 که تا توبه نایسند هدم عصیانی
 برکن توبه نمودند شد کفانی
 بخواند وحی برایشان رسول حقانی
 بلکه با سه صد از مخلصان یانی
 که واجبات مناسکت خطبه انخوان
 سوارنامه جد عار خیر نوقانی
 علی بگفت رسول رسول ربانی
 براتی ز خدا و بنی با علانی

که ز شمار نایند بعد از العام
تختان خطبه ابو بکر در ناسک حج
چو هر دو کار بدینان با انصام^{سد}

بج کعبه کس از مشرکان و عربانی
بخواندی باز علی خواندی ^{خطبه ثانی}
مدینه باز رسیدند جمله شادانی

بیان معمله رسول علیه السلام بازواج مطهرات

بنی نمود درین سال باز زمان ابلا
بدان سبب که درین سال بزمان تو
که بدیدر قرشی پنج را از ان جفت
قریب تر ز زمان بود با بنی نسب
ز عایشه حفصه را یک پدر دوست
هم آن ام سلمه بنت بو امیه بدست
صفیه زینب و میمون و جویریہ را
چو هر یکی طلب نقد و صفت کرده
به پوشش و زر روز بوی می زدند مثل
برج آمده سرور ز قیل و قال زمان
خطای سپه همش خسته کرد پهلورا
شنیده آنکه زمان را طلاق او بر
عمر بر حفصه رفت و حال پرسیدش
عمر رفت با لایس خانہ سرور
بلال پیش بنی رفت و خواست اذن عمر
به مسجد آمده نشست و بعد از چند
چو یافت اذن رفت و بر بنی استاد

م نمود یک مد ز قرب سنوانی
به عقد سرور دین جمع نفقه خوانانی
و گر چهار بدند از گروه شتانی
ام حبیبہ بد و دختر بو سفیانی
چو هر دو را به بنی تا کعبه سپانی
چو سووه دختر زمه بقرب کیسانی
نه بدیدر قرشی آنجا نکه میدانی
بر شک یکدگری بود در سخن رانی
با اهل بیت فلانی و جفت بهمانی
شانند این همه با را بدر و سحرانی
نشست یک تنه در کوشکی جدا گانه
فنا و خاطر اصرار در پریشانی
گریه گفت ندانم خبر با یقانی
بلال بود نشسته بر رسم در بانی
نیافت اذن عمر کرد باز گردانی
رفت باز سوئی صرح اذن خوانانی
بدید نقش ملاش گرفته پیشانی

<p>بطرز طیب سر رشته سخن بگشاید بگفت کاش تومی دیدی بنبت خارجه زیاده از نفقه این و آن طلب میکرد به تنگ آمده بر خاتم زجا و زدم طلب نکرد من بعد ازین دگر چیزی چو دید سرور دین را ازین سخن بشنید جواب داد که فی لیک خورده ام سوگند چو بیست و نه بگذشته نبی مرود آمد کسی بگفت که بگره زده کم است از ماه بسی ز سوره احزاب بهر خبر نالیش</p>	<p>شکفته شد دل سرور لبش بخندان کشاده بود که بر من زبان لغانی به غلبه آمده از طعنه و مثل خوانی بگردنش دو سه مشتی که شد خموشانی نجات یافتم از طعن او آبسانی بگفت گفته آیا طلاق نسوانی که باز زمان نکتم ماهی میسل قربانی باختلاط زمان کرد باز رجحانی بگفت نه گهی سی گاه بیست نه دانی نزول کرد درین قصه آی قرآنی</p>
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ذکر ولادت ابراهیم فرزند سی علیہ السلام

<p>درین سنه شده پیدای ماه ذی الحجه رسول را پسرو کرد نامش ابراهیم بر روز هفتم مولد عقیقه اش نمود سترده موی سرش را بنقره سنجیده بام سیف که آنگری بدش شوهر با جرد ایگی او خنجر یک قطعه بذوق دیدن فرزند خانه اش رفتی شنید از پس هفتاد روز کان مولود شتاب رفت نهادش بر در آن حالت بگفت ای بهزاق تو ایم ما مخزون</p>	<p>ز لطن مار صیقلیه کشی دانی فروغ داد دل و دیده را بشادانی دو کبش کرد برای فداش قربانی بداد صدقه و کردش بجا کفنهانی سپرد سرورش از بهر شیر نوشانی ز نخله باغی مدینه نمودش از زانی به بر نهاده بوسیدی رو و پیشانی بحالت سکرات هست می شوه فانی ز رقت آمده شمش در اشک زانی دل اندر تنش و چشمان آب بارانی</p>
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

ازین زیاده غمت را چه گویم بریکم | انگویم آنچه شبها شد رضای بابی

آغاز احوال سال دهم

<p>بناده سال نهم را بذل پایانی که داس مزرعه خوشتر تیغ عدوانی زکوة و باج بنی را دسید فرحانی بخنگ وصلح شد ندش مطمع فرنی ز اعتقاد زمانه زکوة خوانانی که آن جند بلقب بود و این مینانی روانه شد ابو موسی لبطر تخانی ز مالکان مویشی بزور ستانی که نیستش سپری تا بعرض بجاننی به ضلع بنی عبد المدا ان بخرانی که شهند از ان پیش دین نصرانی علی بگفت نمم در شباب ایعانی قضای من چه بود در میان ایشان و عاش کرد کند تا قضا باسانی ببشارش که بگرفت از مسلمان</p>	<p>بلال سال دهم سر بر از گریان کرد بنازیان بنمود از اشاره ابرو بکشت و کار در انید کسب مال کیند همه دیار عرب بر بنی مسلم شد روانه کرد درین سال بر طرف اعمال مین دو ضلع فراز و نشیب بود آنوقت معاذ را بفرستاد جانب علیا و حیتش بنو و آنکه مالهای سترگ حذر کنی ز سهام و عانی مظلومان بنود خالد ابن ولید را حال چو رفت او همه بار اشرف با بیان گزید باز علی را بنی قضای مین در آن طرف گز آرفته اند پیش ازین ببست خویش ببتش عماره سرورین سوی مین چو بسید صد سوار نهضت کرد</p>
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

قصه حجه الوداع

<p>بسوی مکه روان شد رسول نیروانی حیات را چه و فانا بوسم ثانی نود هزار برون شد ز خویش و اعوانی</p>	<p>بروز شبیه و بست و ششم زوی بقعد که تا فریضه حج را داد اشتاب کند درین سفر زن و فرزند جمله همراش</p>
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------

<p>براندیدی به تقلید و شوق کوفانی بانفرد حج و عمره و باقرانی صباح چارم ذی الحج بیت ربانی که حل صاحب بدی است بعد قرآنی ولی نکر دپئے بدی حج نغم رانی بکار عمره و بستن برائے حج ثانی کہ تا بیک سفر آمد دو کار ز آسانی علی ہم ازین آمد بکے سمرانی نزول آیہ تکمیل دین حقانی گرفت خاتمه زین وقت حقی فرغانی نبی چو دید به پرسید وجه گریانی غم فراق تو کرد است شک بارانی طلب میکندم رب سنی جوانی کہ پند نامی مودع به جمع ضلانی چوسخی کرد نبی در بلوغ زمستانی چوسرور از عرفات آمد بر جوانی نزول حقی کتاب خدای پامانی خبر بھی دہدم از تقاسے رحمانی ز فرقت پدر آید بدرد حسی رانی کیسے سوی من آید نشت تو آنی چنانکہ از پس شش ماہ یافت لقیانی</p>	<p>بر ذی الخلیفہ خود احرام بہ حج بستہ خیار داد بہم را بیان بخواہش شان بہشت روز رہ مکہ قطع کرد و بدید طواف کعبہ نمود و بماند با احرام کسی کہ کردہ بد از حج بانفرد احرام مباح کرد شکستن بران کس آن احرام ہمین است متعہ حج کان مان شدن شروع بروز ما کہ نبی ہشت در حرم منزل بساحت عرفہ روز جمعہ کرد آگاہ کہ یافت تکلمہ امروز دین اسلامی بدرک آیہ ز مفہوم آن عمر بگرسیت بگفت عمر بوحی است اشارہ تویج بنی بگفت کہ حق است آنچه فہمیدی بخطبہ عرفات انجمنان موعظہ کرد بگفت ہر کہ دید حجۃ انواع این سہتہ روایتی است کہ اندر منی درین موسم فرود آمد او اجار نصر و یافت ازین بنی بفاطمہ طلبید و گفت سورہ نصر شنید فاطمہ این حرف گریہ کرد کہ چون بنی بگفت کہ اسے نوز دیدہ گریہ کن جو فاطمہ شنید این نوید خندان شد</p>
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

<p>مدینہ کر ومع اخیر باز گردانی پڑ بداد حکم پی جمع قوم ایمانے بمرشدانہ نصایح نمود جو لائے پیام می دہم از وصال ربانی کہ بعد من کڈ از گمراہی نگهبانی ز نید چنگ بجل المتین قرآنے بخطبہ یافتہ تشریفا فراوانے ورست خواجہ و مولی علی و جدانی بداد تہنیت دوستانہ شادانی قدر و قدر تو سرور بہ چشم اعیانی باعتبار مزاج و صلاح ابدانی</p>	<p>فزع یافتہ پیمبر از مناسک حج رسید پر لب آبی کہ بود نامش خم بخواند خطبہ تو دلیع اندان مجمع کہ زود یک قضا سوئی من بھی آ شما عمل نہایت بر نکو کار سے بعت عترت من اعصام باید کرد علی قافلہ سالار اہل بیت بنے بگفت سرور دین ہر کر ہم موئے گرفتہ دست علی را عمر بچبا بند کہ ای بیخ لک صحبت انت مؤلی الکمل مدینہ آمدہ سرور باند چند ایام</p>
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

در ذکر مرض و وفات رسول صلعم

<p>ز سال یازدہم موسم رستانی بعارضت مطبق کہ داشت پنهانی کہ احتراق بھی کرد آب پاشانی ردایہ مرض آور سو بجرانی سادہ سرور دین زد مثل باعلانی میان دنیا و خود تا کر است خواہ طمع برید ز دنیا می باطل و فانی کہ کشف شد مثلش از طریق وجدانی بود نثار تو کاش ای رسول حقانی</p>	<p>بچار شنبہی از عشرہ اخیر صفر ز دروسہ مرض الموت ابتدا کردش باز دیاد مرض اشتداد خمشی شد باہتاشدہ خمشی و افاقہ مستبدل در ابتداء مرض روز جمعہ بر منبر کہ دادہ است خدا اختیار بندہ را ولی گزید لقای خدائی را بندہ شنیدہ حضرت صدیق زار زار گریست بگفت جان من و جان مادر و پدرم</p>
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

چو اضطراب بوبکر دید سرور دین
 که حق صحبت بوبکر و مال او بر ماست
 گرفتگی چو خلیله گرفتگی او را
 دریچه پاکه درین مسجد است بنکند
 اگر اسامه بن زید را امارت داد
 گفت با کبرائی همساجرو انصاف
 رسیده در حدابنا نواحی بلفا
 که زید و جعفر و ابن رواحه کشتند
 بدست خویش لوائی اسامه را بسته
 اکابران بوداع رسول می رفتند
 زنده طعنه جوانان که چون امیر شود
 نبی شنیده بیالائی منبر سبح
 خطاب کرد از آن پس به مجمع انسا
 بران که میرتی لشکر اسامه را دوام
 مدار طعن شمار بر اسامه تنهائیت
 به آن خدای که جانم بدست قدرت او
 اسامه را که بجانش عزیز می دارم
 همان به است که در خیر خوا همیشه کوشید
 شنیده جمله سران حیمه مبرون کردند
 چو از دیاد مرض دید سرور دوران
 زمان بجایشه دادند نوبت خود را

نمود از پی بستکین او شنا خوانی
 و در است فضل امانت به جمع انسانی
 و ایک است خدایم نیل و ندانی
 مگر در پی بوبکر کوشدش بانی
 که داشت سرور دین مهربادی ارزانی
 کنند جمله به همرا همیشه شتابانی
 زرد میان بستانند کین اعیانی
 بیجنگ مویته و دارند عزم طغیانانی
 بدون شهر نداشتند به جمع شجاعتانی
 همی شدند بعکس بحال گریانی
 غلام زاده بر مجمع نوینانی
 برخت و کردند ایشا فراوانی
 که گفت و گویی چه دارند بعضی شبانی
 که است زاده زید شهید میدانی
 نه پیش ازین پدرش شد امیر پیرانی
 که زید بدامارت حقیق و شایانی
 به از شماست بسالاریش چه نفتانانی
 بکار جنگ شوید پیش میطیع وزمانی
 فضای بطن جرف شد ز فوج ملاآنی
 بسوی عایشه می جست باز گردانی
 چو یافتند ز سرور کمال بکرانی

بنهاد پهلومی تکمیل بر فراش مرض
 گذشت کار چو از اشتداد بیماری
 بداد حکم که بو بکر امام وقت شود
 بوقت فجر و شنبه بر روز اختصار
 پی نماز جماعت برفت تا مسجد
 بناده دست ز کجا بنی بدوش علی
 ز پیش خوست ابو بکر تا بصف آید
 بنی یسار ابی بکر رفته بنشسته
 باذن رفت ابی بکر اندرین فرصت
 که نسبت خارجه جفتش مقیم بد آنجا
 خطاب کرد همان روز پیش اختصار
 بگفت پاره قرطاس سوی من آرید
 که بعد ازان نزد کس بر آه گمراهی
 عمر که کن کن او بیار گاه بنی
 بگفت منع کنان حسبا کتاب الله
 مرادش آنکه بخواهی آیه تکمیل
 برای مصلحت ما کنون که اندیشد
 ازین سخن چو درین کار اختلاف افتاد
 بنی هم از شعب مردمان بر بخر آمد
 بر آمدند چو مردان ز حجره بنومی
 اسامش بنی آنروز که ده بد حضرت

به بیت عایشه کان رست جنت ابونی
 ازان که جانب مسجد رود باستانی
 نماز مقتدیان را کند نگهبانی
 تن مبارکش آمد زمت باستانی
 که از افاقه در آمد دلش بفرحانی
 بشانه بن عباس جانب ثانی
 اشاره کرد بنی تا بجای خودمانی
 نشسته کرد امامت بقول حجابی
 بخانه که بدش از مدینه پایانی
 دگر کانش بنی را بدند جیرانی
 بالتفات سوی جمع خویش و اخوانی
 پی شام بنویم بطور چندانی
 باقتضای طبع و میل نفسانی
 پسند بود و موید بوحی قرآنی
 بنی ز شدت حمی است در سخن رانی
 مانند واجبی از واجبات ایامی
 کجاست طاقتش اندر قوای حسانی
 نکرد کار کسی جز بلند افغانی
 برون روید از نیجا بگفت سرعانی
 بجز عایشه بنهاد سر به لنگلانی
 ندای کوچ بداد او بجمع اعیانی

که تا بهم می او کند شتابانی
 بیشت اشتر و اسپا بعیر و توقانی
 بر اسامه که سردور همی شود فانی
 که بست رخت قامت بملک و وحانی
 درون حجره در آمد باذن نسوانی
 نمرده است و نمیرد رسول ربانی
 بهر که گفت بنی مرد تیغ برانی
 چه حالتی که در آن وقت کرد طریانی
 ز لطف ماند زبان جناب عثمانی
 غمش نشان چنان کش بود جنابانی
 بچند روز برد او ز حزن پهنانی
 کسی بماند ستاده بحال حیرانی
 بکار دین چه افتد فتور و نقصانی
 دو دیدگان موالی باشک یزانی
 رسید و کرد ز سالم چو حال مسانی
 چگونه با تو شوم حرف موت گویانی
 بیدر بود ز سرت زوش به پیشانی
 ترا ساد جزین موت موت ثانی
 دلی بنبیط در آمد بداب شجعیانی
 بیاید بر خنسم گوشه ار تادانی
 شدند جمع بسی خلق از پریشانی

عمر هم از بر سر در میان لشکر رفت
 بران بزد که بند رخت کوچ آرزو
 که ام ایمنه ام اسامه کس بفرست
 اسامه با عمر آمد مدینه و بشنید
 باختلال در آمد شنیده هوش عمر
 بید روی بنی را و گفت در غشی است
 برون ستاده همی گفت من حواله کنم
 ازان مصیبت جانسوز بر دل خاصان
 باضطراب برفتی و آمدی لیکن
 بماند از حرکت پائی حیدر کرار
 مرصن گرفت باین انیس در باطن
 کسی قاده بروئی زمین ز بی تابی
 کسی بوسه افتاد تا چه خواهد شد
 زمان حجره به او بلیا و و ابا
 خیر شنیده ابو بکر شد بر اسپ سوار
 گفت هینت عمر تیغ را کشیده بدست
 بچهره رفت وز روی بنی نقاب کشود
 گفت و انبیا جان من نثار تو باد
 اگر چه سینه اش از سوج غم تلامه داشت
 گفت با عمر ای مرد تیغ را افکن
 قیام کرد دیالای منبر سرور

گفت هر که پرستند بد محمد را
 بدانند آنکه پرستند خدا باشد
 بخواند آیت موت بنی و جمله بشر
 شنیده گفت عمر دای حال من چون شد
 دوم زغره ماه ربیع اول بود
 ولی دوازدهم شهر شد آن تاریخ
 زهفته بود دوشنبه با تفاق همه
 زوال کرد چو بیضا ز خط نصف نهار
 به بیت عایشه کردند دفن روز سیوم
 علی بحکم وصیت سه غسل داد او را
 معین او شده عباس و فضل بن عباس
 پس از ظهور بسه پارچه کفن کردند
 کفن نموده وصیت بجای آوردند
 نماز کرد ملاک نخست بر سر در
 صحابه آمده از هر طرف گروه گروه
 پس از من از رجال مهاجر و انصاری
 علی روایت بو بکر را مویده شد
 بعد بکند ابو طلحه داشتش عباس
 قتم تا خرکار از بعد برون آمد
 قتم که بدین عباس فخر می کردی
 چو گور او زمین شد بلند باشتی

بدانند آنکه محمد مرد و شد قانی
 که اوست زنده نمیرد بصرف زمانی
 که خواه نخواه تو میرنده و ایشانی
 تو گویی این همه شنیده ام الی الی
 که یافته است ز اهل حدیث بحسانی
 باختلاف روایات غیر از عانی
 چنانکه ساعت نصف النهار رادانی
 بر آمدش دم جان از سطوح جسمانی
 به جسم پاک مطیب لطیب و حانی
 نقش جامه پاکش نکرده عربانی
 بدند اسامه و شقران باب برانی
 که نو بد است و سحلی سپید و تابانی
 برون شدند ز خانه نفوس انسانی
 رسید نوبت ازان پس بال و اخوانی
 گزاردند نماز جنازه زینبانی
 گزاردند گروه زنان و صبیانی
 که مرقد بنی آسجا که قبض روحانی
 علی و فضل و قتم هم پیش به معوانی
 نموده لاش نهب خشت خام سپهرانی
 بدین عمل که نمود او بجمع اعیانی
 بلال کرد بیک مشک آب پاشانی

چگونه بر پدرم کرد خاک نیرانی
 ز جوش سینه در آمد بر شیه خوانی
 شدند غالیه تا امتداد از مانی
 ز روزها شدی شبهای تاریکمانی
 باند از پدرم تا بقای دورانی
 کند مکارم او ما به حشر تا بانی
 بر آمدی بدم آه کاش بجایانی
 بگریه ام که حیاتم کند طولانی
 چو دفن کرده نمودند باز گردانی
 کند کتاب گران مایه تنگ مانی
 بروح پاک همیشه حکم قرآنی
 سلام بر همه آل و صحاب صوانی
 که یادگار امین است در سخن دانی
 خطای من همه پوشد بدین غفرانی
 شود عیوب نمایان بچشم امعانی
 بناشناسی غواص بحر عثمانی
 بناگری بود جا بجایش لعن لانی
 بلوح دهر اگر فی لمثل بودمانی
 که است نیک ترین متاع دگانی

رسیده فاطمه گفتا که دستهای من
 گرفته تربت مرقد بهرد و چشم نهان
 بگفت هر که شدند خاک تربت احمد
 رسید آنچه بمن گر رسیدی برایم
 ز مردگان جهان یاد اند که ماند
 تنش اگر چه نمودند زیر خاک نهان
 بتارهای نفس جانم هست پیچیده
 نه گریه ام پی حسب حیات می آید
 بسی ز مردوزن انشا و مرثیه کرد
 اگر به مرثیه های بنی کم احصا
 همان به است که اکنون صلوة بعزیم
 بروح پاک محمد رسد درود از ما
 خام یافته اینک قصیده عظمی
 خدا با خرم مرثه این قصیده دهد
 به کبیره های جواهر اگر بدانه چند
 نه رسم جوهریان است سر زرش کرد
 کسکه مزلقه با پیش پای خود دارد
 نه بسته است چنین نقش می استاذ
 بخار سوق سه پنجه دهد خداش و لوح

تتمت

فہرست قصیدہ عظمیٰ

تشریح مختص	تمہید حضرت ثانیہ کہ آن سرور	ذکر غزوة ذات الرقاع و بدعت
۱	تمہید قصیدہ عظمیٰ کا اصطلاح شدتاً آن سرور	آغاز حال سال پنجم ہجرت
۲	ابتداء مخلص کہ شعری فارسی تراگری	آغاز کیفیت جنگ مرسیع
۳	ابتدای نعت بزبان مخدرات	قصہ فاک کہ منافقان برعائشہ فر
۴	ارشاد مخدرات	افترا کردند
۵	بذیق شاعر ارشاد مخدرات را	احوال رسیدن سرور در مدینہ
۶	ابتدای نعت بزبان شاعر	آغاز کیفیت چہاد و قتال
۷	آغاز حال مولد نبی صلی اللہ علیہ وسلم	آغاز احوال سال دوم ہجرت
۸	آغاز حال شیرخوارگی آن سرور	آغاز قصہ جنگ بدر
۹	در شرح حال بالیدن و خزانہ آن سرور	ذکر فرزندان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
۱۰	احوال سرور بعد از وفات مادرش تا	آغاز قصہ غزوة البقیع
۱۱	دوازده سالگی	آغاز احوال سال ششم ہجرت
۱۲	احوال حضرت بعد از دوازده سالگی	تمہید جلاد طعن شدن بوقت قیام
۱۳	تمہید بیخ سر با خدیجہ الکبریٰ	احوال گشتہ شدن کویت امرت
۱۴	ابتدای دس	آغاز قصہ جنگ احد
۱۵	حاصلت	کیا یہ شہیدین دندان مبارک
۱۶	سومنی ایمان	ابتدای احوال سال چہارم ہجرت
۱۷	تمہید ہجرت اولیٰ کہ آن سرور	تمہید گشتہ شدن شش صحابہ
۱۸	قصہ بیخہ قر	صفائیان
۱۹	آغاز قصہ معراج سرور	تمہید گشتہ شدن چہارم صحابہ
۲۰		تمہید اصحاب بنو نضیر از دیارشان
		در سال گشتہ از ان باز آمد
		قصہ سفر مکہ برائی قصہ عمرہ کہ در حدت
		نوشت
		قصہ جنگ خیبر
		غزوة وادی القرئ
		قصہ سفر مکہ برائی قصہ عمرہ کہ در حدت
		در سال گشتہ از ان باز آمد

۶۱	قصہ شہید شدن زید ابن حارثہ	۴۲	قصہ جنگ او طاس	۸۵	ذکر ولادت ابرہیم فرزند رسول صلعم
	و جعفر طیار و عیزہ	۴۵	قصہ غزوہ طایف	۸۶	آغاز احوال سال ہجرت
۶۲	قصہ فتح مکہ معظمہ	۴۶	شرح حال واقعات سال ہجرت		قصہ حجۃ الوداع
۶۳	قصہ شکستن ہتھاکہ بیرون مکہ بود	۴۷	آغاز قصہ غزوہ تبوک	۸۸	در ذکر مرض وفات رسول
۶۴	قصہ جنگ حنین	۴۸	پیامت رسول صلعم و صلعم علیہ السلام		صلعم علیہ السلام

قطعة تاریخ نتیجہ طبع نقاد خردوران محترم زمان جناب مولوی حکیم میر شاہ جہان صاحب المتخلص بہ کامل سلمہ جوش جناب شیخنا رئیس الحدیث والفہم مولانا سید محمد زین حسین صاحب دہلوی ظلہ اللہ تعالیٰ

جو پائی اس قصیدہ نی بصدیب
کسینی اسکا سال طبع پوچھا

خدا کی فضل سے طبع مجھ دو
کہا کامل نی تاریخ محمد

قطعة تاریخ محی اسہ قاصع البدع جناب مولوی ابوالطیب محمد شمس الحق صاحب عظیم آبادی سلمہ اللہ تعالیٰ

شمس اچون بدید در حیرت
چہ تھلے بدیدہ گفت

فلک از وی بگفت چیت ترا
کہ جمال قصیدہ عطی

قطعة تاریخ از سراج طبع نقاد جہتی منشی عنایت اللہ سلمہ اللہ

مطبع انصاریہ میں بفضل خدا
تہارتہ دو کہ میں کہوں تاریخ
جنب دشمن سے سرفلم کر کہہ

چہ چکا جب یہ نسخہ اعلیٰ
غیب سے دی کسینے مجھ کو ندا
چہ گیا لو قصیدہ عطی

فہرست کتب و قیمت علاوہ محصول

جلالین کا فہرست اور سیر قطع ۱۸-۲۲ قیمت - سنیح اجنبہ قیمت - تذکرہ بکلا قیمت - ارمان حکمت ملی میں قیمت ۸-۱۲ - رسالہ تبلیغ زادہ عادیہ قیمت ۱-۱۲

مقدمہ فتح الباری - یہ کتاب فن حدیث میں بیگانہ تالیف حافظ ابن حجر عسقلانی نے رضی اللہ عنہم - قیمت ۱۲	قصیدہ عطف	فن شیعہ تصنیف مولانا امین احمد نگر ہنسوی عظیم آبادی - قیمت ۱۲
تعمیر الحق	جزء القراءة	در بیان تقلید تصنیف مولانا سید محمد نذیر حسین محدث دہلوی - قیمت ۱۲
جزء رفع الیدین	جزء زخار	تصنیف امام الائمہ محمد بن اسمعیل البخاری اور ترجمہ اسکا یہی ہمراہ اسکی ہے - قیمت ۱۲
کتاب التوحید	فیصلۃ العلم	تصنیف علامہ محمد بن عبدالوہاب یہ کتاب عقائد میں بے نظیر ہے قیمت ۵
اس کتاب میں انتصار الحق (تصنیف مولوی ارشاد حسین صاحب) کا جواب مذاہن ہے قیمت ۱۲	اس میں طلاق ملکہ کا بیان ہے -	قیمت ۳
اس مثنوی میں شرک و کفر و بدعت کے خوب طور پر پھینکنے کی گئے ہے قیمت ۵	اس کتاب میں عقیدہ کا بیان ہے اور اپنی باب میں لاجواب ہے قیمت ۲	
الاقوال الصحیحہ فی احکام النیکہ - اس کتاب میں عقیدہ کا بیان ہے اور اپنی باب میں لاجواب ہے قیمت ۲	الکلام السبعین فی الجہان میں [یہ رسالہ ثبوت آمین باپھر میں بی نظیر اور دیکھل صاحب زاپوری نے جو جو اقتر من احادیث آمین	
دالرد علی القتل ہلین] باپھر پر کیا ہے سب کا جواب نہایت عمد گے کے ساتھ دیا گیا ہے -	توزیر لعینین فی اثبات رقم الیدین	تصنیف مولانا اسمعیل شہید سمین رفیع دین وغیرہ کا بیان ہے - قیمت ۲
ثبوت الحق بالحق	القول الفصیح	تصنیف مولانا سید محمد نذیر حسین صاحب تقلید کے بیان میں قیمت ۳
تحقیق قرارت خلف امام میں -	رد مولوی محمد قاسم صنادیو بندے - قیمت ۱	تحقیق المحققین - در بیان صنادیو بندے قیمت ۱
صحیح مسلم مطبوعہ مطبع انصاری قیمت سفیدارے و حاکم - مشکوٰۃ شریف - قیمت ۱۲	قیامت نامہ فارسی - تصنیف شاہ رفیع الدین قیمت ۱	کتوبات شیخ عبدالحق محدث دہلوی - قیمت ۱۲
ترجمہ رحمت	قیمت ۸	ذیوان سوزان قیمت ۳

واضح ہو کہ یہ کتابیں - دھیسے - پہانگ حبش خان - نژد مولوی تکیف حسین صاحب - اور مطبع انصاری دہلی میں چھپاؤ

لَقَدْ كَانُوا لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ

خَيْرًا مِمَّا كَانُوا يَفْعَلُونَ



مَنْ يُؤْتِ الْمَالَ عَلَى حُبِّهِ ذَوَّبْنَاهُ لَمْ يَكُنْ لَهُ أَجْرٌ وَلَا يَخْشَى

مَطْبَعُ لَيْلَى أَرْكَامِيْنِ حَيْبَا

اشاعت آره محلہ چوک مسجد۔ بار اول ۱۰۵۰۰ جلد قیمت ۱۰

حاج

میں جلد ۱۰



بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

خدا کا فرمانا اور پہنے آدمی پر تاکید کی ہے کہ ان باپ کے ساتھ نیکی کرنا ہے

(۱) ابو عمر و شیبانی رضی اللہ عنہما نے عبد اللہ بن عمر کے مکان کی طرف ہاتھ سے اشارہ کر کے کہا "میں نے اس گہروالے سے سنا ہے وہ کہتے تھے" میں نے رسول خدا صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے پوچھا "کون کام اللہ کو زیادہ پسند ہے" آپ نے فرمایا "وقت پر نماز ادا کرنا" میں نے عرض کی "پھر فرمایا" "ان باپ کے ساتھ نیکی کرنا" عرض کی "پھر" فرمایا "اللہ کی راہ میں جہاد کرنا" آپ نے یہی باتیں فرمائیں "اگر میں اور پوچھتا جاتا تو آپ بھی بتاتے ہی جاتے"

(۲) عبد اللہ بن عمر فرماتے ہیں "باپ کی رضامندی میں خدا کی رضامندی ہے اور باپ کی ناخوشی میں خدا کی ناخوشی ہے" ان کے ساتھ سلوک کرنا

(۳) بہز بن حکیم کے دادا کہتے ہیں "میں نے عرض کی "یا رسول اللہ! کس کے ساتھ سلوک کروں؟" فرمایا "ان کے ساتھ" پھر عرض کی "کس کے ساتھ سلوک کروں؟" فرمایا "ان کے ساتھ" پھر عرض کی "کس کے ساتھ سلوک کروں؟" فرمایا "ان کے ساتھ" پھر عرض کی "کس کے ساتھ سلوک کروں؟" فرمایا "باپ کے ساتھ پھر اور قرابت والے کے ساتھ درجہ بدرجہ"

(۴) عطاء بن یسار کہتے ہیں "ابن عباس فرماتے تھے "ایک شخص نے آکر مجھے کہا کہ "میں نے ایک عورت کو اپنے نکاح کا پیام بھیجا تو اس نے انکار کیا اور جب دوسرے

وہو مکتبہ اہل سنت
بوالہدیہ خلیفہ
سیدہ سیدہ
کراچی

جس نے پیام بھیجا اور سطور کر لیا تب میں نے اسے غیرت کے اوس عورت کو مار ڈالا
 ایسے گناہ کی بھی توبہ ہے؟» ابن عباسؓ نے پوچھا «تیری ماں زندہ ہے؟» کہا «نہیں»
 فرمایا «اللہ کی طرف رجوع ہو اور جہاں تک ہو سکے اوسکا تقرب حاصل کر» بس وہ چلا گیا
 پھر ابن عباسؓ سے پوچھا «آپ نے اوسکی ماں کا زندہ ہونا کیوں پوچھا تھا؟» فرمایا
 «میری دانست میں ماں کے ساتھ سلوک کرنے سے زیادہ کوئی کام خدا کا مقرب
 نہیں بنا سکتا ہے»

باپ کے ساتھ سلوک کرنا

(۵) کسی نے عرض کی «یا رسول اللہؐ اسکے ساتھ سلوک کروں؟» فرمایا «ماں کے ساتھ
 عرض کی «پھر کسکے ساتھ؟» فرمایا «ماں کے ساتھ» عرض کی «پھر کسکے ساتھ؟» فرمایا «ماں کے
 ساتھ» عرض کی «پھر کسکے ساتھ؟» فرمایا «باپ کے ساتھ»

(۶) ایک شخص نے رسول خدا صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہو کر پوچھا
 «مجھے کیا ارشاد ہوتا ہے؟» فرمایا «ماں کو راضی رکھ» اوس نے پھر پوچھا۔ فرمایا «ماں
 کو راضی رکھ» اوس نے پھر پوچھا۔ فرمایا «ماں کو راضی رکھ» اوس نے چوتھی بار پھر پوچھا
 تب فرمایا «باپ کو راضی رکھ»
 ماں باپ زیادتی بھی کریں تب بھی اؤکے ساتھ سلوک ہی کرنا

(۷) عبد اللہ بن عباسؓ فرماتے ہیں «جس مسلمان کے مسلمان ماں باپ زندہ ہوں اور
 وہ تو اب سمجھ کر سو رہے اؤنکی خدمت میں حاضر ہوا کرے۔ اللہ تعالیٰ اوس شخص کے لیے
 بہشت کے دو دروازے کھول دے گا۔ اور اگر ایک ہی ہو تو ایک ہی دروازہ۔ اور اگر
 دونوں میں کسی کو ناراض کر لیا تو جب تک وہ راضی نہ ہو تب تک خدا بھی ناراض ہی
 رہے گا» کسی نے پوچھا «اور ماں باپ زیادتی کریں تب بھی؟» فرمایا «ماں باں تب بھی»
 ماں باپ سے نرمی کے ساتھ ہونا

(۸) طہسب بن عباسؓ کہتے ہیں «میں نجدہ بن عام خارجی کے بارون کے ساتھ تھا کہ
 بعض گناہ ایسے ہو پڑے جنکو میں کبیر سمجھتا تھا۔ تو میں نے ابن عمرؓ سے اسکا تذکرہ

کیا اونھوں نے پوچھا "کون گناہ؟" میں نے کہا "یہ یہ" فرمایا "یہ کبیرہ نہیں ہیں کبیرہ تو بس
 نوہین۔ شرک کرنا۔ جان مارنا۔ جہاد سے بھاگ جانا۔ پاک دامن عورت کو زنا کی تمت دکھانا۔
 سوکھانا۔ پیسہ کا مال کھانا۔ سخی میں گناہ کرنا۔ سخر اپن کرنا۔ مان باپ کے ساتھ بدسلوکی کرنا"
 پھر پوچھا "تو دوزخ سے ڈرتا ہے۔ اور بہشت میں جانا چاہتا ہے؟" میں نے کہا "خدا کی
 قسم مان" پوچھا "تیرے مان باپ ہیں؟" میں نے کہا "مان تو ہے" فرمایا "اگر تو اوس سے
 نرمی کے ساتھ بولا کرے۔ اور اوس سے کھانا بیوچیا کرے۔ پھر تو قسم خدا کی ضروری جنت میں جائے
 بشرطیکہ کبیرہ گناہوں سے بچتا رہے"

جس عبادت پر خطا
 وہ عبادت ترک کرے
 ایت قرآن مجید

(۹) عودہ رضی نے محبت سے مان باپ کے سامنے عاجزی کرتے رہو کی تفسیر میں بیان
 کیا یعنی دونوں کی خواہش پوری کرنا ہے۔
 مان باپ کے حقوق ادا ہونے کی صورت

(۱۰) رسول خدا صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں "باپ کے حقوق ادا ہونے کی یہی صورت
 ہے کہ باپ کسی کا غلام ہو اور بیٹا اوسکو خریدے اور آزاد کر دے"
 (۱۱) ابو بردہ رضی کہتے ہیں "میں ابن عمرؓ کی حضور میں تھا تو کیا دیکھتا ہوں کہ میں کا ایک شخص
 اپنی مان کو پیٹھ پر لا دے ہوئے ہے اور خانہ کعبہ کا طواف کر رہا ہے اور اس مضمون کا شعر
 پڑھتا جاتا ہے شعر

واضح تھا
 جناح اللہ
 بن اللہ
 سورہ نبی

سخر ہو رہا ہوں اسکی خدمت میں بنا ہوا اونٹ میں اسکا
 اگرچہ اسکی خدمت دلے گھبرائے ولیکن میں نہ گھبرا یا

پھر اوس نے ابن عمرؓ سے پوچھا "آپ کے خیال میں میں اپنی مان کے حقوق ادا کر چکا؟" ابن عمرؓ
 نے فرمایا "ہرگز نہیں یہ تو ایک دفعہ لاو نے کا بدلہ بھی نہیں ہوا"
 پھر ابن عمرؓ نے طواف کیا۔ مقام ابراہیم پر آئے۔ وہاں دو رکعت نماز پڑھی۔ پھر مجھے فرمایا
 لے "ابن ابی موسیٰ! اس نماز کی ایک ایک رکعت پہلے گناہوں کو مٹا دیتی ہے"

(۱۲) مروان کا معمول تھا کہ حضرت ابو ہریرہؓ کو مدینہ منورہ میں اپنا نائب کر دیا کرتا تھا
 اور ابو ہریرہؓ کو مدینہ منورہ کا ایک مکان میں انکی مان اور دوسرے مکان میں یہ خود رکھتا تھا

والطاهر الریہ دستوراً کہ جب گھر سے چلتے یا گھر آتے تو پہلے اپنی مان کے دروازے پر کھڑے ہو کر یہ کہہ لیا کرتے "السلام علیک یا امّتناہ ورحمۃ اللہ" اسکے جواب میں وہ فرماتے "علیک یا امّی ورحمۃ اللہ وبرکاتہ" پھر یہ کہتے "جیسا آپ نے مجھے چھپن میں بلا لیا جیسا کہ آپ پر مہربانی فرماوے" تب وہ کہتے "جیسا تو اب سیانا ہو کر میرے ساتھ سلوک کرتا ہے خدا تجھے بھی نوازے"

(۱۳) عقیق بن حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ کی کچھ زمین تھی وہ اور انکے ساتھ ابوہریرہ امّی کے غلام ابوہریرہ کے ساتھ بیٹھے اور انہوں نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے کہا کہ مان کو سلام کیا علیک السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ یا امّتناہ" مان نے جواب دیا "وعلیک السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ" پھر حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا "جیسا آپ نے چھپن میں مجھے بلا پرورش کیا خدا آپ پر رحم کرے" اس پر فرمانے لگے "تو ہی جیسا اب میرے ساتھ سلوک کرتا ہے خدا تجھے اچھا بدلہ دے اور تجھے راضی رہے" موسیٰؑ راوی کہتے ہیں حضرت ابوہریرہ کا نام عبد اللہ بن عمر تھا۔

مان باپ کی نافرمانی

(۱۴) رسول خدا صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے صحابہ سے پوچھا "میں تمہیں بڑے سے بڑے گناہ بتاؤں؟" آپ نے تین بار یہی پوچھا۔ صحابہ نے عرض کی "یا رسول اللہ بتائیے" فرمایا "شُرک۔ مان باپ کی نافرمانی۔ اور آپ ایک بارگی تکیے سے اٹھ بیٹھے اور فرمایا "یاد رکھو اور جو تمہارا بولنا، آپ بار بار یہ فرماتے رہے۔ یہاں تک کہ میں نے دل میں کہا کاش آپ اب چپ رہتے۔"

(۱۵) امیر معاویہ رضی اللہ عنہ نے حضرت مغیرہ بن شعبہؓ کو کہا "آپ نے کچھ رسول خدا صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سنا ہو تو کہو مجھے" اور ابوہریرہؓ نے کہا "مغیرہ کے محتر تھے کہتے ہیں "مغیرہ نے رسول خدا صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے پوچھا پوچھو اور انھیں انکار کرنے سے اور ایک ایک کرنے سے منع فرماتے تھے"

مان باپ پر جو لعنت کرے اور پھر خدا کی لعنت

(۱۶) حضرت علی کرم اللہ وجہہ سے کسی نے پوچھا: آپ کو رسول خدا صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے کوئی ایسی بات بھی بتائی جو اور کو نہ بتائی ہو؟ آپ نے فرمایا: "اور تو نہیں جانتا یہی چند باتیں جو میری تلوار کی نیام میں لکھی رکھی ہوئی ہیں، پھر آپ نے ایک کاغذ نکالا۔ دیکھتا ہوں تو اوپر سمین ہی باتیں لکھی ہوئی ہیں جو شخص غیر خدا کے لیے نیچے کرے اوپر خدا کی لعنت۔ جو شخص زمین کے سرحدی نشانوں کو غائب کرے اوپر خدا کی لعنت۔ جو شخص اپنے ماں باپ پر لعنت کرے اوپر خدا کی لعنت۔ جو شخص مجرم کو پناہ دے اوپر خدا کی لعنت۔"

۹ کناہ کے سوا ماں باپ کی پوری تابعداری کرتے رہنا

(۱۷) ابو درود صحابی کہتے ہیں "رسول خدا صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے مجھے نو باتوں کی بہت تاکید فرمائی۔"

۱۔ فرمایا "بے بوٹی بوٹی بھی کر دیے جاؤ جلا بھی ڈالے جاؤ تب بھی شرک نہ کرنا۔"
 ۲۔ فرض نماز قصد اہرگز ترک نہ کرنا جو شخص قصداً نماز ترک کر لیا شریعت اوس کے جان و مال کی ذمہ دار نہیں ہے۔
 ۳۔ شراب ہرگز نہ پینا یہ ساری بڑائیوں کی کنجی ہے۔
 ۴۔ ماں باپ کی تابعداری کیا کروا کر اونی کا حکم ہو کہ ساری دنیا سے بھی باز آجاؤ تو باز آجاؤ۔

۵۔ حاکم وقت سے نزاع نہ کرنا اگرچہ تمہارے خیال میں مہار ہی جی ہو۔
 ۶۔ سب بھاگ بھی جائیں اور مرجانے کی نوبت ہی آجائے تب بھی میدان جہاد نہ چھوڑنا۔
 ۷۔ اپنے مال میں سے اپنے لوگوں کو بھی کچھ دیا کرو۔

۸۔ اپنے لوگوں کی تنبیہ کرتے رہو۔
 ۹۔ اللہ تعالیٰ کے معاملے میں اپنے لوگوں کو ڈراتے رہو۔

(۱۸) ایک شخص نے رسول خدا صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہو کر عرض کی "میرے ماں باپ روتے ہی رہے اور میں ان کو چھوڑ کر حضور میں ہجرت کی بہت

عمرہ یقیناً کون ہے " مع انقال "

الکب مقام لانج ہے

عمرہ یقیناً کون ہے " مع انقال "

عمرہ یقیناً کون ہے " مع انقال "

والدوسلم سے الگ نہیں ہو جائیگا۔ میں نہ کھاؤں نہ پیوں گی، بس اللہ تعالیٰ سے دعا ہے کہ
نازل فرمائی " وَاِنْ جَاهِدْكَ عَلَىٰ اَنْ تَشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصِرَتِي اِلَيْهِمْ
مَعْرُوفًا يَعْنِي اِذَا كَرِهْتَ اَنْ يَبْا بِاِسْمِ اِسْرَائِيْلَ كَمَا تَكْرِهُ اَنْ يَبْا بِاِسْمِ اِسْرَائِيْلَ
ہے تو تو اولیٰ کا کمان اور دنیاوی برتاؤ میں اچھے طور سے اولیٰ کے ساتھ دے۔
دوسری مجھے غنیمت کے مال میں کی ایک تلوار پسند آگئی تھی میں نے عرض کی " یا
رسول اللہ! یہ تلوار مجھے دیدیجئے تب یہ آیت اوتری " يَسْتَلُوْا عَمَّا غَنِيْنَا
یعنی لوگ تجھے غنیمت کے مال کا حال پوچھتے ہیں " "میسری یہ ہے کہ میں ہمارے
تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میری عیادت کو تشریف لائے میں نے پوچھا
" یا رسول اللہ! میرا ارادہ ہے کہ میں اپنا مال بانٹ دوں تو اوہ ہے مال کی وصیت کرو
فرمایا " نہیں " میں نے عرض کی " تو تمہاری کی؟ " اس پر آپ چپ رہے اس کے بعد تمہاری کی
وصیت جائز رہی۔ چوتھی کچھ انصاریوں کے ساتھ میں شراب پی رہا تھا اونہیں سے
میں نے ایک شخص نے میری ناک پر مار دیا تو میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
کی خدمت میں حاضر ہوا اس پر اللہ تعالیٰ نے شراب کی حرمت کا حکم اوتا دیا۔
(۲۴) اسما حضرت ابو بکر کی بیٹی فرماتی ہیں " رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے زمانے
میں میری ماں میرے پاس کچھ امیدوار آئی۔ تو میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
و سلم سے پوچھا " انکو کچھ دوں؟ " فرمایا " ہاں " ابن عیینہ رضی اللہ عنہما کہتے ہیں " اسی معا
میں اللہ تعالیٰ نے یہ آیت اوتاری " لَا يَنْتَلِزِعُ عَنْ اَلِیْنِ الَّذِیْنَ لَمْ يُقَالُوْا كُفْرًا فِی الدِّیْنِ
یعنی اللہ تعالیٰ تم لوگوں کو اونکے ساتھ احسان کرنے سے نہیں روکتا جو تم سے دین
کے بارے میں نہیں لڑتے "۔
(۲۵) حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے ایک ریشمی حلہ لکھا ہوا دیکھ کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
سے عرض کی " اسکو حضور خرید لین اور مجھے نیکے روز اور جب باہر کے لوگ حضور
آئیں اور وقت بہنا کریں " فرمایا " اسکو تو وہی پہنے جو آخرت میں بے نصیب ہو
پھر ویسے ہی کئی خطے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس آئے تو آپ نے

ہو جاتی ہیں مظلوم کی دعا۔ مسافر کی دعا۔ ماں باپ کی بدعا۔
 (۳۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ گود کے بچوں میں ایک جھرت
 عیسیٰ بن مریم صلی اللہ علیہ وسلم ہوئے ہیں اور دوسرے جھرتیج والا لڑکا، کسی نے پوچھا
 «یا رسول اللہ جھرتیج والا لڑکا کہا؟» فرمایا «جھرتیج ایک شخص باپ اپنے حجر سے میں
 رہا کرتا تھا۔ حجر سے کے نیچے میدان میں ایک شخص لاسے چرانے والا نکھیرا کرتا تھا گاڑ
 کی ایک عورت چرواہے کے پاس آمد رفت رکھتی تھی۔ ایک دن جھرتیج کی ماں آکر
 پکارنے لگی یا جھرتیج کادوہ نماز پڑھ رہا تھا اوس نے نماز ہی کی حالت میں دل میں کہا ادھر
 مان ہے۔ ادھر نماز ہے پھر سمجھا کہ نماز ہی پڑھوں۔ پھر دوبارہ چلائی۔ پھر اوس نے دل میں
 کہا۔ ادھر مان ہے۔ ادھر نماز ہے پھر سمجھا کہ نماز ہی پڑھوں۔ پھر وہ تیسرا بار چلائی۔ پھر
 اوس نے یہی خیال کیا ادھر مان ہے۔ ادھر نماز ہے پھر سمجھا کہ نماز ہی پڑھوں اور جواب
 ندیا۔ مان نے کہا اسے جھرتیج کجب تک تو مال زادیوں کا منہ نہ دیکھ لے خدا کھئے نہ مار
 مان تو کوس کر پھرتی۔ ادھر گاٹوں والی عورت کے لڑکا پیدا ہوا۔ لوگ اوس عورت کو
 بادشاہ کے پاس پکڑ لائے۔ بادشاہ نے عورت سے پوچھا «یہ لڑکا کس کا جتنا ہے؟»
 بولی «جھرتیج کا» پوچھا «وہی حجر سے والا؟» بولی «ہاں» بادشاہ نے حکم دیا «اوسکا چہرہ
 ڈھا دو اور اوسکو میرے پاس پکڑ لاؤ۔ بس حجر سے کو تو مارے گا اون کے گرا ہی دیا۔
 اور جھرتیج کے اتنے گردن پر رستی سے باند بکرنے چلے تو مال زادیوں کے محلے سے گزر ہوا
 جھرتیج اونکو دیکھ کر مسکرا دیا وہ سب بھی اسی کو دیکھ رہی تھیں۔ بادشاہ نے جو حج سے
 پوچھا «یہ عورت کیا کہتی ہے؟» بولا «کیا کہتی ہے؟» بادشاہ نے کہا «کہتی ہے کہ
 اوسکا لڑکا تیرا جتنا ہے» جھرتیج نے عورت سے پوچھا «کیا تو ایسا کہتی ہے؟» بولی
 «ہاں» جھرتیج نے کہا «بچہ کہاں ہے؟» لوگوں نے کہا «یہی اسکی گود میں» پھر
 جھرتیج نے لڑکے کی طرف متوجہ ہو کر کہا «تیرا باپ کون ہے؟» لڑکا بولا «لا سے
 لاجروا یا» اب تو بادشاہ نے کہا «آپ کا چہرہ سونے کا بناوین؟» کہا «نہیں»
 پوچھا «چاندی کا؟» کہا «نہیں» پوچھا «تہ کیا کریں؟» کہا بس جیسا تھا ویسا ہی

اور جو شخص ان دونوں کے حق میں استغفار کرے اور سکو ہی بخشد ہے، تو ہم ابوہریرہ رضی اللہ عنہ کی دعا میں داخل ہو جانے کی غرض سے دونوں کے واسطے استغفار کرتے ہیں۔
 (۳۷) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: جب بندہ مرجاتا ہے تو اوسکا عمل طے ہو جاتا ہے۔ گزرتین عمل (۱) صدقہ بجا رہے (۲) یا جس علم سے لوگ متفع ہوں (۳) یا اولاد صالح کی دعا۔

(۳۸) ابن عباس رضی اللہ عنہما سے روایت ہے کہ ایک شخص نے عرض کی: یا رسول اللہ! میری ماں بغیر وصیت کیے ہوئے مر گئی۔ میں اوسکی طرف سے کچھ خیرات کروں تو اوسکو ثواب پہنچے گا؟ فرمایا: ہاں۔
 ۲۰ آپ جس سلوک کرتا ہو اسکے ساتھ سلوک کرنا

(۳۹) ابن عمر رضی اللہ عنہما سے سفر میں ایک اعرابی سے ملاقات ہو گئی۔ اتفاقاً اوسکا باپ حضرت عمر رضی اللہ عنہ کا دوست تھا۔ ابن عمر رضی اللہ عنہما سے کہنے لگا: تم عمر کے بیٹے ہو نہ؟ فرمایا: ہاں۔ پھر ابن عمر نے اوسکو اپنے کوتل کا ایک گدھا دلوا دیا۔ اور اپنا عمامہ سر سے اتار کر دیدیا۔ اسپر اوسنے کسی ہمراہی نے کہا: کیا اوسے فقط دو درم دلوا دینا کافی نہ تھے؟ ابن عمر رضی اللہ عنہما نے جواب دیا: رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ہے: باپ کی دوستی کا خیال رکھو! سکو نہ توڑو اور نہ اللہ تعالیٰ تمہاری روشنی مٹا کر دے گا۔

(۴۰) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: بڑی سی بڑی سعادت مندی یہ ہے کہ آدمی اپنے باپ کے دوستوں سے سلوک کرتا رہے۔
 ۲۱ باپ پر احسان کرنا اور لوگوں کو چھوڑ دینے سے روشنی کا گل ہو جانا

(۴۱) عباد زرقی کہتے ہیں: میں عمر بن عثمان رضی اللہ عنہما کے ساتھ مسجد مدینہ میں بیٹھا ہوا تھا کہ عبد اللہ بن سلام رضی اللہ عنہ اپنے بھتیجے پریشکے ہوئے ہمارے پاس سے گزرے۔ اور جملے سے کچھ بٹہ لگئے۔ پھر پھرے۔ اور کہا عمر بن عثمان رضی اللہ عنہما تم کیا چاہتے ہو یہ بات دو بار یا تین بار کہہ کر فرمایا: قسم اوس خدا کی جس نے محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو سچا

یہ ہے کہ اگر کوئی شخص اپنے دل سے کسی کو برا بھلا کہے تو اللہ تعالیٰ اس کا دل بھلا کر دے گا اور اگر وہ اللہ تعالیٰ سے دعا کرے کہ اس کو اللہ تعالیٰ سے کچھ نہ ہو تو اللہ تعالیٰ اس کو کچھ نہیں دے گا۔

۲۷ (۵۱) ایک شخص نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہو کر عرض کی میرے بعض برادری کے لوگ ایسے ہیں کہ میں تو ان لوگوں سے ملنا جلتا ہوں مگر وہ لوگ مجھے کنارہ کرتے ہیں۔ اور میں ان سے بھلائی کرتا ہوں وہ مجھے برائی کرتے ہیں۔ وہ مجھے زبان درازی کرتے ہیں۔ میں سہہ لیتا ہوں آپ نے فرمایا۔ «اگر تو ٹھیک کتاب سے تو گویا گرم راکھ اور کو پھنکاتا ہے۔ اور جب تک تیرا یہی انداز رہے گا برابر خدا کی طرف سے اٹلے مقابلے میں تیری مدد ہوتی رہے گی»

(۵۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اللہ تعالیٰ نے فرمایا ہے «میں تو رخص ہوں اور میں نے ہی رحم (یعنی قرابت) کو پیدا کیا اور اپنے نام ہی سے اوسکا بھی نام نکالا ہے۔ تو جو رحم (قرابت) کو ملائے رکھے گا اوس سے میں بلا رہوں گا اور جو اوسکو قطع کرے گا میں بھی اسے قطع کروں گا»

۱۵

(۵۳) عبدالشبن عمر و کہتے ہیں «رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ہم لوگوں کے سمجھانے کو اپنی اونگلی سے بتا کر فرماتے تھے۔ رحم۔ رحم ہی کی شاخ ہے جو اوسے ملائے گا خدا بھی اوسے ملائے گا۔ اور جو اوسے کاٹ ڈالے گا خدا بھی اوسے کاٹ ڈیلا»

قیامت کے روز رحم کو خوب ہی صاف چلتی ہوئی زبان دی جائیگی»

(۵۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا «رحم اللہ کی شاخ ہے جو اوسے جوڑے گا خدا اوسکو بھی جوڑے گا اور جو اوسے توڑے گا خدا بھی اوسے توڑے گا»

۲۸ قرابت پر مدی سحیات کی ترقی

(۵۵) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا «جس شخص کو روزی کی کتابت پر سحیات کی ترقی منظور ہو اور اسکو قرابت پر مدی کرنا چاہیے»

(۵۶) ابن عمرؓ کہتے ہیں "جو شخص اپنے خدا سے ڈرتا رہے اور قرابت پروردگاری کرتا رہے اور سکی حیات کی مدت میں مہلت دیکھا دے گی۔ اور اسکے مال میں بھی زیادتی ہوگی۔ اور اسکے لوگ بھی اوسکو چاہنے لگیں گے۔"

(۵۷) ابن عمرؓ کہتے ہیں الخ وہی روایت نمبر ۵۶ (صرف لفظوں کا فرق ہے) اہل قرابت سے منجہ بدرجہ سلوک کرنا

(۵۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "اللہ تعالیٰ تم لوگوں کو ان کے بارے میں بہت تاکید فرماتا ہے۔ پھر مکرسان ہی کے بارے میں تاکید فرمائی۔ پھر ان کے بارے میں۔ تب باقی اہل قرابت درجہ بدرجہ کے بارے میں۔"

(۵۹) سلیمانؑ کہتے ہیں "جمعرات کی شام کو حضرت ابوہریرہؓ ہمارے یہاں آئے اور کہا "میں ہر نانا کاٹنے والے کو تکلیف دیتا ہوں کہ میرے پاس سے اٹھ جاوے مگر کوئی اٹھا نہیں یہاں تک کہ انہوں نے میں بار کہا تب ایک نوجوان آدمی جو اپنی پھوپھی کو دو برس سے چھوڑے ہوئے تھا وہ اوسکے یہاں گیا تو اس نے پوچھا "بھئیجا تو یہاں کیونکر آیا؟" بولا "میں ابوہریرہؓ کو ایسا ایسا کہتے ہوئے سنا کہ آیا ہوں" وہ بولی "اون سے جا کر پوچھو انہوں نے ایسا کیوں کہا" ابوہریرہؓ نے جواب دیا "میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو فرماتے ہوئے سنا ہے کہ آدمی کے اعمال جمعرات کی شام کو اللہ تعالیٰ کے دربار میں پیش کیے جاتے ہیں تو کسی نانا کاٹنے والے کا عمل قبول نہیں ہوتا۔"

(۶۰) ابن عمرؓ کہتے ہیں "آدمی جو کچھ اپنی ذات میں اور اپنے لوگوں میں ثواب کی نسبت سے خرچ کرتا ہے اللہ تعالیٰ اوسکو اجر دیتا ہے۔ اور خرچ اپنے بال بچوں سے شروع کرو۔ پھر کچھ بچے تو اہل قرابت کو درجہ بدرجہ دو۔ اور کچھ بچے تو پھر جسکو چاہو دو۔"

اس میں جس گروہ میں نانا کاٹنے والا ہو اس پر رحمت کا نازل نہ ہوتا

(۶۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ہے "جس گروہ میں ایک شخص بھی

اور حضرت امین ہوتی ہے۔
قرابت چھوڑنے کا گناہ

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ہے: "ناکالاٹنے والا بہشت میں
نہیں جائیگا۔"

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ہے: "رحم - رضن کی ایک شاخ پوری
رہنا اور پھل پھلنا اور کھانے پروردگار امین ستانی لگتی۔ اسے پروردگار امین کا
نام لگتا ہے۔ پروردگار امین پیر ہے۔ ہوا۔ جو اب ملے گا۔ تو راضی ہے نہ کہ جو تجھے
لاست سے لستے ہیں ہی کلاٹ دون اور جو تجھے جوڑے میں بھی اسے جوڑوں۔"

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کے اورنا قابولون کی بادشاہت سے پناہ مانگا کرتے ہیں
جس سے ان سے اورنا کی نشانی کیا ہے؟ فرمایا: "اسکی نشانی یہ ہے کہ قرابتیں
کلاٹ دی جائیں اور گراہ کرنے والوں کی بات مانی جاوے گی۔ اور ٹھیک راہ بتائیوالوں کی

ناکالاٹنے اور دنیاوی عذاب

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "ناکالاٹنے اور بغاوت کرنے سے
اوس قابل نہیں ہے کہ اوسکے کرنے واسطے پر اللہ دنیا ہی میں عذاب

کا عذاب علاوہ سے۔
قرابت پروردگاری کا عوض لینا

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "قرابت پروردگاری بدلہ نہیں لیا کرتا
اوس سے برادری بھی چھوڑو و تودہ ملا ہی لیا کرتا ہے۔"
قائم قرابت مند سے قرابت بوجھنے کی زندگی

۳۴
۳۵
برادری میں ایک دہمائی آدمی نے حاضر ہو کر عرض کی: "یا نبی اللہ! مجھے ایسا
عقار ہو جو مجھ کو جنت میں پہنچا دے۔" فرمایا: "ہات تو تو مختصر ہی بولا مگر سوال
کی کیا اچھا جا فلام آزا کر۔ اور گردن چھوڑا،، اوس نے عرض کی: "وہوں تو

۱۶

ایک ہی بات میں نہ ہو، فرمایا: نہیں۔ غلام آزاد کرنا تو یہ ہے کہ غلام کو اس کی
 اور گردن چھوڑا جائے کہ کسی کی گلو خلاصی میں بدو کرنا اور اہل کفر کی باتوں سے
 کی چیز دینا۔ اور ان کی طرف سلوک کے ساتھ متوجہ رہنا۔ اگر یہ نہ ہو سکے تو اس کی
 کی ہدایت کر اور بڑی بات سے روک۔ اگر یہ بھی نہ ہو سکے تو اچھی بات
 سوا کچھ نہ بول، «
 ۳۳۳ نو مسلم کافر کی حالت میں صلہ رحم کرنا

(۶۸) حکیم بن حزام نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے عرض کی کہ حضور
 باتوں کے بارے میں فرمائیے میں جنہیں حالت کفر میں بہریت عنایت کرنا
 تھا جیسے برادرانہ سلوک کرنا ہوا۔ غلام آزاد کرنا ہوا، خیرات دینا ہوا، کچھ اور
 کچھ ثواب ہوگا، فرمایا: اچھی باتیں جو کہ چلے ہو اسلام لانے پر جسے سب کا حال
 مشرک و اہل مندر سے برادرانہ سلوک کرنا اور کچھ دینا
 ۳۳۴

(۶۹) ابن عمر رضی اللہ عنہما نے فرمایا: حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے ایک شخص سے عرض کی کہ
 اسکو حضور مولیٰ کے لئے لیتے۔ اور جمع کو اور جب باہر کے لوگ حضور میں سے
 پھرتے، اس پر آپ نے فرمایا: اسکو توبہ نصیب ہی نہیں ہے، اسکو
 کسی حد تک رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے بیان بطور ہدایت کے
 لو آپ نے اوس میں سے ایک حد حضرت عمر کو بھی تحفہ بھیجا۔ تو حضرت
 رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہو کر عرض کی کہ
 مجھے یہ بھیجا جا حالانکہ میں اس کے بارے میں وہ بات سن چکا ہوں، آپ نے
 تھی، آپ نے فرمایا: ہنسنے تمہیں پسینے کو نہیں دیا ہے بلکہ اسو اسلے التہ ویا ہے
 تم اسکو بیچ ڈالو یا کسی کو پہنا دو، تب حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے وہ حد اپنے ایک مشرک
 اخیافی بھائی کے پاس بھیج دیا،
 ۳۳۸ صلہ رحم کرنا کہ یہ خاندانی قرابتوں کا معلوم کرنا

(۷۰) حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے منبر پر فرمایا: خاندانی قرابتوں کو معلوم کر کے برادرانہ سلوک

۱۸
 حدیث میں نقل ہے
 صلہ رحم کرنا کہ یہ خاندانی قرابتوں کا معلوم کرنا
 اسکو بیچ ڈالو یا کسی کو پہنا دو
 تب حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے وہ حد اپنے ایک مشرک
 اخیافی بھائی کے پاس بھیج دیا

کے دن لوگ تو اپنے اپنے اعمال کے لیکر حاضر ہوں اور تم لوگ اپنے اپنے اعمال کے
 کے) بوجھے اٹھائے اٹھائے اور تم سے روزہ پھیر لیا جائے۔ پھر آپ نے روزہ
 ہاتھ اٹھا کر قریش کے سروں پر رکھا اور پکار کر فرمایا اے لوگو! قریش سالِ اہانت
 ہیں جو شخص انکی بدخواہی کریگا اللہ اوسکو تھنوں کے بھل کر اڈیلا آپ نے یہ باتیں
 تین بار فرمائیں۔

۴۱
 دو تین روزہ کی پرورش

(۴۳) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جس شخص کی تین بیٹیاں ہوں اور
 وہ (اونکی پرورش کی مصیبت پر) صبر کرے اور اوسکے گھر سے لٹے کی خبر لے تو وہ دیکھتا
 اوسکے اور دوزخ کے درمیان میں پردہ ہو جائیگی،

(۴۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جس مسلمان کی دو بیٹیاں ہوں اور وہ اوسکا
 اچھا ساتھ دے تو وہ دونوں اوسکو بہشت میں پہنچا دیں گی،

(۴۶) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جس شخص کی تین بیٹیاں ہوں وہ
 اونکو رہنے کا ٹھکانا دے۔ اوسکے خرچ کی خبر گیری کرے۔ اون پر مہربانی کرے۔ اوسکے
 لیے بہشت میں جانا البتہ واجب ہے، ایک شخص نے عرض کی ادا اور اگر دو ہی ہوں
 یا رسول اللہ! آپ نے فرمایا دو ہوں تب بھی،

۴۲
 تین بیٹوں کی پرورش

(۴۷) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جس شخص کی تین بیٹیاں ہوں
 تین بیٹیاں ہوں اور وہ اوسکے ساتھ سلوک کرتا ہو وہ ضرور بہشت میں جائیگا،
 واپس شدہ نبی کی پرورش

(۴۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے سراقہ بن جعشم سے فرمایا میں نے
 سے بڑا صدقہ بنا دوں، عرض کی ان یا رسول اللہ! فرمایا تیری بیٹی نکلا
 ہوئی اب اوسکو کھا کر کھلانے والا تیرے سوا کوئی نہیں ہے،
 (۴۹) وہی حدیث۔

۴۰
 زمانہ جاہلیت میں
 عرب یہودیوں کو دیکھتا
 کرتے تھے اسی لیے
 اس قدر تفصیلی
 اس باب کے احکامات
 کے ہیں

۴۰

۴۱
 یعنی اوسکے ساتھ
 نہ تعلق رہی
 ہو یا یہودیوں سے
 ہو

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جو کچھ تو خود کھائے وہ بھی صدقہ
 کا اور کچھ رکھتا ہے جو اپنے لڑکے کو کھلائے وہ بھی صدقہ ہے۔ جو اپنی بیوی کو
 کھلائے وہ بھی صدقہ ہے۔ جو اپنے خادم کو کھلائے وہ بھی صدقہ ہے۔"
 بیٹوں کی موت کا گناہ

(۱۸) ابن عمر رضی اللہ عنہما سے ایک شخص تھا اور اسکی کئی بیٹیاں تھیں وہ اونکی موت منانے
 کا تو ابن عمر نے غصہ جو کہ فرماتے لگے کیا تو سی اور کوروزی دیتا ہے۔
 لڑکے اپنے بچل بنا دیتے ہیں بڑا بنا دیتے ہیں

(۱۹) عائشہ نے فرمایا: ایک دن ابو بکر نے کئے لگے قسم خدا کی روی زمین پر عمر سے
 زیادہ کوئی میرا پیارا نہیں ہے، پھر جب مکان سے نکلے تو لوٹ آئے اور پوچھنے لگے
 میں نے کیا قسم کھائی تھی؟ میں نے عرض کر دی۔ تب بولے "میرے نزدیک
 (عمر سے) زیادہ عزت والا کوئی نہیں کیونکہ شفقت تو اولاد پر زیادہ ہوتی ہے۔"
 (۲۰) ابن ابی نعیم نے کہا: میں ابن عمر رضی اللہ عنہما کے پاس حاضر تھا۔ اس میں ایک شخص نے
 اون سے پھر مارنے کا مسئلہ پوچھا۔ تو ابن عمر نے پوچھا تو کن لوگوں میں ہے؟ وہ بولا
 عراق والوں میں ہوں۔ اس پر ابن عمر بولے: "اسکو دیکھیے پھر کے خون کا تو مسئلہ
 پوچھنے آیا ہے اور ان میں صاحبوں نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے بیٹے کو شہید کر ڈالا
 ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو یہ فرماتے سنا ہے کہ یہ دونوں (امام حسن و امام حسین
 رضی اللہ عنہما) کے لیے پھول ہیں۔"
 لڑکے لوگوں پر بھانا

(۲۱) سیدنا جابر رضی اللہ عنہ نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو دیکھا کہ (امام حسن و امام حسین
 علیہ السلام) کے مبارک گردن پر ہیں اور آپ فرماتے ہیں یا اللہ میں اسے چاہتا
 ہوں تو بھی اسے چاہوں۔
 لڑکوں کا انکسکی ٹھنڈک ہونا

(۲۲) جبریل علیہ السلام نے کہا: ہم لوگ ایک دن مقداد بن الاسود رضی اللہ عنہ کے پاس تھے

۲۱

اس میں اونس کے پاس سے ایک شخص گزرا تو اس نے کہا: "زبیر نصیب ان لوگوں
 آنکھوں کے کہ انھوں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی زیارت کی ہے۔ تم خدا
 کی عین بھی آرزو رہ گئی کہ جو (مقداد) نے دیکھا ہم بھی دیکھتے۔ اور جہاں جہاں آپ (صلی اللہ علیہ
 حاضر رہے ہم بھی حاضر رہتے" اس پر مقداد کو غصہ آ گیا۔ تو ہم لوگ تعجب کرنے لگے کہ
 اس نے تو اچھی ہی بات کہی تھی۔ پھر مقداد اور سپر متوجہ ہوئے اور کہا: "آدمی کیوں ایسے
 موقع پر موجود رہنے کی تمنا رکھتا ہے جہاں سے اللہ کے اوسے غیر حاضر رکھنا یہ تو جانتا
 ہی نہیں کہ وہاں ہوتا تو کس حال میں ہوتا۔ قسم خدا کی رسول اللہ صلی اللہ علیہ
 وآلہ وسلم کے وقت میں ایسے لوگ بھی حاضر تھے۔ جنکو اللہ نے تمہوں کے جہنم
 میں جھونک دیا۔ اوں لوگوں نے آپ کی بات کو نہ مانا نہ آپ کی تصدیق کی۔ تم لوگ
 خدا کا شکر نہیں کرتے۔ کہ تم کو ایسے وقت میں پیدا کیا کہ تم اپنے (پتے) پروردگار کے سوا
 کسی کو جانتے ہی نہیں تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے دین کی (بے تکلف)
 تصدیق کر لیتے ہو جو آپ ایسے سخت وقت میں لائے تھے کہ (شاہد ہی) کوئی نبی ایسے
 وقت میں بھی جا گیا ہو۔ انبیاءت سے بھی نہیں گئے تھے۔ کفر کا بازار شور تھا کہ
 لوگ ساری دنیا کو بھی بت پرستی پر ترجیح نہیں دیتے تھے۔ ایسے وقت میں رسول
 صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم معجزہ لے کر آئے جس سے آپ نے حق اور باطل کو جدا
 کر دیا اور اسکے سبب سے باپ اور بیٹے کو علیحدہ علیحدہ کر دیا۔ یہاں تک کہ آدمی
 اپنے باپ کو یا بیٹے کو یا بھائی کو کفر میں مبتلا دیکھتا تھا مگر چونکہ اللہ نے اسکے دل کا
 تالا ایمان کی کنجی سے کھول دیا تھا اس لیے یہ خوب جانتا تھا کہ وہاں کربلا کا
 تو دوزخ میں جائیگا اس واسطے (اوسکے دیکھنے سے) شہد کس اسکی آنکھ کو نہیں
 تھی۔ کیونکہ یہ جانتا ہے کہ اسکا پیارا دوزخی ہے۔ اور یہی ہے جو اللہ نے فرمایا ہے
 "اور وہ بندے جو یہ دعا کیا کرتے ہیں اُسے میرے پروردگار اپنے میری اولاد سے
 اور اولاد سے آنکھوں کی ٹھنڈک عطا فرما"

۲۲

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی زیارت کی ہے۔
 انھیں سورہ الشوریٰ
 سورہ ۲۶

اور اولاد سے آنکھوں کی ٹھنڈک عطا فرما
 اپنے رفیق کے حق میں کثرت مال اور اولاد کی دعا

(۸۶) انس رضی اللہ عنہما ایک دن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے یہاں
 حاضر ہوئے اور میرے ساتھ میری بیوی اور ہم دونوں کے ساتھ بھی تھیں انہیں میں آپ سے ہم
 لوگوں کے پاس ہی چلے آئے اور فرمایا: میں تم لوگوں کو نماز پڑھاؤں گا اور وہ وقت
 کسی معمولی نماز کا وقت نہ تھا۔ ایک شخص نے پوچھا کہ: آپ نے انس کو اپنے گھر
 کو لے آیا ہے تو انس نے کہا: اچھا ہے جانے جانے، پھر ہم لوگوں کو نماز پڑھا لی۔
 پھر ہم سب گھر والوں کے حق میں سب دنیا اور آخرت کی بھلائیوں کی دعا فرمائی
 تو میری ماں نے عرض کی: یا رسول اللہ! یہ (یعنی انس) حضور کا تنہا خادم ہے اس کے
 لیے دعا فرمائیے تو آپ نے میرے لیے سب بھلائی کی دعا فرمائی۔ آخر میں یہ فرمایا:
 یا اللہ! اس کے مال اور اولاد میں ترقی دے اور برکت عطا فرما۔
 مان کی شفقت

۲۳

(۸۷) انس رضی اللہ عنہما نے کہا: حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کے یہاں ایک عورت آئی۔ آپ نے
 اسے تین چھوہارے دیئے تو اس نے ایک ایک چھوہارا اپنے لڑکوں کو دیا
 اور ایک اپنے لیے رکھ چھوڑا۔ لڑکے اپنے دونوں چھوہارے کھا کر پھر مان کو
 دیکھنے لگے۔ تو اس نے اس چھوہارے کو جسے اپنے لیے رکھا تھا، دو ٹکڑے کر کے
 پھر ایک ایک لڑکے کو دیا۔ لڑکوں کو یہ یاد آیا۔ جب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم شرف
 لائے تو عائشہ رضی اللہ عنہا نے آپ سے یہ حال کہا۔ اس پر آپ نے فرمایا: تم لوگ اس کا تعجب
 کیا ہے اسے جو اپنے لڑکوں پر مہربانی کی تو اللہ بھی اس پر مہربان ہو گیا۔
 لڑکوں کو چھوہارا

(۸۸) حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے کہا: ایک مہبائی آدمی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت
 میں حاضر ہو کر بچھڑے لگا کر: آپ لوگ اپنے لڑکوں کو جو ستے بھی ہیں، ہم لوگ تو نہیں
 چھوہارے، اس پر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: اللہ نے تیرے دل سے رحمت
 کو نکال ڈالا تو اس میں سے لڑکے کا اختیار ہے۔
 (۸۹) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا: رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے امام حسن بن علی کا

بوسد لیا اور وقت آپ کے پاس اقرع بن حابس تمہاری بیٹی کے لئے اقرع بن حابس سے
 دس لڑکے بن بن میں نے کبھی ایک لڑکی بوس نہیں کیا ہے، اس پر رسول اللہ صلی اللہ
 علیہ وآلہ وسلم نے اونکی طرف دیکھ کر فرمایا: جو شخص کسی پر رحم نہیں کرے گا اور میری
 رحم نہیں کیا جائیگا،
 ۵۱ باپ کی بیٹی کو تعلیم اور اسکے ساتھ سلوک

۲۳

(۹۰) نیر بن اوس نے کہا: اگلے لوگ کہا کرتے تھے کہ صلاحیت اللہ کی طرف سے
 ہے اور سلیقہ باپ دادا کی طرف سے،
 (۹۱) نعمان بن بشیر نے کہا کہ: اونکے باپ اونکو گود میں اٹھا کر رسول اللہ صلی اللہ
 علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں لے گئے اور عرض کی: یا رسول اللہ! میں آپکو گواہ کرتا ہوں
 کہ میں نے نعمان کو یہ یہ دیا، اس پر آپ نے پوچھا کہ تم نے اپنے اور سب بیٹوں کو
 دیا ہے؟ عرض کی: نہیں، فرمایا: تو میرے سوا اور کسی کو گواہ کر لو، پھر فرمایا: کیا تم
 نہیں چاہتے کہ تمہارے سب لڑکے تمہارے ساتھ برابر سلوک کریں؟ عرض کی:
 کیون نہیں، فرمایا: تو تم بھی ایسا نہ کرو کہ ایک ہی کو دو اور سبکو نہ دو، ابو عبید اللہ بخاری
 کہتے ہیں: آپ نے گواہی کی اجازت نہیں دی،
 ۵۲ بیٹے کے ساتھ باپ کا سلوک

(۹۲) ابن عمر نے کہا: اللہ نے اونکو برابر (نکو کار) اسی سبب سے فرمایا کہ وہ لوگ
 جیسا (اپنے بزرگوں) باپ (داوون) کے ساتھ سلوک کرتے ہیں بیٹوں کے ساتھ
 بھی سلوک کرتے ہیں جیسا تم برباب کا حق ہے ویسا ہی بیٹے کا بھی حق ہے،
 ۵۳ بے رحم آدمی پر رحمت نہ ہونا

(۹۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: جو شخص رحم نہیں کرے گا اور میری رحم
 نہیں کیا جائے گا،
 (۹۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: اللہ اور میری رحم نہیں کرتا اور لوگوں
 رحم نہیں کرتا،

(۹۷) حضرت عائشہ نے کہا: "چند وہابی انہی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہوئے اور میں نے ایک شخص نے پوچھا: "یا رسول اللہ! آپ لوگ لوگوں کو چھوٹے سے ہیں، قسم خدا کی ہم لوگ تو نہیں چھوٹے"۔ اس پر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "اللہ نے تیرے محل سے رحمت کو نکال ڈالا تو اس میں میرا کیا اختیار ہے" (۹۷) حضرت عمر نے ایک شخص کو (کسی کام پر) گماشتہ بنایا اور اس شخص نے کہا کہ میرے اتنے (بڑے) ہیں (کچھ تعداد بتائی) میں نے ان میں سے کسی کا بوسہ نہیں لیا۔ اس پر حضرت عمر نے بولے: "اللہ تعالیٰ اپنے بندوں میں خوش سلوک ہی بندے پر مہربانی فرمایا کرتا ہے"۔
رحمت کا تسو حصے ہونا

(۹۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "اللہ تعالیٰ نے رحمت کے تسو حصے کیے۔ ننانوے تو اپنے ہی پاس رکھے۔ فقط ایک حصہ زمین پر اتار دیا جس (کی برکت) سے ساری مخلوق ایک دوسرے پر مہربانی کیا کرتی ہے یہاں تک کہ گھوڑی بھی بچے کو صدر پہننے کے خوف سے اپنا سیم اوس سے اڑھٹھا لیتی ہے"۔
ہمسائے کے بارہ میں تاکید

(۹۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جبرئیل (علیہ السلام) ہمسائے کے بارے میں پر ابر مجھ پر تاکید کرتے رہے یہاں تک کہ مجھے گمان ہونے لگا کہ اب تو ہمسائے کو یہ وراثت ہی دلائیے"۔

(۱۰۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جسکو اللہ پر اور روز قیامت پر ایمان ہے اسکو ہمسائے کے ساتھ نیکی کرنا چاہیے جسکو اللہ پر اور روز قیامت پر ایمان ہے۔ جسکو اپنے مہمان کی خاطر کرنا چاہیے۔ جسکو اللہ پر اور روز قیامت پر ایمان ہے اسکو سے کہ با تو ایسی بات بولے یا چپ چاپ رہے"۔
ہمسائے سے ممانعت

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اصحاب سے زنا کے بارے میں پوچھا

۲۵

سب نے عرض کی "حرام ہے اللہ نے اور رسول نے اسے حرام کیا ہے" فرمایا میں
 عورتوں کے ساتھ زنا کرنا ہمسائے کی عورت کے ساتھ زنا کرنے سے بہت کم ہے
 پھر آپ نے چوری کی بابت سوال کیا سب نے عرض کی "حرام ہے اللہ نے
 اور رسول نے اسے حرام کیا ہے" فرمایا "دس گھر چوری کرنا ہمسائے کے گھر
 چوری کرنے سے بہت کم ہے"
 ہمسائے کو مقدم کرنا ۵۷

(۱۰۲) حدیث تاکید جبرئیل علیہ السلام (۹۹)۔

(۱۰۳) ابن عمر رضی اللہ عنہما کے بیان ایک بکری فوج ہوئی تو اپنے غلام سے پوچھنے لگے ہمارے
 یہودی ہمسائے کو بھی بھیجا ہمارے یہودی ہمسائے کو بھی بھیجا ہم نے رسول اللہ
 صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سنا ہے۔ آپ فرماتے تھے "جبرئیل (علیہ السلام) ہمسائے
 کے بارے میں مجھ پر تاکید کرتے رہے یہاں تک کہ مجھے گمان ہونے لگا کہ اب تو
 ہمسائے کو یہ وراثت ہی دلائینگے"

۲۶

(۱۰۴) حدیث تاکید جبرئیل علیہ السلام (۹۹)
 نزدیک دروازے والے ہمسائے کو تحفہ دینا ۵۸

(۱۰۵) حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے فرمایا "میں نے پوچھا یا رسول اللہ! میرے ہمسائے کو
 ہین کسکے یہاں تحفہ بھیجوں؟" فرمایا "جس کا دروازہ قریب ہو"
 (۱۰۶) مکر وہی حدیث۔

۵۹ قریب تر ہمسائے کا حق مقدم ہونا پھر جو اسکے بعد ہو برابر اسی طرح

(۱۰۷) امام حسن بصری سے کسی نے پڑوس کو پوچھا "کہا" چائیس گھر آگے۔ چائیس گھر
 پیچھے۔ چائیس گھر داہنے۔ چائیس گھر بائیں"

(۱۰۸) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے فرمایا "تزدیک والے ہمسائے پر دور والے کو مقدم نہ کرے
 بلکہ نزدیک ہی والے پڑوسی کو دور والے پر مقدم کرے"
 ہمسائے سے دروازہ بند کرنا ۶۰

(۱۰۹) حضرت ابن عمر نے فرمایا: ہم لوگوں کا ایک وقت گزرا ہے کہ کوئی شخص اپنے
 اشرافی روپوں میں اپنا حق اور مسلمان بھائی سے زیادہ نہیں سمجھتا تھا۔ مگر اب تو مسلمان
 بھائی سے بڑھ کر اشرافی روپے ہی پیار سے ہو گئے ہیں۔ میں نے رسول اللہ صلی اللہ
 علیہ وآلہ وسلم کو فرماتے سنا ہے کہ: "کتے ہمسائے اپنے ہمسائے سے قیامت کے روز
 لٹینگے اور کہیں گے: "اے پروردگار! اس نے ہمسے اپنا دروازہ بند کر کے ہمسائگی
 کے سلوک سے ہاتھ روک لیا تھا۔"
 ہمسائے کو چھوڑ کر اپنا بیٹ نہ بھرے

(۱۱۰) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "مومن کا کام نہیں ہے کہ پڑوسی
 کو بھوکھا ہو اور آپ بھر بیٹ کھائے۔"
 شور بے کاپانی زیادہ کر کے ہمسائے میں تقسیم کرنا

(۱۱۱) حضرت ابو ذر رضی اللہ عنہ نے کہا: "مجھے میرے دوست (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم)
 نے تین باتوں کی تاکید فرمائی ہے۔ بے ہاتھ پانوں کا بوجھا غلام بھی حاکم ہو تو میں
 اسکی بات سنوں اور حکم مانوں اور جب شور باپکائے تو اوس میں بانی زیادہ
 دے پھر اپنے ہمسائے والوں کو دیکھ کر کچھ اونکو بھی اوس میں سے پہنچا دیا کر۔ اور
 نماز وقت پر پڑھ لیا کر۔ اگر امام پہلے پڑھ چکا ہے تو تیری فرض نماز ادا ہوئی نہیں تو یہ
 نماز نفل ہوگی۔"

(۱۱۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "اے ابو ذر شور باپکا تو پانی زیادہ دے
 اور اپنے ہمسائے کی بھی خبر لے۔"
 اچھا ہمسایہ

(۱۱۳) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "خدا کے نزدیک اچھا ساتھی
 وہ ہے جو اپنے ساتھی کے ساتھ اچھا ہے۔ اور ایسا ہی اچھا ہمسایہ خدا کے نزدیک
 وہ ہے جو اپنے ہمسائے کے ساتھ اچھا ہے۔"
 نیک بخت ہمسایہ

(۱۱۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: کتنا مکان اور نیاک بخت ہمسائے اور نسائے سواری مسلمان آدمی کی خوش قسمتی کی بابت ہے۔
 ۶۵ ہمسائے

(۱۱۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم یہ دعا بھی فرمایا کرتے: «یا اللہ! مقامی مکان کے برے ہمسائے سے تیری پناہ۔ اور دنیا کی ہمسائگی تو (آخر) بدلا ہی کرتی ہے»
 (۱۱۶) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: جب ایسا ہوگا کہ آدمی اپنے ہمسائے کو اور بھائی کو اور باپ کو قتل کر ڈالے گا تبھی قیامت قائم ہوگی۔
 ۶۶ ہمسائے پر زبان درازی

(۱۱۷) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کہتے ہیں: «رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو خبر دی گئی کہ فلانی عورت رات بھر عبادت کرتی ہے۔ اور دن کو روزہ رکھتی ہے۔ اور یہ یہ کام کرتی ہے۔ اور خیرات دیتی ہے۔ مگر اپنے ہمسائے پر زبان درازی کرتی ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: «اوس میں کچھ خوبی نہیں ہے۔ وہ دوزخی ہے» لوگوں نے عرض کی: «اور فلانی عورت فقط فرض نمازین پڑھ لیا کرتی ہے۔ اور رمضان کے روزے رکھ لیتی ہے۔ اور کچھ کپڑے خیرات دیدیا کرتی ہے۔ مگر کسکو ستاتی نہیں» رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: «یہ عورت ہشتی ہے»
 (۱۱۸) عمارہؓ کی بھوپھی کہتی ہیں: «میں نے ام المؤمنین عائشہؓ سے پوچھا: تم میں سے کسی عورت کا شوہر اوسکے ساتھ کچھ (صحبت کا) ارادہ کرے اور عورت اوسکو روکے (عورت کو اس بات کا طال ہو) کہ وہ ہم پر خفا ہوا تھا یا اوسوقت رغبت نہو تو اس میں ہم لوگوں پر کچھ مضائقہ ہے» حضرت عائشہؓ نے فرمایا: «ہاں (مضائقہ) ہے شوہر کا توقع یہ ہے کہ تو اونٹ پر بھی سوار ہو اور وہ اوسی وقت ارادہ کرے تب بھی روکنا نہیں چاہیے» عمارہؓ کی بھوپھی کہتی ہیں: «میں نے اون سے پوچھا کہ: ہم میں کوئی عورت ایام میں ہو اور میان بیوی دونوں کا ایک ہی بچھوٹا یا ایک ہی اور ہنا ہو تو عورت کیا کرے» آپ نے فرمایا: «اپنا تہ بند کسکر باندھنے سے بچر ساتھ شور ہے»

یعنی یہ تیری پناہ ہے
 یعنی یہ تیری پناہ ہے
 ۱۲

۲۸

اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا حال میں مجھے کے وہی ہوں۔ ایک رات حضرت کی میرے یہاں رہنے کی باری تھی تو میں نے تمہارے پیچھے ایک روٹی آپ کے لیے پکائی پھر آپ اندر آکر دروازہ کھول کر مسجد میں چلے گئے اور آپ کا معمول تھا کہ جب سو رہنے کا قصد فرماتے تو دروازہ بند کر دیتے اور خشک کا منہ باندھ دیتے اور پیالہ اونڈھا دیتے اور چراغ بجھا دیتے غرض میں انتظار کرنے لگی کہ آپ آدھے گھنٹے تو آپ کو روٹی کھلاؤ لگا کر آپ کو اس قدر توقف ہوا کہ مجھ پر نیند غالب آگئی اور آپ کو جاڑے کی تکلیف ہونے لگی آپ میرے پاس تشریف لاکر مجھے کھڑی کر کے فرماتے لگے "مجھے گراؤ مجھے گراؤ" میں نے عرض کی کہ "مجھے ایام ہیں" آپ نے فرمایا "اپنی راتوں سے کپڑا سر کاوئے" میں نے وہاں سے کپڑا سر کا دیا تو آپ خسارہ مبارک اور سراقہ سے میری راتوں پر اتنی دیر تک رکھے رہے کہ گراتے گئے۔ اسی میں میرے ہمسائے کی ایک داجنہ بکری (جو گھری میں کھائی ہے باہر چرنے کو نکلے) آگئی اور دہلی کی طرف چلی اور اسے لیکر بکری اسکا مجھے قلع ہونے لگا اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم یہاں ہو گئے پھر میں نے دروازے تک اسکا پیچھا کیا اس پر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تمہاری روٹی جو کچھ مل جائے وہ لو لے لینا اور بکری کے بارے میں کچھ اپنے ہمسائے کو نہ سنانا۔

۲۹
 یا تو یہ بکری کو
 دین جس سے
 بسلا کو نقصان
 ہو گیا یا صدقہ
 ہو گیا یا مسکاک
 بکری چھوڑ دینا
 کا الزام دینا

(۱۱۹) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جس شخص کا ہمسایہ اسکی بد معاشرت سے مطمئن نہ ہو وہ بہشت میں نہ جائیگا۔
 بکری کی چلی ہوئی گھری ہی تھی ہمسائے کے لیے تھوڑا نہ سمجھے

(۱۲۰) عمرو بن معاذ کی وادی نے کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے مجھے فرمایا اسے ایماندار عورتوں بکری کا جلا ہوا پانچہ بھی تو ہمسائے کے دیہان بھیجے کے لیے بھیجنا۔

(۱۲۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اے مسلمان عورتو! اے مسلمان

عورتوں کی بکری کی گھری بھی ہو تو ہمسائے کے واسطے تمہاری نہ سمجھنا۔
 ہمسائے کی شکایت ۶۸

(۱۲۲) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا: کسی نے عرض کی: «یا رسول اللہ! ایک ہمسایہ میرا مجھے تکلیف دیا کرتا ہے» آپ نے فرمایا: «اچھا تو جا کر اپنا اسباب نکال کر سربراہ رکھ دے» اوس نے اسباب سب نکالا تو لوگ جمع ہو گئے اور پوچھنے لگے تیرا کیا حال ہے؟ اوس نے جواب دیا کہ: «میرا ایک ہمسایہ مجھے تکلیف دیا کرتا ہے۔ میں نے یہ حال نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے کہا تو آپ نے فرمایا کہ: «جا کر اپنا اسباب نکال کر راہ پر رکھ دے» پس یہ منکر سب کے سب کہنے لگے: «خداوندا! اوپر لعنت بھیج۔ خداوندا! او سکوز لیل کرو»، یہ خبر اوس (موزی) کو پہنچی تو اوس (فریادی) کے پاس آکر کہنے لگا: «چلو گھر بھر چلو۔ خدا کی قسم اب ہم تمہیں تکلیف نہ دینگے»

(۱۲۳) ابو جحیفہ رضی اللہ عنہ نے کہا: «ایک شخص نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں اپنے ہمسائے کی شکایت کی تو آپ نے فرمایا: اپنا اسباب اٹھا کر راہ پر رکھ دے جو شخص او دھڑ سے گزرے گا اوپر لعنت بھیجے گا (اوس نے یہی کیا) پس اب جو شخص او دھڑ سے گزرتا اوپر لعنت بھیجتا۔ تب وہ موزی، نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہوا تو آپ نے پوچھا: «لوگوں سے تجھے کیا ملا؟» پھر آپ نے فرمایا: «خدا کی لعنت ان لوگوں کی لعنتوں کے علاوہ ہے»

(۱۲۴) جابر رضی اللہ عنہ نے کہا: «ایک شخص نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہو کر آپ سے اپنے ہمسائے کی سزا دہی کی درخواست کی۔ آپ (مسجد الحرام میں) رکن بانی اور مقام ابراہیم کے درمیان میں تشریف رکھتے تھے اتنے میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے او دھڑ (مقام کی طرف) رخ کیا اور اوس شخص نے آپ کو دیکھا کہ آپ ایک سفید پوش شخص کے برابر مقام ابراہیم پر جہان جنازے کی نماز پڑھی جا رہے آگے پھر آپ (اوسکی طرف) متوجہ ہوئے تو اوس نے عرض کی: «یا رسول اللہ! میرے ماں باپ آپ پر قربان ہوں یہ سفید پوش آدمی کون تھا جسے میں نے

۳۰

آپ کے ساتھ آپ کے برابرین دیکھا؟ آپ نے پوچھا «تو نے اون سے دیکھ لیا» عرض کی «ہاں» فرمایا «تو نے بڑے رستے کی چیز دیکھی یہ میرے رب کا خاصہ چیز ہے صلی اللہ علیہ وسلم سے برابر مجھے ہمسائے کے بارے میں تاکید کیا کیے یہاں تک کہ مجھے گمان ہوا کہ یہ اوسکو ترک کر لوں گے»

۴۹ ہمسائے کی ایذا سے گھر چھوڑ دینا

(۱۲۵) ثویان نے کہا «جو دو آدمی تین دن سے زیادہ (رنجش کے سبب سے) ایک دوسرے سے کنارہ کش ہو جاتے ہیں اگر وہ دونوں اسی کنارہ کشی کی حالت میں فرسے تو دونوں ہلاک ہوئے اور جو شخص ہمسائے پر اسقدر ظلم کرے کہ وہ گھبر کر اپنا گھر چھوڑ دے تو وہ بھی ہلاک ہوا»

۵۰ یہودی ہمسایہ

(۱۲۶) مجاہد نے کہا «میں عبد اللہ بن عمرؓ کے پاس تھا اور انکا غلام بکری لگی کھال کھینچ رہا تھا عبد اللہ بن عمرؓ نے کہا «اے لڑکے اس سے چھٹی کر کے پیلے میرے یہودی ہمسائے کے یہاں کچھ (گوشت وغیرہ) ہونچا دینا اس پر ایک شخص نے اون سے کہا «خدا آپ کا بھلا کرے یہودی کے یہاں» ابن عمرؓ نے جواب دیا «میں نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو سنا آپ ہمسائے کے بارے میں اسقدر تاکید فرماتے تھے کہ ہم لوگ ڈرے کہ آپ شاید اوسکو وارث بنا دینگے»

۵۱ کرم

(۱۲۷) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سوال کیا گیا «بڑے رستے والا آدمی کون ہے؟» آپ نے جواب دیا «جو بڑا پرہیزگار ہے خدا کے نزدیک وہی بڑا رستے والا ہے لوگوں نے عرض کی «ہم یہ نہیں پوچھتے» آپ نے فرمایا «تو سب سے بزرگ حضرت یوسف نبی اللہ میں نبی اللہ کے بیٹے خلیل اللہ کے بیٹے» لوگوں نے عرض کی «ہم یہ بھی نہیں پوچھتے» آپ نے فرمایا «تو عرب کے نژادوں کے بارے میں پوچھنے ہو» عرض کی «ہاں» آپ نے فرمایا «تو جو لوگوں کو

ایام جاہلیت میں تم میں اچھے تھے وہی اسلام لانے پر بھی اچھے ہیں مگر سب سے دار سب سے
شرط سے“
۶۲ اچھے بڑے سب کے ساتھ احسان کرنا

(۱۲۸) محمد بن علی رضی اللہ عنہما نے آیہ صَلِّ جَدَّائِ الْأَحْسَانِ إِلَّا الْأَحْسَانُ لِعَنِي احسان کا بدلہ
احسان کے سوا اور کیا ہوگا۔ کے بارے میں کہا کہ یہ آیت نکو کار بدکار سب کے
لیے دستاویز ہے“
۶۳ یتیم کی پرورش کی بزرگی

(۱۲۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: جو آدمی گناہوں اور سبکدوشیوں
کی خبر لیتا ہے اور سبکی مثال ایسی ہے جیسے ماہِ خدائین جہاد کرنے والا اور جیسے
وہ شخص جو دن کو تو روزہ رکھے اور رات کو عبادت کرے“
۶۴ اپنے یتیم کی پرورش کی بزرگی

(۱۳۰) حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے فرمایا: میرے پاس ایک عورت آئی اور اس کے ساتھ
اوسکی دو بیٹیاں بھی تھیں اس نے مجھ سے کہجھ مانگا تو میرے پاس سے اوس کو
ایک چھوٹا بڑے کے سوا کچھ نہ ملا میں نے وہ چھوٹا بچہ لیا تو اس نے اوسکو اپنی دونوں
بیٹیوں کو بانٹ دیا پھر اوشکر حل گئی۔ پھر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اندر سے نکلے
لائے تو میں نے آپ سے بیان کیا اس پر آپ نے فرمایا: ان بیٹیوں کی فکر جسکے
علاقے ہو اور وہ اپنے ساتھ احسان کرتا رہے تو وہ لڑکیاں اوسکے اور روزانہ
درمیان میں پردہ ہو جائیگی“
۶۵ جس لڑکے کے ماں باپ دونوں اوسکی کفالت

(۱۳۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے بیچ کی اونگلی اور کلمے کی اونگلی دکھا کر فرمایا
کہ: میں اور یتیم کا خبر گیر آدمی بہشت میں اس طرح ہونگا جیسے یہ دونوں اونگلیاں
(۱۳۲) حسن رضی اللہ عنہ نے کہا: ابن عمر رضی اللہ عنہما کے کھانے میں ایک یتیم بھی ساتھ نہ لانا
ایک روز انھوں نے کھانا منگوایا اور اس لڑکے کو بٹوایا تو وہ نہ ملا جب اس نے

سعدۃ الزین
۱۲-۱۳

۳۲

... اور اس کے لیے کچھ کھانا مانگا لیکن گھر
 پر کھانا نہ تھا اور تم نے اسے اور کہا "ہاں اس کو کھالے قسم
 میں تو اسے کھانا نہیں ہوا، جسے تم نے بتایا" قسم خدا کی ابن عمر کا بھی
 یہ تھا کہ میں ہوا۔

(۱۳۴) حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا سے روایت ہے۔

(۱۳۴) ابو بکر بن حفص نے کہا "عبداللہ کے کھانے میں کوئی یتیم ضرور ساتھ
 رہتا تھا۔"
 ۱۳۴ جن کو یتیم رہتا ہوا اور اس کے ساتھ سلوک کیا جاتا ہوا اس گھر کی غربی

(۱۳۵) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "مسلمانوں میں ایسے سے
 اچھا وہ گھر ہے جہاں کوئی یتیم لڑکا ہو اور اس کے ساتھ اچھا سلوک کیا جائے۔ اور
 علیؑ رضی اللہ عنہ سے فرمایا: "مسلمانوں میں برے سے برے وہ گھر ہے جہاں کوئی یتیم ہو اور اس کے
 ساتھ بد سلوک کی جاتی ہو۔ میں اور یتیم کا خبر گھر جنت میں ان دونوں کی طرح ہونگا"
 رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے دو اونگلیوں سے اشارہ کر کے بتا بھی دیا۔
 ۱۳۵ یتیم کے ساتھ مکران باپ کی طرح ہو رہنا

۳۳

(۱۳۶) داؤد نے کہا "یتیم کے ساتھ مہربان باپ کی طرح ہو رہ۔ اور جان رکھ کہ
 ایسا ہو گا ویسا ہی کاٹے گا۔ اور تو انگری کے بعد فقیری کیا ہی بڑی ہے اور بداد
 کے بعد گمراہی اوس سے بھی بڑی ہے۔ اور اپنے پیار سے وعدہ پورا کیا کر نہیں تو پھر
 اوس کے درمیان عداوت ہو جائیگی۔ اور جو رفیق ایسا ہو کہ جو بات تجھے خیال ہو اور میں
 تجھے متذکرے۔ اور جو بات تو بھول جائے وہ یاد نہ دلائے ایسے رفیق سے خدا کی نہا
 ہ کر۔"

(۱۳۷) میں نے کہا "میں نے مسلمانوں کا ایک زمانہ دیکھا کہ آدمی صبح کو اٹھتا تو
 اپنے گھر والوں سے پلار کر کہتا "اے میرے لوگ! اے میرے لوگ! اپنے یتیم کی
 پرکھنا، اپنے یتیم کی پرکھنا، اے میرے لوگ! اے میرے لوگ! اپنے مسکین کی خبر لینا"

اپنے مسکین کی خبر لینا۔ اسے میرے لوگ اور سیروگنا اپنے مسکین کی خبر لینا اپنے مسکین کی خبر لینا اور زمانے نے تمہارے اچھوں کے ساتھ جلدی کی۔ اور تم روزانہ بتر ہوئے جاتے ہو۔ حسن بھادرا اپنے وقت کے لوگوں کا حال بیان کرنے لگے کہ جب تک جاہلوں کو تیس ہزار مال ناجائز طور پر حاصل کر کے دوزخ میں گھسا جاتا ہے خدا اسے ہلاک کرے خدا کے بیان کا اپنا حصہ تھوڑا دام پر بیچ ڈالا اور چاہو تو (یہی) دیکھ لو کہ شیطان کی راہ اختیار کر لی ہے اور مال ضائع کر رہا ہے نہ اسکو خود اپنے جی سے نصیحت آتی ہے نہ اور کوئی اسکو سمجھاتا ہے۔

(۱۳۸) اسما بن عبید بن نے کہا "میں نے ابن سیرین سے کہا کہ میرے بیان ایک یتیم ہے" انھوں نے کہا "جو سلوک اپنے بیٹے کے ساتھ کرتا ہے وہی اس کے ساتھ بھی کر جیسی ماہ اپنے لڑکے کو مارتا ہے ویسی ہی اس سے بھی مارتا۔" (۸۷) جو عورت اپنے یتیم بچے پر قناعت کر کے پھر نکاح نہ کرے اسکی بزرگی

۳۳

(۱۳۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "میں اور جن عورت کا رنگ جھانوا لڑکی ہو (یعنی) بیوہ ہوگی پھر یتیم بچے (کی خدمت) پر صبر کرے گی پھر گئی بہشت میں ان دونوں (اونگلیوں) کی طرح ہوں گے۔" (۸۹) یتیم کی چشم نمائی

(۱۴۰) شیبہ عتیکہ رضی اللہ عنہا نے کہا "حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کے پاس یتیم کی گوشمالی کا ذکر آیا تو انھوں نے فرمایا "میں تو یتیم کو وہیں تک مارتی ہوں جہاں تک وہ خوش رہے۔" (۹۰) جسکی اولاد مرے اسکی بزرگی

(۱۴۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "جس کسی مسلمان کے تین لڑکے مر گئے قسم اوتارنے بھر کے سوا (دوزخ کی) آگ اس کے پاس بھی نہیں آویگی۔" (۱۴۲) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا "ایک عورت ایک لڑکے کو لیے ہوئے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہو کر عرض کرنے لگی "میں تو میں دوزخ میں گر چکی ہوں اب اس بچے کے حق میں دعا فرمائیے" آپ نے فرمایا "تو نے مضبوط پگھار دیکھی ہے"

انگ سے اپنا بچاؤ کیا۔

(۱۳۷) خالد بن ولید رضی اللہ عنہ نے کہا: میرا ایک بیٹا مر گیا اور اسکے مرنے کا مجھے سخت صدمہ ہوا تو میں نے ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے پوچھا کہ: آپ نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے ایسی کوئی بات بھی سنی ہے جس سے ہمارے دلوں کو مردوں کا صدمہ نہ ہوا کرے؟ ابو ہریرہ نے کہا: نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: تمہارے بچے (جو مرد جاویں) بے روک تمام پشتوں کی سیر کرتے پھریں گے۔

(۱۳۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: جسکے تین لڑکے مرد جاویں پھر وہ ثواب سمجھ کر صبر کرے تو وہ بہشت میں جائیگا، ہم لوگوں نے عرض کی: یا رسول اللہ! اور اگر دو ہی مرین؟ آپ نے فرمایا: دو مرین تب بھی، محمود راوی کہتے ہیں: میں نے جابر رضی اللہ عنہ سے کہا: قسم خدا کی میں تو سمجھتا ہوں کہ اگر تم لوگ ایک لڑکے کے مرنے کو بوجھے تو اوس میں بھی آپ ہی فرماتے، جابر نے جواب دیا: قسم خدا کی میں بھی یہی سمجھتا ہوں۔

(۱۳۵) حدیث نمبر ۱۳۲۔

(۱۳۹) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا: رسول خدا صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں ایک عورت حاضر ہو کر عرض کرنے لگی کہ: ہم لوگ (دو تین) آپ کے (معمولی بھلائیوں میں حاضر ہونے نہیں سکتے تو ایک دن ہم لوگوں کے لیے بھی تعمیر ادبیجے کہ اوس دن حضور میں حاضر ہوں، اس پر آپ نے اوسے کسی کے مکان پر بلا دیا پھر آپ بھی اوس دوسرے کے بموجب وہاں تشریف لائے تو باتوں بات میں آپ نے یہ بھی فرمایا کہ: جس کسی عورت کے تین بچے مرد جاویں اور وہ ثواب سمجھ کر (اون پر صبر کرے) تو ضرور بہشت میں جائیگی، اس پر ایک عورت نے عرض کی: یا دو ہی مرین؟ آپ نے فرمایا: یا دو ہی مرین، سہیل راوی حدیث کے بارے میں بہت تشدد کرتے تھے انکی یاد ہی رکھتے تھے کسی کی قدرت نہ تھی کہ اونکے سامنے لکھ سکے، (۱۴۰) ام سلمہ نے کہا: ایک دن میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر

تھی تو آپ نے فرمایا: «ام سلمہ! اجن دو مسلمان (سیانہ بیوی) کے جن لڑکے
مجاہدین اللہ تعالیٰ ادا کرکون پر مہربانی فرما کر ضرور ادا کر دو تو ان کو بہشت میں
داخل کر لگا، میں نے عرض کی: «اور وہی مرین»، آپ نے فرمایا: «بھی»

(۱۴۸) حضرت ابو ذر رضی اللہ عنہما نے ہوئے تھے اسی حال میں صعصعہ ادا کر کے
لے پوچھا: «ابو ذر لڑکے کے غم میں ہمارا کیا حال ہے؟» ابو ذر نے بولے: «کیا تمہیں صلیب سے سزا دینے
(صعصعہ کہتے ہیں) میں نے کہا: «ابا»، بولے: «میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ
وآلہ وسلم سے سنا ہے کہ جس مسلمان کے تین نابالغ لڑکے مجاہدین اللہ تعالیٰ ادا کر
کرکون پر مہربانی فرما کر اور سکھو ضرور بہشت میں داخل کرے گا۔ اور جو شخص کسی مسلمان کو
آزاد کرے اللہ تعالیٰ اس کے ہر بدن کے عوض آزاد کرنے والے کے ہر بدن
(آگ سے) چھڑا دے گا»

(۱۴۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: «جس کے تین نابالغ لڑکے مجاہدین اللہ
تعالیٰ ادا کرے اور ادا کرکون کو اپنی رحمت سے بہشت میں داخل فرمایا گیا»
حل کرنے کا ثواب

۳۶

(۱۵۰) سہل بن اخطبہ رضی اللہ عنہما ادا کرکون میں جنہوں نے (معاذ بن جبلہ رضی اللہ عنہما) سے بہشت
تحت الشجرہ کی تھی ان کے کوئی لڑکا نہیں ہوتا تھا تو وہ کہنے لگے: «کہ تم کو ساری دنیا اور
دنیا کی سب چیز مل جانے سے یہ بات زیادہ پسند ہے کہ اس حالت اسلام میں
میرا کوئی حمل ہی ضائع ہو جائے کہ میں اس کے ثواب کا مستحق ہو جاؤں»

(۱۵۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے صحابہ سے پوچھا: «تم میں کس شخص کو
اپنے وارث کا مال اپنے مال سے زیادہ پیارا ہے؟» صحابہ نے عرض کی: «یا رسول اللہ
ہم لوگوں کو تو اپنا ہی مال ورنہ کے مال سے زیادہ پیارا ہے» اس پر آپ نے فرمایا: «وہ
نہیں ہے بلکہ تم ہر ایک کو وارث ہی کا مال اپنے مال سے زیادہ پیارا ہے۔ تمہارا مال
تو وہ ہے جو تم خرچ کر ڈالو اور جو کچھ بچا رکھتے ہو وہ وارث کا مال ہے» اس پر ان
آپ نے فرمایا: «تم لوگ رقبہ کسکو لیتے ہو؟» عرض کی: «رقبہ تو وہ ہے جسکو

وہاں سے آئے ہیں بلکہ زکوٰۃ دینے والے ہیں اور ان کے ساتھ لوگوں کی
 ہونے اور ان کے لئے زیادہ سے زیادہ لوگ کشتی باز کے کئے ہوئے ہیں اور ان کی کشتی باز تو وہی
 ہے جو لوگ پہلے از مسلمان ہوئے ہیں بلکہ انہوں نے کشتی باز وہ شخص ہے جو غصے میں
 اپنے کو استعمال رکھے۔

نیک خلقی

۱۵۲) حضرت علیؑ نے فرمایا جب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم (مرض الموت میں)
 تھے تو میں نے ان سے کہا کہ مجھے فرمایا "علی! میرے پاس ایک صحیفہ آؤ ہم اس میں
 جو کچھ کہیں کہ میری امت گمراہ نہ ہو، تو مجھے یہ خوف ہوا کہ کہیں دوسرا کوئی نہ مجھ پر
 بیعت کرے تو میں نے عرض کی کہ "صحیفے کی کیا حاجت ہے صحیفے سے زیادہ تو میرا حق
 اور آپ کا سہارا میرے ہاتھ اور بازو کے درمیان تھا۔ آپ دربارہ نماز اور زکوٰۃ
 اور لوٹنی غلام کے تاکید فرماتے رہے۔ یہاں تک کہ آپ کا انتقال ہو گیا۔
 اسی وقت کہ حضرت علیؑ کو اس بات پر گواہی دینے کا حکم فرمایا کہ خدا کے سوا کوئی معبود نہیں
 اور محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اس کے بندے اور رسول ہیں اور ان کی گواہی ہے اور وہی ہے جو ہم
 ۱۵۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "دعوت قبول کیا کرو۔ اور ہدیہ واپس
 لیا کرو۔ اور مسلمانوں کو مارا نہ کرو۔"

۱۵۴) علیؑ صلوٰۃ اللہ علیہ نے فرمایا "آخر کلام نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا
 تمہارا نماز کا خیال رکھو نماز کا خیال رکھو تو ٹھنی غلام کے بارے میں خدا
 سے ڈرا کرو۔"

بد خلقی

۱۵۵) ابوہریرہؓ نے فرمایا کہ میں نے کہا کرتے "بیطار لوگ جس قدر جانوروں کا حال
 دیکھتے ہیں اس میں سے زیادہ ہم تمہارا حال پچھانتے ہیں۔ ہم نے تمہارے اچھوتوں
 کو پہچان لیا جس سے بھلائی کی امید ہو اور برائی سے امن ہو وہ تو اچھا
 ہے جس سے بھلائی کی امید ہو اور برائی سے امن ہو اور اس کا کلام ان لوگوں کو یاد دہانی ہے۔"

۱۵۲) حضرت علیؑ نے فرمایا جب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم (مرض الموت میں) تھے تو میں نے ان سے کہا کہ مجھے فرمایا "علی! میرے پاس ایک صحیفہ آؤ ہم اس میں جو کچھ کہیں کہ میری امت گمراہ نہ ہو، تو مجھے یہ خوف ہوا کہ کہیں دوسرا کوئی نہ مجھ پر بیعت کرے تو میں نے عرض کی کہ "صحیفے کی کیا حاجت ہے صحیفے سے زیادہ تو میرا حق اور آپ کا سہارا میرے ہاتھ اور بازو کے درمیان تھا۔ آپ دربارہ نماز اور زکوٰۃ اور لوٹنی غلام کے تاکید فرماتے رہے۔ یہاں تک کہ آپ کا انتقال ہو گیا۔ اسی وقت کہ حضرت علیؑ کو اس بات پر گواہی دینے کا حکم فرمایا کہ خدا کے سوا کوئی معبود نہیں اور محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اس کے بندے اور رسول ہیں اور ان کی گواہی ہے اور وہی ہے جو ہم ۱۵۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "دعوت قبول کیا کرو۔ اور ہدیہ واپس لیا کرو۔ اور مسلمانوں کو مارا نہ کرو۔" ۱۵۴) علیؑ صلوٰۃ اللہ علیہ نے فرمایا "آخر کلام نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا تمہارا نماز کا خیال رکھو نماز کا خیال رکھو تو ٹھنی غلام کے بارے میں خدا سے ڈرا کرو۔" ۱۵۵) ابوہریرہؓ نے فرمایا کہ میں نے کہا کرتے "بیطار لوگ جس قدر جانوروں کا حال دیکھتے ہیں اس میں سے زیادہ ہم تمہارا حال پچھانتے ہیں۔ ہم نے تمہارے اچھوتوں کو پہچان لیا جس سے بھلائی کی امید ہو اور برائی سے امن ہو وہ تو اچھا ہے جس سے بھلائی کی امید ہو اور برائی سے امن ہو اور اس کا کلام ان لوگوں کو یاد دہانی ہے۔"

(۱۵۶) ابو امامہ رضی اللہ عنہما نے کہا: "جو شخص داؤد میں نہ کرے اور نہ تیرا پیرا کیلے علیہ السلام کو
 کیا کرے۔ اور اپنے غلام کو مار پیٹ کیا کرے وہی (کنو) ناشکر ہے۔"
 (۱۵۷) حسن رضی اللہ عنہ نے کہا: "ایک شخص نے اپنے غلام کو حکم دیا کہ اونٹ پر پانی لا کر لے
 مگر غلام سو گیا اس پر اس شخص نے آگ کا ایک شعلہ لیکر غلام کے منہ پر ڈال دیا کہ وہ
 غلام (گھبرا کر) کنوین میں گر پڑا۔ پھر صبح کو غلام حضرت عمر رضی اللہ عنہما کے پاس حاضر ہوا آپ نے
 جو اسکی صورت دیکھی تو اسکو آزاد کر دیا۔"
 دیہاتیوں کے ہاتھ خادم کو بیچ ڈالنا

(۱۵۸) عمرہ رضی اللہ عنہ نے کہا: "حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے اپنی ایک لونڈی کو مدبر کیا اسکے بعد حضرت
 عائشہ رضی اللہ عنہا کو کچھ مہارہوں تو اوندکے بھانجون نے قوم زوط کے ایک طبیب سے اوندکا حال
 پوچھا اس نے کہا: "جن بی بی کا تم حال بیان کرتے ہو اوند پر تو جادو ہوا ہے اوند کی
 لونڈی نے جادو کیا ہے" پھر اسکی خبر حضرت عائشہ کو ہوئی تو آپ نے اوس سے
 پوچھا: "تو نے ہم پر جادو کیا ہے؟" اوس نے کہا: "ہاں" تب حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے کہا
 "کیوں۔ جادو کیوں کیا اچھا اب کبھی تجھکو چھٹکارا نہ ہوگا" پھر حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے
 حکم دیا کہ: "اسکو عرب کے بد معاش لوگوں کے ہاتھ بیچ ڈالو"
 خادم سے درگزر کرنا

یعنی اپنی وفات کے بعد آزاد ہو جائے
 کی شرط رکھنی

۸۸

(۱۵۹) ابو امامہ رضی اللہ عنہما نے کہا: "نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم تشریف لائے اور آپ کے
 ساتھ دو غلام بھی تھے اوند میں سے آپ نے ایک (غلام) علی صلوات اللہ علیہ کو
 دیکر فرمایا کہ: "اسکو مارنا نہیں۔ میں نمازیوں کو مارنے سے منع کیا گیا ہوں۔ اور یہ جسے
 میرے پاس آیا ہے میں نے اسکو نماز پڑھتے دیکھا ہے" اور دوسرا (غلام) ابو ذر رضی اللہ عنہما کو
 دیکر فرمایا کہ: "اسکے ساتھ نیکی کرنا، تب ابو ذر رضی اللہ عنہما نے اسکو آزاد کر دیا کچھ دنوں کے
 بعد آپ نے پوچھا کہ: "دوہ غلام) کیا ہوا؟" ابو ذر رضی اللہ عنہما نے عرض کی: "آپ نے اوسکے
 ساتھ نیکی کرنے کا حکم دیا تھا میں نے اسکو آزاد کر دیا"
 (۱۶۰) انس رضی اللہ عنہما نے کہا: "نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم دینے میں تشریف لائے اور آپ کے

پاس کوئی خادم نہ تھا اور اگلے روز مجھے پوچھا کہ آپ کے پاس لے گئے اور کہا کہ «اے نبی اللہ! انس عاقل تر کا ہے یہ آپ کی خدمت کر لیا اور انس نے کہتے ہیں «میں نے آپ کی خدمت میں بھی کی اور حضرت عیسیٰ مدینے میں بھی یہاں تک کہ آپ نے انتقال فرمایا۔ کبھی ایسا نہیں ہوا کہ میں نے کوئی کام کیا ہو اور آپ نے فرمایا ہو کہ «تو نے اسکو یوں کیوں کیا» اور نہ کبھی ایسا ہوا کہ میں نے کوئی کام نہ کیا ہو اور آپ نے فرمایا ہو کہ «تو نے اسکو یوں کیوں نہ کیا»

غلام کا چوری کرنا

(۱۴۱) رسول خدا صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا «اگر غلام چوری کرے تو اسکو بیچ دو اگرچہ اسکی قیمت نش (بیش درم) ہے۔ ابو عبد اللہ رحم نے کہا «نش (ایک وزن ہے جو) بیش درم کا ہوتا ہے۔ اور نواۃ پانچ درم کا۔ اور اوقیہ چالیس درم کا» خادم سے قصور ہونا

(۱۴۲) لقیط بن صبرہ نے کہا «میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہوا اور اسی وقت چرواہا چراگاہ میں ایک بکری کا بچہ بھی لیتا ہوا چلا آیا آپ نے فرمایا اسکی جگہ ایک بکری فوج کر ڈال، پھر مجھے فرماتے لگے ایسا خیال نہ کرنا کہ میں نے تیرے لیے بکری فوج کرنے کا حکم دیا بلکہ میرے پاس تو بکریاں ہیں اور مجھے اس سے بڑا بنا منظور نہیں ہے تو جب چرواہا کوئی نیا بچہ لاتا ہے تو میں اسکی جگہ ایک جانور فوج کر دیتا ہوں (کہ تھوکی تھور میں) اور باتوں میں آپ نے یہ بھی فرمایا کہ بی بی کو لونڈی کی طرح نہ مارا کر اور (وضو میں) پانی ناک میں اچھی طرح لیا کر لٹیر پیکر روزوار نہ ہو» خادم کو کچھ کہنے کو دے تو بدگمانی کے خوف سے اس پر مہر کرنا

۳۹
فوق مذکورہ حدیث کا
عبارت میں لکھا گیا
رابطہ کے لیے بالوولف
سے ترجمہ میں ہیں

(۱۴۳) ابو العالیہ نے فرمایا «ہم لوگوں کو حکم ہوتا تھا کہ خادم کو کچھ کہنے کو دین تو مہر کرنے کی چیزیں مہر کو دین اور اپنے کی چیز کو ناپ لین اور (گنتی کی چیز کو) گن لین تاکہ انکو ہمیں عادت نہ پڑے یا ہم میں سے کوئی بدگمانی نہ کرے» خادم کو کچھ کہنے کو دے تو بدگمانی کے خوف سے اسکو گن لینا

(۱۶۴) سلمان رضی نے کہا: «خادم پر بدگمانی ہونے کے خوف سے من کوڑے کی زبان
گن لیتا ہوں»

(۱۶۵) وہی حدیث فقط بعین لفظوں کی کمی ہے۔
خادم کی سزا ۹۰

(۱۶۶) عبداللہ بن عمر رضی نے اپنے غلام کو سونایا چاندی لے کر توڑا لے کر کو بیس
تو اوس نے اوس میں دیر کی جب وہ آیا تو عبد اللہ بن عمر رضی نے اوس کو
خوب زور زور سے کوڑے لگائے اور فرمایا کہ: «جا کر میرا مال پھیر لا اور اوس کو
نہ توڑا»

(۱۶۷) ابو سعور رضی نے فرمایا: «میں اپنے ایک غلام کو مار رہا تھا تو مجھے سے ایک آدمی
سنی کہ: «اے ابو سعور! جب درتجھے جس قدر اسپر اختیار ہے اوس سے
زیادہ حد کو تجھ پر اختیار ہے» پھر کر دیکھا تو حضرت کو پایا۔ میں نے کہا: «اے رسول اللہ
یہ اللہ کی راہ پر آزاد ہے» آپ نے فرمایا: «جان لے کہ اگر آزاد نہ کرتا تو مجھے
آگ جلا ہی ڈالتی»
۹۱ یہ نہ کہہ کہ اللہ اوس کے چہرے کو بگاڑ دے

(۱۶۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: «تم لوگ یہ نہ کہو کہ اللہ اوس کے چہرے کو
بگاڑ دے»

(۱۶۹) ابو ہریرہ رضی نے فرمایا: «تم لوگ یہ ہرگز نہ کہو کہ اللہ اوس کے چہرے کو بگاڑ دے
یا جو اوس کے مشابہ ہو اوس کے چہرے کو بگاڑ دے کیونکہ اللہ پاک نے آدم صلی اللہ علیہ
وسلم کو اسی شکل پر پیدا کیا ہے»
۹۲ چہرے پر مارنے سے بچتے رہنا

(۱۷۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: «جب تم میں سے کوئی اپنے خادم کو
تو چہرے پر مارنے سے بچتا رہے»

(۱۷۱) جابر رضی نے کہا: «رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے سامنے سے دامن ہوا لگا

جانور گزرا اوسکے دونوں تھنوں سے دیوان اوتھ رہا تھا۔ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "اس کام کے کرنے والے پر خدا کی لعنت ہے۔ منہ پر ہرگز کوئی داغ نہ دے اور نہ منہ پر بارے۔" غلام کو طمانچہ مارے تو اسے آزاد بھی کرے مگر یہ کچھ ضروری بات نہیں ہے۔

شیخ ابوبکر نقض
خادم سے ان
ضییر بن مکتوم
سے ہیں

(۱۷۲) ہلال بن یساف نے کہا: "ہم سویڈن مقررین کے مکان میں کپڑا بچ رہے تھے اتنے میں ایک لونڈی مکان سے نکلی اور کسی مرد سے کچھ بولی اس پر اوس نے لونڈی کو طمانچہ مارا تو سویڈن مقررین نے اوس مرد سے کہا: "این۔ تو نے اوسکے منہ پر مار دیا مجھے اپنا معاملہ یاد ہے ہم سات بھائیوں کے درمیان میں خدمت کرنے والی بس ایک ہی لونڈی تھی۔ کسی بھائی نے اوس لونڈی کو طمانچہ مارا۔ تو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اوسکو حکم دیا کہ "اوس خادمہ کو آزاد کرو۔"

(۱۷۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جو شخص اپنے غلام کو طمانچہ مارے یا قصور سے بڑھ کر سزا کرے تو اوس زیادتی کا کفارہ یہی ہے کہ بس اوس غلام کو آزاد کر دے۔"

(۱۷۴) یحییٰ بن سویڈن مقررین نے کہا: "میں نے ایک مشترک غلام کو طمانچہ مارا۔ بس وہ بھاگ گیا تب مجھے میرے باپ نے بلا کر کہا: "ہاتھ پیٹھے رہا کرو۔ ہم لوگ اپنے باپ مقررین کے سات لڑکے تھے ہم سب میں ایک ہی لونڈی تھی اوسکو کسی بھائی نے طمانچہ مارا اسکا ذکر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں ہوا تو آپ نے فرمایا: "اون لوگوں سے کہو کہ اوسے آزاد کر دیں۔ تب آپ کو اطلاع کی گئی کہ اون لوگوں کے پاس سوا سے اوسکے اور کوئی خادم نہیں ہے۔ آپ نے فرمایا: "خیر تو ابھی اوس مجھے خدمت لین مگر جب فرا ہو تو اوسکو آزاد کر دیں۔"

(۱۷۵) سویڈن مقررین کے سامنے ایک شخص نے اپنے غلام کے منہ پر مارا تو سویڈن بولے: "این۔ تم جانتے نہیں کہ چہرہ بڑی عزت و حرمت والی چیز ہے مجھے اپنا قصہ یاد ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے عہد میں ہم سات بھائیوں میں ایک ہی لونڈی تھی کسی بھائی نے اوسکو طمانچہ مارا تو آپ نے ہم لوگوں کو حکم دیا کہ اوسے آزاد کر دو۔"

(۱۷۶) زاذان نے کہا: ہم لوگ ابن عمر رضی اللہ عنہما کے پاس تھے اور انہوں نے اپنے اوس غلام کو بلایا جسکو انہوں نے مارا تھا اور اسکی پیٹھ کھول کر دیکھی اور پوچھا کہ: تجھے کچھ تکلیف ہے؟ کہا: نہیں، پھر اوسے آزاد کر دیا۔ پھر زمین پر سے ایک تینکا اٹھا کر کہنے لگے: اسکے آزاد کرنے میں مجھے اس تکلیف برابر بھی ثواب نہ ہوگا، میں نے عرض کی: ابو عبد الرحمن! آپ ایسا کیوں فرماتے ہیں؟ کہنے لگے: میں نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو یہ فرماتے سنا ہے کہ جو شخص اپنے لونڈی غلام کی قصور سے بڑھ کر سزا کرے یا موندہ پر مارے اوس کا یہی کفارہ ہے کہ اوسے آزاد کر دے۔

غلام پر زیادتی کرنے کا بدلا

حدیث میں لفظ زاذان کا کیا معنی ہے؟

۴۲

(۱۷۷) عمار بن یاسر نے کہا: جو کوئی اپنے غلام پر بے قصور مار پیٹ کر یا قیامت میں اوس سے بھی بدلا لیا ہی جائیگا۔

(۱۷۸) ابو لیلیٰ نے کہا: سلمان باہر نکلے تو کیا دیکھتے ہیں کہ جانور کا دانہ دانہ رکھنے کی چیز سے گرا رہا ہے۔ اسپر اپنے خادم سے کہنے لگے: اگر مجھے خدا کے بدلا لینے کا خوف نہ ہوتا تو میں تیری خوب سزا کرتا۔

(۱۷۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: حقداروں کے حق ضرور دلوائے جائینگے۔ سینگ والی بکری سے بے سینگ والی کا بدلہ تک لیا جائے گا۔

(۱۸۰) ام سلمہ رضی اللہ عنہا نے فرمایا: نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میرے یہاں تشریف رکھتے تھے آپ نے اپنی یا ام سلمہ کی لونڈی کو پکارا اوس نے آنے میں اس قدر دیر کی کہ آپ کے چہرہ مبارک پر غصہ نمایاں ہو گیا تو ام سلمہ پر دے کے پاس گئیں تو کیا دیکھا کہ لونڈی کھیل رہی ہے آپ ایک مسواک لیے ہوئے تھے آپ (اوسے دکھا کر) فرمانے لگے: اگر قیامت کے دن بدلے کا خوف نہ ہوتا تو میں تجھے اسی مسواک سے مارتا۔

محمد بن یسلم کی روایت میں اتنا زیادہ ہے کہ وہ لونڈی بھیڑ کے بچے سے کھیل رہی تھی میں جب اوسکو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس لائی تو عرض کی: یا رسول اللہ! یہ تو قسم کھاتی ہے کہ میں نے آپ کی آواز سنی ہی نہیں۔ ام سلمہ رضی اللہ عنہا نے کہا: اور

آپ کے ہاتھ میں ایک مہواک تھی۔
(۱۸۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: «جو شخص مار پیٹ کرے گا
قیامت میں اوس سے پورا بدلہ لایا جائے گا»

(۱۸۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: «جو شخص مار پیٹ میں زیادتی کرے گا
قیامت کے دن اوس سے پورا بدلہ لایا جائے گا»
جو کبیر آپ جیتے دینی غلاموں کو بھی پہناتا

(۱۸۳) عبادہ بن الولید نے کہا: «میرے ہاتھ سے اب انصار کے اس خاندان میں
علم حاصل کرنے کو اوس وقت آئے جبکہ اونکا جھٹکا قائم تھا تو ہم لوگ پہلے پہل جس
نسلے وہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے صحابی ابوالیسر تھے اونکے ساتھ اونکا ایک
غلام بھی تھا۔ ایک چادر اور ایک معافری ابوالیسر خود پہنے ہوئے تھے اور ایک چادر
ایک معافری اونکا غلام پہنے ہوئے تھا۔ میں نے اونسے عرض کی: «چچا! اگر غلام
کی چادر آپ سے لیتے اور اپنی معافری اوسے دے دیتے یا اپنی چادر اوسے دیتے
اور اسکی معافری آپ خود لے لیتے تو آپ کے پاس اور اوسکے پاس ایک ایک
خاصہ حصہ ہو جاتا اور دونوں نے میرے سر پر ہاتھ پھیرا اور دعا دی کہ: «یا اللہ! اس
(لوٹ کے) میں برکت دے» پھر اسنو «نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو میری ان
دونوں آنکھوں نے دیکھا ہے اور میرے ان دونوں کانوں نے آپکی باتیں سنی ہیں
اور جس رنگ سے دل لگا ہوا ہے اوسکی طرف اشارہ کر کے بولے کہ: «میرے دل نے
اس بات کو یاد رکھا ہے» آپ نے فرمایا: «جو کچھ خود کھاؤ وہی غلاموں کو بھی کھلاؤ۔
جو کچھ آپ پہنو وہی غلاموں کو بھی پہناؤ۔ غلام میری نیکیوں کو قیامت کے دن
میں اس سے تو ہم پر ہی آسان ہے کہ دنیا کے مال سے اوسکو دے دلا کر ہم اپنی چھٹی کر لیں»
(۱۸۴) جابر بن عبد اللہ نے کہا: نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم لونڈی غلاموں پر ہر بار
نے کی بہت اگید فرمایا کرتے اور فرماتے جو خود کھاؤ وہی اونکو بھی کھلاؤ اور جو آپ
پہنیں وہی پہناؤ اور اللہ عزوجل کی مخلوق کو نہ سستاؤ»

۳۳

(۱۸۵) معروفین ہوئے کہ میں نے ابو ذر صحابیؓ کو دیکھا کہ ایک جگہ خود پینے پونے ہیں اور ویسا ہی ایک جگہ اونکا غلام پینے ہوئے ہے میں نے اسے اس (سوا) کا سبب پوچھا تو انہوں نے جواب دیا کہ میں نے کسی (غلام) کو گالی دی اور میں نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے میری شکایت کی تو آپ نے مجھے فرمایا: "ابن ابی اسیر نے اسے ان کا طعنہ دیا میں نے اس کی توبہ کی" فرمایا: "یاد رکھو تمہارے بھائی ابن تمہارے غلام بنا دیے گئے ہیں۔ اللہ تعالیٰ نے انہیں تمہارے بس میں کر دیا ہے تو جس کا کوئی بھائی اس کے بس میں ہو وہ جو خود کھائے وہی اسے بھی کھائے اور جو خود پینے وہی اسے بھی پینائے اور انکی طاقت سے بڑھے ہوئے کام اون سے نہ لیا کرو اور اگر کوئی سخت کام اسے لینا چاہو تو اون کی مدد بھی کیا کرو۔"

کام میں غلام کی مدد کرنا

۹۷

(۱۸۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "تمہارے غلام بھی تمہارے بھائی ہی ہیں اون پر مہربانی رکھا کرو مشکل کاموں میں اون سے مدد لو اور تم انکی مدد کرو۔"

(۱۸۷) ابو ہریرہؓ نے کہا: "تم لوگ اپنے خادم کی مدد کیا کرو کیونکہ اللہ کا خادم بھی ناپسند نہیں ہوتا۔"

غلام کو اسکی طاقت سے زیادہ کام کا حکم

۹۸

(۱۸۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "غلام کا کھانا کپڑا (آٹا کے ذقے سے اور جو کام اسکی طاقت سے زیادہ ہو اس سے نہ لیا جائے۔"

(۱۸۹) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "غلام کا کھانا کپڑا آٹا کے ذقے سے مگر کام وہی کرے گا جو اس سے ہو سکے گا۔"

(۱۹۰) معروفین نے کہا: "ہم لوگ ابو ذر صحابیؓ کے پاس آئے۔ دیکھا کہ جو کپڑا وہ خود پونے ہوئے ہیں ویسا ہی جگہ اونکا غلام بھی پینے ہوئے ہے۔ تو ہم لوگوں نے کہا: "اگر یہ کہہ لیں آپ لیتے اور غلام کو دوسرا دے دیتے تو خاصہ عمدہ ہو جاتا۔ ابو ذرؓ نے کہا: "

صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تمہارے بھائیوں کو اللہ نے تمہارے بس میں
 کر دیا ہے۔ تو میں کا بھائی اوس کے بس میں پڑ جائے وہ جو خود کھائے وہی اوس
 بس کھلائے۔ اور جو خود پینے وہی اوس سے بھی پینائے۔ اور ایسا حکم نہ دے جو اوس
 نہ ہو سکے اور دے تو اوس کی مدد بھی کرے۔“
 غلام اور خدمتگار کی ذوات میں خرچ کرنا

(۱۹۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: تم جو خود کھاتے ہو یا لڑکے کو کھلاتے
 ہو یا بی بی کو کھلاتے ہو یا نوکر چاکر کو کھلاتے ہو سب میں صدقے کا ثواب ہے۔“
 (۱۹۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: اچھے سے اچھا صدقہ وہ ہے
 کہ آدمی خود مفلس ہو جائے۔ اور اوپر کا ہاتھ (یعنی دینے والا) نیچے کے ہاتھ (یعنی
 لینے والا) سے بہتر ہے۔ اور پہلے اوس کو دے جس کا خرچ تیرے علاقے ہے۔ جو رو
 کیگی: ہمارا خرچ دے یا طلاق دے، غلام کیگا: میرا خرچ دے یا مجھے بیچ ڈال
 دیا کیگا: ہمیں کس پر چھوڑ دیا۔“

۴۵

(۱۹۳) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا: نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے صدقہ دینے کا حکم کیا۔
 ایک شخص نے عرض کی: میرے پاس ایک دینار ہے، آپ نے فرمایا: اپنی ذات میں
 خرچ کر، اوس نے عرض کی: میرے پاس اور ہے، فرمایا: اپنی بی بی کی ذات میں
 خرچ کر، عرض کی: میرے پاس اور ہے، فرمایا: اپنے نوکر چاکر میں خرچ کر۔ پھر تو آپ
 تجویز کرے
 اگر غلام کے ساتھ کھانا منظور ہو

(۱۹۴) ابن جریج نے کہا: ابن زبیر حضرت جابر رضی اللہ عنہ سے خدمتگار کے بارے
 میں پوچھتے تھے کہ جب خادم کھانا پکانے کی مشقت اور گرمی اٹھا دے تو اوس کے
 بارے میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے کیا یہ فرمایا ہے کہ آقا اوس سے بھی (ساتھ
 کھانے پر) بلا لے، جابر نے کہا: ہاں پھر اگر (اوس وقت) خادم کا ساتھ کھانا
 منظور ہو تو ایک لغتہ اوس کے ہاتھ ہی میں دے دے۔“

۱۰۱ جواب کہائے اوس میں سے غلام کو بھی کھلانے

(۱۹۵) جابر رضی نے کہا: «نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم غلاموں پر مہربانی کرنے کی بہت تاکید فرماتے اور فرماتے: جو خود کھاؤ اوس میں سے خادم کو بھی کھلاؤ اور جو خود پیو اوس قسم کا کھراؤ انکو بھی پیناؤ۔ اور خلق اللہ کو نہ ستاؤ»
کھانے لگے تو باخدا شکر کو بھی ساتھ بٹھائے

(۱۹۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: «خادم جب کسی کا کھانا لاوے تو اسے بھی بٹھالینا چاہیے۔ اگر خادم قبول نہ کرے تو کھانے میں سے کچھ اوسے دے دے ہی ہے»

(۱۹۷) ابو مخذومہ رضی نے کہا: «میں حضرت عمر کے پاس بیٹھا تھا کہ صفوان بن امیہ کلمی میں ایک بڑی قاب چند آدمی سے اٹھوائے ہوئے لو لائے اون سہون نے اوس کو حضرت عمر رضی کے سامنے رکھ دیا پھر حضرت عمر رضی نے چند مسکینوں اور غلاموں کو جو اونہیں گھیرے بیٹھے تھے بلایا۔ پھر سب نے مل کر حضرت عمر رضی کے ساتھ کھایا۔ پھر حضرت عمر رضی اوس وقت بولے: «اللہ اوس قوم کا برا کرے جو اپنے غلاموں کے ساتھ کھانے سے انکار رکھتے ہیں» اس پر صفوان رضی نے کہا: «یہی قسم خدا کی ہم لوگ اون سے انکار نہیں رکھتے۔ ترجیح البتہ دیتے ہیں۔ کیونکہ قسم خدا کی اچھا کھانا ہم کو اس قدر مہربان آتا کہ خود بھی کھائیں اور اونہیں بھی کھلائیں»
آقا کا خیر خواہ غلام

(۱۹۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: «جو غلام اپنی سرکار کی بھی خیر خواہی کرے۔ اور پروردگار کی عبادت بھی اچھی طرح کرے اوسکو دوہرا ثواب ملے گا»

(۱۹۹) صالح بن حمی نے کہا: «ایک شخص نے عام شعبی رضی سے کہا: اُسے

ابو عمرو ہا ہم لوگوں میں تذکرہ ہوتا ہے۔ کہ کوئی لونڈی کو آزاد کر کے اوس سے نکاح کرے۔ اوسکی مثال ایسی ہے جیسے بیت اللہ کی منت ولسے اونٹ پر سوار ہو۔ عام رضی

نے کہا کہ: «ابو بردہ رضی مجھے اپنے باب کی کہی کہتے تھے کہ: «اون لوگوں سے رسول

اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: «تین شخصوں کے لیے دوہرا ثواب ہے۔ جو

۲۰۰) کتاب ایسے ہی پر بھی ایمان لاوے اور محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر بھی ایمان لاوے
 سکو دوہرا ثواب ہے۔ اور جو غلام اللہ کا حق بھی ادا کرے اور اپنے آقا کا حق بھی
 ادا کرے۔ اور جس آدمی کے پاس کوئی لونڈی ہے وہ اس سے ہم صحبت ہوتا ہے
 سکو اچھی طرح ادب تمیز سکھاوے۔ اور اچھی طرح دین کی بات تعلیم کرے
 آزاد کر کے اس سے نکاح کر لے اسکو بھی دوہرا ثواب ہے۔ عامر نے کہا
 میں نے تمہیں یہ حدیث مفت میں بتادی حالانکہ اس سے ہلکی بات دریافت
 کرنے کو دینے تک سفر کرنا پڑتا تھا۔

۲۰۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: جو غلام اپنے پروردگار کی
 عاقبت اچھی طرح بجالاوے۔ اور اپنی سرکار کا خرچ معینہ ادا کرتا رہے
 مانتے۔ اور خیر خواہی کرے اسکو دوہرا ثواب ہے۔

۲۰۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: جو غلام عبادت میں خدا
 حق ادا اپنے مالک کا حق ادا کرتا رہے اسکو دوہرا ثواب ہے۔
 غلام چرواہا ہے

۴۷

۲۰۳) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: تم سب کے سب چرواہے
 اور ہر ایک سے اسکی رعیت کے بارے میں استفسار ہوگا۔ حاکم چرواہا ہے
 اس سے اس کی رعیت کے بارے میں استفسار ہوگا۔ اور آدمی اپنے گھر والوں
 چرواہا ہے اس سے اس کی رعیت کے بارے میں استفسار ہوگا۔ اور غلام
 آقا کے مال کا چرواہا ہے اس سے اس کی رعیت کے بارے میں استفسار
 ہوگا۔ خوب جان لو تم سب کے سب چرواہے ہو اور ہر ایک سے اسکی رعیت
 کے بارے میں استفسار ہوگا۔

۲۰۴) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا: آقا کا فرمانبردار غلام خدا کا فرمانبردار ہے۔ اور
 اگر ان غلام خدا کا فرمانبردار ہے۔
 غلام ہونے کی خواہش

(۲۰۳) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: جو مسلمان غلام خدا کا حق بھی ادا کرے اور اپنی سرکار کا حق بھی ادا کرے اور سکو دو ہر ثواب ہے (ابو ہریرہ رضی اللہ عنہما) کہتے ہیں) اسی ذات پاک کی قسم جسکے قابو میں ابو ہریرہ کی جان ہے۔ اگر خدا کی راہ میں جہاد کا اور حج کا اور اپنی ماں کی خدمت کا خیال نہ ہوتا تو میری بھی خوش تھی کہ غلامی کی حالت میں میری موت آتی، عجب ہی نہ کہے

۱۰۶

نظا عبودیت اور بندگی کا مفہوم ایسا ہے جیسا کہ غلامی کی حالت میں غلام کا نسبت کہ باجائزیت ایسا ہے اس نظر سے اپنی طرف نسبت کرنے کو منع فرمایا اور بجای اور اس کے غلامی فتاویٰ میں فتاویٰ کی تقریر کیا جسکے معنی

(۲۰۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: کوئی غلام کو عجبیدی لوٹدی کو امیرتی نہ کہے۔ مرد لوگ سب کے سب خدا کے عجب ہو اور تمہاری سب عورتیں خدا کی امت ہیں۔ غلاموں کو غلامی کے فتاویٰ کہے۔ لوٹیوں کو جاربتی کے فتاویٰ کہے۔ سیدی کے پاس لے

۱۰۷

(۲۰۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: کوئی اپنے غلام کو عجبیدی اپنی لوٹدی کو امیرتی ہرگز نہ کہے اور نہ غلام ہرگز (سرکار کو) ربی اور ربی کے (سرکار غلام لوٹدی کو) فتاویٰ اور فتاویٰ کہے (اور غلام سرکار کو) سیدی اور سیدی کے تم سب کے سب ملوک ہو اور رب اللہ عزوجل ہے۔

(۲۰۷) مطرف کے باپ نے کہا: بنی عامر کی جماعت میں میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں آیا۔ اون لوگوں نے آپ کو کہا آپ ہمارے سید ہیں آپ نے فرمایا سید تو اللہ ہے۔ اونہوں نے عرض کی: آپ ہم سب میں افضل ہیں اور زیادہ ذی اختیار ہیں آپ نے فرمایا جو کہتے ہو کہو مگر ایسا نہ کہ شیطان تمہیں اپنا دلیل ٹھہرا لے۔ فرمایا اپنے گھر کا چروا ہا ہے

۱۰۸

(۲۰۸) حدیث نمبر ۲۰۲۔ مگر بیان اتنا زیادہ ہے۔ کہ عورت اپنے شوہر کے گھر کی چرواہن ہے اس سے بھی استفسار ہوگا۔

(۲۰۹) مالک بن انور رضی اللہ عنہ نے کہا: ہم لوگ چند جوان بھولی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہوئے اور آپ کے بیان میں شب تک ٹھہر گئے۔

(۲۱۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جو شخص لوگوں کا شکر نہیں ادا کیا کرتا وہ خدا کا شکر ہی نہیں ادا کرے گا۔"

(۲۱۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "اللہ تعالیٰ نے نفس سے فرمایا: نکل بولی نہیں، مگر مجبوری" مسلمان بہائی کی مدد کرنا

(۲۱۶) ابو ذرؓ نے کہا: "کسی نے پوچھا: یا رسول اللہ! اچھے سے اچھا عمل کون ہے؟" فرمایا: "خدا پر ایمان لانا اور اسکی راہ میں جہاد کرنا پوچھا: کس قسم کا غلام آزاد کرنا افضل ہے؟" فرمایا: "اگر ان قیمت اور نفیس" پوچھا: "اگر بعض کام مجھے نہ کھوسکے؟" فرمایا: "کسی کے کام میں مدد کر دو یا نیکے مجبور آدمی کا کام کر دو" پوچھا: اگر یہ بھی نہ ہو سکے؟ فرمایا: لوگوں کو اپنے شر سے محفوظ رکھو یہ بھی ایک طرح کا صدقہ ہی ہے۔"

۱۱۴ جو لوگ دنیا میں اچھے ہیں آخرت میں ہی اچھے رہیں گے

(۲۱۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "دنیا میں جو لوگ اچھے ہیں وہ آخرت میں ہی اچھے ہیں اور دنیا میں جو لوگ بُرے ہیں وہ آخرت میں ہی بُرے ہیں۔"

(۲۱۸) حرمہ رضی اللہ عنہا نے کہا میں مکان سے نکلا اور نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہوا اور وہیں تھا کہ آپ نے مجھے پہچانا پھر جب گھر چلنے کا وقت آیا تو میں نے اپنے جیب میں قسم کھائی کہ "آنحضرتؐ سے کچھ اور باتیں معلوم کر لوں" پھر حضورؐ میں حاضر ہو کر رو برو کھڑا ہوا اور عرض کی کہ مجھے کیا ارشاد ہوتا ہے؟" فرمایا: "حرمہ! اچھی بات کیا کر اور بُری بات سے بچا رہ" پھر میں لوٹا اور اپنے اونٹ تک پہنچ چکا تھا کہ پھر میں حضرتؐ کی طرف متوجہ ہوا اور بہت قریب جا کھڑا ہوا اور عرض کی: "یا رسول اللہ! مجھے اور کیا ارشاد ہوتا ہے؟" فرمایا: "حرمہ! اچھی بات کیا کر اور بُری بات سے بچا رہ اور خیال کر کہ تو جو لوگوں کے پاس سے اٹھا کر تو جو بات تجھے پسند ہو کہ لوگ تیرے حق میں کہیں وہی بات کر اور جو تجھے پسند نہ ہو اس سے

بھاری پھرتی (آپ کے پاس سے) لوٹ کر سوچنے لگا تو ان دونوں (نصیحت کے حملوں) سے کوئی بات باہر نہ تھی۔

(۲۱۹) سلمان نے کہا: "جو لوگ دنیا میں اچھے ہیں وہی آخرت میں بھی اچھے ہیں۔"

(۲۲۰) ابو عثمان نے کہا: "حدیث گزشتہ + ہر اچھے کام میں صدقے کا ثواب ہے"

(۲۲۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "ہر اچھے کام میں صدقے کا ثواب ہے"

(۲۲۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "صدقہ کرنا ہر مسلمان کو ضرور ہے"

صحابہ نے عرض کی: "اور جسکے پاس کچھ نہ ہو" فرمایا: "ایسا آدمی قوت بازو سے پیدا کر کے آپ ہی متفع ہو اور صدقہ بھی کرے" عرض کی جس سے نہوسکے یا نکرے

فرمایا: "کسی حاجتمند مجبور کی مدد ہی کرے" عرض کی: "اگر یہ بھی نکرے" فرمایا:

"کسیکو اچھی بات ہی بتا دے" عرض کی: "اگر یہ بھی نکرے" فرمایا: "شرارت کرے ایسے آدمی کا یہی صدقہ ہے" +

(۲۲۳) ابو ذر رضی اللہ عنہ نے کہا: "میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے

پوچھا: "کون کام افضل ہے" فرمایا: "خدا پر ایمان لانا۔ اور اوسکی راہ میں جہاد کرنا"

پوچھا: "کیسا غلام لونڈی آزاد کرنا افضل ہے" فرمایا: "نہایت منگنا بہت ہی

نفس" عرض کی: "اگر یہ نکر دوں" فرمایا: "کسی کے کام میں مدد کر دے یا کسی مجبور

کا کام کر دے" عرض کی: "اگر یہ بھی نکر دوں" فرمایا: "لوگوں کے ساتھ شرارت نہ کر یہ بھی ایک طرح کا تیرا اپنی طرف سے صدقہ کرنا ہے۔"

(۲۲۴) ابو ذر رضی اللہ عنہ نے کہا: "صحابہ نے عرض کی: "یا رسول اللہ! ثواب تو بالکل

مال والوں ہی کا حصہ ہو گیا وہ ہلوگ (غریبوں) کی طرح نماز بھی پڑھتے ہیں

روزے بھی رکھتے ہیں علاوہ اسکے اپنے خزانے سے صدقہ خیرات بھی کرتے

ہیں" آپ نے فرمایا: "کیا خدا نے تمہارے (غریبوں) لیے صدقے کا ثواب حاصل

۵۱

کریں کی صورت نہیں رکھی ہے ہر بار سبحان اللہ کہنے میں الحمد للہ کہنے میں صدقے کا
 ثواب ہے اور بوی کے ساتھ صحبت کرنے میں صدقے کا ثواب ہے "عرض کی
 "اپنے مزہ اور اڑانے میں صدقے کا ثواب ہے" فرمایا "اگر حرام کاری کرتا تو گناہ ہوتا
 یا نہیں ایسا ہی جلال کرنے میں ثواب کیوں نہ ہوگا" *
 ۱۱۶ تکلیف پہنچانے والی چیزیں راہ سے ہٹا دینا

(۲۲۵) ابو بزرہ اسلمی رضی نے کہا "میں نے عرض کی "یا رسول اللہ ایسا کام ہٹا دینا
 فرمائیے جو مجھے بہشت میں پہنچا دے" فرمایا "راہ پر سے تکلیف دینے والی چیزیں -
 (ٹھوکر گوراکرکٹ کاٹنا غلیظ وغیرہ) ہٹا دیا کر" *

(۲۲۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "ایک شخص نے راہ پر کانٹا پڑا ہوا دیکھا
 کہنے لگا میں اسکو ہٹا دوں ایسا نہ کہ کسی مسلمان کو تکلیف پہنچا دے بس (اسی
 اوسکے گناہوں کی) بخشائیش ہوگئی" *

(۲۲۷) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "میری امت کے اعمال اچھے
 بھی اور بُرے بھی میرے سامنے پیش کیے گئے تو راہ پر سے تکلیف کی چیزیں دور کر دینا
 اچھے اعمال میں تھا اور مسجد میں کھنکار پھینک کر اوسکو بے دفن کیے چھوڑ دینا بُرے
 اعمال میں تھا" *

۱۱۷ اچھی بات بولنا

(۲۲۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "ہر نیک کام میں صدقے کا ثواب ہے"
 (۲۲۹) انس رضی نے کہا "رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا معمول تھا کہ جب آپ کے
 یہاں کوئی چیز (تحفہ بدینہ نذر کی قسم سے) آتی آپ فرماتے "اسکو افلائی مسماۃ کے پاس لے جاؤ
 وہ خدیجہ کی دوست تھی اسکو افلائی مسماۃ کے پاس لے جاؤ وہ خدیجہ کو چاہتی تھی" *

(۲۳۰) باب کی پہلی حدیث نمبر ۲۲۹ *
 ۱۱۸ انکار لوگوں کے کھبت پر جانا اور پھلے میں چیز بھر کر لاندھے پر گھر لے آنا

(۲۳۱) ابو قرة کے بیٹے عمرو نے کہا ابا جان نے مسلمانوں سے اپنی بہن کے ساتھ

خدیجہ رضی اللہ عنہا
 والدہ رسول کی بیوی
 تھیں

(۲۳۲) ابن عباس رضی اللہ عنہما نے فرمایا: "چلو اپنے لوگوں کی زمین کی طرف چلے پھر ملوگ چلے تو میں اور ابی بن کعبؓ سیکے پیچھے تھے اتنے میں بدلی گھرائی انہی نے دعا کی "یا اللہ میں ہی کی تکلیف ہلوگوں سے دفع کر پھر ملوگ جا کر اگلون سے ملے تو کیا دیکھا کہ اون لوگوں کے کجاوے تر ہو رہے ہیں اون لوگوں نے کہا تم لوگوں پر بارش کا اثر نہیں معلوم ہوتا میں نے کہا "خدا سے دعا کی گئی کہ اسکی تکلیف ہلوگوں سے دور رکھے" اس پر عمر رضی اللہ عنہ نے کہا اپنے ساتھ ہلوگوں کے لیے دعا کی "جاندا دیکھتے جانا" ۱۱۹

(۲۳۳) ابو سلمہ رضی اللہ عنہ نے کہا: "میری اور ابو سعید خدری رضی اللہ عنہما کی دوستی تھی میں نے اونکے پاس آکر کہا: "بھور بنی نہیں چلتے بس وہ اپنی چادر اوڑھ کر چلے" *
 (۲۳۴) علی رضی اللہ عنہ نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ عنہما کو حکم دیا کہ کسی درخت پر چڑھ کر آپ کے لیے کچھ لے آویں کہ عبد اللہ کے ساتھیوں نے اونکی چلی دیکھی اور او سکا دہلا پن دیکھ کر ہنسنے لگے اس پر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "ہنستی کیا ہو خدا کی نزدیک (اعمال کے) ترازو میں عبد اللہ کا پاتون کوہ احد سے بھی بھاری سے" *
 مسلمان مسلمان کا آئینہ ہوتا ہے

(۲۳۵) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا: "ایمان دار آدمی اپنے (مسلمان) بھائی کا آئینہ ہے جب اوس میں کوئی عیب دیکھے لگا اوسکی اصلاح کرے گا" *
 (۲۳۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "ایمان دار آدمی اپنے (مسلمان) بھائی کا آئینہ ہوتا ہے اور ایمان دار آدمی (دوسرے) مسلمان کا بھائی ہوتا ہے اوس کی جائداد کو سنبھالتا ہے اوسکی غیبت میں اوسکی گردآوری کرتا ہے" *
 (۲۳۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جو شخص کسی مسلمان کی رعایت نہ کرے پر کچھ کھانا پائے اللہ تعالیٰ اوسکو دیساہی کھانا جنم کا کھلا دیکھ لگا یا کپڑا پائے

بھور بنی کا بیان

۵۴

مسلمان کی غیبت نہ کرے
 بھائی اور علی بن ابی طالب
 بھائی کا آئینہ ہوتا ہے

۵۵
 کلمہ حاصل
 ہے

۱۲۱ اللہ تعالیٰ اور سکو جسم لاکھ پندرہ اور جو شخص کسی (مالدار) مسلمان کے (دھوکہ دینے کے لیے دکھانے سنانے کی باتیں کرے اللہ تعالیٰ (اوسکے دھوکہ کھانے کو) قیامت کے دن دکھانے سنانے کی باتیں کرے گا۔

ما جائز کھیل اور دل کھی

۱۲۲ (۲۳۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "ساتھی کی چیز کھیل سے یا سچ مچ لے لینا نہیں چاہیے کوئی اپنے ساتھی کی لاشی لے لے تو پھر اوسکو پھیر بھی دے۔"

ابھی بات سمجھانا

۱۲۳ (۲۳۹) ابو مسعود انصاری رضی اللہ عنہ نے کہا: "ایک شخص نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس حاضر ہو کر عرض کی کہ میں تھک جایا کرتا ہوں مجھے کوئی سواری دیجیے" آپ نے فرمایا میرے پاس تو ہی نہیں مگر تو فلان شخص (کسی کا نام بتایا) کے پاس جا شایہ وہ سے بس وہ سائل اوس شخص کے پاس گیا اوس نے اسے سواری دی پھر سائل نے آکر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو خبر کی آپ نے فرمایا: "نیک بات بتانے والے کو بھی نیکی کرنے والے کی طرح ثواب ملتا ہے۔"

معاف کرنا اور درگزر کرنا

۱۲۴ (۲۴۰) انس رضی اللہ عنہ نے کہا: "ایک یہودی نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں بکری لاکوشت زہر ملا کر لے آئی آپ نے اوس میں سے کچھ تناول فرمایا اور سوقت بطور معجزہ آپ کو زہر ملنے کی خبر ہو گئی آپ نے اوسے بلوایا، وہ حاضر لائی گئی لوگوں نے عرض کیا اسکو مار نہ دالین آپ نے فرمایا: "نہیں" (انس رضی اللہ عنہ نے کہا) میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حلقے کے کوسے پر ہمیشہ اوس کا اثر دیکھا۔"

۱۲۵ (۲۴۱) وہب بن کیسان نے کہا: "عبداللہ بن الزبیر نے منبر پر یہ آیت پڑھی: "مَنْ كَرِهَ اللَّهُ مُبْدَاهُ وَخَتْمَهُ وَأَمْرَهُ فَطَسَدْ" اور اچھی بات کی ہدایت کرو اور جھگڑالو لوگوں سے کنارہ کرو" عبداللہ جو بولے: "قسم خدا کی اللہ نے اچھی باتیں لوگوں ہی سے اخذ کر نیکی فرمایا"

اور مجھ سے جب لوگوں سے ساتھ پڑا سے تب میں نے اخذ بھی کیا ہے *
 (۲۴۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: لوگوں کو تعلیم کرو اور لوگوں کو
 آسانی کرو اور دشواری مسترد کرو اور جب کسکو غصہ آوے تو اسکو چپ بنا چاہئے
 لوگوں سے کشادہ پیشانی ملنا

(۲۴۳) عطار بن یسار نے کہا: مجھ سے عبد اللہ بن عمرو بن العاص رضی اللہ عنہ سے ملاقات
 ہوئی میں نے پوچھا تورات میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی صفت کیا
 مذکور ہے مجھے بتائیے، کہا: اچھا قسم خدا کی آپ کی بعض صفتیں تو جو قرآن
 میں ہیں وہی تورات میں بھی ہیں یعنی پانی بہنے آپ کو گواہ بنا کر اور بشارت دینے کو
 اور دھمکا دینے کو اور ان پڑھوں کے بچاؤ کے لیے بھیجا ہے آپ میرے بندے
 ہیں اور میرے رسول ہیں یعنی آپ کا نام متوکل (خدا پر بھروسہ کرنے والے)
 رکھا بد زبان سخت دل نہیں ہیں نہ بازاروں میں غل شور مچانے والے ہیں نہ
 نلے بدلے برائی نہیں کرتے بلکہ معاف کرتے اور بخشدیتے ہیں جب تک اللہ تعالیٰ
 آپ کی ذات پاک (کی برکت) سے دین کی کمی مٹا کر دین کو اتنا سیدھا کر لیا
 کہ لوگ خدا ہی کی الوہیت کے قائل ہو جاویں اور اندھی آنکھیں اور بہرے کان
 اور نا سمجھہ دل کھل جائیں تب تک آپ کی وفات نہوگی *

۵۶

(۲۴۴) عبد اللہ بن عمرو نے کہا: قرآن کی اس آیت کا مضمون یا ایہا النبی
 انا اولناک شہدا ومبشرا ونذیرا یعنی اسے نبی میں نے آپ کو گواہ بنا کر اور بشارت کی
 بشارت دینے کو اور (دوزخ سے) ڈرا دینے کو بھیجا ہے۔ تورات میں بھی ہے
 (۲۴۵) معاویہ رضی اللہ عنہ نے کہا: میں نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے ایک بات
 سنی جسکا نفع بھی خدا کے فضل سے مجھے ہوا آپ (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) نے
 فرمایا: اگر تو لوگوں کے ساتھ شہے بر کارروائی کیا کریگا تو ضرور فساد برپا ہوگا میں
 شہے بر کارروائی نہیں کرتا اسلیے فساد بھی نہیں ہوتا *
 (۲۴۶) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا: میرے ان کانوں نے سنا اور ان آنکھوں نے

دیکھا امام حسن تھے یا امام حسین (صلوات اللہ علیہما) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ
 وسلم نے اونکے دونوں ہاتھ اپنے ہاتھوں سے پکڑے اور اونکے دونوں پاؤں
 آپ کے قدم (مبارک) پر رکھے آپ فرماتے تھے چڑھو وہ چڑھنے لگے یہاں تک
 کہ اپنے دونوں پاؤں کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے سینہ (مبارک)
 پر رکھا پھر آپ نے رحمت اللہ علیہ وآلہ وسلم فرمایا "موندہ کھول" پھر آپ نے
 منہ جو ابھی فرمایا "اسے اللہ میں اسکو چاہتا ہوں تو بھی چاہ" +
 ۱۲۵

اسد الغابہ میں
 جہنم النساء
 میں جلد میں ہیں

(۲۴۶) قیس نے کہا "جبرئیل کہتے تھے" جیسے میں مسلمان ہوا اور سوقت سے
 جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے مجھے دیکھا مسکرا دیا کیے اور رسول
 اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "یہیں والوں کا ایک بہت اچھا آدمی اس
 دروازے سے اندر آویگا اور اسکے موندہ بر فرشتے نے ہاتھ پھیر دیا ہے" بس جبرئیل نے
 (۲۴۸) عائشہ رضی اللہ عنہا نے کہا "کبھی میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو ایسا
 ہنستے نہیں دیکھا کہ آپ کے حلق کا کوئی نظر آجائے آپ فقط مسکرا دیا کرتے (صلی اللہ
 علیہ وآلہ وسلم) اور جب کبھی آپ بدلی یا طوفان دیکھتے اس کے تردد) کا اثر آپ
 کے چہرہ مبارک پر صاف ظاہر ہو جاتا تھا ایک دفعہ عائشہ رضی اللہ عنہا نے عرض کی کہ رسول
 اللہ! لوگ جب بدلی دیکھتے ہیں تو پانی کی امید پر خوش ہوتے ہیں اور آپ کو کبھی
 ہون کہ آپ تردد ہو جاتے ہیں" آپ نے جواب دیا "عائشہ! اسکا مجھے کیوں کر
 اطمینان ہو کہ اس میں عذاب (آئی) نہیں ہے ایک قوم پر طوفان ہی کا عذاب
 نازل کیا گیا اور ایک قوم پر بدلی میں عذاب آیا اور سمجھتے رہے کہ اس بدلی سے
 ہم لوگ سیراب ہوں گے +
 ۱۲۶

(۲۴۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "کم ہنسا کر بت ہنسنے سے دل مر رہا
 ہوتا ہے" +

(۲۵۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: بہت مت ہنسنا کہ بہت ہنسنے سے دل مردہ ہو جاتا ہے۔

(۲۵۱) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا: نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مکان سے باہر تشریف لائے دیکھا کہ چند اصحاب باتیں کر رہے ہیں اور ہنستے جاتے ہیں، آپ نے فرمایا: "قسم اوس ذات کی جسکے ہاتھ میں میری جان ہے جو بات میں جانتا ہو اگر تمہیں معلوم ہوتی تو تم ہنستے کم اور روتے بہت یہ کہ اگر آپ تو اندر چلے گئے اور صحابہ روتے لگے بس اللہ تعالیٰ نے وحی فرمائی کہ اے محمد آپ میرے بند و نکو نا امید کیوں کرتے ہیں تب تو آپ پھر لوٹ آئے اور فرماتے لگے کہ "خوش رہو اور سید سے رسوا اور میانہ روی اختیار کرو"۔

۱۲۷ خد ہر منہ کرے سارے بدن سے اود ہر سو جای اور جہڑ پٹھہ پھیرے سارے بدن سے پھر جائے

یعنی باتوں میں ہنسنے سے دل مردہ ہوتا ہے اور وہ لوگ جو اللہ تعالیٰ سے ڈرتے ہیں ان کو اللہ تعالیٰ نے وحی فرمائی کہ اے محمد آپ میرے بند و نکو نا امید کیوں کرتے ہیں تب تو آپ پھر لوٹ آئے اور فرماتے لگے کہ "خوش رہو اور سید سے رسوا اور میانہ روی اختیار کرو"۔

(۲۵۲) مسلم کے بیٹے موسیٰ نے کہا ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی بات بولا کرتے تو یوں کہا کرتے "مجھے لابی پلسا واسلے سفید تہنگاہ واسلے" (یعنی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ہے جھکایا یہ طور تھا کہ منہ کرتے تو سارے بدن سے اود ہر سو جاتے اور پٹھہ پھیرتے تو سارے بدن سے پھر جاتے اونکا مثل نہ کسی نے دیکھا ہے نہ دیکھے گا"۔

۱۲۸ جس سے مشورت لی جاوے او سکوا امانت داری جا ہے

۵۸

(۲۵۳) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے ابو ہریرہ سے پوچھا: تمہارے پاس کوئی خادم سے عرض کی "نہیں" فرمایا: اچھا میرے یہاں کچھ لوگ گرفتار ہو کر آویں تو تم بھی آجائو، پھر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں دو ہی شخص گرفتار ہو کر آئے یہ خیر سنکر اللہ تعالیٰ ہی ہوئے۔ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: ایک کو اس بند کو لے کر آؤ کی "یا رسول اللہ! میرے لیے حضور ہی لے کر فرمادینا" نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جس سے مشورہ لیا جاوے او سکوا امانت داری لازم ہے"

آپس میں دوست بن جاؤ گے اور بغض سے بچتے رہو بغض مونڈ ڈالتا ہے میری عمر میں
نہیں کہ بال مونڈتا ہے بلکہ دین کو مونڈتا ہے۔

(۲۵۸) وہی پہلی حدیث +
۱۳۲ الف

(۲۵۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "دو ایسا نڈارا آدمی کی روحیں ایک دن
کی راہ کے فاصلے سے ملاقات کیا کرتی ہیں حالانکہ دونوں شخصوں میں ایک نے
دوسرے کو دیکھا تک نہیں ہے۔"

(۲۶۰) ابن عباس رضی اللہ عنہما نے کہا "دونوں کے پھر جانیکے برابر کوئی (خراب) بات
نہیں دیکھی (اسی سے) نعمتوں کی ناشکری ہوتی ہے اور برادری چھوٹ جاتی ہے۔"
دل لگی

(۲۶۱) انس بن مالک رضی اللہ عنہ نے کہا "نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم (کسی سفر میں) اپنی
کسی بیوی کی طرف آئے اونکے ساتھ ام سلیم بھی تھیں آپ نے فرمایا "انجشہ شیشون
کو (یعنی عورتوں کو) آہستہ آہستہ ہانک (الوقلاب راوی نے کہا) نبی صلی اللہ علیہ
وآلہ وسلم ایسی بات بولے کہ اگر دوسرا کوئی بولتا تو تم لوگ اسکو ہنستے یعنی آپ
یہ جو فرمایا شیشون کو آہستہ آہستہ ہانک۔"

(۲۶۲) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا صحابہ نے عرض کی "یا رسول اللہ! حضورم لوگوں
سے دل لگی کرتے ہیں" آپ نے فرمایا "مگر جو بولتا ہوں ٹھیک ہی بولتا ہوں۔"
(۲۶۳) بکر بن عبد اللہ رضی اللہ عنہ نے کہا "صحابہ (کھیل سے) آپس میں خربزے لولا
کرتے پھر جب کام کا وقت آتا تو وہی لوگ مرد بھی نکلتے۔"

(۲۶۴) ابن ابی بلیدہ رضی اللہ عنہ نے کہا "ایک دفعہ عائشہ رضی اللہ عنہا نے مزاح کیا اور رسول
صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ہی وہیں بیٹھے۔ عائشہ رضی اللہ عنہا کی ماں نے عرض کی "یا رسول اللہ!
یہ کنانہ کے خاندان کی اول لگی ہے" آپ نے فرمایا "خاندان کنانہ کیوں" بلکہ اس
میرے ہی خاندان کی دل لگی ہے۔"

یعنی جو شخص کو دیکھ کر
دوسرے کی طرف سے بغض
ہو جائے اور یہ بغض
طبیعت اور ہوشیاری
سے مسلمان کی
روحانی قوت اٹھ
جانے لگتی ہے۔
لفظ حدیث تقاریر
۴۰
انظروا بآئینہ
صاحب کتب
کنز الدقائق
۱۰۰

(۲۶۵) انس رضی اللہ عنہ نے کہا: ایک شخص نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں سواری مانگنے آیا، آپ نے فرمایا: "میں تجھے اور مٹی کے بچے پر سوار کروں گا، گھنے لگا" یا رسول اللہ! میں اور مٹی کا بچہ لیکر کیا کروں گا؟ آپ نے فرمایا: "بڑے بڑے اونٹ بھی تو اوستیوں ہی کے بچے ہیں"۔

لوگوں کے ساتھ دل لگی

(۲۶۶) انس رضی اللہ عنہ نے کہا: نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بڑے ہی لمسار تھے آپ میرے چھوٹے بھائی سے فرماتے: "ابو عمر نغمہ کیا ہوا؟"۔

(۲۶۷) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا: نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے امام حسن یا امام حسین کا ہاتھ پکڑا پھر اونہوں نے اپنے دونوں ہاتھوں آپ کے دونوں ہاتھوں پر رکھے پھر آپ نے فرمایا: "ہو"۔

اچھی عادت

۶۱

(۲۶۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "عمل تو نے کی تراویح میں اچھی عادت سے زیادہ اور کوئی بات بھاری نہیں ہے"۔

(۲۶۹) عبد اللہ بن عمرو رضی اللہ عنہ نے کہا: نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نہ بد زبان تھے نہ بد چلن اور نہ کبھی بیباک آپ سے بہ تکلف ہوتی اور فرمایا کرتے: "تم میں وہی لوگ بہت بہترین جنگی عادت اچھی ہے"۔

(۲۷۰) عمرو بن شعیب رضی اللہ عنہ کے دادا نے کہا: نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم صحابہ سے فرماتے: "بتا دوں کہ میں تم میں کسکو زیادہ چاہتا ہوں اور کسکو قیامت کے دن سب سے زیادہ میرے قریب جبکہ لیکن بس لوگ چیلے رہے" آپ نے پھر دوبارہ اسے بارہ پوچھا تب لوگوں نے عرض کی: "یا رسول اللہ! آپ نے فرمایا: اچھی عادت واسلے"۔

(۲۷۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "میں فقط عمرہ اخلاق کے کامل کرنے کے لیے بھیجا گیا ہوں"۔

(۲۷۲) عائشہ رضی اللہ عنہا نے کہا: رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو جب کبھی دو بائیں پیش آئیں اور آپ کو (خدا کی طرف سے) یہ موقع بھی دیا گیا کہ کسی ایک کو اختیار کر لیں، دونوں میں جو بات زیادہ آسان ہوتی آپ اسی کو اختیار فرما کر بشرطیکہ گناہ کی بات نہوتی اور اگر کہیں گناہ کی بات ہوتی تب تو آپ سب لوگوں سے بڑھ کر اوس سے کنارہ کرتے اور آپ نے کبھی اپنے ذاتی معاملے میں کسی سے کسر نہیں لی بان اگر اللہ کی حرمت کی ہتک کی جاتی تو اللہ کے واسطے ضرور بدلا لیتے۔

(۲۷۳) عبد اللہ رضی اللہ عنہ نے کہا: اللہ تعالیٰ نے تم لوگوں میں جیسے روزی تقسیم کر دی ہے ایسے ہی اخلاق بھی تقسیم کر دیے ہیں اور اللہ تعالیٰ مال تو دوست دشمن سب کو دیتا ہے مگر ایمان فقط دوست ہی کو دبا کرتا ہے تو جو کوئی مال خرچ کرنے میں تامل کرے اور دشمن سے جہاد کرنے میں ڈرے اور اورسیرات کو جانگنا شکل ہو اوسکو چاہیے کہ لا الہ الا اللہ سبحان اللہ و الحمد للہ والصلوٰۃ والسلام اکثر پڑھا کرے۔

دل کی سخاوت ۱۳۶

(۲۷۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: بہت مال ہونے سے آسودگی نہیں ہوتی آسودگی دل کی آسودگی ہے۔

(۲۷۵) انس رضی اللہ عنہ نے کہا: میں نے دس برس نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت کی آپ نے کبھی مجکو آف نہیں فرمایا اور جو کام میں نے خود نہیں کیا آپ نے کبھی نہیں فرمایا کہ یہ تو نے کیوں نہیں کیا یا کوئی کام میں نے کر لیا تو آپ نے یہ بھی نہ فرمایا کہ یہ کیوں کیا۔

(۲۷۶) انس رضی اللہ عنہ نے کہا: نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بڑے رحمدل تھے اور آپ کے پاس جو کوئی (حاجت مند) آتا تو آپ اوسکی حاجت میں بھی فرماتے اور اگر نہ ہو سکتا تو اوس سے ضرور وعدہ فرماتے ایک دفعہ نماز کی اقامت ہو چکی تھی

۱۳۷
 رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جس طرح کسی کے پیٹ میں خدا
 کے راہ لاغبار اور جہنم کا دہوان و دونوں کبھی اکٹھا نہیں ہو سکتے (اسی طرح) کسی کے
 دل میں کجی اور ایمان و دونوں کبھی اکٹھا نہیں ہو سکتے"۔
 (۱۳۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "دو خصلتیں ایسی ہیں کہ مومن
 میں انہیں نہیں ہو سکتیں بخل اور بد خلقی"۔
 (۱۳۹) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "میں لوگ عبد اللہ کے پاس بیٹھے تھے
 کہ ایک شخص کا ذکر کر کے اوسکی عادت کا یہی ذکر کرنے لگے اس پر عبد اللہ
 فرمایا: "تم لو سکا سکاٹ ڈالو تو کیا پھر اوسکو جوڑ سکتے ہو لوگوں نے کہا: "نہیں"
 فرمایا: "نہیں ہو سکتا"۔ یہ بھی نہیں ہو سکتا، "یوحیا فقط بالون" کہا یہ بھی
 ہے کہا: "جب کہ تم اوسکی خلقت کو نہیں ٹوٹا سکتے تو اوسکے خلق کو بھی نہیں
 سکتے"۔ اور کہو نظر کیا ایسی دن رحم میں پھیرتا ہے پھر خون ہو جاتا ہے
 خون چھلک رہا ہے پھر وہ پھلکی بولی ہو جاتی ہے تب اللہ فرشتہ بھیجتا ہے
 اس وقت اوسکی روزی اور خلوت اور بدبختی یا نیکی لکھ جاتا ہے"۔
 (۱۴۰) یہی عادت بشر ایک سمجھ دار بنا ہو

جمع الجعا
 لا صحیح الا
 شاہ عبدالقادر
 حرم ازرق
 شاہ اول اللہ
 صاحب

(۲۸۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: آدمی اپنی اچھی عادت کی بרכת سے تہجد گزار کا درجہ پاتا ہے۔

(۲۸۳) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: اچھا اسلام اوسکا ہے جسکے اخلاق اچھے ہوں بشرطیکہ سمجھہ دار بھی ہو۔

(۲۸۴) عیبہ رضی اللہ عنہ کے بیٹے ثابت رضی اللہ عنہ نے کہا: "میں نے لوگوں میں کسی شخص سے دیکھے کہ کوئی نابت کے بیٹے زید سے زیادہ باوقار نہیں دیکھا اور نہ کسی کو اپنے گھر میں ایسے زیادہ خوش دیکھا۔"

(۲۸۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "کون سا دین خدا کو زیادہ پسند ہے (پھر خود فرمادیا) یہی آسان ایک پلا دین (دین ابراہیمی)۔"

(۲۸۶) عبد اللہ بن عمرو رضی اللہ عنہ نے کہا: "اگر تجھ کو چار باتیں حاصل ہیں اور دنیا بھر کی باتیں نہیں ہیں تو کچھ پروا نہیں اچھی عادت۔ روٹی کی اطمینان۔ راستگونی۔ امانت داری۔"

(۲۸۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جانتے ہو لوگ کثرت سے دوزخ میں کس چیز کی بدولت جائینگے؟ صحابہ نے عرض کی: "خدا جانے خدا کا رسول جاسے۔"

فرمایا: "دونوں بھونک چیزوں کی بدولت۔ ایک تو یہی شرمگاہ اور دوسری سنہ اور بہشت میں کسکی بدولت کثرت سے جائینگے اللہ جانتے رہنا دوسرے اچھی عادت۔"

(۲۸۸) درود ارض کی مان نے کہا: "ایک رات درود کے باب نماز کو اوتھے تو رو کر برابر صبح تک یہی دعا کرتے رہے۔" اسی اللہ تو نے میری صورت اچھی بنا لی میری عادت بھی اچھی کر دے۔" میں نے کہا: "الو درود! ساری رات عادت ہی کی خوبی کے لیے دعا کرتے رہ گئے۔" اونہوں نے جواب دیا: "امم درود! مسلمان آدمی کو اچھی عادت کے سبب سے بہشت لجاتی ہے اور بد اطوار ہوتا ہے تو بس دوزخ میں داخل ہوتا ہے۔ اور مسلمان آدمی ہوتا ہوتا ہی اور اوسکی بخشائش ہو جاتی ہے۔" میں نے کہا: "سو تو آدمی کی بخشائش کیونکر ہو جاتی ہوگی؟" کہا: "کوئی مسلمان شب کو اٹھا تہجد پڑھ کر اپنے لیے خدا سے دعا کی اللہ تعالیٰ اوسکی دعا قبول فرمائی پھر اپنے مسلمان بھائی کے واسطے دعا کی اللہ تعالیٰ نے اوسکے حق میں بھی اوسکی دعا

لفظ صحت سے مراد
اصطلاح میں تہجد
اور تہجد کا
کلمہ ہے

۶۴

یعنی اللہ بڑا
اپنے مال بچوں
کے ساتھ نہایت
پسندیدہ ہوتا

۱۲

قبول کر لی۔

(۲۸۹) شریک کے بیٹے اُسامہؓ نے کہا «میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر تھا اور ادھر ادھر کے دیہاتی لوگ بہت آئے ہوئے تھے اور لوگ تو چپکے تھے فقط وہی سب بول رہے تھے تو ان لوگوں نے بعض بعض سبحان اللہ کے بارے میں پوچھا کہ یا رسول اللہ! ان باتوں میں کچھ مضائقہ ہے؟ آپ نے فرمایا جلا کے بندو! اللہ تعالیٰ نے سب مضائقہ اٹھا دیا ہے ہاں کوئی شخص کوئی بات ظلم کی قائم کرے تو البتہ اُس میں مضائقہ بھی ہے ہلاکت بھی ہے» عرض کی «ہم لوگ (بیماریوں کی) دوا کریں؟» فرمایا «ہاں اُو خدا کو بندو! ووا کیا کرو اللہ تعالیٰ نے جو جو بیماریاں پیدا کی ہیں ایک بیماری کے سوا سب کی دوا میں بھی پیدا کی ہیں» عرض کی «وہ کون بیماری ہے یا رسول اللہ!؟» فرمایا «موت» عرض کی «یا رسول اللہ! انسان کو (خدا کی طرف سے) سب سے بہتر کون چیز عنایت ہوئی ہے؟» فرمایا

اچھی عادت»

(۲۹۰) ابن عباس رضی اللہ عنہما نے کہا «رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بڑے ہی قیامت تھے اور آپ کی فیاضی رمضان میں اور بھی بڑھ جاتی جب کہ جبریل صلی اللہ علیہ وسلم آپ سے ملتے اور جبریل تو رمضان میں ہر شب آپ سے ملا کرتے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم انکو قرآن سنایا کرتے تو جبریل سے ملنے کے وقت آپ کا فیض ہوا کے فیض اسے بھی بڑھا ہوا ہوتا»

(۲۹۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا «اگر اُمت کے ایک شخص سے (مرنے کے بعد) محاسبہ ہونے لگا تو اُسکے پاس ایک ہی نیکی ٹھہری ہو وہ خوش حال آدمی تھا اور لوگوں سے کاروبار رکھتا تھا تو اپنے کاروباروں سے کہدیا تھا کہ تنگ دست آدمی کو چھوڑ دیا کرو اللہ تعالیٰ نے فرمایا «ہم تو زیادہ تر کے سزاوار ہیں» پس اُسکو چھوڑ ہی دیا»

(۲۹۲) ابو ہریرہؓ نے کہا «رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سوال

ہوا کہ لوگ بہشت میں کس چیز کی بدولت کثرت سے جائینگے فرمایا: ایک تو اللہ سے ڈرتے دینا دوسرے عمرہ عادت، اور (پوچھا) دوزخ میں کس چیز کی بدولت کثرت سے جائینگے فرمایا: «دو لون پھوک بدن منہ اور شرمگاہ»۔

(۲۹۳) نو اس انصاری نے کہا: «میں نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے نیکی اور بدی کو پوچھا آپ نے فرمایا: نیکی تو عادت کی عمدگی ہے اور بدی وہی ہے جو تیرے دل میں کھٹکے اور اس سے لوگوں کا آگاہ ہو جانا مجھے ناپسند ہے»۔

۱۳۹ بخیل

(۲۹۴) جابر رضی نے کہا: «رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے پوچھا نبی سلمہ تمہارے یہاں سردار کون ہے؟ ہم لوگوں نے عرض کی: «قیس کا بیٹا جلد گزرتی بات ہے کہ ہم لوگوں میں وہ بخیل مشہور ہے» آپ نے فرمایا: «بھلا بخیل سے بڑھ کر کون علت ہوگی تب وہ سردار نہیں ہے بلکہ تمہارا سردار عمر بن جموح ہے» اور یہ عمر زمانہ جاہلیت میں ان کے بتوں کا محافظ تھا اور جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کوئی نکاح کرتے تو آپ کی طرف سے ویسے کی دعوت کیا کرتا»۔

(۲۹۵) مغیرہ رضی کے محرز و تراویض نے کہا: «امیر معاویہ رضی نے مغیرہ بن شعبہ کو لکھا کہ آپ نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے کچھ سنا ہو تو مجھے لکھ بھیجے مغیرہ رضی نے اٹھ کر لکھا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ان باتوں سے منع فرمایا کرتے تھے بک بکنا مال نقصان کرنا بہت پوچھ پوچھ اپنا رکھ پراپا رکھ مان کی نافرمانی بیٹیوں کو زندہ دفن کرنا»۔

(۲۹۶) جابر رضی نے کہا: «ایسا کبھی نہیں ہوا کہ آپ نے کسی چیز کے سوال میں نہیں فرمایا ہو»۔

۱۴۰ اچھے آدمی کو اچھا مال

(۲۹۷) عمرو بن العاص رضی نے کہا: «نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے مجھے بولا کہ

حکم دیا کہ میں اپنے کپڑے ہنکرتھیا لیکر حضور میں حاضر آؤں میں حسب حکم حاضر ہوا
 اسوقت آپ وضو فرما رہے تھے آپ نے نظر اٹھا کر مجھے دیکھا پھر نظر نیچی کر لی
 پھر فرمایا: "عمرو! میں تجھے شکر کا افسر کر کے بھیجا چاہتا ہوں کہ خدا تجھے تجھے
 غنیمت و لوادے اور میری خواہش ہے کہ تجھے کچھ مال حاصل ہو جائے" میں نے
 عرض کی "میں مال کی رغبت سے تو مسلمان ہوا انہیں ہوں میں تو اسلام
 ہی کی رغبت سے مسلمان ہوا ہوں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے
 ساتھ رہوں" فرمایا: "اے عمرو! اچھا مال اچھے آدمی کے واسطے بہت عمدہ چیز ہے
 صبح کو خوش خوش اٹھنا
 ۱۴۱

بعض لوگوں کو
 مسلمان
 کر کے

(۲۹۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جو صبح کو خوش خوش اٹھا اور
 بھلا چکا بھی ہے اور اسکے پاس ایک دن کا کھانا بھی ہے بس اسکے لیے گویا
 دنیا بھر کا سامان اکٹھا ہے +
 ۱۴۲

(۲۹۹) عبد اللہ بن جبیب رضی اللہ عنہ کے حجام نے کہا: "رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ
 وسلم مکان سے باہر تشریف لائے اور آپ پر نہانے کے آثار تھے اور آپ
 بشاش بھی تھے ہم لوگوں نے خیال کیا کہ آپ کو اسوقت اپنے اہل کے ساتھ
 خلوت کا اتفاق ہوا ہے پھر ہم لوگوں نے عرض کی: "یا رسول اللہ! حضور اس
 وقت بشاش معلوم ہوتے ہیں" آپ نے فرمایا: "ہاں خدا کا شکر ہے" پھر
 تو نگری کا ذکر آ گیا تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "تو نگری
 میں پرہیزگار آدمی کے واسطے کوئی پروا نہیں ہے اور پرہیزگار آدمی کے لیے
 سندرستی تو نگری سے بہتر ہے اور خوشدلی بھی بڑی نعمت ہے +
 (۳۰۰) جبیر رضی اللہ عنہ نے کہا: "لو اس نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
 سے نیکی اور بدی کو بوجھا تو آپ نے فرمایا: "نکو کاری عمدہ عادت کا نام ہے
 اور گناہ وہی ہے جو دل میں کھٹکے اور اس پر لوگوں کا اکھاہ ہو جانا پسند ہو +

(۳۰۱) انس رضی اللہ عنہ نے کہا: "رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نہایت ہی خوب اور بڑے سخی اور بڑے بہادر تھے ایک رات مدینے میں کچھ نکل مجا سب لوگ آواز کی طرف چلے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم راہ ہی میں لوگوں کے سامنے آگئے آپ سب کے پہلے وہاں پہنچ گئے تھے آپ فرما رہے تھے: "درومت درومت" آپ اس وقت ابو طلحہ کے گھوڑے پر بے زین رکھوائے ہوئے ننگی ہی پیٹھ پر سوار تھے اور آپ کی (مبارک) گردن میں تلوار لٹکتی تھی آپ نے فرمایا: "اس گھوڑے کو تو ہنسے دریا پایا، یا لیون فرمایا: "یچھ گھوڑا کیا ہے" دریا ہے۔"

(۳۰۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "ہر نیکی میں صدقے کا ثواب ہے اور مسلمان بھائی سے ہنس مکھ ملنا نیکی ہے اور اپنے ڈول سے اپنے مسلمان بھائی کے برتن میں پانی دیدینا نیکی ہے۔"

مظلوم کی مدد ضرور ہے

(۳۰۳) ابو ذر رضی اللہ عنہ نے کہا: "کسی نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے پوچھا کون کام بہتر ہے؟ فرمایا: "اللہ پر ایمان لانا اور اس کی راہ میں جہاد کرنا،" عرض کی: "کیسا غلام آزاد کرنا افضل ہے؟" فرمایا: "میش قیمت اور مالک کا پیار" عرض کی: "اگر مجھے ان میں سے کچھ نہ ہو سکے؟" فرمایا: "کاریلر کی مدد کر دے یا کتے آدمی کا کام ہی کر دے" عرض کی: "اگر نہ ہو سکے؟" فرمایا: "لوگوں کے ساتھ شرارت نہ کر اس میں بھی تجھے صدقے ہی کا ثواب ہے۔"

(۳۰۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "ہر مسلمان کو صدقہ کرنا (لازم ہے) اور بڑھ کر باپ سے عرض کی: "بھلا فرمائیے تو کسی کے پاس کچھ نہ ہو تو کمان سے دے" ارشاد ہوا: "کوئی دھندھا کر کر آپ بھی نفع اٹھا دے خیرات بھی کرے" عرض کی: "اگر نہ ہو سکے؟" فرمایا: "کیا؟" فرمایا: "حاجت مند مظلوم کی مدد کرے" عرض کی: "اگر یہ بھی نہ کر سکا یا نہیں کیا؟" فرمایا: "اچھی بات بتا دے" عرض کی: "اگر یہ بھی نہ کر سکا یا نہیں کیا؟" فرمایا: "شرارت نہ کرے ایسے شخص کا یہی صدقہ ہے۔"

خدا سے دعا مانگنا کہ میری عادت اچھی بنا دے

لفظ حدیث
(ذی الجہین)
صفحہ ۱۰۸

حضور نے سنا نہیں یہ (یہود) لوگ کیا کہ گئے، فرمایا: تم نے نہیں سنا میں نے (جو اب میں) کیا کہا میں نے بھی (ویسا ہی) تو ماویا میری (بات تو) ان کے حق میں قبول ہو جائے گی اور انکی (بات) میرے بارے میں قبول نہ ہوگی۔
(۱۰۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: ایمان والا آدمی نہ تو (بہت) طعن (تشنہ) کیا کرتا ہے نہ لعنت لعنت کیا کرتا ہے نہ بیچیا ہوتا ہے نہ بد زبان ہوتا ہے۔
(۱۰۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: دو پچھا سیا آدمی امانت دار نہیں ہوگا۔
(۱۱۰) عبد اللہ نے کہا: سوین کے لیے بد زبان ہونا بہت خراب عادت ہے۔
(۱۱۱) علی بن ابی طالب رضی نے کہا: لعنت کرنے والے آپ لعنت میں گرفتار ہوئے مروان راوی کہتے ہیں یعنی جو دوسروں پر لعنت کیا کرتے ہیں۔
بہت لعنت کرنا آلا آدمی

۷۰

(۱۱۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: بہت لعنت کرنے والے لوگ نہ تو قیامت کے دن گواہ (ہو کر طلب) ہونگے نہ کسی کی سپارش کر سکیں گے۔
(۱۱۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: صدیق کو (کسی پر) لعنت کیا کرنا مناسب نہیں۔
(۱۱۴) حذیفہ رضی نے کہا: جو لوگ آپس میں (ایک دوسرے پر) لعنت کرنے لگے بس سب کے سب لعنتی ہوئے۔
۱۱۷ غلام پر لعنت کرنے کے فٹارے، میں اسے آزاد ہی کر دینا

(۱۱۵) عائشہ رضی نے کہا: حضرت ابو بکر رضی نے اپنے کسی غلام پر لعنت کی اسپر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: ابو بکر لعنت کرنے والے اور صدیق (بجلا ایسا بھی ہو سکتا ہے) پر زور دگا رکعبہ کی قسم ہرگز نہیں (ہو سکتا) آپ نے دو بار یا تین بار فرمایا تب تو حضرت ابو بکر رضی نے اسی دن غلام کو آزاد ہی کر دیا اور نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہو کر عرض کرنے لگے کہ: میں پھر ایسی حرکت ماروں گا کہ

۱۴۸۔ کدای لعنت اور خدا کے غضب اور آگ (میں جلنے) کا کوسا

(۳۱۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: «اے میں خدا کی لعنت اور خدا کے غضب اور اوروزح کی (میں جلنے) کا کوسا نہ دیا کرو»
۱۴۹۔ کافر پر لعنت کرنا

(۳۱۹) ابوہریرہ رضی نے کہا: «لوگوں نے عرض کی: «یا رسول اللہ! شر کون کے حق میں بددعا فرمائیے»، ارشاد ہوا: «میں لعنت کیا کرنے کو نہیں بھیجا گیا ہوں میں تو مہربانی کرنے کو بھیجا گیا ہوں»
۱۵۰۔ چغلخو

(۳۲۰) ہمام رضی نے کہا: «ہم لوگ حذیفہ رضی (صحابی) کے ساتھ تھے، کسی نے ان سے کہا: «معلوم ہوتا ہے» کہ کوئی آدمی (حضرت عثمان کے یہاں بات پہنچایا کرتا ہے، اس پر حذیفہ رضی نے کہا: «نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: «چغلخو رہشت میں نہیں جائے گا»»

(۳۲۱) اسما بنت یزید رضی نے کہا: «نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: «بتا دوں تم میں اچھے کون لوگ ہیں (صحابہ رضی نے) عرض کی: «ہاں ارشاد ہو» فرمایا: «جنکے دیکھنے سے خدا یاد آئے اور یہ بھی بتا دوں کہ تم میں برے کون لوگ ہیں» عرض کی: «ہاں ارشاد ہو»، فرمایا: «چغلخو دوستوں میں فساد ڈالنے والے بد معاشی کا موقع تلاش کرنے والے»
۱۵۱۔ کسی کی بڑی بات سنکر مشہور کرنا

(۳۲۲) علی بن ابی طالب رضی نے کہا: «بڑی بات کہنے والا اور اسکا مشہور کرنے والا گناہ میں دونوں برابر ہی ہیں»

(۳۲۳) شہیل بن عوف رضی نے کہا: «(اگلے زمانے میں) یہ بات کہی جاتی تھی کہ: «بڑی بات سنکر مشہور کرنے والا گناہ کرنے والے کے مثل ہے»»
(۳۲۴) عطار رضی کی رائے تھی کہ کسی کی زنا کی خبر پھیلانے والے پر بھی (دنیا

یعنی کسی کو کہنا
گناہ میں بددعا کرنا
یعنی چغلخو کا
یعنی چغلخو کا
یعنی چغلخو کا

ادھر کی بات ادھر لگاتے پھرنے والے
یعنی چغلخو کا

یعنی پہنچ کر
تلاش و مقبول
ہونا چاہیے

شخص کا مذکور ہوا تو ایک آدمی نے اُسکی خوب تعریف کی اس پر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "تیرا برا ہونے لگا تو اپنے پار کی گردن ہی کاٹ ڈالی" آپ بار بار یہی فرماتے رہے (اور پھر یہ بھی فرمایا) "اگر کسی کو تعریف کرنا ہی ہو تو جسکو جیسا سمجھتا ہے بس اُسقدر کہے کہ میں ایسا ایسا سمجھتا ہوں اور اللہ اُسکو ٹھیک جانتا ہے اللہ کے نزدیک کسی کا پاک ہونا پھر گزریاں نہ کرے"۔

(۳۳۳) ابو موسیٰ رضی اللہ عنہ نے کہا: "ایک آدمی کسی کی تعریف کر رہا تھا اور اسکو بہت بڑھا رہا تھا کہ میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے سن لیا تو فرمایا: "اُسکو ہلاک کیا یا تم نے اُسکی پیٹھ توڑ ڈالی"۔

(۳۳۴) ابراہیم بنی رضی اللہ عنہ نے کہا: "ہم لوگ عمر کے پاس بیٹھے تھے ایک شخص نے منہ پر کسی کی تعریف کی عمر بولے تو نے اُسکی کوچ کاٹ دی خلیفہ کوچ کاٹا"۔

(۳۳۵) عمر رضی اللہ عنہ نے کہا: "تعریف کرنا ذبح کرنا ہے امام بخاری کہتے ہیں یہ جب ہے کہ جسکی تعریف کی جو وہ مان لے تب اُسکی تعریف کرنا"۔

(۳۳۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "ابو بکر خوب آدمی ہے عمر خوب آدمی ہے ابو عبیدہ خوب آدمی ہے اسید بن خضیر خوب آدمی ہے ثابت بن قیس بن ثمالہ خوب آدمی ہے معاذ بن عمرو بن الجموح خوب آدمی ہے معاذ بن جبل خوب آدمی ہے فلان شخص بڑا ہے فلان شخص بڑا ہے آپ نے سات آدمی گن دیے"۔

(۳۳۷) عائشہ رضی اللہ عنہا نے کہا: "ایک شخص نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہونے کی اجازت چاہی آپ نے فرمایا: "برا آدمی ہے" پھر جب وہ حاضر ہوا آپ ہشاش بشاش اس سے ملے جب وہ چلا گیا دوسرے کسی نے اجازت چاہی آپ نے فرمایا: "اچھا آدمی ہے" پھر جب وہ حاضر ہوا آپ ویسے ہشاش بشاش اس سے ملے جب وہ چلا گیا میں نے عرض کیا: "یا رسول اللہ آپ نے پہلے آدمی کے تمہیں (کیا) فرمایا اور پھر اس سے کیا ہے"۔

خوش خوش ملے اور اُس دوسرے کے حقین (کیا) فرمایا اور اُس انداز سے نہ ملے
 آپ نے فرمایا: عائشہ! جس شخص سے بدزبانی کے باعث لوگ پرہیز رکھیں وہ
 نہایت بُرا آدمی ہے *
 تعریف کر نیوالون کے مُنہ پر (مٹی) جھونکنا
 ۱۵۵

(۳۳۳) ابو عمر نے کہا: ایک شخص کھڑا ہو کر ایک حاکم کی تعریف کرنے لگا
 اس پر مقداد (صحابیؓ) اُسکے مُنہ پر مٹی جھونکنے لگے اور کہا کہ: "ہلو گون کو رسول اللہ
 صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے حکم دیا ہے کہ تعریف کرنے والون کے مُنہ پر مٹی جھونک
 دیا کریں * * *

(۳۳۸) ایک شخص ابن عمر رضی اللہ عنہما کے سامنے کسی کی تعریف کرنے لگا ابن عمر
 اُسکے مُنہ کی طرف مٹی سے خاک پھینکنے لگے اور کہا: "رسول اللہ صلی اللہ علیہ
 وآلہ وسلم نے فرمایا: تعریف کرنے والون کو (تعریف کرتے) دیکھو انکو مُنہ پر خاک جھونک
 (۳۳۹) رجاؤ نے کہا: ایک دن من مچن (صحابیؓ) کے ساتھ چلا چلتے چلتے
 بصرے والون کی مسجد تک پہنچا مسجد کے کئی دروازے تھے تو کیا دیکھتے ہیں کہ
 ایک دروازے پر بڑی بڑی اسلمی بیٹھے ہوئے ہیں اور سبکہ نام ایک شخص مسجد میں
 تھا وہ بہت لابی نماز پڑھا کرتا جب ہم لوگ مسجد کے دروازے پر پہنچے وہ
 چادر اوڑھے ہوئے تھا اور بڑی بڑی لگی باز آدمی تھے بولے: "مچن! تم بھی سبکہ
 ہی کی طرح نماز پڑھتے ہو" مچن نے اسکا کچھ جواب نہیں دیا اور لوٹ آئے
 رجاؤ کہتے ہیں: "مچن نے کہا کہ: رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے میرا
 ہاتھ پکڑ لیا اور چلے چلتے چلتے اُحد (بھاڑ) پر چڑھ گئے پھر دینے کی طرف دیکھ کر
 فرمایا: خرابی ہے اُسکی مان کی اس بستی کو یہاں کے لوگ نہایت آباد چھوڑ کر
 الگ ہو جاوینگے و جال ادھر آویگا پھر دینے کے ہر دروازے پر فرشتوں کو (پہرہ
 دیتے ہو) پا کر انہیں آوے گا پھر آپ (بھاڑ سے) اتر چلے جب مسجد میں آچکے
 تو آپ نے ایک شخص کو دیکھا کہ نماز پڑھ رہا ہے سجدہ کرتا ہے رکوع کرتا ہے

۴۲
 شان بین اس
 لفظ سے
 اور اس
 جہاں سے

مجھے فرمایا: "یہ کون شخص ہے؟ میں بڑھا بڑھا کر اسکا حال عرض کرنے لگا یا رسول اللہ
یہ فلان شخص ہے ایسا ہے ایسا ہے" اسپر آپ نے فرمایا: "بس بس کہیں اسکو نہ سنا کر
ہلاک کروا لیا پھر آپ چلے جب اپنے حجروں کے قریب پہنچے اپنے دونوں ہاتھ
جھاڑ کر فرمانے لگے "دین میں آسانی (اختیار کرنا) بہتر ہے دین میں آسانی (اختیار
کرنا) بہتر ہے" آپ نے یہ کلمہ تمہیں بار فرمایا۔
نظمین تعریف کرنا ۱۵۴

(۳۴) اسود بن سریق رضی اللہ عنہ نے کہا: "میں نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور
میں حاضر ہو کر عرض کی "یا رسول اللہ! میں نے خدا کی حمد میں کچھ کہا ہے اور آپ
کی شان میں بھی" اسپر آپ نے فرمایا: "ہاں تیرا پروردگار تو حمد کو پسند کرتا ہے"
تب تو میں زور زور سے گانے لگا پھر ایک دراز قد چنڈے آدمی نے اندر آئیگی
اجازت چاہی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے مجھے فرمایا: "چپ پھر وہ آدمی
آیا کچھ دیر باتیں کیں پھر چلا گیا پھر من گانے لگا (اتنے میں) پھر وہی شخص آیا پھر
آپ نے مجھے چپ کیا پھر چلا گیا دو یا تین بار یہی اتفاق ہوا تو میں نے عرض
کی: "یہ کون شخص ہے جسکے لیے حضور مجھے چپ کرتے ہیں؟" فرمایا: "یہ شخص
لفوڈ بات) پسند نہیں کرتا"۔

(۳۵) اسود بن سریق رضی اللہ عنہ نے کہا: "میں نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے عرض
کی: "میں نے آپ کی اور اللہ عزوجل کی تعریف کی ہے"۔
شاعر کے شرکے خون سے اُسے کچھ دینا ۱۵۵

(۳۶) ابو نجد رضی اللہ عنہ نے کہا: "ایک شاعر عمران بن حصین رضی اللہ عنہ کے پاس آیا انھوں
نے اُسے کچھ دیا کسی نے اُن سے کہا: "آپ شاعر کو دیتے ہیں انھوں نے کہا
"میں نے اپنی آبرو بچائی"۔
دوست کی ایسی تعظیم نہ کری جو اسپر گران ہو ۱۵۸

(۳۷) محمد (ابن سیرین) نے کہا: "بہلے لوگ کہا کرتے تھے کہ دوست کی ایسی

یا نبی اللہ! قیامت کب ہوگی؟ آپ نے فرمایا: "تو نے قیامت کے لیے کیا تیاری کی ہے؟" اس نے عرض کی: "میں نے کچھ بڑی تیاری تو نہیں کی مگر میں خدا اور اُس کے رسول سے محبت رکھتا ہوں" آپ نے فرمایا: "آدمی جس سے محبت رکھیگا اُسکے ساتھ ہوگا" انس رضی اللہ عنہ کہتے ہیں: "مسلمانوں کو اسلام کے بعد اُس دن سے زیادہ خوش مین نے کبھی نہیں دیکھا" ✽
 ۱۶۳

(۳۵۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جو شخص چھوٹے پر مہربانی کرے اور بڑے کا حق نہ پہچانے وہ ہم سے نہیں" ✽
 (۳۵۳) وہی حدیث نمبر (۳۵۳)
 (۳۵۵) وہی حدیث نمبر (۳۵۳)
 (۳۵۶) وہی حدیث (نمبر ۳۵۳) بتقدیم و تاخیر الفاظ
 (۳۵۷) وہی حدیث نمبر (۳۵۳) بتغییر بعض الفاظ
 بڑے کی بزرگداشت
 ۱۶۴

(۳۵۸) اشعری نے کہا: "توڑھے مسلمان اور حافظ قرآن جو فقط پڑھتے ہی مین غلو نہ رکھتا ہو نہ عمل مین اُس سے علیحدہ رہے اور عادل حاکم ان لوگوں کی بزرگداشت خدا ہی کی بزرگداشت ہے" ✽
 (۳۵۹) حدیث باب (۱۶۳)
 ۱۶۵ تو نے مین اور پوچھ پوچھ مین بڑا آدمی ابتدا کرے

(۳۶۰) رافع بن خدیج رضی اللہ عنہ اور سہل بن ابی حمزہ رضی اللہ عنہ نے کہا: "عبداللہ بن سہل رضی اللہ عنہ اور حنیئہ بن مسعود رضی اللہ عنہ دونوں خیر آئے اور وہ ان کھجور کے باغ مین علی رضی اللہ عنہ ہو گئے بس عبداللہ بن سہل کو کسی نے مار ڈالا پھر تو عبدالرحمن رضی اللہ عنہ سہل کا بیٹا اور حنیئہ اور حنیئہ مسعود کے دونوں بیٹے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور مین حاضر ہو کر اپنے (مقتول) آدمی کے بارے مین عرض

۷۸
 یعنی علیؑ کی بزرگداشت

معلوم ہوا کہ مسلمان
 آدمی کو دیکھا جائے
 ہونا چاہیے کہ
 اس وقت لوگ
 اسکی ذات سے
 فائدہ اٹھانے
 رہیں اور اسکی
 بلااشت اور عمدہ
 اخلاق میں تغیر نہ
 آئے

معروض کرنے لگے عبد الرحمن نے پہلے بولنا شروع کیا اور وہی رسک چھوٹا تھا
 حضرت نے اُس سے فرمایا: "بڑوں کی بڑائی کا خیال رکھا کر پہلے بڑے کو بولنا
 چاہیے پھر اُن لوگوں نے دوبارہ اپنے (مقتول) آدمی کے کلام کیا حضرت نے
 فرمایا: "پچاس آدمی تمہارے خاندان کے قسم کھائیں (اور قاتل کی نشاندہی کریں)
 تو البتہ تم لوگ (یہودیوں سے) خون کا عوض پلنے کے مستحق ہو گے" انھوں نے
 عرض کی: "یا رسول اللہ! ہم لوگوں نے تو دیکھا نہیں ہے" آپ نے فرمایا: "تب
 یہودیوں کے پچاس آدمی قسم کھا کر بری ہو جاسکتے ہیں" انھوں نے عرض
 کی: "یا رسول اللہ! وہ لوگ تو کافر ہیں" تب حضرت نے اپنی طرف سے اُن لوگوں کو
 فدیہ (دیت) دلوادیا سہل کہتا تھا کہ "مجھ بھی ایک اونٹ (دیت کے) اونٹوں میں سے
 دلا تھائیں اُن اونٹوں کے شترخانے میں گیا بس اُس نے مجھے ایک لات لگائی +
 بڑا نہ بولے تب چھوٹا بولے کہ نہیں؟" ۱۴۴

۷۹

(۱۳۸) ابن عمر رضی اللہ عنہما نے کہا: "رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "بتاؤ لوگوں
 درخت ہے جسکی مثال (ٹھیک) مسلمان آدمی کی مثال ہے خدا کے حکم سے ہر وقت
 میوہ لاتا ہی رہتا ہے پتا اُسکا (کبھی) نہیں گرتا" میرے دل میں گزرا کہ کھجور کا
 درخت ہے مگر ابوبکر اور عمرؓ کے موجود ہوتے ہوئے مجھے اپنا بولنا بڑا معلوم ہوا
 پھر جب یہ دونوں صاحب (بھی) نہ بولے تب حضرت نے فرمایا: "وہ کھجور
 کا درخت ہے" جب میں اپنے باپ کے ساتھ وہاں سے اُٹھا کہ ابا جان
 میرے دل میں کھجور کا درخت گزرا تھا" انھوں نے کہا: "تب تمہیں کھنے سے کسے
 روکام تمہارا بتا دینا ایسی ایسی (بڑی بڑی فائدوں کی) باتوں سے بھی یاد
 مجھے مرغوب تھا" میں نے کہا: "مجھے تو یہی تامل ہوا کہ جب آپ اور حضرت
 ابوبکرؓ نہ بولے تو میں کیونکر بولوں" +
 بڑوں کی سرداری ۱۴۵

(۱۳۹) قیس کے بیٹے حکیم نے کہا کہ: "ابا جان نے مرنے کے وقت اپنے

بیون کو وصیت کی " اللہ سے ڈرتے رہو بڑوں کو سرداری دو لوگ جب
 بڑوں کو سردار بنائینگے تو اپنے باپ کی (طرح انکی) نگاہداشت کرینگے اور
 (کم سن) چھوٹوں کو سردار بنائینگے تو اپنے برابر والوں میں وہ بیٹھے رہینگے
 مال اور مال کے حاصل کرنے کی صورتیں ہرگز مت چھوڑو مال ہی سے
 سخی آدمی کی بابت ہوتی ہے اور مال ہی سے آدمی بخیل سے بیغرض رہ سکتا،
 اور لوگوں سے مانگ چاہ ہرگز نہ کرنا مانگنا آخر دے کی کھائی ہے اور جب میں
 مرجاؤں مجھ پر جو نہ کرنا کیونکہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر جو نہ نہیں
 ہوا تھا اور مجھے ایسی جگہ دفن کرنا کہ میرے دفن کی بکریں وائل کو خبر نہ ہو
 کیونکہ میں جاہلیت میں ان لوگوں کو غفلت دیا کرتا تھا " †
 پہلا پھل اسکو دینا جو موجود رکھوں میں چھوٹا ہو

یعنی دھڑکے پانی
 یعنی کھانا تھا

(۳۴۳) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا "جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کربلا
 پہنچے خرمایا آپ یہ دعا فرماتے "یا اللہ! میرے شہر میں میرے مدین میرے
 صاع میں برکت دے برکت پر برکت پھر وہ خرمایا جو لڑکے اسوقت آپ
 کے پاس ہوتے ان میں سب سے چھوٹے کو عطا فرماتے " †
 چھوٹے پر مہربانی

(۳۴۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "جو شخص چھوٹے
 پر مہربانی کرے اور بڑے کا حق نہ بھانے وہ ہم سے نہیں " †
 لڑکوں کو گلے آگانا

(۳۴۵) یعلیٰ بن عمرہ رضی اللہ عنہ نے کہا "کہیں کھانے کی بلاہٹ تھی ہم لوگ
 نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ اُدھر چلے راہ میں (امام حسین
 علیہ السلام) کھیل رہے تھے بس نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم لپک کر سبکے
 آگے بڑھ گئے اور اپنے دونوں (مبارک) ہاتھ پھیلا دیے وہ (امام حسین
 یا خود آپ) کبھی اُدھر جاتے کبھی اُدھر جاتے انکو ہنساتے تھے اسی میں

انکو پکڑی لیا پھر اپنا ایک ہاتھ انکی ٹھوڑی کے نیچے رکھا اور دوسرا ہاتھ سر میں لگایا پھر انکو گلے سے لپٹا لیا اور چوما پھر فرمایا "حسین میرا ہے میں حسین کا ہوں جسے حسن اور حسین سے محبت ہوگی اس سے خدا کو محبت ہوگی یہ دونوں بھی سچلے اسباط کے دو سبط ہیں" *
 ۱۷۱ چھوٹے لڑکے کو جو منا

۷
 سبط کے معنی فرزند
 کا فرزند اسباط
 جمع اور جمع
 کے معنی فرزند
 سبط

(۳۶۴) مخرب بن بکیر نے کہا کہ "بکیر نے عبد اللہ بن جعفر رضی اللہ عنہما کو عمر بن ابی سلمہ رضی اللہ عنہما کی بیٹی زینب کو چوستے دیکھا اسوقت وہ دو برس کی یا قریب اسکے تھی" *
 (۳۶۵) حسن رضی اللہ عنہ نے کہا "ہو سکے تو اپنی بی بی یا کسی چھو کری کے ہوا گھر کی کسی عورت کے بال پر نظر مت کر" *
 ۱۷۲ لڑکے کے سر پر ہاتھ پھیرنا

(۳۶۸) حضرت عبد اللہ بن سلام رضی اللہ عنہ کے بیٹے یوسف نے کہا "رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے میرا نام یوسف رکھا اور مجھے اپنی گود میں بٹھایا اور میرے سر پر ہاتھ پھیرا" *
 (۳۶۹) عائشہ رضی اللہ عنہا نے کہا "میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے یہاں گڑیاں کھیلا کرتی اور بھی کئی لڑکیاں میرے ساتھ کھیلتی تھیں تو جب حضرت ایدر آتے وہ سب (ادھر ادھر) چل دیتیں تو آپ ان سب کو میرے پاس بھیجتے اور وہ سب میرے ساتھ کھیلتی تھیں" *
 ۱۷۳ چھوٹے لڑکے کو "اے میرا بچا" کہنا

(۳۷۰) ابو عجلان بخاری رضی اللہ عنہ نے کہا "میں ابن زبیر رضی اللہ عنہ کے لشکر میں تھا کہ میرا ایک چچا زاد بھائی مر گیا اور اپنے ایک اونٹ کو خدا کی راہ میں خیرات کر دینے کی وصیت کر گیا میں نے اسکے بیٹے سے کہا کہ "میں ابن زبیر رضی اللہ عنہ کے لشکر میں ہوں (مجھے ضرورت ہے) اونٹ تو مجھی کو دیدے" اس نے کہا "ابن عمر رضی اللہ عنہما کے پاس چلو ان سے پوچھ لیں" پھر ہم لوگ ابن عمر رضی اللہ عنہما کے پاس آئے اس نے میرے

بھیجے نے ان سے پوچھا کہ میرا باپ مر گیا اور اپنے اونٹ کو خدا کی راہ میں خیرات کرنے کی وصیت کر گیا ہے اور یہ (ابو عجلان) میرے چچے پرستہ دار ہیں اور ابن زبیر رضی اللہ عنہ کے لشکر کے سپاہی ہیں انکو میں وہ اونٹ دیدوں؟ ابن عمر رضی اللہ عنہ نے کہا "میرا بچا! سب اچھے کام خدا ہی کی راہ ہے اگر تمہارے باپ نے اپنا اونٹ خدا کی راہ میں خیرات کرنے کی وصیت کی ہے تو جب تم مسلمانوں کو مشرکوں سے لڑتے ہوئے دیکھو تو ان مسلمانوں کو اونٹ دیدینا اور یہ شخص اور اس کے ساتھی سب تو چھوڑو کی راہ میں ہیں یہ دیکھتے ہیں کسا سکہ چل نکلتا ہے" (۳۷۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "جو شخص لوگوں پر مہربانی نہیں کرے گا خدا بھی اُس پر مہربان نہوگا"۔

(۳۷۲) حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے کہا "جس شخص میں رحم نہیں اُس پر بھی رحم نہیں جو بندوں کی خطا نہیں بخشا اُسکی بھی بخشائش نہیں جس شخص میں (خطا سے) درگزر نہیں اُس (کی خطا سے) بھی درگزر نہیں اور جو خود نہ بچے اُسکا بچا نہیں"۔

(۳۷۳) حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے کہا "جس شخص میں رحم نہیں اُس پر بھی رحم نہیں جو بخشا نہیں اُسکی بھی بخشائش نہیں جو خدا کی طرف رجوع نہیں کرتا خدا بھی اُسکی طرف رجوع نہیں ہوتا اور جو خود نہ بچے اُسکا بچا نہیں"۔

(۳۷۴) قرآن نے کہا "ایک شخص نے عرض کی "یا رسول اللہ! میں بکری جو ذبح کرتا ہوں اُس پر بھی مجھے رحم آتا ہے یا یون عرض کی کہ مجھے بکری ذبح کرتے ہوئے رحم (انسوس) آتا ہے" آپ نے فرمایا "بکری پر تجھے رحم آتا ہے تو اللہ تعالیٰ بھی تجھ پر دونا رحم فرمائے گا"۔

(۳۷۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "مہربانی اُسکے دل سے نکال لی جاتی ہے جو باہشت ہوتا ہے"۔

(۳۷۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "جو شخص لوگوں پر رحم نہیں

اور جو خودی نہیں چاہتا وہ پورا ہی نہیں جاتا جو خود رجوع نہ کرے اُسکی طرف بھی رجوع نہیں ہے۔

کرتا اللہ بھی اسپر رحم نہیں دیتا۔ ﴿۱۷۵﴾
 بال بچوں پر مہربانی

(۱۷۵) انس رضی اللہ عنہ نے کہا: "نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اپنے بال بچوں پر اور لوگوں کی نسبت بہت زیادہ مہربان تھے اور آپ کے ایک شیر خوار صاحبزادے (شہر) مدینہ کے کنارے (دو دوہ پلائی کے یہاں رہتے) تھے دو دوہ پلائی کے شوہر لوہار تھے ہم لوگ انکے یہاں جاتے انکا مکان اونٹوں کے دھوئین سے بھرا ہوتا آپ صاحبزادے صاحب کو چومتے اور سونگھتے۔" ﴿۱۷۵﴾

(۱۷۶) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے کہا: "نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں ایک شخص حاضر ہوا اور اُسکے ساتھ ایک لڑکا تھا وہ اُس لڑکے کو اپنے بدن سے لپٹانے لگا اسپر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے پوچھا تو اس لڑکے کو پیار کرتا ہے؟ عرض کی: "ہاں حضرت بہت پیار کرتا ہوں۔" فرمایا: "اچھا" تو جس قدر تو اسپر مہربان ہے اُس سے کہیں زیادہ اللہ تجھ پر مہربان ہے وہ سب مہربانی کرنے والوں سے زیادہ مہربانی کرنے والا ہے۔" ﴿۱۷۶﴾
 جو پالیوں پر رحم کرنا

۸۳

(۱۷۷) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "ایک شخص کہیں چلا جاتا تھا اُسکو پیاس کی شدت ہوئی ایک کنواں مل گیا اُس نے اُس میں اتر کر پانی پیا پھر نکلا تو کیا دیکھتا ہے کہ ایک کتتا نبان نکالی ہوئی مارے پیاس کے نمناک زمین چاٹ رہا ہے اُس شخص نے کہا: "اس کتے کی بھی پیاس سے وہی نوبت ہے جو میری تھی بس پھر کنوئین میں اتر گیا اور اپنے موزوں میں پانی بھر کر اُنکو منہ سے پکڑ کر نکلا اور کتے کو (خوب) پلایا بس اللہ نے اُسکی قدر فرمائی اور اُس کو بخش دیا صحابہ نے عرض کی: "یا رسول اللہ! کیا ہم لوگوں کو جو پالیوں کے ساتھ سلوک کرنے میں بھی ثواب ہے؟" فرمایا: "سارے جاندار (کو سیکھ دینی) میں ثواب ہے۔" ﴿۱۷۷﴾
 رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "ایک عورت پہا ایک

لفظ صبیحہ یعنی
الارض (یعنی صبح یعنی
پہلے صبح کو اور پھر بعد
پھر صبح کو

آبی کے سبب سے عذاب ہوا اُس نے آبی کو (باندھ) رکھا تھا بس وہ مارے بھوک کے مر ہی گئی
اسی قصور پر وہ عورت دوزخ میں ڈالی گئی خدا جانے اُس عورت سے یہ بات کہی گئی کہ
تو نے باندھا تھا تو نہ اُس کو کھلایا نہ پلایا نہ اُس کو چھوڑی دیا کہ وہ گرا پڑا زمین کا کھالیتی ہے
(۳۸۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "لوگو! رحم کرو تمہارے بھی رحم ہوگا اور بخشید یا کرو خدا
تمہیں بھی بخشے گا ان لوگوں کی خرابی ہے جنکو بات کا کچھ اثر نہیں ہوتا (انکی مثال قیف
کی ہے کہ جو چیز اُس میں دیکھتی ہے ٹھہرتی ہی نہیں گویا) وہ لوگ باتوں کی قیف ہیں اُسے
رہنے والوں کی خرابی ہے جو جان بوجھ کر اپنی غلطی پر اُسے رہتے ہیں
(۳۸۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "جو شخص رحم کرے اگرچہ کسی ذبح کیے
ہوے جانور ہی پر کیوں نہ ہو خدا بھی اُس پر قیامت کے روز رحم فرمائے گا"۔
۱۷۷

(۳۸۳) عبد اللہ رضی اللہ عنہ نے کہا "نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ایک منزل میں اترے وہاں
ایک شخص نے حمیرہ کے بیضے لے لیے وہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے سر مبارک
پر آ کر گلا لگی آپ نے فرمایا "کسے تم میں سے اسکے بیضوں کو لے کر اسے پریشان کیا
ہے" ایک شخص نے عرض کی "ہاں یا رسول اللہ! اسکے بیضے میں نے لیے ہیں" آپ
نے فرمایا "اس پر رحم کر کے بیضوں کو پھرو"۔
پتھر سے میں چڑھایا (رکھنا)
۱۷۸

(۳۸۴) ہشام بن عروہ رضی اللہ عنہ نے کہا "میں ابن زبیر اور نبی صلی اللہ علیہ وآلہ
وسلم کے اصحاب چڑھایا پتھروں میں رکھا کرتے"۔
(۳۸۵) انس رضی اللہ عنہ نے کہا "نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اندر تشریف لائے ابو طلحہ رضی اللہ
عنہ نے ابو عمیرہ رضی اللہ عنہ کو دیکھا اور اس کے پہلے اُس کے پاس ایک لال تھا وہ اُس سے کھیلتا تھا تو
آپ نے فرمایا "بلو عمیرہ! نغیر کیا ہوا؟" یا فرمایا "نغیر کہاں ہے؟"
لوگوں میں یہاں کی وہاں اچھی بات بولنا
۱۷۹

(۳۸۶) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "جو شخص لوگوں میں میل کر اسنے

کے لیے اچھی بات بولے یا اچھی ہی بات ادھر کی ادھر کرے خواہ واقعی ہو یا غیر واقعی وہ شخص جھوٹا نہیں ہے ام کلثوم (رضی اللہ عنہا) کہتی ہیں کہ "میں نے حضرت کو تین موقع کے سوا اور کہیں جھوٹ بولنے کی اجازت دیتے ہوئے نہیں سنا لوگوں کے میل کے لیے اور شوہر بی بی سے کچھ بولے یا بی بی شوہر سے" جھوٹ بولنا ٹھیک بات نہیں ہے

۷۵
التزام کا سون کو
فرمان جھوٹ بولنا
کو لوگ جھپٹا یا
تو میں اور
چھپانے میں
لائے اور جانا سکا

(۳۸۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: سچ بولنے کا التزام رکھو سچ بولنے سے انسان نلو کار ہو جاتا ہے اور نلو کار سے بہشت میں پہنچ جاتا ہے اور سچ بولتے بولتے آدمی خدا کے یہاں لکھ دیا جاتا ہے جھوٹ سے بچتے رہنا جھوٹ بولنے سے آدمی بدکار ہو جاتا ہے اور بدکاری دوزخ میں پہنچا دیتی ہے اور جھوٹ بولتے بولتے آدمی خدا کے یہاں کڑا لکھ دیا جاتا ہے

(۳۸۸) عبد اللہ رضی اللہ عنہ نے کہا "جھوٹ بولنا پکے ارادے سے ہو یا کھیل ٹھیک بات نہیں ہے بلکہ اتنا بھی نہیں چاہیے کہ لڑکے سے (بھلانے کے واسطے) کچھ وعدہ کرے پھر اُس وعدے کو پورا نہ کرے" لوگوں کی ایذا سننے والا

(۳۸۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: جو مسلمان لوگوں میں بل جل کے رہے اور لوگوں کی ایذا اٹھاوے اُس سے بہتر ہے جو نہ بل جل کے رہے نہ ایذا اٹھاوے گالی سہ جانا

(۳۹۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "گالی سُکر سہ جانا خدا سے زیادہ کسی میں نہیں ہے لوگ خدا کا پنا ٹھہرتے ہیں اور وہ انکو عافیت سے لکھتا ہے اور انکو زور پہنچاتا ہے" (۳۹۱) عبد اللہ رضی اللہ عنہ نے کہا "نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جیسے (کبھی کبھی) کچھ تقسیم کیا کرتے اسی طرح آپ نے کوئی چیز تقسیم فرمائی تو ایک انصاری نے کہا "خدا کی قسم اس تقسیم میں لہیت تو مقصود نہیں ہے میں نے (اپنے دل میں) کہا میں اس کی خبر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو ضرور کرونگا پس میں آپ کے پاس حاضر ہوا

آپ اپنے یاروں میں تشریف رکھتے تھے مین نے آہستہ سے آپ کو خبر
 کر دی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو وہ بات بہت سخت معلوم ہوئی اور حیرت
 مبارک متغیر ہو گیا اور آپ کو غصہ آگیا تب مجھ کو مناسب معلوم ہوا کہ میں آپ کو
 خبر نہ کرنا چھڑا آپ نے فرمایا "موسیٰ کو اس سے بھی بڑھ کر ایذا دی گئی پھر
 انھوں نے صبر ہی کیا" * آپس کی اصلاح
 ۱۸۳

(۳۹۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "میں تمہیں نماز روزہ خیرات
 سے بھی زیادہ درجے کی چیز بتا دوں کہ صحابہ نے عرض کی "یا رسول اللہ
 نہ فرمایا آپس کی اصلاح اور آپس کا بگاڑ تو موٹھی ڈالتا ہے" *
 (۳۹۳) ابن عباس رضی اللہ عنہما نے کہا "خدا سے ڈرتے رہو اور آپس کی اصلاح رکھو
 کہ خدا سے ڈرتے رہنا اور آپس کی اصلاح رکھنا مسلمانوں پر خدا ہی کی فرمائش ہے"
 سچا بچھنے والے سے جھوٹ بولنا
 ۱۸۴

(۳۹۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "بڑی ہی خیانت ہے کہ
 کوئی مسلمان بھائی تمہیں تو سچا سمجھتا ہو اور تم اس سے کوئی جھوٹ بات کہو
 (اور وہ یقین کر لے)" *
 مسلمان بھائی سے وعدہ ہی نہ کرے کہ خلاف وعدگی ہو
 ۱۸۵

(۳۹۵) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا (مسلمان) بھائی سے
 مت جھگڑا کرو مت ٹھٹھا کرو نہ اس سے کوئی وعدہ کرو کہ خلاف وعدگی ہو جائے *
 ذات پر طعنہ
 ۱۸۶

(۳۹۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "سیری امت و وہاں چھوٹی
 نوحہ کرنا اور ذات کا طعنہ دینا" *
 اپنی قوم کی محبت
 ۱۸۷

(۳۹۷) قیلہ بنہ کے باپ نے کہا "میں نے پوچھا یا رسول اللہ! اپنی دظالم قوم
 سے کیا فرمائیے؟" *
 ۱۸۸

کے ظلم کرنے میں مدد کرنا بھی عصبیت ہے؟ فرمایا: "ہاں یہ بھی عصبیت ہے" ✦
 ۱۸۸

(۳۵۸) حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کے ماورزا دبھائی کے بیٹے عون رضی اللہ عنہ نے کہا: "حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے کچھ خرید و فروخت کی تھی یا کسی کو کچھ دیدیا تھا انکو جب یہ پوئی کہ اُس معاملے میں ابن زبیر بولے ہیں کہ "قسم خدا کی عائشہ اس فضول خرچ سے باز آویں نہیں تو ہم اُن کا مدد خرچ بند کر دینگے" حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے پوچھا کہ (واقعی) ابن زبیر نے ایسا کہا ہے؟ لوگوں نے عرض کی "ہاں کہا ہے" انھوں نے کہا کہ "اچھا تو خدا کی قسم میں بھی ابن زبیر سے کبھی بات نہ کروں گی" حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے جب چھوڑ ہی دیا اور اسکو عرصہ بھی گزر گیا تب تو ابن زبیر نے اصحاب مہاجرین سے سفارش کرائی حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے جواب دیا قسم خدا کی میں اُسکے بارے میں کسی کی سفارش کبھی منظور نہ کروں گی اور جو نذر میں کر چکی ہوں اُسکو کبھی نہ توڑوں گی پھر جب اور بدت گزری ابن زبیر رضی اللہ عنہ نے قبیلہ بنی نہر کے دو صحابی مسور بن مخزوم رضی اللہ عنہ اور عبد الرحمن بن الاسود رضی اللہ عنہ سے کہا "میں آپ دونوں صاحبوں کو قسم دیتا ہوں کہ حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کے یہاں چلیے مجھے چھوڑ دینے کی نذر کرنا انکو کھلا نہیں ہے اسپر مسور رضی اللہ عنہ اور عبد الرحمن رضی اللہ عنہ صاحب عبد اللہ بن زبیر رضی اللہ عنہ کو اپنی چادروں کے اندر لیکر چلے یہاں تک کہ حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کے یہاں پہنچ کر آواز دی اور بولے "السّلام علی النبی ورحمۃ اللہ وبرکاتہ ہم لوگ آویں" حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے فرمایا "آتے جاؤ" دونوں صاحبوں نے پوچھا ام المؤمنین! ہم سب کسے سب آجائیں؟ فرمایا "ہاں سب آؤ" اور حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کو یہ تو معلوم نہ تھا کہ اُنکے ساتھ عبد اللہ بن زبیر رضی اللہ عنہ بھی ہیں جس جب وہ لوگ اندر گئے ابن زبیر رضی اللہ عنہ بھی پردے میں اندر تک چلے گئے اور حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کے گلے سے لپٹ گئے اور روبرو کرانکو قسم دینے لگے اور مسور رضی اللہ عنہ اور عبد الرحمن رضی اللہ عنہ بھی حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کو قسم دینے لگے کہ ضرور بولے اور

خلان میں سے
 طرفدار کی آواز

۸۷

ابن زبیر کا عذر قبول کیجیے اور دونوں بولے کہ "آپ کو تو معلوم ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے چھوڑ دینے سے منع فرمایا ہے اور مسلمان کو حلال نہیں ہے کہ (مسلمان) بھائی کو تین دن سے زیادہ چھوڑ دے، بس جب ان لوگوں نے بہت اصرار کیا تب حضرت عائشہ بھی رو رو کر نصیحت کرنے لگیں اور فرمایا "میں نے نذر کی ہے اور نذر سخت ہے" اس پر بھی وہ لوگ وہاں سے نہ ہٹے یہاں تک کہ وہ ابن زبیر سے بولیں پھر اپنی نذر کے کفار سے میں چالیس غلام آزاد کیے بی بی عائشہ رضی اللہ عنہا اس کفار سے کے بعد بھی برابر یاد کر کے اس قدر رو یا کرتی تھیں کہ آپ کی چادر آنسوؤں سے تر ہو جاتی" *
 ۱۸۹ مسلمان سے کنارہ کشی

(۳۹۹) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "بعض مت رکھا کرو حسد مت کیا کرو کٹر امت جایا کرو خدا کے بند و اسب کے سب بھائی بن جاؤ اور مسلمان کا مسلمان کو تین دن سے زیادہ چھوڑ دینا حلال نہیں ہے" *
 (۴۰۰) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "کسی (مسلمان) کو کسی (مسلمان) بھائی کا تین دن سے زیادہ چھوڑ دینا حلال نہیں ہے کہ دونوں کہیں مل جائیں تو یہ اس سے علیحدہ رہے وہ اس سے علیحدہ رہے اور جو پہلے سلام کرے وہی دونوں میں اچھا ہے" *
 (۴۰۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "بعض مت رکھا کرو حسد مت کیا کرو خدا کے بند و! آپس میں بھائی ہو رہو" *
 (۴۰۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "جن دو شخصوں نے اللہ کے واسطے یا فرمایا "اسلام کے سبب سے" آپس میں دوستی کی ان کے آپس میں کسی گناہ ہی سے تفرقہ پڑے گا جو دونوں میں کسی سے ہو پڑے" *
 (۴۰۳) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا "مسلمان کو مسلمان سے تین دن سے زیادہ قطع کرنا حلال نہیں ہے جب تک وہ دونوں اپنی اپنی قطعیت پر اڑے ہونے میں ^{چھوڑ دینا} دونوں حق سے بچل گئے ہیں جو پہلے جھکیگا اسکا

اللہ تعالیٰ نے اس کو
 اس کا جواب
 سلطان دینا ہے
 اللہ تعالیٰ نے اس کو
 اللہ تعالیٰ نے اس کو
 اللہ تعالیٰ نے اس کو
 اللہ تعالیٰ نے اس کو
 اللہ تعالیٰ نے اس کو

اللہ تعالیٰ نے اس کو
 اللہ تعالیٰ نے اس کو

اللہ تعالیٰ نے اس کو
 اللہ تعالیٰ نے اس کو

اللہ تعالیٰ نے اس کو
 اللہ تعالیٰ نے اس کو

اللہ تعالیٰ نے اس کو
 اللہ تعالیٰ نے اس کو
 اللہ تعالیٰ نے اس کو
 اللہ تعالیٰ نے اس کو
 اللہ تعالیٰ نے اس کو
 اللہ تعالیٰ نے اس کو

حدیث میں لانا چاہیے
 کچھ غلطی ہو سکتی ہے
 "

۸۹

رشک مت کر اور منہ داپنے مسلمان بھائی سے بہت پیر کیا اور منہ داپنے مسلمان
 (۴۱۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا پیر کے دن اور عید کے
 بہشت کے دروازے کھولے جاتے ہیں تو جتنے بندے رشک نہیں کرتے وہ
 بخش دیے جاتے ہیں مگر جن دو مسلمانوں میں جھگڑا ہوتا ہے ان کے بارے میں حکم
 ہے کہ یہ لوگ جب تک صلح نہ کریں تب تک ان دونوں کو سزا دے دو۔
 (۴۱۳) ابو ذر رضی اللہ عنہ نے کہا: "یاد رکھو" میں تین خیرات سے اور روز رکھنے سے بھی زیادہ
 عمدہ بات بتاتا ہوں آپس میں میل کرنا اور بغض تو موند ہی ڈالتا ہے۔
 (۴۱۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جس شخص میں تین باتیں ہوں تو ان
 سے آرا سکے اور (برائیوں سے) بچا جائے گا۔ ایک تو جو شخص شرک پر نہ فرے
 جاوے اور نہ کسی کا ساتھ دے جاوے اور نہ کسی سے اپنے مسلمان بھائی سے کینہ رکھتا
 ۱۹۳۳ سلام کرنا قطعیت کے الزام سے برقی ہونے کو کافی ہے۔

۹۰

(۴۱۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "مسلمان آدمی کو تین دن سے زیادہ
 چھوڑ دینا حلال نہیں ہے جب تین دن گزر جائیں مسلمان بھائی سے ملاقات کر
 اسکو سلام کر لینا چاہیے اگر اسے بھی سلام کا جواب دے دیا تو دونوں ثواب میں شریک
 ہو گئے اور اگر جواب نہیں دیا تو سلام کرنے والے سے چھوڑنے کا الزام اٹھ گیا۔
 ۱۹۳۴ کم بین لوگوں کا الگ الگ رہنا۔

(۴۱۶) عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما نے کہا: "عمر رضی اللہ عنہ اپنے بیٹوں کو فرمایا کہ
 صبح کو اٹھتے جاؤ تو سب کے سب علیحدہ علیحدہ ہو جاؤ ایک ہی مکان میں
 مت رہو مجھ کو خوف ہوتا ہے کہ (مبارک) تم لوگوں میں قطعیت ہو جائے
 آپس میں بگاڑ ہو پڑے۔"
 ۱۹۵۵ بے کسی کے صلاح پوچھے صلاح دیدینا۔

(۴۱۷) وہب بن کیسان رضی اللہ عنہ نے کہا: "عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما نے ایک چرواہا کو
 بکریاں ایک شادہ سید نہیں دیکھیں اور وہیں پر ایک جگہ آج اچھی ہو چو۔

۱۹۷ (۱۹۷) میں ہے کہ یوں کو اور ہر پٹا لے میں نے رسول اللہ
 کے لئے سنا ہے ہر عروا سے سے اسکی عیت بار میں سوال ہوگا
 بڑی مثال سے سخن کرنا

۱۹۸ (۱۹۸) میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: تم لوگوں (مسلمانوں) کے لیے مری
 مال میں سے کسی بھی چیز کا کھانا لینے والا ایسا ہے جیسے کتا کتے کر کے کھا لیتا ہے
 دھوئے کے اور قریب کا ذکر

۱۹۹ (۱۹۹) میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: ایمان دار آدمی دھوکے
 میں آجانا ہے صاحب کرم ہوتا ہے اور بد معاش آدمی چاٹکلا کنجوس ہوتا ہے۔
 گالی گلوچ

۲۰۰ (۲۰۰) میں ہے کہ ابن عباس رضی اللہ عنہما نے کہا: رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے زمانے
 میں دو شخص گالی گلوچ کرنے لگے ایک تو گالی دے رہا تھا اور دوسرا چپ
 تھا اور نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بھی بیٹھے ہوئے تھے جب دوسرے نے بھی
 جواب دیا تب تو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اٹھ گئے لوگوں نے عرض کی: حضور
 اٹھ آئے ہیں؟ فرمایا: ہاں۔ فرشتے اٹھ گئے تو میں بھی اُنکے ساتھ ہی اٹھا یہ دوسرا
 شخص جب تک چپکا تھا فرشتے گالی کا جواب دے رہے تھے جب اس نے
 جواب دیا فرشتے اٹھ گئے۔

۲۰۱ (۲۰۱) میں ہے کہ ام دردا نے کہا: کسی نے آکر ان سے کہا کہ: ایک شخص نے (خلیفہ)
 عبدالملک کے پاس تلویر بھلا کہا ہے، ام دردا نے بولیں: جو عیب مجھ میں نہیں
 ہے وہ عیب اگر مجھ کو لگایا جاتا ہے تو (خیر) بہت سی بھلائیاں بھی جو مجھ میں
 ہیں میری نسبت بیان کی جا چکی ہیں۔
 ۲۰۲ (۲۰۲) میں ہے کہ عبداللہ بن عمر نے کہا: جب کوئی اپنے ساتھ والے سے کہتا ہے: تو
 سنسن ہے۔ تو میں دونوں میں ایک اسلام سے نکل جاتا ہے یہ ساتھ
 لے کے کہتا ہے: تم سے قیس تراوی کہتا ہے کہ: مجھے سہرا بوجیفہ روزی بیان

۹۱

(۴۲۳) ابن عباس رضی اللہ عنہما نے کہا: "آدمی کی تین سونیاں ہیں: پہلی کہ اس نے اپنی
 ہر دن ہر جوڑ پر صدقہ لازم ہے جو اچھی بولی سے صدقہ سے سزا ان بھائی کی دیکھنا
 صدقہ ہے ایک گھونٹ پانی بلانا صدقہ سے راستے سے ٹکیٹ والی چیزیں سزا دینا
 ۲۰۰ گالی گلوچ کا گناہ

(۴۲۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "و آدمی گالی گلوچ میں جو
 کچھ کہیں جب تک مظلوم کی گالی بڑھ نہ جائے سب گناہ شروع کرنے والے ہیں۔"
 (۴۲۵) وہی حدیث نمبر (۴۲۴)

(۴۲۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جانتے ہو عرض کیا ہے
 لوگوں نے عرض کی: "خدا جانے خدا کا رسول جانے" فرمایا: "لوگوں میں فساد
 ڈالنے کی نیت سے یہاں کی بات وہاں پہنچانا"

(۴۲۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "خدا نے فرمایا ہے کہ ایک
 دوست سے کے ساتھ جھکے رہو اور کوئی کسی سے ظلم نہ کرے۔"
 ۲۰۱ گالی گلوچ کرنے والے شیطان ہیں

(۴۲۸) عیاض بن حمار نے کہا: "میں نے عرض کی: "یا رسول اللہ! فلا آدمی
 مجھے گالی دیتا ہے" فرمایا: "جو دو شخص گالی گلوچ کرتے ہیں دونوں سزا
 ہیں یہودہ جھوٹ بک بک کرتے ہیں۔"

(۴۲۹) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "خدا نے
 سے" ایک دوست سے سے جھکے رہو اور کوئی کسی سے زیادتی نہ کرے
 کوئی کسی پریشانی نہ کرے میں نے عرض کی: "یا رسول اللہ! بھلا اگر کوئی ظلم
 مجھ سے کم درجے والا اپنے لوگوں میں بھکے مجھے گالی دے پھر میں اس کا جواب
 دوں تو اس میں بھی مجھ پر گناہ ہوتا ہے؟" آپ نے فرمایا: "جو دو شخص گالی گلوچ

یعنی مسلمانوں
کے لئے وال
جامعہ میں تھا

مسلمانوں کو گالی دینا فسق ہے۔
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "مسلمان کو گالی دینا فسق ہے۔"
اس کے بعد اس نے فرمایا: "جو شخص کسی کو گالی دے گا وہ جہنم میں داخل ہوگا۔"
اس کے بعد اس نے فرمایا: "جو شخص کسی کو گالی دے گا وہ جہنم میں داخل ہوگا۔"

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "مسلمان کو گالی دینا فسق ہے۔"
اس کے بعد اس نے فرمایا: "جو شخص کسی کو گالی دے گا وہ جہنم میں داخل ہوگا۔"
اس کے بعد اس نے فرمایا: "جو شخص کسی کو گالی دے گا وہ جہنم میں داخل ہوگا۔"

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "کوئی کسی کو کچھ کہ نہ بیٹھے اگر کسی کو
گالی دے گا اور وہ ایسا نہیں ہے تو یہ بات کہنے والے ہی پر پڑ جائیگی۔"
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جو شخص جان بوجھ کر اپنا باپ چھوڑ کر
گالی دے گا اور وہ ایسا نہیں ہے تو یہ بات کہنے والے ہی پر پڑ جائیگی۔"
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جو شخص کسی کو گالی دے گا وہ جہنم میں داخل ہوگا۔"
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جو شخص کسی کو گالی دے گا وہ جہنم میں داخل ہوگا۔"

۹۳

(۳۳) عبد اللہ نے کہا "ہر مسلمان کو دو میدان خدا کی طرف سے ایک پروردگار ہوا ہے جب ایک نے دوسرے کو فحش کلمہ کہہ یا بس خدا کے پروردگار کو بھارت والا اور جب ایک نے دوسرے کو کافر کہا بس ایک ضرور کافر ہوا" *
 ۲۰۳
 خاص لوگوں کو خطاب کرنا

(۳۴) عائشہ رضی اللہ عنہا نے کہا "نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے کوئی کام خود کیا اور لوگوں کو بھی اسکی اجازت دی بعض لوگوں کو اُس میں کچھ تامل ہوا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو اسکی خبر ہو چکی بس آپ نے خطبہ فرمایا اور خدا کی تعریف کر کے فرمایا "لوگوں کا کیا حال ہے کہ جو کام میں کرتا ہوں اُسکے کرنے میں اُن کو تامل ہوتا ہے" قسم خدا کی میں خدا کو اُنکی بہ نسبت زیادہ ترجیحتا ہوں اور اُن کی بہ نسبت میں خدا سے بہت زیادہ دُرُتا ہوں" *
 ۲۰۴

(۳۵) انس رضی اللہ عنہ نے کہا "نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ناگوار بات کسی کے منہ پر بہت کم فرماتے تو ایک روز کوئی شخص آپ کے یہاں حاضر ہوا اُس (کے بدن یا کپڑے) پر زرد زرد دھبہ تھا جب وہ اُٹھ گیا آپ نے اُس کے ہمراہیوں سے فرما دیا "اگر وہ شخص مٹا دیتا یا فرمایا "زردی نکال ڈالتا تو بہتر تھا" *
 تاویل کر کے کیسکو "اوستافوت" کہنا
 ۲۰۴

(۳۶) علی رضی اللہ عنہ نے کہا "نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے مجھے اور زبیر بن العوام کو گھوڑے پر بٹھایا اور فرمایا "تم لوگ برابر فلائے باغ تک چلے جاؤ وہاں ایک عورت مشرکون کے نام حاطب کا ایک خط لیے ہوئے بیگلی اُسکو میرے پاس پکڑ لاؤ بس جہاں پر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے نشان دیا تھا وہیں پر وہ عورت اپنے اونٹ پر ہم لوگوں کو ملی ہم لوگوں نے کہا "خط کہاں ہے؟" وہ کہنے لگی "میرے پاس کوئی خط نہیں ہے" تب نے اُسکی اور اُسکے اونٹ کی تلاشی لی میرا ساتھ لولا "خط تو کہیں نظر نہیں آتا" میں نے کہا "نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے غلط نہیں فرمایا ہے اسی کی قسم جسکے ہاتھ میں میرا

۹۲

کمال نہیں تو میں بھی بھلا بھلا ہی لوں گا اور وہ کھل کا تمہیں
 سے ہے اور میں نے اپنے جوتے کی طرف ہاتھ بڑھا کر خط نکالا پھر ہم لوگ
 رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہوئے تب عمر نے کہنے لگے اس صاحب
 نے حد کی اور رسول کی اور کب مسلمانوں کی خیانت کی چھوڑیے میں اس کی گردن
 ہی مارنا ہوں حضرت نے فرمایا: "صاحب! ایسا کام کیوں کیا؟" انہوں نے
 عرض کی: "ایسا نہیں ہے کہ مجھے خدا کا یقین نہ ہو بلکہ میں نے چاہا کہ مشرکوں پر میرا
 کچھ احسان رہے" آپ نے فرمایا: "اے عمر! سچ کہتا ہے کیا یہ شخص جہنم
 بد میں حاضر تھا اللہ نے بدر والوں پر توجہ ہو کر فرما دیا ہے" تم لوگ جو چاہو
 کرو جنت تمہارے لیے واجب ہو چکی" بس عمر نے اب دیدہ ہو کر کہنے لگے خدا
 اور اس کا رسول بڑا جاننے والا ہے"

مسلمان کو "اؤ کافر" کہہ کر بھگانا

۹۵

(۲۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جس شخص نے مسلمان
 بھائی کو کافر کہنا تو دونوں میں ایک کافر ہو ہی گیا" +
 (۲۵) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جب کسی نے دوسرے
 شخص کو کافر کہنا تو دونوں میں ایک کافر ہو گیا جسکو کہا ہے اگر وہ واقع میں کافر
 ہے تب تو سچ ہی کہا اور اگر کافر نہیں ہے تو کہنے والے صاحب کا ٹھکانا کفر ہوا" +
 ناکامیابی پر دشمن کا خوش ہونا

(۲۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم تقدیر کی بڑائی سے اور دشمنوں کے
 دشمن ہونے سے بہانہ مانگتے تھے +
 فضول خرچی

(۲۷) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "تم لوگوں میں تین بات
 خدا کو پسند سے اور تین بات ناپسند پسند تو یہ ہے کہ خدا ہی کی عبادت
 و شکر نہ کرو اور شکر بل کے خدا کی دوری تمہام لو اور خدا جسکو تمہارا سردار

بناوے اسکی خواہی کر کے نہایت
کرنا ناپسند ہے +

(۳۴۴) ابن عباس سے روایت ہے کہ
بدلتا ہوتا تھا اور اللہ تعالیٰ نے اس کی
کی تفسیر بیان کیا یعنی شرح کر کے اس کی تفسیر
۲۰۸

(۳۴۵) ابو عبید بن نے کہا میں نے
انہوں نے بتایا کہ جو لوگ بجا خروج کر کے
(۳۴۶) ابن عباس سے روایت ہے کہ میں نے
۲۰۹

(۳۴۷) اسلم نے کہا میں نے
اصلاح کیا کرو اور اپنے اپنے گھروں سے نکلتے
کہ وہ تھیں دھکے مارنے پاویں اس لیے کہ ان کے
ظاہر ہونگے اور قسم خدا کی یہ بات ہو سکتی ہے
عداوت ہونی پھر کبھی صلح ہونی ہی نہیں
۲۱۰

(۳۴۸) جناب نے کہا: آدمی کو مکان سے
اپنے مزدوروں کے ساتھ لے کر گیا
۲۱۱

(۳۴۹) نافع بن عاصم نے کہا میں نے
نے اس سے پوچھا تھا کہ سے مزدور کا یہ
عبداللہ نے کہا: اگر تو خاندان نفع سے
تو بھی کہا تا نافع کہتے ہیں پھر عبداللہ نے
جب مزدوروں کے ساتھ مل کے اپنے گھر میں یا کہا کہ ایسا ان لوگوں سے

یعنی اسکی خواہی کر کے نہایت
کرنا ناپسند ہے +

۹۶

وہ تھیں دھکے مارنے
ظاہر ہونگے اور قسم خدا کی
عداوت ہونی پھر کبھی صلح ہونی ہی نہیں
۲۱۰

تو وہ خدا کے مزدور و رومن میں ہو جاتا ہے۔
۲۱۲ طول فضول مکان

(۴۵۰) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "جب تک لوگ طول فضول مکان نہ بنائے لگین گے تب تک قیامت نہیں ہوگی۔"

(۴۵۱) حسن رضی نے کہا: "میں عثمان رضی کے عہد خلافت میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ازواج مطہرات کے مکانوں میں جایا کرتا تو ان کے مکانات کی چھتیں اس قدر نیچی تھیں کہ میں انکو ہاتھ سے چھو لیتا تھا۔"

(۴۵۲) داؤد بن قیس رضی نے کہا: "میں نے ازواج مطہرات کے حجرے دیکھے کھجور کی شاخوں سے بنے ہوئے باہر سے کتل کے پردوں سے منڈھے ہوئے تھے میں سمجھتا ہوں حجرے کے دروازے سے پھاٹک تک چھہ یا سات ہاتھ جوڑی جگہ ہوگی اور اندر کا مکان اندازاً دس ہاتھ ہوگا اور اونچائی مکان کی یہی سات آٹھ ہاتھ خیال آتی ہے حضرت عائشہ رضی کے دروازے کے پاس میں کھڑا ہو گیا تو دیکھا کہ پچھم رخ کا دروازہ ہے۔"

(۴۵۳) عبداللہ رومی رضی نے کہا: "میں اُمّ طلق کے بیان گیا تو ان سے کہا: "تھارے اس مکان کی چھت کتنی نیچی ہے" اسپرو کہنے لگیں: "بیٹا! امیر المؤمنین عمر بن خطاب رضی نے اپنے عالموں کو لکھ بھیجا کہ اپنے مکانات (بہت) لانبے (جوڑے) ست بناؤ ایسا زمانہ (جس میں لانبے جوڑے مکانات بننے لگیں) نہایت خراب زمانہ ہوگا۔"

مکان بنانا

(۴۵۴) حبیب اور سوارہ رضی خالہ رضی کے دونوں بیٹوں نے کہا: "ہم دونوں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حضور میں حاضر ہوئے آپ اس وقت اپنے باغ کی یا مکان کی مرمت خود اپنے سے فرما رہے تھے یہ دونوں بھی آپ کے ساتھ کام میں لگ گئے۔"

(۴۵۵) قیس بن ابی حازم رضی نے کہا: "ہم لوگ جناب رضی کی عبادت کو گئے دیکھا تو انھوں نے سات جگہ بدن داغ کرایا تھا کہنے لگے: "میرے اگلے ساتھی لوگ ایسے

چلتے ہوئے کہ دنیا انکو کچھ نقصان نہ پہنچا سکی اور ہم لوگوں کو اتنا کچھ ہاتھ لگا جسکے
 رکھنے کی جگہ سٹی کے سوا کہیں نہیں ملتی اگر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے موت مانگنے سے
 منع نہ فرمایا ہوتا تو میں اپنے لیے موت منانا، پھر ہم لوگ دوسری دفعہ خباب رضی کے
 یہاں گئے اسوقت وہ اپنے ایک باغ میں کام کر رہے تھے کہنے لگے، "مسلمان کو ہر قسم
 کے خرچ کرنے کا ثواب ہوتا ہے مگر جو بی بی میں لگاتا ہے (اسکا ثواب کچھ نہیں ملتا ہے)" +
 (۴۵۶) عبداللہ بن عمر رضی نے کہا، "میں اپنا ایک جھوٹا بنا رہا تھا کہ نبی صلی اللہ علیہ و
 آلہ وسلم آگئے آپ نے فرمایا، "یہ کیا زمین نے عرض کی، "یا رسول اللہ! اپنے جھوٹے بی
 مرتت کرتا ہوں اس پر آپ نے فرمایا، "اتنی مہلت کہاں ہے" +
 ۲۱۴ کشادہ مکان

(۴۵۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، "کشادہ مکان نیکیوں کا ہمسایہ ثابت
 سواری آدمی کی خوش قسمتی کی بات ہے" +
 ۲۱۵ بالاخانہ

(۴۵۷) ثابت رضی نے کہا، "میں زلاد میں انس رضی کے ساتھ اُنکے بالاخانے پہنچتا
 کہ اذان ہوئی انس رضی سے میں بھی اُنرا انس بن چلنے میں چھوٹا چھوٹا ڈگ رکھتے تھے
 پھر کہنے لگے کہ، "میں (انس) ایک دفعہ زید بن ثابت رضی کے پاس تھا وہ بھی ابسی ہی چال
 چلنے لگے اور مجھے پوچھا تجھے معلوم ہے میں اس طرح کیوں چلا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ
 وسلم ایک دفعہ میرے ساتھ اسی طور سے چلے اور فرمایا، "تو نے سمجھا میں اس طرح
 کیوں چلا؟ میں نے عرض کی، "خدا جانے خدا کا رسول جانے" فرمایا، "جس میں ناز کے
 لیے قدم کی گنتی بڑھ جائے" +
 ۲۱۶ مکان میں نقش و نگار بنانا

(۴۵۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا، "جب لوگ مراجل کے ایسے
 مکانات بناویں گے اُسکے بعد قیامت آویگی ابراہیم راوی نے (مراجل کی
 تفسیر میں) کہا، "یعنی نقشدار کپڑے" +

(۴۷۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "اللہ تعالیٰ خود بھی نرم ہے اور نرمی ہی کو دوست رکھتا ہے اور خدا نرمی پر جتنا دیتا ہے سختی پر اتنا نہیں دیتا۔" ✦
۲۲۰

(۴۷۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "آسانی کرو اور دشواری برت ڈالو اور تسکین دو اور بھڑکاؤ مت" ✦ ✦ ✦

(۴۷۵) عبد اللہ بن عمرو نے کہا: "بنی اسرائیل میں (کیسکے یہاں) ایک مہمان اُترا اور گھر میں ایک گتیا بھی گھر والوں نے گتیا کو خطاب کر کے کہا کہ: "میرے مہمان پر بھڑک مت" بس گتیا کے بچے اُسکے پیٹ کے نیچے چلانے لگے اُن لوگوں نے اپنے پیغمبر سے اسکا ذکر کیا اسپر انھوں نے فرمایا: "اسکی مثال اُس جماعت کی مثال ہے جو تمھارے بعد آنے والی ہے اُسکے جاہل لوگ عالموں کو دبا یا کریں گے" ✦
۲۲۱ (حافظت)

۱۰۱

(۴۷۶) عائشہ نے کہا: "میں ایک سرکش اونٹ پر سوار تھی بس میں اُسکو مارنے لگی تب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "الی آخر الحدیث (۴۷۶) ✦"
(۴۷۷) جابرؓ یا جویرؓ نے کہا: "حضرت عمرؓ کے زمانہ خلافت میں کسی ضرورت کو اُنکے یہاں چلا پھر رات گئے عینے پہنچا صبح کو اُن سے ملاقات کی اور مجھے خدا نے تیز فہمی اور لقلقہ عطا فرمایا تھا تو میں دنیا کے بارے میں کلام کرنے لگا بس میں نے اُسکو اسقدر گھٹایا کہ گو یا کچھ بھی نہیں ہے اور حضرت عمرؓ کے پہلو میں ایک شخص سفید بال سفید کپڑے والے بیٹھے تھے جب میری بات تمام ہوئی تب وہ بولے تمھاری سب بات ٹھکانے کی تھی سوائے اُسکے جو تم نے دنیا کی بُرائیاں بیان کیں تمہیں خبر بھی ہے کیا کیا چیز ہے ہم لوگوں کے منزل تک پہنچنے کا سامان دنیا ہی میں ہے" یا یوں کہا ہم لوگوں کے سفرِ آخرت کا توشہ (دنیا ہی میں) ہے اور جن اعمال کی جزا آخرت میں لوگوں کو ملنے والی ہیں وہ اعمال دنیا ہی میں ہیں" راوی کہتا ہے: "بس دنیا کے بارے میں ایسا ایک شخص کلام کرنے لگا جو مجھے بھی زیادہ اُسکے حال سے واقف ہے تب

میں نے پوچھا امیر المؤمنینؑ یہ آپ کے پہلو میں کون صاحبِ مہین فرمایا؟ مسلمانوں کے سردار ابی بن کعبؓ مہین۔

(۴۷۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "حرص بری بات ہے"۔
۲۲۲ مال پیدا کرنا

(۴۷۹) حارث رضی اللہ عنہ نے کہا: "ہم لوگوں میں کسی کی گھوڑی بچھڑتی بس بچے پر مال لاونے لگتا کہ میری زندگی اس قدر کمان ہو گی کہ میں اس پر سوار ہوں پھر ہم لوگوں کے پاس حضرت عمرؓ کا پروانہ پونچا کہ جو کچھ اللہ دے اُسکی اصلاح کیا کرو کہ ابھی مہلت ہے"۔

(۴۸۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "اگر قیامت قائم ہو جائے اور تم میں سے کسی کے ہاتھ میں خرے کی گاجھی ہو تو ہو سکے تو اُسکو لگا ہی کر اٹھے"۔
(۴۸۱) عبد اللہ بن سلام رضی اللہ عنہ نے کہا: "اگر دجال کے نکلنے کی خبر سنے اور تو اس وقت کوئی گاجھی لگاتا ہو تو جلدی نکر اور اُسکو ٹھیک کر لے کیونکہ لوگ اس واقعے کے بعد بھی کچھ آباد رہیں گے"۔
۲۲۳ مظلوم کی دعا

(۴۸۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "تین دعائیں قبول ہی ہو جاتی ہیں مظلوم کی دعا اور مسافر کی دعا اور لڑکے کے حق میں باپ کی بددعا"۔
۲۲۴ خدا سے روزی کی دعا جیسا کہ فرمایا ہے: "ارزقنا وانت خیر الرازقین"۔

(۴۸۳) جابر رضی اللہ عنہ نے کہا: "نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم منبر پر تھے آپ نے میں کی طرف دیکھا دعا فرمائی: "اے خدا! انکے دلوں کو متوجہ کر دے" اور آپ نے عراق کی طرف دیکھا کہ یہی دعا فرمائی اور یہ دعا دیکھ کر آپ نے یہی دعا فرمائی اور یہ بھی فرمایا: "اے خدا! زمین کی پیداوار سے ہمکو روزی دے اور ہمارے مدد اور صلح میں برکت عطا فرما"۔
۲۲۵ ظلم تاریکیوں کا باعث ہے

(۴۸۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: "ظلمت کر و ظلم قیامت کے دن تاریکیوں کا باعث ہو گا اور کنجوسی سے بچو کنجوسی نے تمہارے اگلوں کو ہلاک کر دیا اسی کے باعث آنکھوں نے خونریزی کی اور حرام باتوں کو حلال کی طرح برتنے لگے"۔

نیک نیتی کی صراط
ملا
خود پیمانے میں

۱۰۳

(۴۸۵) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: میری امت کے پچھلے لوگوں میں مسخ کا اور قذف کا اور خسف کا عذاب ہونیوالا ہے اور اس قسم کے عذاب شروع شروع ان لوگوں پر ہونگے جنکے ذمے حقوق رہ گئے ہیں۔

(۴۸۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: ظلم سے قیامت میں اندھیری ہوگی۔

(۴۸۷) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: جب ایسا نڈار لوگ دوزخ سے نکالے جائینگے تب دوزخ اور بہشت کے درمیان ایک پل پر روک لیں جائینگے پھر وہ ان دنیا کے ایک دوسرے کے حقوق کا آپس میں بدلے لینگے پھر جب اس سے بھی

پاک و صاف ہو جائینگے تب ان لوگوں کو بہشت میں جائیگی اجازت دی جائیگی اسی ذرا ت

پاک کی قسم جس ہاتھ میں تھی کہ وہ لوگ اپنا اپنا بہشت کا مکان بنا کر لائیں اور پھر اسی طرح پہچان لینگے۔

(۴۸۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: ظلم سے بچو ظلم قیامت کے دن تار کیونکا باعث ہوگا جیسا تار سے بچو اللہ تعالیٰ جیسا بد زبان آدمی کو دوست نہیں رکھتا ہے کچھ سی سے بچو تمہارے اگلوں کے باعث سے نائے کاٹ دیے اور حرام کاموں کو حلال کے طور پر برتنے لگے۔

(۴۸۹) وہی حدیث نمبر (۴۸۸)۔

(۴۹۰) ابو الفحج رضی اللہ عنہ نے کہا: مسروق اور شتیر بن شکر مسجد میں ساتھ بیٹھے بس مسجد والے لوگ سب انھیں کی طرف چلے تب مسروق نے شتیر سے کہا: میں سمجھتا ہوں یہ لوگ ہماری

طرف اسی واسطے آئے ہیں کہ اچھی اچھی بات سنیں تو یا تمھیں عبد اللہ کی باتیں بیان کر دو اور میں تمھاری تصدیق کروں اور یا میں بیان کروں اور تم میری تصدیق کرو۔ شتیر نے

کہا: ابو عبد اللہ! تمھیں بولتے تب مسروق نے کہا: تم نے عبد اللہ رضی اللہ عنہ سے سنا ہے؟ وہ ان

آنکھیں زنا کرتی ہیں دونوں ہاتھ زنا کرتے ہیں دونوں پاؤں زنا کرتے ہیں اور ہاتھ لگا

اسکو تپا کر دیتی ہے یا جھلا دیتی ہے؟ شتیر نے کہا: ہاں میں نے بھی سنا ہے۔ مسروق

نے کہا: تم نے عبد اللہ رضی اللہ عنہ سے سنا ہے؟ قرآن میں اس آیت (ان اللہ یامر بالعدل والاحسان واپتہا بزی القربی) سے زیادہ کسی آیت نے حلال اور حرام اور اسرار نہیں کو

نہیں سمیٹا ہے؟ شتیر نے کہا: ہاں میں نے بھی سنا ہے۔ مسروق رضی اللہ عنہ نے پوچھا: تم نے

اچھی صورت کا
میری ہو جائیگا
جان کی صورت
اپنا پنا جائیگا
بندہ شکر ہے
اسان کے
سنا رہیں
کچھ سی سے
۱۰

زین میں
دھنسا دیا جائیگا
جمع

فَقَدْ كَرَّمَ لَكَ سِرًّا سَوِيًّا حَسَنًا

الحمد لله والمنه لله سأل الله الجزاء العني برأه ومفر بخارى مسني

دوسر

سَلَفًا

حصن

ترجمہ عالم با عمل افضل محل جناب لوی محمد عبدالغفار صاحب

مطبع لیا واقع امیرپا

اشاعت آره کلمہ چوک سجد باد اول ۵۰۵ جلد قیمت فی جلد ۷۰۰ محصول ذمہ خریدار

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

ادب المفرد کا چوتھا پارہ

۲۲۶

بیمار کا کفارہ

(۲۹۲) غصیف بن حارث نے کہا ابو عبیدہ بن الجراح بیمار تھے ایک شخص نے آکر اون سے پوچھا سرکار کے ثواب کا شام کو کیا حال رہا ابو عبیدہ نے فرمایا تمہیں - کچھ خبر ہے ثواب کس بات میں پاتے ہو اس شخص نے عرض کیا مکروہات سے ہمیں جو تکلیف پہنچتی ہے اوس میں ثواب ملتا ہے ابو عبیدہ نے فرمایا ثواب تو اوس میں ملتا ہے جو خدا کی راہ میں خرچ کرتے ہو اور جو تمہارے لئے خرچ کیا جاتا ہے پھر ابو عبیدہ نے سواری کا سامان شمار کرتے کرتے گھوڑے کے دو ال تک کو گن ڈالا لیکن یہ بیمار یاں جو تمہارے جسموں میں ہو کرتی ہیں اون سے تمہارے کچھ گنا ہونگا کفارہ ہو جاتا ہے۔

۴
اس کا ثواب
اور ثواب بیماری
کے لیے ہے
اس کی حالت
یہی ہے

(۴۹۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا مسلمان کو جو کچھ بیماری یا تکلیف یا تر و تار یا نچ یا ایذا یا غم پہنچتا ہے یہاں تک کہ کانٹا بھی اگر اوس کو گڑ جاتا ہے تو اللہ تعالیٰ اوس کے بدلے کچھ اوس کے گناہوں کا کفارہ کر دیتا ہے۔

(۴۹۴) سعید نے کہا میں سلمان کے ساتھ تھا وہ کندہ (مقام کا نام) میں ایک بیمار کی عیادت کو چلے جب اوس کے یہاں پہنچے فرمایا خوش ہو مومن کے بیماری کو خدا اوس کے لئے کفارہ کر دیتا ہے اور اوس کو راضی کر لیتا ہے اور سبے ایمان کی بیماری جیسے اونٹ کو اوس کے مالک نے باندھا پھر کھولا وہ کچھ سمجھتا ہی نہیں کہ کیوں باندھا تھا اور کس لئے کھول دیا۔

(۴۹۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ایماندار مرد اور ایماندار عورت کے بدن میں گھر بار میں مال میں برابر کھا لگی رہتی ہے یہاں تک کہ اللہ پاک سے اوس سے ایسی حالت میں ملاقات ہوتی ہے کہ ایک گناہ بھی اوس کے ذمہ نہیں ہوتی۔

(۴۹۶) ایک روایت میں لڑکے بالون کا ذکر بھی ہے۔

(۴۹۷) ابو ہریرہ نے فرمایا ایک اعرابی آیا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اوس سے فرمایا تجھے کبھی ام مدم بھی لگی اوس نے پوچھا ام مدم کیا چیز ہے فرمایا چمڑے اور گوشت کے درمیان ایک گرمی ہوتی ہے اوس نے کہا نہیں فرمایا کبھی تجھے صداع ہوئی اوس نے کہا صداع کیا چیز ہے فرمایا سر میں ایک ایسی ہوا سما جاتی ہے کہ رگ رگ تڑکنے لگتی ہے اوس نے کہا نہیں جب یہ شخص اٹھ گیا اپنے فرمایا کوئی شخص اگر کسی دوزخی کو دیکھتا جا ہے یعنی اسے دیکھے۔

۲۲۷

پچھلی رات کو عیادت کرنا

(۴۹۸) خالد بن ربیع نے کہا حذیفہ صحابی ذی فرائش ہوئے اونکی جماعت اور انصار نے یہ خبر سنی تو پچھلے پہرات کو یا قریب صبح اونکے یہاں انرا دھنوں فی

پوچھا یہ کون وقت ہے ہملوگون نے کہا آخر شب یا قریب صبح او نہون نے فرمایا اَعْنَى ذِي اللَّهِ مِنْ صَبَاحِ النَّكَارِ پوچھا میرے لئے کفن کو بھی لائی ہو ہملوگون نے عرض کیا مان فرمایا بہت مہنگا کپڑا کفن میں نہ دیا کرو اگر خدا کے یہاں میرے لئے بھلائی ہے تو اس سے اچھا بدل دیا جائیگا اور اگر دوسری بات ہوئی تو فوراً یہ بھی اوتار لیا جائیگا ابن ادریس راوی نے کہا ہملوگ ادن کے پاس کسی وقت رات کو آئے۔

۴
بیماری کے وقت

(۴۹۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا مومن جب بیمار ہوتا ہے خدا اوسکو اسطرح خالص کر دیتا ہے جیسے بھاتی کو ہے کی میل نکال دیتی ہے۔
(۵۰۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جس مسلمان کو کوئی مصیبت دکھ یا بیماری ہوتی ہے اوسکی گناہوں کا کفارہ ہو جاتا ہے یہاں تک کہ کانتا بھی اگر اوسکو گڑے یا ٹھوکرا ہی لگے تو یہ بھی کفارہ ہو جاتا ہے۔

(۵۰۱) سعد نے کہا میں مکہ میں سخت بیمار ہو گیا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میری عیادت کو تشریف لائے میں نے عرض کیا یا رسول اللہ میرا مال متروکہ ہوا چاہتا ہے اور وارث میری فقط ایک ہی بیٹی ہے میں دو تھائی کی وصیت کر دیتا ہوں اور ایک تھائی چھوڑ دیتا ہوں فرمایا نہیں تب عرض کیا اچھا آدھے کی وصیت کر دوں اور آدھا اوسکے لئے رہنے دوں فرمایا نہیں عرض کیا تب ایک تھائی کی وصیت کر دوں اور دو تھائی اوسکے لئے رہنے دوں فرمایا ایک تھائی اور تھائی بھی بہت ہے پھر آپ نے اپنا (مبارک) ہاتھ میری پیشانی پر رکھا اور میرے منہ پر اور پیٹ پر پھیرا پھر فرمایا اللہ سعد کو شفا دے اور اوسکی ہجرت پوری کر دے آپ کے ہاتھ کی ٹہنڈک جو میرے جگر کو پہنچی خیال کرنے سے برابر اسوقت تک مجھے اوسکی کیفیت معلوم ہوتی ہے۔

۵
اگر آپ کے وہ اعمال سبب بیماری کو انجام دینے میں ہوں پوچھا یہ

۲۲۸

بیمار کو وہ سب اعمال لکھ جاتے ہیں جو وہ تندرستی میں کرتا تھا

(۵۰۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو کوئی بیمار ہوتا ہے اوسکے ہاتھ

عمل لکھے جاتے ہیں جو وہ صحت کی حالت میں کیا کرتا تھا۔

(۵۰۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا خدا جس مسلمان کو جسمانی آفت میں مبتلا کرتا ہے وہ جب تک بیمار رہتا ہے اور اسکے عمل زمانہ صحت ہی کو لکھے جاتی ہیں پھر اگر اس سے عافیت دی۔ راوی کہتا ہے مجھے خیال آتا ہے آپ نے فرمایا تو (گویا) اس سے نہلا دیا۔ اور اگر کہیں مر گیا تو اسکی بخشائیش ہوگی۔

(۵۰۴) پہلی حدیث بتغیر بعض لفظ۔

(۵۰۵) ابو ہریرہؓ نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں بخاری حاضر ہو کر عرض کیا کہ اپنے لوگوں میں جسے آپکو زیادہ خصوصیت ہو وہ میں مجھ پر بہت کجی آپ نے اوسکو انصار کے یہاں بھیجا چہ رات دن برابر اوندلوگوں میں بخاری رہا اوند لوگوں کو اسکی سخت ایذا ہوئی تب آپ اوندلوگوں کو یہاں اوند کے گہروں میں تشریف لائے اوند لوگوں نے آپ سے بخاری کا شکوہ کیا تب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم گہر گہر مکان مکان تشریف لجاتے اور اذکر لہو عافیت کی دعا فرماتے جب اودہر سے پھر کر اوند میں سے ایک عورت آپکے پیچھے ہوئی اور عرض کیا قسم اوس ذات کی جسے آپکو سچا نبی بھیجا ہے میں انصاری ہوں میرا باپ بھی انصاری ہے جیسے آپ نے انصار کے لئے دعا فرمائی میرے لئے بھی دعا فرمائے آپ نے فرمایا تو کیا چاہتی ہے اگر تیری خواہش ہو تو میں خدا سے دعا کروں کہ تجھے معاف رکھے اور اگر تو چاہے تو صبر کر اور اسکے بدلے تجھے بہشت ملے وہ عورت بولی میں صبر ہی کرونگی بہشت کو شبہہ میں رکھنا مجھے منظور نہیں۔

(۸۰۶) ابو ہریرہؓ نے فرمایا جتنی بیماریاں مجھے ہوں بخاری سے زیادہ کوئی مجھے پسند نہیں اسلئے کہ بخاری ہر بدن میں اندر گھس جاتا ہے اور اللہ پاک ہر بدن کو اوسکے ثواب کا حصہ پہنچاتا ہے۔

(۵۰۷) ابو سخیلہ سے لوگوں نے کہا خدا سے دعا کرو اوندوں کو دعا کی یا اللہ

وہو زیادہ ابو ہریرہؓ سے

مرض گھٹا دے تو اب مت کم کر پہر اونسے لوگون نے کہا دعا کرو دعا کرو
 اونہون نے کہا اسے اسد مجھے اپنے مقرب بندون میں کر اور میری مان کو
 بہشتی حور بنا دے۔

(۵۰۸) عطار بن ابی رباح نے کہا مجھ سے ابن عباس بولے تجھی میں ایک
 بہشتی عورت نہ دکھا دون میں نے عرض کیا ہاں فرمایا یہی جشن بنی
 صلے اسد علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہو کر عرض کرنے لگی مجھے مرگی
 آتی ہے اور میں ننگی ہو جاتی ہوں میرے لئے دعا فرمائے اپنے فرمایا
 اگر تجھے منظور ہو تو صبر کر اور اوسکے بدلے تجھے بہشت ملے اور چاہے تو
 میں خدا سے دعا کروں کہ تجھے عافیت عطا فرمائے۔ اوسنے عرض کیا
 میں صبر ہی کرونگی پھر بولی میں ننگی ہو جاتی ہوں اسکی دعا خدا سے فرمائے
 کہ ننگی نہو اگر دن تب آپ نے اوسکے لئے دعا فرمائی۔

(۵۰۹) عطا کا بیان ہے کہ اس لانی جشن ام زفر کو اونہون نے کعبہ کی
 سیڑھی پر دیکھا ہے۔

(۵۱۰) نبی صلی اسد علیہ وآلہ وسلم فرماتے مومن کو کوئی کانٹا یا اس سے
 بہی زیادہ ہلکی مصیبت کوئی پہنچتی ہے تو وہ کفارہ ہو جاتی ہے۔

(۵۱۱) رسول اسد صلے اسد علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جس مسلمان کو
 دنیا میں کوئی کانٹا گڑ جاے اور وہ اوسکے ثواب کا امیدوار ہو
 اوسکے بدلے قیامت میں اوسکی گناہون کا کچھ کفارہ
 ہو جائے گا۔

(۵۱۲) نبی صلی اسد علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جس مومن مرد یا موئمہ
 عورت اور مسلمان مرد یا عورت کو کوئی بیماری ہوتی ہے
 اوسکے بدلے خدا اوسکی گناہون سے کچھ اوسکو بری
 کر دیتا ہے۔

اور ابو بکر (رضی اللہ عنہ) پاپیادہ میری عیادت کو تشریف لائے تو مجھے بیہوش پایا تب
نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے وضو کیا پھر وضو کا پانی مجھ پر بہا یا تب مجھے ہوش
ہو گیا کیا دیکھتا ہوں کہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میں بیٹے عرض کی یا رسول اللہ
میں اپنے مال میں کیا (انتظام) کروں میرے مال کے بارے میں کچھ حکم دیکھتے
آپ نے اسکا کچھ جواب نہیں دیا یہاں تک کہ آبت میرا نازل ہوئی۔

۲۳۱

یہاں تک کہ آپ کی عیادت

(۵۱۶) اسامہ بن زید نے کہا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ایک نواسے
ذی فرائش ہوئے۔ اونکی والدہ نے آنحضرت کے پاس آدمی بھیجا کہ لڑکا حالت
منع میں ہے۔ آپ نے آدمی سے فرمایا اون سے جا کر کہہ دے کہ خدا جو کچھ لے لے یا
جو کچھ دیدے سب اوسیکاہی اور ہر چیز کی اوسکے بہان ایک مدت مقرر ہے تمکو
صبر کرنا چاہئے اور اسکی ثواب کی امید واری چاہئے۔ وہ آدمی واپس آیا اور آنکو
آپ کے فرمایا نکلی خبر دی تب اونہوں نے آنحضرت کو قسم دلا بھیجا کہ ضرور تشریف
لاویں۔ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم چند آدمیوں کے ساتھ اونہیں کہڑے ہوئے
آپکے ساتھ والون میں سعد بن عبادہ بھی تھے۔ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے لڑکے کو
لکیر (اپنے مبارک) سینہ پر رکھ لیا اور لڑکے کے سینہ سے مشک، پانی نکالنے کی سی
آواز آتی تھی۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اس پر سعد بولے آپ پیغمبر خدا
ہو کر روئے ہیں۔ فرمایا مجھے اس پر رحم آتا ہے اس سے رونا ہوں بے شبہہ اللہ تعالیٰ
اپنے اونہیں بندوں پر رحم فرماتا ہے جو دوسروں پر رحم کرتے ہیں۔

۲۳۲

(۵۱۷) ابراہیم بن ابی عبدہ نے کہا۔ میری بیوی بیمار ہوئی اور میں ام دردا کی بہان
آیا کرتا۔ تو وہ پوچھا کرتیں تیری اہلیانہ کا کیا حال ہے۔ میں کہتا
بیمار ہے۔ تب ام دردا میرے لئے کچھ کہا نیکو منگو امین میں کہا لیا کرتا۔ بارہا ایسی اتفاق ہو

ایک دفعہ جو میں اونکے یہاں آیا۔ اونہوں نے پوچھا۔ کیا حال ہے؟ میں نے کہا اب تو صحت ہے۔
تب اونہوں نے کہا۔ تم جو مجھ کو اپنی امانت کی بیماری کی خبر دیا کرتے تھے اسی سے میں تمہارے
لئے کچھ کہا نا منگوا لیا کرتی تھی اور اب جو صحت ہو گئی تو میں نہیں کچھ منگواتی۔
دہیات والی بیمار کی عیادت ۲۳۳

(۵۱۸) ابن عباس نے کہا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم دہیات کے ایک
آدمی کی عیادت کو تشریف لے گئے پہر فرمایا کچھ پر وانہیں انشا اللہ (یہ بیمار گناہوں
پاک کرنیوالی ہے۔ اوستے کہا (یہ نہیں) بلکہ ایک بڑے بوڑھے آدمی پر بخدا کا جوش
ہے کہ اوستے کو قبر تک پہنچا دیگا۔ آپ فرمایا۔ ہاں تو یہی ہوگا۔

بیماروں کی عیادت ۲۳۴

(۵۱۹) ابو ہریرہ نے کہا (ایک دن) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے پوچھا تم میں
کون کون ہے۔ ابو بکر نے عرض کی میں۔ پوچھا تم میں آج بیمار پر سی کسے کی (ابو بکر
میں نے پوچھا تم میں آج جنازے پر کون حاضر ہوا۔ ابو بکر) میں پوچھا تم میں آج مسکین کو
کسے کہا یا ابو بکر میں نے مروان راوی کہتا ہے مجھے خبر ملی ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ
وسلم نے فرمایا۔ جس شخص میں یہ ساری باتیں ایک ہی روز اکٹھے ہوں وہ ضرور
بہشت میں جائیگا۔

(۵۲۰) جابر نے کہا۔ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم۔ ام سائب کے یہاں تشریف لیگے
وہ اسوقت لرزہ سے تھر تھرا رہی تھیں۔ آپ نے پوچھا تمہیں کیا ہوا ہے۔ عرض کی
بیمار ہے۔ خدا سے رسوا کرے۔ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ میں بیمار کو
گالی ندر۔ ایمان دار آدمی کے گناہوں کو بخار اسطرح دفع کرتا ہے جیسے بہا تھی لوہے کی
میل صاف کر دیتی ہے۔

(۵۲۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ اللہ تعالیٰ فرمائے گا

میںے تجھے کہانا مانگا تو نے کہلایا نہیں۔ بندہ عرض کر گیا تو تو خود سارے جہانکا پروردگار ہے۔ تو نے مجھے کیونکر کہانا مانگا کہ میںے تجھے نہیں کہلایا۔ فرمائے گا تجھے خبر نہیں میرے فلاں بندے نے تجھے کہانا طلب کیا تو نے اسے نہیں کہلایا تجھے خبر نہیں اگر تو اسے کہانا کہلا دیتا تو اسکا ثواب میرے یہاں پاتا۔ اے آدمی میںے تجھے پانی مانگا تو نے مجھے نہیں ملا بندہ عرض کر گیا۔ یارب تو تو سارے جہانکا پروردگار ہی میںے تجھے کیونکر پلاتا فرمائیگا تجھے خبر نہیں میرے فلاں بندے نے تجھے پانی مانگا تو نے اسے نہیں پلایا۔ تجھے خبر نہیں اگر اسے پانی پلا دیتا تو وہ پانی تو یہاں میری پاس پاتا۔ اے آدمی میںے بیمار ہو تو تیری عیادت کی بندگی کر گیا یارب تو تو جہان کا پروردگار ہے میں تیری عیادت کیونکر کرتا نہ مانگا تجھے خبر نہیں میرا فلاں بندہ بیمار ہوا اگر تو اسکی عیادت کرتا تو اسکا ثواب میرے یہاں پاتا۔ یا فرمایا مجھی کو اسکی پاس پاتا۔ (۵۲۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ بیمار کی عیادت کیا کرو اور جنازے کے ساتھ جا یا کرو (بیہہ کام) تم کو آخرت یاد دلائیگا۔

(۵۲۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ تین باتیں ہر مسلمان پر حق ہیں چار پرسی۔ اور جنازہ کی حاضری اور چھینکنے والا الحمد للہ کہے تو اس کے جواب میں ہر چمک اللہ کہنا۔

عیادت کرنیوالے کا بیمار کی شفا کیلئے دعائیہ ۲۳۵

(۵۲۴) سعد نے کہا۔ مکہ میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میری عیادت کو تشریف لائے تو میں رونے لگا۔ آپ نے فرمایا روتے کیوں ہو۔ عرض کی۔ مجھے خوف ہوتا ہی کہیں ایسا نہ ہو کہ سعد (بن نولہ) کی طرح جو ہنسے میں نے ہجرت کی ہے وہیں (یعنی مکہ میں) مر جاؤں تب آپ نے تین بار دعا فرمائی اے اللہ سعد کو شفا دے۔ پھر عرض کی

میرے پاس مال بہت ہے۔ جسکی وارث میری ایک ہی بیٹی ہے اجازت ہو تو میں اپنی کل مال کی وصیت کر دوں۔ فرمایا نہیں۔ عرض کیا تو دولت کی وصیت کروں فرمایا نہیں۔ عرض کی تو نصف کی فرمایا نہیں عرض کی تو ایک ثلث کی فرمایا ایک ثلث اور ایک ثلث ہی بہت ہے لگو اپنا مال اپنی ذات میں خرچ کرنے میں بیشک صدقہ کا ثواب ہے اور جسکی کفالت تمہارے اوپر ہے اون کے کام میں خرچ کرنے میں بھی صدقہ ہی کا ثواب ہے اور تمہارے کہانے میں سے تمہاری بیوی جو کچھ کہا لگی اس میں بھی صدقہ ہی کا ثواب ہے اور اپنے لوگوں کو مالدار چھوڑ جانا یا فرمایا فرعون میں چھوڑ جانا اس سے بہتر ہے کہ مفلس چھوڑ جاؤ اور لوگوں کے سامنے ہاتھ پھیلا لے پھرین۔ راوی نے کہا آپ نے ہاتھ پھیلا کر دیکھا ہے دیا۔

ب
فضیلت

۲۳۶

بیمار پرسی کی فضیلت

(۵۲۵) ابو اسمان نے کہا جو شخص مسلمان بہا ہی کی بیمار پرسی کرتا ہے بہشت کے پہلے چنے میں (مصر و) ہے (عاصم راوی کہتا ہے) میں ابو قلابہ سے خرفہ حنت کی تفسیر پوچھی۔ اونہوں نے بتایا چنے ہوتے پہلے چنے اول سے پوچھا ابو اسمان نے یہ حدیث کس سے سنی۔ کہا ثوبان سے انہوں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے۔ (۵۲۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ وہی حدیث۔

۲۳۷

بیمار اور عیادت کرنیوالے کا آپس میں بات چیت کرنا۔

(۵۲۷) جعفر نے کہا۔ ابو بکر بن خرم اور محمد بن سکندر مسجد کچنڈ آدمینہ کے ساتھ عمر بن حاکم بن رافع انصاری کی عیادت کو گئے سب نے اون سے کہا ابو حفص! ہلو گون کو حدیث سنائے۔ اونہوں نے کہا میں نے جابر سے سنا ہے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ جو شخص بیمار کی عیادت کرتا ہے وہ رحمت (کی دیا) میں تیرا ہے۔ یہاں تک جب (اوسکے پاس) میٹھ گیا تو رحمت میں ٹھہرا کر لیا۔

(۵۲۸) عطا نے کہا۔ عمر بن صفوان میری عیادت کو آئے پہر نماز کا وقت ہو گیا تو ابن عمر نے دو رکعت نماز پڑھائی اور کہا کہ میں مسافر ہوں۔

(۵۲۹) انس نے کہا۔ ایک بیوی اردکانی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت کیا کرتا تھا وہ بیمار ہوا تو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اس کی عیادت کو تشریف لائے اور اس کی سرہانے بیٹھ گئے پہر نماز با مسلمان ہو جب اردکانی اپنے باپ کو دیکھنے لگا وہ بھی اس کے سرہانے ہی تھا بیٹے سے کہنے لگا۔ ابوالقاسم (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کی بات مان لے تب وہ اردکانی مسلمان ہو گیا پہر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم وہاں سے یہہ فرما کر ہوئے چلے خدا کا شکر کہ تم آؤ سکو آگ سے بچا لیا۔

(۵۳۰) عائشہ نے فرمایا جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مدینہ (منورہ) تشریف لائے ابو بکر اور بلال کو بخارا لے لگا۔ میں ان دونوں کے یہاں گئی اور ابو بکر سے کہا اہا آپ کا کیا حال ہے۔ بلال آپ کا کیا حال ہے اور ابو بکر کو جب نماز آیا کرتا تو اس مضمون کا شعر پڑھتے۔

کرتا ہے سخن خوشی سے ہر گہرین غریب + اور موت دو ال نخل سے ہی ہر قریب +
اور بلال کو جب بخارا و ترحب اتا تو بلند آواز سے اس مضمون کا شعر پڑھتا
کوئی بتاے کہ ایسی نسلے گی کوی راست + کہ میں ہوں دشت میں از خیر ہی ہو طیل ہی ہو
درد ہو کوی دن چشمہ مجتہد + نظر فرور میرا شامہ ہو طفیل ہی ہو +
عائشہ رضی اللہ عنہا کہتی ہیں میں نے اگر رسول صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو اسکی خبر کی تب

میں نے وہاں سے
میں نے وہاں سے

میں نے وہاں سے
میں نے وہاں سے

میں نے وہاں سے
میں نے وہاں سے

میں نے وہاں سے
میں نے وہاں سے

آپ نے یہ دعا فرمائی اے اللہ مکہ کی طرح بلکہ اوس سے بھی زیادہ مدینہ کی محبت ہمارے دلوں میں دے دے اور مدینہ (کی آب و ہوا کو) درست کر دے اور مدینہ کے صاع، مین اور مدینہ میں برکت عطا فرما۔ اور مدینہ سے بخار (کی وبا) جحفہ میں نکال پھینک۔

(۵۳۱) ابن عباس نے کہا۔ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ایک دیہاتی آدمی کی عیادت کو تشریف لیگے اور نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جب کسی بیمار کی عیادت کرتے تو یہ فرماتے۔ معنایقہ نہیں انشاء اللہ (یہ بیماری گھاہوں سے) پاک کر نیوالی ہے اوس دیہاتی نے یہہ سن کر کہا (آمین) یہہ پاک کر نیوالی ہے نہیں نہیں بلکہ ایک بوڑھے پہوس آدمی پر بخار کا (ایسا) جوش ہے کہ اوس کو قبر تک پہنچا دیگا۔ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ ہاں تو ایسا ہی ہوگا۔

(۵۳۲) نافع نے کہا۔ ابن عمر جب کسی بیمار کو دیکھتے جاتے تو اوس سے پوچھتے تیرا کیا حال ہے۔ پہر جب چلنے لگتے کہتے خدا تمہارے لئے بہتری کرے اور اس سے کچھ بڑھاتے نہ تھے۔

۲۴۱

بیمار کیا جواب دے

(۵۳۳) سعید بن عمرو نے کہا حجاج (حاکم مدینہ) عبد اللہ بن عمر کے دیکھنے کو آیا اور میں بھی وہیں تھا۔ پوچھا آپ کا کیا حال ہے، فرمایا اچھا ہوں پوچھا آپ کو کسے زخمی کیا فرمایا مجھے زخمی تو اوس شخص نے کیا جسے (شکر کو) ایسے دن میں تہیاری لگانا حکم دیا جس دن تہیاری لگانا جائز نہیں یعنی حجاج (ہی) نے زخمی کیا۔

۲۴۲

فاسق کی عیادت

(۵۳۴) عبد اللہ بن عمرو بن العاص نے کہا۔ مضر ابیون کی عیادت نہ لیا کرو۔

۲۴۳

عجرت کا بیمار کی عیادت کرنا

(۵۳۵) حارث انصاری نے کہا۔ میں نے ام دردا کو دیکھا اپنے گجادی میں چند لکڑیوں کو سہارے سے پردہ لگا کر اسی پر مسجد کے رہنے والے ایک انصاری کی عبادت کو آتی تھی عبادت کو جائے تو بیضرورت مکان میں ادھر ادھر ہر جگہ۔
۲۲۲

(۵۳۶) عبداللہ بن ابی الہندیل نے کہا۔ عبداللہ بن مسعود ایک بیمار کی عبادت کو گئے اونکے ساتھ اور لوگ بھی تھے۔ اور مکان میں ایک عورت بھی تھی اون لوگوں میں سے ایک شخص عورت کی طرف تاکنے لگا عبداللہ بن مسعود نے اس سے فرمایا تیری آنکھیں پھوٹ جائیں تو تیرے حق میں بہتر تھا۔
اشوب چشم والی کی عبادت
۲۲۵

(۵۳۷) زید بن ارقم نے کہا (ایک دفعہ) مجھے اشوب چشم ہوا پس نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میری عبادت کو تشریف لائے پھر فرمایا اے زید اگر تیری آنکھیں اس اشوب چشم سے جاتی رہتیں تو تو کیا کر یا عرض کی تو اب کی امید پر صبر کرتا فرمایا اگر تیری آنکھیں اشوب چشم سے جاتی رہتیں۔ پھر تو بہ امید ثواب صبر کرتا تجھے اسکے ثواب میں بہشت مل جاتی۔
(۵۳۸) قاسم بن محمد نے کہا۔ ایک صحابی کی آنکھیں جاتی رہیں لوگ اونکی عبادت کو گئے اونہوں نے فرمایا۔ آنکھوں کو تو میری ہی غرض تھی کہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی زیارت کیا کروں پھر جب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے وفات فرمائی تو خدا کی قسم (۵۳۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ اللہ تعالیٰ فرماتا ہے میں جب کسی بند کو اسکی دونوں پیاریوں کی یعنی آنکھوں کی مصیبت میں مبتلا کرتا ہوں اور وہ صبر کرتا ہے تو میں اس کے بدلے اسے جنت دیتا ہوں۔

(۵۴۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ اللہ تعالیٰ فرماتا ہے اے آدم کے بیٹے جب میں تیری دونوں بڑی نعمت (یعنی آنکھ) لے لیتا ہوں اور تو اس مصیبت پر صبر کرتا ہے اور اس کے بدلے کا امیدوار ہو جاتا ہے تو اس کے ثواب میں کم سے کم

جنت کے سوا کوئی چیز وہاں مجھے پسند نہیں آتا۔
بیمار پر سی کرنے والا کہاں بیٹھے

۲۴۶

(۵۲۱) ابن عباس نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کسی بیمار کی عیادت کو تشریف لے جاتے تو اس کے سر ہانے بیٹھتے پھر سات بار فرماتے بڑے بڑے خدا بڑے تخت کے مالک سے میرا سوال ہے کہ تجھے شفا عطا فرمائے پھر اگر اس بیمار کی زندگی باقی ہوتی تو بیماری سے فوراً صحت پا جاتا۔

(۵۲۲) یحییٰ بن عبد اللہ نے کہا میں جن کے ساتھ قتادہ کی عیادت کو گیا حسرتوں کے سر ہانے بیٹھے پھر اونے (حال) پوچھا پھر اونکے لئے دعا کی اسے اللہ اور کادل چنگا کر دے اسے اللہ اور سکی بیماری اچھی کر دے۔

۲۴۷

آدمی اپنے گھر کیا کرے

(۵۲۳) ابوہریرہ نے کہا میں نے حضرت عائشہ سے پوچھا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اپنے گھر کیا کیا کرتے تھے فرمایا گھر کے کام دھندلے میں لگے رہتے تھے پھر جب نماز کا وقت ہوتا مکان سے باہر نکلتے۔

(۵۲۴) عروہ نے کہا میں نے حضرت عائشہ سے پوچھا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اپنے گھر کے اندر کیا کام کیا کرتے تھے فرمایا اپنی جوئی ٹانکتے تھے اور جو کام لوگ گھر میں کیا کرتے ہیں آپ بھی کیا کرتے۔

(۵۲۵) عروہ نے کہا حضرت عائشہ سے میں نے پوچھا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اپنے گھر میں کون کام کرتے تھے فرمایا جو کام تم میں کوئی اپنے گھر کرنا ہو آپ جوئی ٹانکتے تھے کپڑے میں پیوند لگاتے تھے۔ اور کپڑا سیتے تھے۔

(۵۲۶) عروہ نے کہا کسی نے حضرت عائشہ سے پوچھا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اپنے گھر میں کیا کام کرتے تھے فرمایا آپ بھی آدمی ہی تھے کپڑے سے جون پھیر نکالتے اور اپنی بکری دوہ لیتے۔

۲۴۸

کسی مسلمان کو دوسری مسلمان سے محبت ہو تو اسے خبر دے

(۵۴۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب تم میں کوئی مسلمان کسی مسلمان سے محبت رکھتا ہو تو چاہئے کہ اسے خبر کر دے کہ اسکو اس سے محبت ہو۔
 (۵۴۸) مجاہد نے فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے اصحاب سے ایک بزرگ تجھ سے ملے اور تجھ سے میرا منہ ٹھاپا کر فرمایا جانتا ہے مجھے تجھ سے محبت ہے میں نے کہا جسکے لئے تم مجھ سے محبت کرتے ہو وہ تم سے محبت کرے پھر فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ہوتا کہ جب کوئی کسی سے محبت رکھے تو چاہئے کہ اس سے خبر کر دے کہ اسکو اس سے محبت ہے تو میں تجھے خبر نہ دیتا مجاہد نے کہا پھر مجھے خبر دینا پیغام کرنے لگے فرمایا سنتے ہو میرے پاس ایک لونڈی ہے اور یہ بھی خبر ہے کہ وہ کافی ہے۔

بعض اصحاب نے فرمایا

(۵۴۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو دو شخص آپس میں محبت رکھتے ہیں ان میں زیادہ فضیلت اوسیکو ہے جسکو محبت زیادہ ہے۔
 کسیکو کسی سے محبت ہو تو اس سے تکرار نہ کر اور نہ اسکا حال کسی سے پوچھو۔

۲۵۰

(۵۵۰) معاذ بن جبل نے فرمایا جب تجھے کسی مسلمان سے محبت ہو جاوے تو اس سے بچ مت کیا کر اور اسکے ساتھ بڑائی مت کر اور اسکا حال بھی مت پوچھ شاید تجھے کوئی دشمن اسکا بلاوے اور جو بات اوس میں نہ ہو وہ تجھ سے کہہ دے اور تیرا اسکے درمیان میں جدائی کرادے۔

(۵۵۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو شخص خدا کے لئے کسی مسلمان سے محبت کرے اور کہدے کہ میں تجھے خدا کے واسطے چاہتا ہوں اور کہیں دو نون ساتھ بہشت میں داخل ہوئے تو جس نے خدا کے لئے محبت کی ہوگی اسکو دس حصے اس محبت کے سبب سے اوسکے یہاں زیادہ بلند ہوگا جسکے لئے اسنو محبت کی عقل ملین ہے۔

۲۵۱

۱۹
 (۱) حضرت امی رضی اللہ عنہا نے صفین میں فرمایا صل لیل میں ہے اور رحمت جگرین ہے
 اور ہر پانی طحال میں اور عائنس پچھلے میں ہے۔

۲۵۱

عبداللہ بن عمرو نے فرمایا ہلوگ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں
 بیٹھے تھے ایک شخص بھیجانی آدمی سیجان کا جبہ پہنے ہوئے وہاں آیا اور نبی صلی اللہ
 علیہ وآلہ وسلم کے سر مبارک کے پاس آکر کھڑا ہوا اور بولا کہ تمہارا فرسہ فرسوارونکو
 اتار دیا یا یوں کہا کہ وہ چاہتے ہیں کہ سوارونکو تو نیچے گرا دیں اور چرواہونکو بڑھا چڑھا
 دیں تب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اس کے جبہ کو پوری طرح سے پکڑ کر فرمایا میں دیکھتا ہوں
 تیرا لباس ناقص قول آدمی کا لباس ہے پھر فرمایا جب پیغمبر خدا نوح صلی اللہ علیہ وسلم
 وفات فرمانے لگے اپنے بیٹے سے فرمایا میں تجھے وصیت کرتا ہوں دو بات کی تو فرمائیں
 کرتا ہوں اور دو باتوں سے منع کرتا ہوں کلمہ توحید لا الہ الا اللہ کی فرمائیں کرتا ہوں
 کہ اگر ساتوں آسمان اور ساتوں زمین ایک پلہ ترازو میں رکھے جاویں اور لا الہ الا اللہ
 ایک پلہ میں رکھا جاوے تو یہی پلہ بھاری ہو جاوے اور اگر ساتوں آسمان اور ساتوں زمین
 ایک چوڑی حلقہ میں ہو جاویں تو اونکو لا الہ الا اللہ چوڑی کر ڈالے اور فرمائیں
 کرتا ہوں سبحان اللہ کی کیونکہ یہ ہر شے کی دعا ہے اور اسی کی برکت سے ہر شے
 روزی پاتی ہے اور شرک اور گنہگار سے تجھے منع کرتا ہوں راوی کہتا ہے میں نے کسی نے
 عرض کیا یا رسول اللہ شرک تو بھلا ہلوگوں کو معلوم ہے گنہگار کیا ہے کیا کسی کے پاس
 حلو ہو وہ اسکو پہنے یہ گنہگار ہے فرمایا نہیں عرض کیا کیا پانوں کا اچھا جوڑا ہو اسکو
 تسے اچھے ہوں فرمایا نہیں عرض کیا کسی کے پاس جانور ہو وہ اس پر سوار ہوتا
 ہو فرمایا نہیں عرض کیا کسی کے ہنشین لوگ ہوں اس کے پاس بیٹھے ہوں
 فرمایا نہیں عرض کیا تب گنہگار کیا بلا ہے فرمایا حق سے جھگڑنا اور لوگوں کو

تاجیتر سمجھنا۔

(۵۵۳) عبداللہ بن عمرو نے فرمایا میں نے عرض کیا یا رسول اللہ کیا گھمنڈیہ ہے یہ ہے جیسا اوپر حدیث میں گذرا۔

(۵۵۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو شخص دلمین اپنے کو بڑا جا فرمایا چال میں اکڑاؤ کرے خدا سے ملنے کے وقت خدا کو غصہ میں پائینگا۔

(۵۵۵) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جس کے ساتھ او سکا خادم کھانا کھائے اور بازار و نمین گدھے پر سوار ہوا کرے اور بکری کو باندھ کر آپ او سکو دودھ لیا کرے ایسا آدمی گھمنڈ والا نہیں ہے۔

(۵۵۶) صالح کلیم فروش کی دادی نے فرمایا میں نے حضرت علی رضی اللہ عنہ کو دیکھا آپ نے ایک دم کا خراب مول لیا اور اپنی چادر میں باندھ کر لیچھے میںے یا اور کسی نے عرض کیا یا امیر المؤمنین آپ رہنے دیجئے اسے میں اوٹھا لون فرمایا نہیں لیج سیکو اوٹھانا مناسب ہے جسکے لڑکے بالے کے لئے ہے۔

(۵۵۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا عزت میری تمہمت ہے اور بڑائی میری چادر ہے ان چیزوں کے بارے میں جو کوئی مجھے جھگڑا کرے گا یا لڑائی سزا کرونگا۔

(۵۵۸) عثمان بن بشیر منبر پر فرماتے تھے شیطان کے جال ہیں اور پھندے ہیں شیطان کے جال اور پھندے خدا کی نعمتوں پر اترانا اور خدا کے دئیے پر فخر کرنا اور بندگان خدا پر بڑائی کرنا اور خدا کے سوا باتوں میں اتباع ہوا کرنا۔

(۵۵۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا بہشت اور دوزخ میں جھگڑا ہوا دوزخ نے کہا مجھ میں نہ بردست اور گھمنڈ والے لوگ داخل ہونگے۔ بہشت نے کہا مجھ میں کمزور اور محتاج لوگ داخل ہونگے اللہ تعالیٰ نے بہشت سے فرمایا تو میری رحمت ہے میں جس پر چاہوں گا تجھے مہربانی کرونگا پھر دوزخ سے فرمایا تو میرا عذاب ہے جسکو چاہوں گا تجھے اوسکی سزا کرونگا اور تم دونوں ہی کو بھر دوں گا۔

۵۵۷

(۵۶۰) عبد الرحمن نے کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے اصحاب
کو گرفتار نہ تھے اور نہ آثار عبادت یعنی ضعف وغیرہ ظاہر کرتے تھے اور اپنی مجلسوں
اشعار پڑھا کرتے اور زمانہ جاہلیت کے اپنے قصے بولا کرتے پھر جب اون میں کسیکو
خدا کے کسی کام میں طلب کیا جاتا تو اس کے آنکھوں میں حلقے اس طرح گھومتے جیسے
کوئی مجنون ہو۔

(۵۶۱) ابو ہریرہ نے فرمایا ایک شخص نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور
میں حاضر ہوا وہ کچھ خوبصورت آدمی تھا اگر عرض کیا مجھے خوبصورتی پسند ہے
اور میری حالت تو حضور دیکھی رہے ہیں مجھے اتنا بھی منظور نہیں کہ کوئی جوتی
کے تسمے میں یا کہا سُرخ تسمے تک میں مجھے بڑھ جاوے کیا یہ گھنڈی بات ہے
فرمایا نہیں گھنڈی ہے کہ کوئی حق بات کو ٹال دے اور لوگوں کو ناجائز سمجھے۔

(۵۶۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا گھنڈ والے لوگ قیامت کی دن
پوشیوں کی صورت میں اٹھائے جائیں گے بر طرف سے ذلت اور نکو ڈھانکے ہوئے
ہوگی پولس نام دوزخ کے قید خانہ میں وہ ہنکا دے جائیں گے آگونی جلن اور پیر
توار ہوگی اور طینۃ الخیال یعنی دوزخ کو نکالنے والے جائیں گے۔

ظلم کا بدلہ

۲۵۲

(۵۶۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے حضرت عائشہ سے فرمایا تو اپنی طرف
سے جواب دے۔

(۵۶۴) حضرت عائشہ نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی ازواج مطہرات
حضرت نبی بی فاطمہ کو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس بھیجا اور نہ ہون سے آکر
لاؤ سوقت نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم حضرت عائشہ کے ساتھ ایک ہی چادر
تھے آپ نے حضرت فاطمہ کو بلایا آپ اندر سائین اور عرض کیا آپ کی ازواج
میں سے بھیجا ہے وہ ابو قحافہ کی بیٹی کے بارے میں آپ سے عدل کا سوال کرتی ہیں۔

آپ نے فرمایا بی بی جو میں چاہوں وہی تو بھی چاہتی ہے نہ عرض کیا تاں فرمایا اچھا
تو اس (حضرت عائشہ) سے محبت کر بس حضرت فاطمہ اوٹھیں اور وہاں سے چلی گئی
اور اون لوگوں سے جا کر قصہ بیان کیا اون لوگوں نے کہا تمہیں ہمارا کچھ کام نہیں کیا
پھر جاؤ بی بی فاطمہ نے فرمایا قسم خدا کی عائشہ کے بارے میں میں آنحضرت سے
کچھ نہیں بولونگی تب اون لوگوں نے حضرت ام المومنین بی بی زینب کو بھیجا
اونھوں نے آکر بیکارابی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اونکو اندر بلا لیا زینب نے بھی
وہی بات آپ سے کہی اور مجھے اولجہیں اور برا بھلا کہنے لگیں تب میں دیکھنے لگی
کہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مجھے اجازت دیتے ہیں یا نہیں دیکھتے دیکھتے میں نے
سمجھا کہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو میرا بدلہ لینا ناگوار نہ ہو گا تب میں بھی زینب
سے لپٹی پھر تو بلا توقف میں نے اونکو دیا ہی دیا اسپر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
مسکرائے پھر فرمایا سمجھ رکھو یہ ابو بکر کی بیٹی ہے۔

قحط اور فاقہ میں ہمدردی کرنا

۲۵۳

(۵۶۵) ابو ہریرہؓ نے فرمایا آخر زمانہ میں قاقہ کی نوبت ہوگی جنکو ایسا زمانہ
مے وہ فاقہ کشوں سے غفلت کرے۔

(۵۶۶) ابو ہریرہؓ نے فرمایا انصار مدینہ نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے
عرض کیا ہم انصار لوگ اور میرے بھائی مہاجرین کے درمیان کھجور بنونکو بانٹ
دیجئے فرمایا نہیں تب اونھوں نے مہاجرین سے کہا تلوگ خرچ اور محنت اپنے ذمہ
کر و تلوگ خرمون ہیں تمہیں شریک کر لیں مہاجرین نے کہا اسکو مانتے ہیں۔

(۵۶۷) حضرت عمرؓ کے زمانہ میں ایک سال سخت تکلیف کا قحط ہوا وہ سال عام
رہا وہ کے نام سے مشہور ہے عبداللہ بن عمرؓ نے فرمایا اوس سال حضرت
عمرؓ نے آباد اور سیراب ملک شہر کو اونٹ اور گہیوں اور زیتون سے اسقدر
مدد پہنچائی کہ تمام ملک خالی ہو گیا تب حضرت عمرؓ کھڑے ہو کر دعا کرنے لگے

۲۵۶

(۵۷۳) عبد اللہ بن مسعود نے کہا میں اپنے چچاؤنکے ساتھ معاہدہ مطہیین میں موجود تھا مسیح اونٹ لیکر بھی مجھے اوس قسم کا توڑنا پسند نہیں۔

بھائی چارہ

۲۵۷

(۵۷۴) انس نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے ابن مسعود اور زبیر کے درمیان بھائی چارہ کر دیا۔

(۵۷۵) انس نے کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے قریش (مکہ) اور انصار (مدینہ) کے درمیان میرے مکانین جو مدینہ میں ہے معاہدہ کر دیا۔

اسلام میں حلف نہیں

۲۵۸

(۵۷۶) شعیب کے باپ نے کہا جس سال مکہ فتح ہوا نبی صلی اللہ وآلہ وسلم کعبہ کی سیرھی پر بیٹھے پھر اوس پر بیٹھے ہوئے خدا کی حمد و ثنا کی پھر فرمایا جاہلیت کو قول قسم کو اسلام نے اور بھی زیادہ منطبوط کر دیا اور مکہ فتح ہونیکے بعد ہجرت باقی نہیں۔

بارش کا پہلا پانی

۲۵۹

(۵۷۷) انس نے کہا اہلوگ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ تھے کہ پانی برسنے لگا آپ نے اپنے اوپر سے کپڑا ہٹا دیا اہلوگوں نے عرض کیا حضور نبی یہ کیوں کیا فرمایا اسوا سے کہ یہ (پانی) ابھی اپنے پروردگار کے پاس سے آیا ہے۔

بکری برکت کی چیز ہے

۲۶۰

(۵۷۸) حمید بن مالک نے کہا عقیق میں حضرت ابو ہریرہ کی جو زمین ہے وہیں

عہ
زبانہ جاہلیت میں
نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے
ابن مسعود اور زبیر کے
ساتھ معاہدہ کیا اور
ان کے درمیان بھائی
چارہ کر دیا۔
انس نے کہا رسول اللہ
صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
نے قریش (مکہ) اور
انصار (مدینہ) کے
درمیان میرے مکانین
جو مدینہ میں ہے
معاہدہ کر دیا۔
اسلام میں حلف نہیں
کعبہ کی سیرھی پر
بیٹھے پھر اوس پر
بیٹھے ہوئے خدا کی
حمد و ثنا کی پھر
فرمایا جاہلیت کو
قول قسم کو اسلام
نے اور بھی زیادہ
منطبوط کر دیا اور
مکہ فتح ہونیکے
بعد ہجرت باقی
نہیں۔
بارش کا پہلا پانی
بکری برکت کی
چیز ہے

(۵۸۹) عبد اللہ بن عبد الرحمن ابن عبد القاری نے کہا حضرت عمر اور ابی بکر انصاری دونوں بیٹھے ہوئے تھے اتنے میں عبد الرحمن ابن عبد القاری بھی اگر وہیں بیٹھ گئے تب حضرت عمر نے کہا ہمیں ایسا شخص پسند نہیں جو میری بات ادھر ادھر کرے عبد الرحمن نے عرض کیا۔ امیر المؤمنین میں تو اون لوگوں کے نزدیک بیٹھتا ہی نہیں حضرت عمر نے فرمایا ہاں یہاں بھی بیٹھو وہاں بھی بیٹھو مگر میری بات مت پہنچاؤ پھر انصاری سے فرمایا تمہاری دانست میں لوگ کسکو کہتے ہیں کہ میرے بعد خلیفہ ہوگا انصاری نے کسی آدمیوں کو مہاجرین میں سے شمار کیا حضرت علی کا نام نہیں لیا تب حضرت عمر بولے ابو الحسن سے یہ لوگ کیوں غافل ہیں خدا کی قسم وہ تو ان سب سے زیادہ اس قابل ہیں کہ اگر وہ انکے حاکم ہوں تو اونکو ٹھیک طریقہ پر قائم رکھیں۔

کاہلین آہستگی۔

۲۶۶

(۵۹۰) حسن نے کہا ایک شخص ایک بیٹا اور مولا چھوڑ کر مر گیا اور بیٹے کے حق میں اپنے مولا سے وصیت کر دی اور مولا نے لڑکے کے واسطے کچھ کوتاہی نہیں کی یہاں تک کہ لڑکا سیانا ہوا اور اسکی شادی بھی کر دی پھر لڑکے نے مولا سے کہا مجھے (سفر کا) سامان کر دو کہ کچھ علم حاصل کروں اور اسے اسکا سامان بھی کر دو تا تب وہ ایک عالم کی پاس آکر کچھ پوچھنے لگا مولوی صاحب نے فرمایا جب تمہارا جانیکا ارادہ ہو تو مجھے کہنا تمہیں بتا دوں گا پھر اس نے عرض کیا میرے جانیکا وقت آگیا اب بتا دیجئے فرمایا خدا سے ڈر اور قہر کر اور جلدی مت کر حسن نے کہا کہ میں اتنی ہی بات میں ساری بھلائی ہے پھر وہ لڑکا چلا آیا اور تین ہی بات تو تھی بھولنے کیوں لگا تھا جب اپنے یہاں آکر اپنے گھر پہنچا کیا دیکھتا ہے کہ اسکی چورہ کے قریب ہی علیحدہ ایک شخص یا ہوا ہے اور عورت بھی سو رہی ہے کہنے لگا خدا کی قسم میں کیا چاہتا ہوں مجھرا اسکے پاس میں کیا انتظا ہے اپنی سواری والی اونٹ کے پاس پھر آیا پھر جیسے تلوا لینا چاہا کہنے لگا خدا سے ڈر اور قہر کر اور جلدی مت کر پھر پھر آیا پھر جب اس کے سر ہانڈی

حضرت علی کی وصیت
یہاں سے معلوم
مولا کا نام آزاد کر دہ
یہاں تک آزاد کر دہ
۱۱

کھڑا ہوا کہنے لگا اس بارے میں ہم کسی بات کا انتظار نہ کریں گے پھر اونٹ کے پاس آیا
 جیسے ہی تلوار لینا چاہا ہے کہ اس بات کو یاد کر کے پھر پھر آیا پھر چوڑا اسکے سر ہانے
 کھڑا ہوا تب وہ شخص جاگ اٹھا اور اوسکو دیکھتے ہی لپک کر گلے سے لگا لیا اور بوسہ
 لیا اور حال پوچھنے لگا کہا کہ تم نے میرے بعد (یعنی یہاں سے جا کے) کیا حاصل کیا
 اس کے لئے کہا قسم خدا کی تمہارے بعد ہمیں نہایت ہی اچھی بات حاصل ہوئی قسم
 خدا کی تمہارے بعد ہمیں یہی حاصل کیا کہ اس رات میں تلوار اور تمہارے سر کے
 درمیان تین بار میں آیا گیا بس وہی جو علم میں حاصل کیا ہے اسی نے تمہارے
 قتل سے مجھے روک رکھا۔

کامونین آہستگی

۲۶۷

یعنی جہان تلوار
 یعنی وہاں کی تلوار
 خواجہ گاہ تک ۱۲
 سے یہ باب لکھ
 ہے ۱۲ سنہ

(۵۹۱) اشج عبدالقیس نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تیری دو بات
 خدا کو (بہت) پسند ہے یعنی عرض کیا وہ کون دو یا رسول اللہ فرمایا۔ بروباری
 اور شرم یعنی عرض کیا قدیمی۔ ہے یا نبی پیدا ہوئی ہے فرمایا قدیمی ہے یعنی
 کہا خدا کا شکر ہے جسے میری خلقت میں ایسی دو بات پیدا کی ہے جو اسے پسند ہیں۔
 (۵۹۲) وہی حدیث اس میں بیجا آہستگی کا ذکر ہے۔

(۵۹۳) ایضاً۔

(۵۹۴) مزیدہ عبدی نے کہا اشج آہستگی سے آئے یہاں تک کہ نبی صلی اللہ
 علیہ وآلہ وسلم کا (مبارک) ہاتھ پکڑ کر چوہا پھر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا
 جان رکھو تمہاری دو عادت خدا اور خدا کے رسول کو پسند ہے عرض کیا
 اوس پر میری خلقت ہوئی ہے یا وہ میرے ساتھ پیدا کر دیگا میں فرمایا اسی پر
 تیری خلقت ہوئی ہے کہا شکر خدا کا جسے میری خلقت ایسی بات پر کی جو خدا اور
 اس کے رسول کو پسند ہے

سرکشی

۲۶۸

(۵۹۵) ابن عباس نے فرمایا اگر کوئی پہاڑ کسی پہاڑ پر ظلم کر گیا تو ظالم پہاڑ چور چور کر دیا جائیگا۔

(۵۹۶) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا بہشت اور دوزخ سے آپس میں حجت ہوئی دوزخ نے کہا مجھ میں شیخی باز کر برہمستی کر نیوالے لوگ داخل ہونگے اور بہشت نے کہا مجھ میں تو کمزور اور مسکینوں کے سوا کوئی آدمی ہی گاہنہیں اللہ تعالیٰ نے دوزخ سے فرمایا تو میرا عذاب ہے تجھ سے ہم جسکی چاہینگے سزا کریں گے اور بہشت سے فرمایا تو میری رحمت ہے تجھ سے ہم سپر چاہینگے مہربانی کریں گے

(۵۹۷) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تین شخصوں سے کچھ نہیں پوچھا جائیگا جو شخص مسلمانوں کی جماعت سے الگ ہو گیا اور اپنے امام کی نافرمانی کی اور نافرمانی ہی میں مر گیا اس سے کچھ نہیں پوچھا جائیگا اور جو لونڈی یا فلام اپنے مالک کے پاس سے بھاگ گیا اور جس عورت کا شوہر فایب ہے مگر اسکی دنیاوی ضرورت (نفقہ وغیرہ) کا بندوبست کر دیا ہے پھر وہ اسکی پیچھے میں لوگوں کے دیکھنا نیکو آرایش کرتی ہے اور ادھر ادھر چلتی پھرتی ہے اور بھی تین شخص میں جس سے کچھ نہیں پوچھا جائیگا جس شخص نے خدا کی چادر (یعنی) بڑاسی اور خدا کا تہمد (یعنی) عزت کے بارے میں خدا سے جھگڑا کیا اور جس شخص نے خدا کی بات میں شک کیا۔ اور تیسرے خدا کی رحمت سے ناامید ہو نیوالا

(۵۹۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ہر گناہ کے عذاب میں جس قدر تاخیر خدا چاہے غایت قیامت تک تاخیر ہوتی ہے مگر ظلم اور مان باپ کی نافرمانی یا نانا کا ثنا ان گناہوں کا بدلہ مرنیکے پہلے پہلے دنیا ہی میں ہو جاتا ہے۔

(۵۹۹) ابو ہریرہ نے کہا تلوگ میں کوئی آدمی اپنے بھائی کی آنکھ کا تھکا تو دیکھ لیتا ہے اور اپنے آنکھ کی سٹی بھولا ہوا ہے۔

(۶۰۰) معاویہ ابن قرہ نے کہا میں معقل منی کے ساتھ تھا اونھوں نے راہ سے کوئی تکلیف کی چیز پڑی! وہی پھر مجھے کچھ تکلیف کی چیز پڑی ہوئی دیکھ۔ تو ہنسنے جلدی کر کے

۱۔ دینا علم طلب ہے
۲۔ کہ لوگ بوجھ
۳۔ دوزخ میں ڈال
۴۔ دوا جائینگے
۵۔ پیچھے
۶۔ دین اپنی برائی
۷۔ اور عزت کا گھنڈا
۸۔ سے وہ گویا خدا
۹۔ سے جھگڑتا ہے

اون سے پہلے پھیکد یا تب اونھون نے پوچھا بھتیجے تھے یہ کام کیوں کیا میں نے عرض کیا آپکو کرتے ہوئے دیکھا تو میں نے بھی کیا فرمایا بھتیجے خوب کیا میں نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سنا ہے جو شخص مسلمانوں کے رستے سے تکلیف کی چیز ہٹا دیتا ہے اس کے واسطے ایک نیکی لکھی جاتی ہے اور جسکی ایک نیکی بھی مقبول ہوئی وہ بہشت میں داخل ہے۔
تحفہ قبول کرنا۔
۲۶۹

(۶۰۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا آپس میں تحفہ کا لین دین کیا کرو سب دوست ہو جاؤ گے۔

(۶۰۲) انس کہا کرتے میری بیوی آپس میں لین دین کیا کرو اس سے آپس کی محبت بڑھے گی۔
لوگوں کے ناخوش ہو جائیے یہ یہ قبول نہ کرنا۔
۲۷۰

(۶۰۳) ابو ہریرہ نے کہا قبیلہ نبی فرارہ کے ایک شخص نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو ایک اونٹ تحفہ دیا آپ نے جو اسکا عوض یا وہ شخص تھا یا وہ ناخوش ہوا تب میں نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سنا آپ ممبر پر فرما رہے تھے اونٹوں کو لین دین سے کوئی شخص مجھے تحفہ دیتا ہے چھڑکے میرے پاس ہوتا ہے اس انداز سے ہم اسکا بدلہ دیتے ہیں تو وہ ناخوش ہوتا ہے قسم خدا کی سوائے قبیلہ قریش یا جماعت انصار یا قبیلہ ثقیف یا قبیلہ دوس کے اس سال کے بعد ہم عرب کے کسی شخص کا تحفہ قبول نہیں کریں گے۔

۲۷۱

ترم

(۶۰۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اگلے انبیاء کی باتوں میں سے لوگوں کو ایک یہ بات بھی ملگنی ہے کہ جب تو شرم اوٹھا دی تو جو چاہ سو کر
(۶۰۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ایمان ساٹھہ اور کسی شاخین میں یا

عین
سن

فرمایا ایمان ستر اور کئی شاخیں ہیں سب بھاری شاخ کا اللہ تعالیٰ ہی اور سب سے ہلکی شاخ راہ سے تکلیف کی چیزیں ہٹا دینا ہے اور شرم بھی ایمان کی ایک شاخ ہے + (۶۰۶) ابو سعید نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر دے والی کنواری عورت سے بھی زیادہ شرمناک تھے اور جب آپ کو کوئی بات ناگوار ہوتی تو ہلکے چہرے سے سمجھ جاتے۔

(۶۰۷) حضرت عثمان اور حضرت عایشہ نے کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم حضرت عایشہ کے چھاون پر اونہیں کا کمل اوڑھے ہوئے لیئے تھے کہ حضرت ابو بکر نے آنیکی اجازت چاہی آپ نے اجازت دی اور اوسید طرح لیئے رہے حضرت ابو بکر ضرورت سے فارغ ہو کر چلے گئے پھر حضرت عمر نے اجازت چاہی آپ نے اونکو بھی اجازت دی اور اوسید طرح لیئے رہے اونھوں نے بھی اپنا کام کیا اور چلے گئے حضرت عثمان کا بیان ہے پھر میں نے اجازت چاہی تو آپ بیٹھ گئے اور حضرت عایشہ سے فرمایا اپنا کپڑا اچھی طرح سمیٹ لو پھر تم بھی کام سے فارغ ہو کر چلے گئے تب حضرت عایشہ نے عرض کیا یا رسول اللہ آپکو جیسی گھبراہٹ عثمان کے آنے سے ہوئی حضرت ابو بکر اور عمر کے آنے سے ویسی گھبراہٹ ہوتے نہیں دیکھا رسول صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا عثمان نہایت شرمناک آدمی ہے مجھے کھسکا ہوا کہ میں اگر اوسی حال سے اونے ملونگا تو وہ اپنی حاجت پیش نہ کر سکیں گے۔

(۶۰۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا حیا جس بات میں ہوگی اوسکو زینت ہی ہوگی اور بے حیا سی جس بات میں ہوگی اوس میں خرابی ہی ہوگی۔

(۶۰۹) ابن عمر نے کہا ایک شخص اپنے (شرماؤ) بھائی کو شرمائی کے بارے میں نصیحت کر رہا تھا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اودھر سے گزرے آپ نے فرمایا اوسے چھوڑوے شرمانا تو ایمان کی بات ہے۔

(۶۱۰) ابن عمر نے کہا ایک شخص اپنے (ایک شرماؤ) بھائی پر شرمائے کے بارے میں خفا ہو رہا تھا یہاں تک کہ گویا کہہ رہا تھا کہ میں تجھے مارونگا نبی صلی اللہ علیہ

باعتنا ہے نہ ہوا ہے
نہیں ہے

وا کہ وسلم او دھر سے گزرے تو آپ نے فرمایا او سے چھوڑ ڈے مثرمانا تو ایمان کی بات
 (۶۱۱) عائشہ نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میرے مکان میں اپنی دونوں
 ران یا پھلی کھولے ہوئے لیتے ہوئے تھے اتنے میں ابو بکر نے اجازت چاہی آپ نے
 اونکو اجازت دی اور اوسیطح لیٹے رہے اور اون سے کچھ باتیں کیں پھر حضرت عمر
 نے اجازت چاہی آپ نے اونکو اوسی حالت سے اجازت دی پھر اون سے باتیں
 کیں پھر حضرت عثمان نے اجازت چاہی تب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بیٹھ گئے
 اور کہنے لگے برابر کر لیا محمد راوی کہتے ہیں میں یہ نہیں کہتا کہ یہ ایک ہی دن کے واقعات
 ہیں پھر حضرت عثمان اندر آئے پھر باتیں کیں پھر جب وہ چلے گئے میں نے عرض کیا
 یا رسول اللہ ابو بکر آئے تو آپ نے نہ تو اون سے کچھ تپاک کیا نہ اونکی پروا کی پھر
 عمر آئے تو بھی آپ نے نہ اون سے تپاک کیا نہ اونکی پروا کی پھر جو عثمان آئے تو
 آپ بیٹھ گئے اور اپنا کپڑا برابر کر لیا آپ نے فرمایا جس شخص سے فرشتے
 مثرمانے ہیں ہم اس سے شرم نہ کریں۔
 صبح کو اونٹنکے کیا سکے

۲۷۲

۲۷۲

(۶۱۲) ابو ہریرہ نے کہا جب صبح ہوتی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم فرماتے
 أَصْبَحْنَا وَاصْبَحَ الْمَلِكُ لِلَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ لَا شَرِيكَ لَهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَالْيَدِ النَّشُورُ
 ہوئی اور ساری ملک کو صبح ہوئی اور تعریف خدا ہی کو ہے اوسکا شریک نہیں اللہ کے سوا معبود
 نہیں اور اوسکی طرف کٹھا ہونا ہی۔ اور جب شام ہوتی فرماتے أَمْسَيْنَا وَامْسَى الْمَلِكُ وَالْحَمْدُ
 لِلَّهِ لَا شَرِيكَ لَهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَالْيَدِ الْمَصِيرُ میں شام ہوئی اور ساری ملک کو شام ہو گیا اور
 تعریف سب خدا ہی کو ہے اوسکا شریک نہیں اللہ کے سوا معبود نہیں اور اسکے طرف پھر جا گیا

۲۷۳

(۶۱۳) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا خود بزرگ بزرگ ہی کے بیٹے اور وہ

بھی بزرگ ہی کر بیٹے اور وہ بھی بزرگ کے بیٹے۔ یوسف یعقوب کر بیٹے وہ اسحاق کے بیٹے وہ ابراہیم خلیل الرحمن کر بیٹے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جتنے دن یوسف قید خانہ میں رہے اگر اتنا مجھے رہنے کا اتفاق ہوتا پھر مجھ کوئی بلائے آتا تو میں چلا ہی جاتا یوسف کی پاس جو (بادشاہ کا) قاصد آیا تو انہوں نے کہا اپنی سردار کی بہان پھر جا اور درخواست کر (کہ تحقیقات کری) کہ جن عورتوں نے اپنا اپنا تھکے کاتے تھے انکا کیا ماجرا ہے اور لوط (پیغمبر) پر خدا کی رحمت ہو وہ مضبوط کنبے کی طرف اپنا ٹھکانا چاہتا تھے اپنی قوم سے فرماؤ گے کاش خود مجھے تمہاری مقابلہ کی قوت ہوتی یا مضبوط کنبے میں میرا ٹھکانا ہوتا۔ انکے بعد جو پیغمبر بھی گئے بھاری اور مضبوط قوم والے بھیجے گئے۔

خلوص والی دعا

۲۷۴

(۶۱) عبد الرحمن بن زید نے کہا بیچ جمعہ کے دن علقمہ کے پاس آیا کرتے پھر اگر میں وہاں نہیں ہوتا مجھے وہ لوگ بلوائے جتنے چنانچہ ایک دفعہ آئے اور میں وہاں نہیں تھا پھر مجھ سے علقمہ لے اور کہنے لگے دیکھو تو بیچ کیا (بات) لائے ہیں کہتے ہیں تم دیکھتے نہیں لوگ کس قدر دعا کرتے ہیں اور کتنی کم قبول ہوتی ہے اسکا سبب یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ خالص ہی دعا کو قبول فرماتا ہے میں نے کہا کیا عبد اللہ (ابن مسعود) نہیں یہ کہتے تھے علقمہ نے کہا عبد اللہ نے کیا کہا ہے کہ عبد اللہ نے کہا ہے کہ اللہ تعالیٰ سنا بیوا کی دعا دکھا بیوا کی دعا کھیل کی دعا نہیں سنتا اگر جو دعا ٹھیک دل سے ہوتی ہے (اسکو اللہ ضرور سنتا ہے) راوی نے پوچھا تب علقمہ نے فرمایا کیا کہا ہاں دعا میں خدا سے قبول ہی چاہے خدا پر کوئی بات جبر نہیں ہے۔

۲۷۵

(۶۱۶) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تم میں جب کوئی دعا مانگے تو یون نہ کہے تو چاہے تو (دے) بلکہ دینا ہی لازم کرو اور خوب غبت جتاؤ کیونکہ اللہ تعالیٰ جو کچھ دیدے اسکو کچھ بڑی بات نہیں ہے۔

(۶۱۷) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب کوئی تم میں دعا کرے تو دینا ہی لازم ہے یون نہ کہے اسے اللہ تعالیٰ تو چاہے تو مجھے دے اس واسطے کہ اللہ پر کوئی بات جبر نہیں ہے

دعا میں امانت اٹھانا

۲۷۶

(۶۱۸) وہب نے کہا ابن عمر اور ابن زبیر کو میں نے دعا میں منہ پر تھیلی پھرتے دیکھا (۶۱۹) عائشہ نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو میں نے دیکھا ہاتھ اٹھا سے ہوسے دعا میں کہہ رہے تھے میں بھی آدمی ہی ہوں مجھے عذاب مت کر اگر کسی مسلمان کو میں ایذا دوں یا بکروں

خلوص والی دعا
عبد الرحمن بن زید نے فرمایا
کہ میں خدا سے قبول ہی چاہے
خدا پر کوئی بات جبر نہیں ہے

تو اسکے بارے میں مجھے عذاب نکر۔

(۶۲۰) ابو ہریرہ نے کہا طفیل بن عمرو نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے یہاں حاضر ہو کر عرض کیا یا رسول اللہ قبیلہ دوس نہیں ایتے ہیں اور انکار کرتے ہیں انکے حق میں بڑھا فرمائیے بس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم قبلہ رخ ہو گئے اور ہاتھ اٹھایا لوگوں نے سمجھا کہ آپ ان لوگوں کے حق میں بڑھا فرمائینگے آپ نے دعا کی یا اللہ دوس کو ہدایت کر اور اوٹکھلا (۶۲۱) انس نے کہا ایک سال پانی کا تھا ہوا بعض مسلمانوں نے جوہ کے دن نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے سامنے کھڑے ہو کر عرض کیا یا رسول اللہ پانی بند ہو گیا ہے اور زمین پر تپتی پڑی ہوئی ہے اور مال ضائع ہوتا ہے بس آپ نے دونوں ہاتھ اٹھایا اور آسمان میں کہیں بدلی کا پتہ نہ تھا۔ آپ نے اس قدر دونوں ہاتھ دراز فرمایا کہ میں نے آپ کے دونوں نعل کی سفیدی دیکھ لی آپ رہا تھ اونچا کر کے پانی مانگنے لگے ہنوز ہلوگوں نے جوہ پڑھا ہی نہیں تھا کہ اس قدر پانی برسنا کہ نزدیک مکان واسے جو ان آدمی کو گھبرا جانا دشوار ہوا پھر برابر جوہ سے (پانی) ہوتا رہا جب دوسرا جوہ آیا عرض کیا یا رسول اللہ مکانات گرائے اور قافلے رک گئے۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم آدمی کے جلد گھبرا اٹھنے پر مسکرائے اور ہاتھ سے اشارہ کر کے فرمانے لگے۔ یا اللہ (اب) ہمارے ارد گرد (برسے) (اب) ہمیں نہیں بس بدلی مدینہ سے ہٹ گئی۔

(۶۲۲) باب کی دوسری حدیث۔

(۶۲۳) جابر بن عبد اللہ نے کہا طفیل بن عمرو نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے عرض کیا آپ کے لیے دوس کا قلعہ اور وہاں کا لشکر حاضر ہے مگر آپ کو منظور نہوا کیونکہ اس نعمت کو اللہ تمہارے لیے انصار کے لیے ذخیرہ فرمایا تھا پھر طفیل ہی ہجرت کر کے چلے آئے اور انکے ساتھ انکی قوم کے ایک شخص نے ہجرت کی۔ پھر وہ شخص بیمار ہوا اور نہایت گھبرا یا یا آدمی نے اسی مطلب کا دوسرا کوئی کلمہ کہا پھر کھسکتا ہوا ایک تیروان کے پاس پہنچا ایک تیر کا پھل نکالا اور گردن کی دونوں شہرگ کو کاٹ ڈالا بس مگر گیا پھر اسکو طفیل نے خواب میں دیکھا پوچھا تیر سے ساتھ کیا برتاؤ ہوا۔ کہا۔ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی طرف ہجرت کرنے کی بدولت میری ہجرت ہوئی۔ پوچھا تیر سے ہاتھ کا کیا حال ہے۔ کہا۔ اس بارے میں یہ کہا گیا کہ جو خود تیر سے

ہاتھ نے بگاڑا وہ نہیں ہم درست کر نیکی۔ اس قصہ کو طفیل نے بنی صلے اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں عرض کیا تو آپ نے فرمایا یا اللہ اسکے دونوں ہاتھوں کو بھی بخش ہی دے۔
 (۶۲۱) انس نے کہا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اس طرح پناہ مانگتے۔
اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْلِ + وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَبْهِنِ
 اسے اللہ سستی سے تیری پناہ مانگتا ہوں۔ اور نامردی سے تیری پناہ مانگتا ہوں۔
وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَسْرِ
 اور بڑھاپے سے تیری پناہ مانگتا ہوں۔ اور بخلت سے تیری پناہ مانگتا ہوں۔
 (۶۲۵) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا ہے میرے بندہ کو جیسا گمان میرے ساتھ ہو میں اسی گمان کے پاس ہوں اور جب مجھے پکارے میں اسکے ساتھ ہوں۔

۲۷۷

سید الاستغفار

(۶۲۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ سید الاستغفار یہ ہے۔
اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ
 اے اللہ تو میرا رب ہے + تیرے سوا سب سے نہیں + تو نے مجھے پیدا کیا اور میں تیرا بندہ ہوں اور میرا جانک مجھ سے جو سا تیرے عہد پر اور تیری وعده پر قائم ہوں تیری نعمتوں کا شکر اتر رہے ہے۔
وَأَبُوءُ بِكَ بِدِينِي
 اور میں تجھ سے اپنی دین کا اقرار کرتا ہوں۔
وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ
 اپنے شر کی بڑائی سے تیری پناہ مانگتا ہوں۔
 اگر کوئی اسے شام کو کہلے پھر مر جاوے وہ بہشت میں داخل ہوگا۔ یا فرمایا اہل بہشت سے ہوگا۔ اور اگر صبح کو کہلے اور اسی دن مر جاوے تو بھی ویسے ہی فرمایا۔

(۶۲۷) ابن عمر نے کہا۔ ہلوگ گنتے تھے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم۔
أَيُّ جَلْبَةٍ مِنْ سِوَاكَ فَرَمَاتِي - رَبِّ اغْفِرْ لِي وَتُبْ عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ الرَّحِيمُ الرَّحِيمُ
 اے میرے پروردگار مجھ کو بخش دے اور میرے گنہگار کو بخش دے اور تیرا ہی اللہ ہے۔
 (۶۲۸) عائشہ رضی اللہ عنہا نے فرمایا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے چاشت کی نماز پڑھی پھر فرمایا اللہم اغفر لى وتب على انك انت التواب الرحيم
 اے میرے اللہ تو مجھ کو بخش دے اور میرے گنہگار کو بخش دے اور تیرا ہی اللہ ہے۔
 (۶۲۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ سید الاستغفار یہ ہے اللہم أنت ربى انى جو شخص عتقین کے ساتھ دیکھو اسے کہلے پھر شام کے پہلے مر جاوے۔ وہ بہشتی ہوگا۔

اور رات کو یقین کے ساتھ کہلے پھر صبح کے پہلے مر جائے تو بہشتی ہوگا۔

(۶۲۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ خدا کی طرف توبہ کرو میں ہر روز سو بار توبہ کرتا ہوں

(۶۳۰) کعب بن عجرہ نے کہا چند کلمے نماز کے بعد کہنے کے میں انکا کہنے والا ہوں

نہیں ہوگا۔ سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ

اللہ پاک سے تو ترین سب خدا کی ہے اور خدا کے سوا سمیہ نہیں اور اللہ سب سے بڑا ہے

سو دفعہ (کہہ کیا کرے)

۲۷۲

پیٹھ چھپنے کی دعا

(۶۳۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا غایب کے حق میں غائب کی

دعا بہت جلد قبول ہو جاتی ہے۔

(۶۳۲) ابو بکر صدیق نے فرمایا (جن دو شخصوں میں محض خدا کے لئے بھائی چارہ ہو تو)۔ ایک

بھائی کی دعا (دوسرے کے حق میں) قبول ہو ہی جاتی ہے۔

(۶۳۳) ابو زبیر نے کہا۔ دروا حضرت ابو دروا کی بیٹی صفوان کے نکاح میں تھیں۔ صفوان

کا بیان ہے کہ ہم شام میں انکے یہاں آئے ہم دروا تو ملین ابو دروا نہیں ملے۔ ام دروانے

پوچھا اس سال تم حج کا ارادہ رکھتے ہو۔ میں نے کہا ہاں۔ بولیں کہ اچھا ہلو گون کے حق میں

دعا سے خیر کرنا۔ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ہے مسلمان بھائی کے حق میں مسلمان کی

پیٹھ چھپنے کی دعا قبول ہی ہوتی ہے۔ دعا کرنا اے کے سر کے قریب ایک فرشتہ تعینات ہوتا ہے

جب وہ بھائی کے حق میں دعا سے خیر کرتا ہے فرشتہ کہتا ہے آمین اور تجھے بھی یہ نصیب ہو

صفوان کہتے ہیں پھر بازار میں ابو دروا سے ملاقات ہوئی انھوں نے بھی ایسا ہی کہا کہ رسول اللہ

صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ہے۔

(۶۳۴) عبد اللہ بن عمرو نے کہا۔ ایک شخص دعا کرنے لگا۔ اے اللہ بس اکیلے ہکو اور

مجھ (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کو بخش دے۔ تب ہی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تو نے

خدا کی بخشائیش کو بہت لوگوں سے روک دیا۔

(۶۳۵) ابن عمر نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو ایک جلسہ میں سو دفعہ استغفار کرتے ہوئے

وَمَا قَضَيْتَ لِي مِنْ قَضَاءٍ فَاجْعَلْ عَاقِبَتَهُ رَشِيدًا ه

اور میرے واسطے جو حکم تو نے انجام دے گا بہتہ کر +

۲۸۰

نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر درود

۱۴۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جس مسلمان کو صدقہ (دینی کی وسعت) نہ ہو اسکو چاہیے کہ اپنی دعائیں یوں کہے اللہم صل علی محمد عبدک ورسولک وصل علی المؤمنین والمؤمنات والمسلمین والمسلمات
 یا اللہ اپنے بندے اور اپنے پیغمبر محمد پر درود بھیج اور ایماندار
 مرد اور ایماندار عورتوں پر اور مسلمان مرد اور مسلمان عورتوں پر رحمت نازل کر +
 اس شخص کو اسی میں صدقہ کا ثواب ہے۔

۱۴۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ جو شخص اس طرح درود بھیجے۔

اللہم صل علی محمد وعلی آل محمد کما صلیت علی ابراہیم وعلی آل ابراہیم وبارک علی محمد وعلی آل محمد کما بارکت علی ابراہیم وعلی آل ابراہیم
 یا اللہ محمد اور محمد کے آل پر درود بھیج جیسے تو نے ابراہیم اور ابراہیم کے آل پر درود بھیجا ہے اور محمد اور محمد کے آل پر برکت نازل کر جیسے ابراہیم اور ابراہیم کے آل پر برکت نازل کی ہے +
 اور محمد پر اور محمد کے آل پر مہربانی فرما اور محمد پر اور محمد کے آل پر مہربانی فرما +
 میں قیامت کے دن اسکی شہادت کی لو اسی درود کا اور اسکی شفاعت بھی کروں گا۔

۱۴۷) انس اور مالک بن اوس نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم رفع ضرورت کے لیے میدان کی طرف نکلے کوئی ملائین کہ آپ کے ساتھ جا سے پھر حضرت عمر آگئے تو وہی سنی کا یا اور کوئی طہارت کا طرف لیا آپ کے ساتھ پیچھے چلے گئے کیا دیکھتے ہیں کہ آپ ایک طرف راہ کے کنارے سجدے میں مشغول ہیں بس عمر ہٹ کر آپ کے پیچھے بیٹھ گئے یہاں تک کہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اپنا سر مبارک اٹھایا پھر فرمایا عمر تو نے خوب کیا کہ مجھے سجدے میں دیکھ کر کنارے ہو گیا میرے پاس جبریل آئے اور کہا کہ جو شخص آپ پر ایک مرتبہ درود بھیجے گا اللہ تعالیٰ اس پر دس بار درود بھیجے گا اور اسکے دس درجے بلند کرے گا۔

۱۴۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو شخص ہم پر ایک بار درود بھیجے گا اللہ تعالیٰ اس پر دس بار درود بھیجے گا اور دس گناہ اسکے مٹا دیں گے۔

ادب المفرد کا پانچواں حصہ

۲۸۱

کسی کے نزدیک نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا تذکرہ جو وہ آپ پر درود بھیجے۔

جو شخص ادب المفرد کا نام پورا پورا

ادب المفرد کا پانچواں حصہ

(۶۴۸) حضرت جابر نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم منبر پر چڑھنے لگے۔ جب پہلے زینے پر پائون رکھا فرمایا آمین پھر دوسرے زینے پر چڑھتے فرمایا آمین۔ پھر تیسرے زینے پر چڑھے فرمایا آمین۔ لوگوں نے عرض کیا یا رسول اللہ ہننے آپ کو تین بار آمین فرماتے ہوئے سنا۔ فرمایا جب میں پہلے زینے پر چڑھا حضرت جبریل صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میرے پاس آکر کھنے لگے جس شخص کو رمضان کا مہینا ملا بھی پھر گزر بھی گیا اور اسکی بخشائیش ہوئی وہ بے نصیب ہے میں نے کہا آمین۔ پھر جبریل نے کہا جس شخص کو اُسکے مان باپ دونوں یا کسی ایک کا زمانہ ملا اور ان دونوں کی بدولت یہ شخص بہشت میں بھیجا گیا وہ بے نصیب ہے میں نے کہا آمین۔ پھر کہا۔ جس شخص کے پاس آپ کا تذکرہ ہوا عند اُس نے آپ پر درود نہ بھیجا وہ بے نصیب ہے۔ میں نے کہا آمین۔

(۶۴۹) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو پھر ایک بار درود بھیجے خدا اُس پر دس بار درود بھیجے گا۔

(۶۵۰) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ نے فرمایا۔ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم منبر پر چڑھے پھر فرمایا آمین آمین آمین۔ لوگوں نے عرض کیا یا رسول اللہ ایسا تو حضور نہیں کیا کرتے تھے۔ آپ نے فرمایا مجھے جبریل نے کہا اے آخر اول حدیث الباب بہ تغیر لیسیر۔

(۶۵۱) ابن عباس رضی اللہ عنہما نے فرمایا حضرت بلورہ بنیت الحارث کا نام ترہ تھا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو پسند نہیں ہوا کہ اس نام کے ساتھ اُنکے یہاں تشریف لیجائیں تو آپ نے اُنکا نام بدل کر جویریہ نام رکھ دیا آپ اُنکے یہاں گئے پھر وہاں سے نکل آئے پھر جب اچھی طرح دن چڑھا تو آپ پھر اُنکے یہاں تشریف لیگے اور وہ وہیں پر بیٹھی ہوئی تھیں آپ نے فرمایا تم برابر میں بیٹھی رہیں۔ ہننے تمہارے بعد تین بار چار کلمات کہے ہیں کہ تم اپنی ساری باتوں کو وزن کرو تو تل جائیں

(۶۵۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جہنم سے خدا کی پناہ طلب کرو عذاب قبر سے خدا کی پناہ مانگو سچ و جال کے فتنے سے خدا کی پناہ مانگو جینے اور مرنے کے فتنے سے خدا کی پناہ مانگو ظالم کے حق میں مظلوم کی دعا

فان باب کتبہ وادعواکم
اور جبریل نے فرمایا
آمین آمین آمین
اور جبریل نے فرمایا
آمین آمین آمین
اور جبریل نے فرمایا
آمین آمین آمین
اور جبریل نے فرمایا
آمین آمین آمین

کہ میں نے دعا تو کی مگر قبول نہیں ہوئی تو اسکی دعا قبول کیجاتی ہے۔
 (۶۶۰) ابی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ جب تک آدمی گناہ کی یا انا کا ٹٹنے کی دعا
 نہ کرے یا جلدی کر کے دعا کرنا چھوڑ دے کہ ہننے دعا تو کی مگر دیکھتا ہوں کہ قبول نہیں ہوئی
 تو اسکی دعا قبول ہی ہوتی ہے۔

۲۸۵

سستی سے خدا کی پناہ چاہنا

(۶۶۱) ابی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم دعا فرماتے۔ **اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْمَغْرَمِ**۔
اور اللہ میں سستی سے اور دین سے تیری پناہ چاہتا ہوں اور سب دجال کے قتل سے تیری پناہ چاہتا ہوں اور دین سے تیری پناہ چاہتا ہوں
 (۶۶۲) ابی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم۔ جینے اور مرے کی برائی سے اور عذاب قبر سے اور
 سب دجال کے نذہ سے خدا کی پناہ چاہتے۔

۲۸۶

جو کوئی خدا سے سوال نہ کرے خدا اس سے غصہ ہوتا ہے

(۶۶۳) ابی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو کوئی خدا سے مانگتا نہیں ہے خدا
 اس پر غصہ ہوتا ہے۔

(۶۶۴) اپنی حدیث تہذیبیہ۔

(۶۶۵) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا خدا سے دعا کرو تو وہ بنا ہی لازم
 کرو لیون کوئی کہے کہ تو چاہے تو دے کیونکہ اللہ پر کچھ دشواری نہیں ہے۔

(۶۶۶) ابی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو شمس دن رات صبح اور شام کو تین تین بار

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

کہہ لیا کرے (اُسن دن یا رات میں کوئی صدمہ نہیں پہنچے گا) اور وہی کو فاج کا عارضہ ہو گیا تھا

انکا شاگرد کو دیکھنے لگا تو وہ سمجھ گئے پھر کہا کہ حدیث ایسی ہی ہے جو ہننے سے بیان کیا مگر تعذیر

اتنی طاری ہوئی تھی اس سبب سے بدن مجھے فاج ہوا ہے اُسن مجھے اس دعا کے

پڑھنے کا اتفاق ہی نہیں ہوا۔

۲۸۷

جہاد میں صفت جنگ کے پاس دعا

(۶۶۷) اسلم بن سعد رضی اللہ عنہ نے فرمایا اور وقت آسمان کے دروازے کھلیا تو میں۔

۱۰
 میں اللہ کے نام سے
 شروع ہوا کہ میں جسکے
 نام کے ساتھ کوئی
 چیز آسمان سے نہیں
 میں ضرور نہیں کرتے
 اور وہ ہننے والا
 جانشینا ہے ۱۲

اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَصَرِي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ اسْمُكَ كَوَّابٌ شَامٌ وَصَبْحُ تَيْنِ تَيْنِ بَارِكْهُا كَرُوهُنِ
 یا اللہ میری آنکھ میں عافیت سے تیری سوا کوئی محبوب نہیں
 اور یہ دعا اللہ عزوجل نے کفر سے اور کفر سے تیری پناہ میں آتا ہوں یا اللہ میں عذاب سے تیرے پناہ میں آتا ہوں
 الْقَبْرِ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ اسْمُكَ كَوَّابٌ شَامٌ وَصَبْحُ تَيْنِ تَيْنِ بَارِكْهُا كَرُوهُنِ
 تیرے سوا کوئی محبوب نہیں

تھے میتے یہ دعائیں میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو کہتے سنتی ہیں اور مجھ کو آپ کی
 سنت کی اقتدا بہت پسند ہے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا بچپنی کی دعائیں
 ہیں اللَّهُمَّ رَحْمَتَكَ أَرْجُو وَلَا تَكْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ أَصِلْ لِي شَانِي كُلَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ
 یا اللہ میں تیری مہربانی کا امید دار ہوں اور مجھ کو ہرگز نہ تیری ہمت اور ہمت کر اور تیری ہر حالت کو تیری سوا کوئی

۲۹۲

استخارہ کی دعا

(۱۰) جابر نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ہلوگون کو کلاموں میں استخارہ کرنے کو
 تعلیم فرماتے تھے جیسے قرآن کی سورت تعلیم فرماتے کہ جب کسی بات میں تشویش اور تردد
 ہو تو دو رکعت نماز پڑھ کر یہ دعا پڑھی۔ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ
 اور تیرا افضل جانتا ہوں اس لیے کہ تجھی کو قدرت ہے جیسے قدرت نہیں ہے اور تو جانتا ہی میں نہیں جانتا ہوں اور تو غیب کی
 وَالْقُتُوبِ اللَّهُمَّ إِن كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي
 یا اللہ میں جانتا ہوں۔ یا اللہ اگر تو جانتا ہو کہ یہ کام میرے لیے میری دین میں اور دنیا میں اور میری انجام کار میں اچھے ہیں
 یا فرمایا فی عاجل امری واجلہ فاقدیرہ لی وإن كنت تعلم ان هذا الامر شر لي في ديني
 اور میری موجودہ حالت میں اور آئندہ ہی (بہتر ہے) تو اسکو مجھے نصیب کر اور اگر تو جانتا ہوں کہ یہ کام میرے لیے میرے دین میں
 وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي يَا فَرِّمَ لِي فِي عَاجِلِ أَمْرِي وَاجِلِهِ فَاصْرِفْهُ عَنِّي وَاصْرِفْهُ عَنِّي
 اور میری دنیا میں اور میرے انجام کار میں برے ہے۔ میری موجودہ حالت میں اور آئندہ ہی (برا ہے) تو اسکو مجھے نہیں دے اور مجھ کو اس
 اقدیر لی الخیر حیث کان ثم رضینی اور اپنی حاجت کا نام لیکر بیان کرے۔

(۱۱) جابر بن عبد اللہ نے فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اسی مسجد الفتح
 میں پیر منگل بدھ کے دن دعا فرمائی وہ دعا بدھ کو روز دو نمازون کو درمیان
 مقبول ہوگئی جابر نے کہا مجھے جب کہی کوئی سخت مشکل کام پیش آیا اور میں زووقت کو
 خیال کر کے بدھ کو دن دونوں نماز کو درمیان اوس وقت دعا کی اوسکی مقبولیت مجھ کو معلوم ہوگئی۔
 (۱۲) انس نے فرمایا میں نبی صلعم کے ساتھ تھا ایک شخص نے ان لفظوں سے
 دعا کی يَا بَدِيعَ السَّمَوَاتِ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا إِلَهَ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ فرمایا جانتے ہو اس شخص نے
 کیوں کہ دعا کی قسم اوس ذات کی جسکے نام میں میری جان ہی اوس نام سے خدا کو پکارا
 کہ جب اللہ اوس نام سے پکارا جاوے تو قبول ہی کرے۔

یا اللہ میری آنکھ میں عافیت سے تیری سوا کوئی محبوب نہیں

اوس سے بلا دفع کیجا بیگی عرض کیا یہ تو بہت ہوا فرمایا اسد بہت بڑا ہے۔
 (۷۱۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو ایماندار آدمی خدا کی جانب منہ
 کر کے کچھ اوس سے مانگتا ہو خدا اوسے وہ چیز دے ہی دیتا ہے یا دنیا ہی میں جلدی
 کر کے اوسکو دیدیا یا آخرت کے لئے اوسکے واسطے جمع کر رکھا مگر شرط یہ ہے
 کہ دعا کرنیوالا جلدی نکرے عرض کیا یا رسول اللہ اوسکی جلدی کیا فرمایا
 کہنے لگے کہ دعا کرتا ہوں دعا کرتا ہوں پر قبول ہوئیوالی نظر نہیں آتی۔
 دعا کرنیکی بزرگی

۲۹۵

(۷۱۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا خدا کے نزدیک کسی چیز کی بزرگی
 دعا سے بڑھ کر نہیں ہے۔

(۷۲۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا دعا کرنا بڑی بزرگ عبادت ہے۔

(۷۲۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا دعائیں عبادت ہے پھر آپ نے

یہ آیت پڑھی اَدْعُوْا بِيْ اَسْتَجِبْ لَكُمْ

(۷۲۲) عائشہ رضی اللہ عنہا نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے کسی نے پوچھا کون

عبادت افضل ہے فرمایا اپنے لئے دعا کرنا۔

(۷۲۳) معقل بن یسار نے کہا میں ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کے ساتھ نبی صلی اللہ علیہ

وآلہ وسلم کے یہاں چلا (جب وہاں پہنچا) آپ نے فرمایا اے ابو بکر شرک

تم لوگوں میں چیونٹی کے رینگنے سے بھی بڑھ کر پوشیدہ ہے ابو بکر رضی اللہ عنہ نے

عرض کیا یا رسول اللہ کیا خدا کے ساتھ معبود ٹھہرانے کے سوا یہی کوئی شرک ہے

نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اوسی ذات پاک کی قسم جسکے ہاتھ میں

میری جان ہے شرک چیونٹی کے رینگنے سے بھی بڑھ کر پوشیدہ ہے۔ میں

تجھے ایک بات ایسی بتا دوں جسکے کہنے سے تہورا اور بہت شرک سب تجھے

جاتا رہے فرمایا کہ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَشْرُکَ بِكَ وَاَنَا اَعُوْذُ

وَاسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ۔
 اور جہاں آنتہ ہو جاوے اوسکی بخشش چاہتا ہوں۔

ہوا بھنے کے وقت دعا

۲۹۶

(۷۲۴) انس رضی اللہ عنہ نے فرمایا جب اندھڑ چلتی تو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم یہ فرماتے **اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ** یا اللہ اس ہوا بھنے میں خیر سے پہلای جا رہا ہوں اور اس کے بھنے کی برائی سے تیری پناہ میں آتا ہوں۔
 (۷۲۵) یزید بن سلمہ نے کہا جب اندھڑ چلتی آنحضرت یہ فرماتے **اللَّهُمَّ لَا تَجْعَلْنِي مِمَّنْ لَا عَقِيْمًا** یا اللہ بار بار

اور جس سے پہلای جا رہی ہو اسکی برائی سے تیری پناہ میں آتا ہوں

ہوا کو برا کہنا

۲۹۷

(۷۲۵) اُبی نے کہا ہوا کو گالی مت دیا کرو جب ہوا کی باعث تمکو کوئی ناگوار بات (ہو نیوالی) نظر آوری تو یہ کہو **اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذَا الرِّيحِ وَخَيْرَ مَا فِيهَا وَخَيْرَ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ وَتَقُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هَذَا الرِّيحِ وَشَرِّ مَا فِيهَا وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ** یا اللہ میں تجھے اس ہوا کی پہلای مانگتا ہوں اور جو چیز اس میں آ رہی ہے اور جس سے پہلای جا رہی ہو اسکی پہلای (دفع ہوں) اور اس ہوا کی برائی سے تیری پناہ میں آتا ہوں اور جو چیز اس میں آ رہی ہے
 (۷۲۶) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ہوا خدا کے حکم سے ہے رحمت ہی لاتی ہے عذاب (بھی لاتی ہے) اوسکو گالی مت دو بلکہ خدا سے ہوا کی بھلائی چاہو اور اوسکی برائی سے خدا کی پناہ مانگو۔

عذاب میں روح کا لفظ

کڑکے کے وقت کی دعا

۲۹۸

(۷۲۷) عبداللہ (ابن عمر) نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جب گرج اور کڑک (کی آواز) سنتے یہ فرماتے **اللَّهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِصَعْفِكَ وَلَا تَهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذَلِكَ** یا اللہ ہمیں ابو کڑکے سے مت مار ڈال اور ہمیں اپنے عذاب سے ہلاک نہ کرنا اور ہمیں پہلے ہی عافیت عطا فرما۔

گرج سننا

۲۹۹

(۷۲۸) عکرمہ نے کہا ابن عباس جب گرج کی آواز سنتے یہ کہتے **سُبْحَانَ الَّذِي سُبِّحَتْ لَهُ** فرمایا کہ رعد ایک فرشتہ ہے بدلی کو آواز دیتا جو بطرح چرواہا بکریوں کو چلاتا ہے۔

(۷۲۹) عبداللہ ابن زبیر کے بیٹے عامر نے کہا عبداللہ ابن زبیر جب عذکی آواز سنتے بات چھوڑ کر یہ کہنے لگتے **سُبْحَانَ الَّذِي سُبِّحَ بِهِ الْعَمْدُ بِحَمْدِهِ** پاک ہو جسکی تعریف میں رعد نکلے گا ہے اور
وَالْمَلَأَكَةُ مِنْ خَيْفَتِهِ کہتے یہ (رعد) زمین والوں کو لئے سخت دہمکی ہے (کریج کرتے ہیں)

عافیت کی دعا

۳۰۰

(۷۳۰) اوسط بن اسمعیل نے کہا رسول صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے وفات کے بعد بیٹے ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ سے سنا فرمایا کہ پہلے سال نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اسی جگہ جہان میں کھرا ہون کھڑی ہوئی یہ کھکر رونے لگے پھر فرمایا سچائی مت چھوڑو سچائی نیکو کاری کی ساتھی ہے اور یہ دونوں بہشت میں ہیں اور جہنم سے بچتے رہنا جو ٹھہرے بدکاری کی ساتھی ہے اور یہ دونوں دوزخ میں ہیں اور خدا سے آسائش مانگا کرو یقین کر بعد عافیت سے بہتر کوئی چیز مل نہیں سکتی آپس میں ایک دوسرے کو کاٹ مت دو اور ایک دوسری کی جانب سے مٹھنہ مت پھیر لیا کرو آپس میں حسد اور بغض مت رکھو اور اسی خدا کو مذکورہ آپس میں بہائی ہو جاؤ۔

(۷۳۱) معاویہ نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ایک شخص کے قریب کر گذرے وہ دعا کر رہا تھا اللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ تَمَامَ النِّعْمَةِ آپ نے پوچھا پوری نعمت تجھے معلوم ہے پہر خود فرمایا بہشت میں جانا اور دوزخ سے بچنا یہی پوری نعمت ہے پہر آپ ایک دوسری شخص کے قریب ہو کر گذری وہ دعا کر رہا تھا اللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الصَّبْرَ آپ نے فرمایا تو اپنے رب سے بلا کا سوال کر رہا ہے اور اس سے عافیت کا سوال کر۔ اور آپ ایک تیسری شخص کے قریب ہو کر گذرے وہ کہہ رہا تھا يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ آپ نے فرمایا (اب کچھ) مانگ۔

(۷۳۲) عباس بن عبدالمطلب نے فرمایا میں نے عرض کیا یا رسول اللہ مجھے کچھ بتا دیجئے کہ میں خدا سے مانگوں فرمایا اے عباس خدا سے عافیت طلب کرو بعد اس کے تین دن کے بعد منی پہر حاضر ہو کر عرض کیا کچھ مجھے بتا دیجئے کہ میں خدا سے مانگوں فرمایا اے عباس میں نے پوچھا خدا کے چچا خدا سے دنیا اور آخرت کیلئے عافیت طلب کرو۔

بلا کی دعا نہ کرے

(۷۳۳) انس نے فرمایا ایک شخص نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو سامنے دعا کر نیکیاں اور اللہ مجھے مال مت دو کہ میں آپس میں سے صدقہ خیرات کروں مجھ کو کسی بلا میں مبتلا نہ کرے

ع
جہان میں کھرا ہون
اولیٰ کا قول ہے
جہان میں کھرا ہون
رضی اللہ عنہ کی ساتھی ہے
شرح ہوتی ہے
نبی صلعم نے فرمایا
اللہ اعلم بالصواب

جس میں ثواب ملے اس پر اپنے فرمایا سبحان اللہ اس کی تہا کہ ان یون کہوں نہیں
 کہنا اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ فِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ -
 اے اللہ دنیا میں میرا بہلا کر اور آخرت میں میرا بہلا کر امد میں دوزخ کے عذاب سے بچالے۔

(۳۴) انس رضی فرمایا ایک شخص نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے یہاں حاضر ہوا
 وہ شخص بیماری کی تکلیف سے ایسا ہو رہا تھا جیسے نوجوا ہوا چوہہ اپنی فرمایا اللہ سے
 کچھ دعا کرو لگا دعا کرنے اللَّهُمَّ مَا آتَيْتَ مُعَذِّبِي بِهِ فِي الْآخِرَةِ فَجَلِّهِ فِي
 الدُّنْيَا اس پر اپنے فرمایا سبحان اللہ اس کی سکت تہا کہ ان یون کہوں نہیں کہ اور تملوگ اس کی طاقت

کہاں کہتی ہو یہ کیوں نہیں کہا اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ فِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَفِي
 عَذَابِ النَّارِ اور اپنے اس شخص کے حق میں دعا فرمائی بس اللہ ہی اور صحت دی۔
 دوزخ سے بچالے
 بلا کی مشقت سے پناہ مانگے
 ۳۰۲

(۳۵) عبد اللہ بن عمر نے فرمایا آدمی اتنا ہی کہا کہ چپ رچاتا ہے اللَّهُمَّ
 إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ جُحْدِ الْبَلَاءِ پتا ہو کہ جب یہ کہو تو اتنا اور بھی کہہ لیا کرے
 بلا کی مشقت سے میں تیرا پناہ میں آتا ہوں
 الابلع فيه علا -
 گروہ بلا جنہیں بزرگی (حاصل) ہو

(۳۶) ابو ہریرہ نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بلا کی مشقت سے اور بد بختی
 حاصل ہونے سے اور دشمنوں کی خوشی سے اور بڑی انجام سے پناہ مانگا کرتے تھے۔
 ننگی کو وقت چھیر تھا ہوا اس کی بات دوہرانا
 ۳۰۳

(۳۷) ابو عقرب نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے روزہ رکھنے کو پوچھا اپنی فرمایا ہر مہینے
 ایک روز رو رکھ لیا کر عرض کیا میرا ماں باپ پر فدا ہوں کچھ بڑا دیکھو فرمایا بڑا دیکھو
 بڑا دیکھو ہر مہینے دو روز رکھ لیا کر میں عرض کیا میرا ماں باپ پر فدا ہوں کچھ اور
 بڑا دیکھو مجھ میں اتنی قوت ہے فرمایا مجھ میں قوت ہے مجھ میں قوت ہے پھر آپ یہ چپ
 ہو گئے کہ میں نے سمجھا اب آپ ہرگز نہ بڑا دیکھو پھر اپنی فرمایا ہر مہینے تین دن روزہ رکھ لیا کرے

(۳۸) جابر بن عبد اللہ نے فرمایا ہلوگ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو ساتھ تھی اتنی میں ایک نہایت سببی
 ہو ہوا اوٹھی اپنی فرمایا جانتی ہو یہ کیا مسلمانوں کی غیبت کرنے والوں کی یہ ہوا ہے۔

عبداللہ بن مسعود

(۷۳۹) جابر بن زفر یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو زمانہ میں ایک فوج ایک بدبو ہوا چلی آنی فرمایا کہ بعض منافقوں نے بعض مسلمانوں کی غیبت کی ہے اور وہی وہی ہے اور اوستھی ہے۔
 (۷۴۰) ام عبد کو بیٹے نے فرمایا جس شخص کے سامنے کوئی کسی مسلمان کی غیبت کرے اور وہ اس مسلمان کی طرف داری کرے تو اس کو بدو اللہ دنیا و آخرت میں اس کا بھلا کرے گا اور اس کو بائیں کی غیبت کیلئے پورے کچھ اسکی طرف داری نہ کی تو اللہ کے بدو دنیا اور آخرت میں اس کا برا کرے گا اور مسلمان کی غیبت سے زیادہ برا رقمہ کبھی کسی نے کہا یا یہی نہیں اگر وہی عیب بیان کیا جو اسے معلوم ہے تب تو غیبت ہوئی اور اگر اس کا ایسا عیب بیان کیا جو اسے معلوم بھی نہیں ہے تو بہتان باندھا۔
 غیبت اور خدا کا حکم کہ کوئی تم میں کسی کی غیبت نہ کرے۔

۳۰۵

(۷۴۱) جابر بن عبد اللہ نے فرمایا ہلوگ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو ساتھ تھے آپ نے قبروں پر پہنچے اور انکو مردوں پر عذاب ہو رہا تھا فرمایا یہ دونوں کچھ بڑی بہاری بات کی علت میں نہیں عذاب میں گرفتار ہیں بلکہ ایک تو گوئی غیبت کیا کرتا تھا اور دوسرے کو پیشاب سے کچھ کراہت نہ تھی پہر آپ نے ایک یا دوسری شاخ کھجور کی منگوائی پہر ڈنکرے کر کے ایک ایک دونوں قبروں پر گڑوا دیا اور فرمایا سمجھ لو جب تک یہ دونوں شاخیں سہری ہیں یا فرمایا خشک نہیں ہوتیں تب تک ان دونوں کو عذاب میں کچھ خفت رہے گی۔

(۷۴۲) قیس نے کہا عمر بن العاص نے اپنے خدیو امیونین چلو جاتی تھی اتنی میں ایک مرد ہوئی پہر اسے خچر کو قریب کر گزری پہر فرمایا خدا کی قسم اسکو کوئی بہرہ نہ پہرے گا تو بہتر ہے کہ کسی مسلمان کا گوشت کھا کر مردے کی غیبت

۳۰۶

(۷۴۳) ابو ہریرہ نے فرمایا ما عہد بن مالک سلمی بنی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہوئی (اور زنا صادر ہوئی کا اقرار کیا) آپ نے اسکو جو تھے اقرار پر سنگسار کر دیا پہر اسکو قریب ہو کر گزری اور آپ کو ساتھ چند اصحاب بھی تھے اور میں ایک شخص بولایا خائن بار بار نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو حضور میں حاضر ہوا آپ برابر التورہی آخر کتوں کی موت مار ڈالا گیا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم چپ چاپ (سلنے) رہے یہاں تک کہ ایک مرد اگدھے کی لاش پر گزر ہوا اسکا پانوں (اکڑ کر) کھڑا ہو رہا تھا آپ نے فرمایا تم دونوں اسمین سے

کھاؤ عرض کیا یا رسول اللہ در گدھے کی لاش سے۔ آپ نے فرمایا ابھی تم لے جو اپنے (مسلمان) بھائی کی آبروریزی کی وہ اس سے کہیں بڑھ کر ہے قسم! ذات پاک کی۔ جسکے ہاتھ میں محمد کی جان ہے وہ بہشت کی نروں سے ایک نہر میں غوطے لگا رہا ہے۔

باپ کے ساتھ ولایت کے سر رکھنے اور برکت کی دعا سے

(۷۶) عبادۃ بن الولید کے کہا۔ میں اپنے باپ کے ساتھ چلا اور میں اس وقت نوجوان سال کا تھا بس ایک بوڑھے آدمی سے ملاقات ہوئی میں نے اسے عرض کیا چچا آپ یہ صوت کی چادر اپنے غلام کو کیوں نہیں دیدیتے اور وہ چادر آپ لے لیتے تو آپ کے پاس ایک قسم کی دو چادر ہو جاتی اور اسکے پاس صوت کی ایک چادر ہوتی بس وہ میرے باپ کی طرف متوجہ ہوئے پوچھا تمہارا بیٹا ہے باپ نے کہا ہاں بس اٹھوں نے میرے سر پر ہاتھ پھیرا اور کہا باریک اللہ فیلہ میں گواہی دیتا ہوں میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو فرماتے سنا ہے کہ جو تم کھاؤ وہی انکو بھی کھاؤ اور جو تم پہنو وہی انھیں بھی پہناؤ نتیجے دنیا کا اسباب جاتا رہنا مجھے اس بات سے زیادہ پسند ہے کہ آخرت کو سنبالیں جو کوئی مجھ سے کچھ لے لے۔ میں نے باپ سے پوچھا۔ آیا یہ کون بزرگ ہیں فرمایا ابو البیرا بن عمر و صحابی۔

مسلمانوں میں بے تکلفی سے

(۷۷) محمد بن زیاد نے کہا اگلے گوگ اپنے اپنے لڑکے ہانوں کے ساتھ سب اکٹھے ملے جلے رہا کرتے تھے اکثر ایسا اتفاق ہوتا کہ کسی کے یہاں مہمان آ گیا ہے اور دوسرے کسی کی ہانڈی آگ پر چڑھی ہوئی ہے بس مہمان والے نے اپنے مہمان کے واسطے ہانڈی لے لی پھر ہانڈی والے ہانڈی تلاش کرنے لگے کہ ہانڈی کس نے اٹھائی بس مہمان والے نے کہیا کہ ہننے لے لی ہے۔ مہمان کے واسطے تو ہانڈی والے بولے وہ ہانڈی حنفہ انھیں مبارک کرے یا ایسی ہی کوئی دوسری بات کہدیتے۔ محمد کہتے ہیں کئی پکانی اردنی میں بھی یہی معاملہ ہوتا اور اس طرح برابر اور ان لوگوں کے درمیان فقہائی کی تو دیوار ہوتی تھی بقیہ راوی کتاب ہے ہنہ محمد بن زیاد اور ان کے ساتھیوں کا بھی یہی حال دیکھا۔

مہمان کی خاطر اور خدمت نمود کرنا

۳۱۰

دلیل سے اللہ اللہ علی من کل عند منزلة وهو شہید جزاء تو مملکت ۱۲

بہن ایک نوجوان سال کا

(۴۸) ابو ہریرہ نے فرمایا۔ ایک شخص نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے یہاں مہمان آیا آپ نے ازواج مطہرات کے یہاں کھلا بھیجا سب کے یہاں سے خبر آئی پہلو گون کے یہاں پانی البتہ ہے اور کچھ بھی نہیں۔ تب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کون اسکی مہانداری کرتا ہے ایک انصاری نے عرض کیا میں پھر وہ اسکے اپنے مکان پر لو گئے بیوی سے کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے مہمان کی خاطر واری کر بیوی نے کہا میرے یہاں تو لو گون کے کھانیکے سوا کچھ بھی نہیں ہے۔ میان نے کہا۔ اچھا تو کھانا نکال رکھ اور چراغ صیک کر لے اور جب لڑکے کھانا مانگیں تو انکو (ہلا کر) سلاو سے بس کھانا تھیک کر کے چراغ بھی سنبھال دیا اور لو گون کو بھی سلا دیا پھر اٹھیں جیسے چراغ درست کرنے چلین بس چراغ بجھا دیا اور دونوں میان بیوی مہمان کے ساتھ کھانے پر بیٹھ گئے اور ایسا ظاہر کیا جیسے کھا ہی رہے ہیں اور دونوں نے فاتے سے رات کاٹ دی پھر صبح ہوئی سویرے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے آپ نے فرمایا خدا تم دونوں کی بات پر نہیں پڑایا فرمایا خدا کو تمہارے کام پسند آئے اور اللہ تعالیٰ نے یہ آیت نازل فرمائی **وَلَوْ تَرَوُنَّ عَلٰیٰ نَفْسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَنْ يُوقِ شَهْمِ نَفْسِهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ** اور جو شخص سب سے بچتا رہے وہی لوگ مراد کو پہنچتے ہیں اگرچہ خود انکو فاقہ ہو جائے اور جو شخص سب سے بچتا رہے وہی لوگ مراد کو پہنچتے ہیں اگرچہ خود انکو فاقہ ہو جائے

۱۱۱

اور جو شخص سب سے بچتا رہے وہی لوگ مراد کو پہنچتے ہیں اگرچہ خود انکو فاقہ ہو جائے اور جو شخص سب سے بچتا رہے وہی لوگ مراد کو پہنچتے ہیں اگرچہ خود انکو فاقہ ہو جائے

(۴۹) ابو شریح عدری نے کہا میرے ان کانوں نے سنا ہے اور میری آنکھوں نے دیکھا ہے جب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم فرما رہے تھے آپ نے فرمایا جسکو خدا پر اور قیامت پر ایمان ہو اسکو اپنے ہمسائی کی بزرگداشت کرنا چاہیے اور جسکو خدا پر اور قیامت پر ایمان ہو اسکو اپنے مہمان کی خاطر اور اسکی دعوت میں تکلف کرنا چاہیے کسی نے پوچھا تکلف کیا فرمایا ایک دن ایک رات اور مہانداری تین دن اسکے بعد پھر صدقہ ہے اور جسکو خدا پر اور قیامت پر ایمان ہو اسکو اچھی بات بولنا چاہیے یا چپکار ہے۔

۱۱۲

مہانداری تین دن

(۵۰) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا مہانداری تین دن کی اسکے بعد پھر صدقہ ہے۔ مہمان اتنے دن نہ ٹھہرے کہ مہمان پر گران ہو جا

۱۱۳

(۷۵۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جسکو خدا پر اور قیامت پر ایمان ہو وہ اچھی بات بولے یا چپ رہے اور جسکو خدا پر اور قیامت پر ایمان ہو وہ اپنے مہمان کی خاطر کرے ایک رات دن اسکی دعوت میں تکلف بھی کرے اور مہمانداری تین دن تک ہے اسکے بعد پھر صدقہ ہو اور مہمان کو اسقدر قیام جائز نہیں کہ گھر والے کو تکلیف ہونے لگے۔
کوئی صبح تک کیسے گھر میں رہے۔

۳۱۴

(۷۵۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ رات کے مہمان کی مہمانداری ہر مسلمان پر چھی حق سے پس ہر شخص صبح تک کسی کے گھر میں رہے اسکے ذمہ مہمان کا حق ہے چاہے وہ وصول کرے خواہ چھوڑ دے۔

اگر مہمان صبح کو خسر دم آئے

۳۱۵

(۷۵۳) عقبہ بن عامر نے کہا میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے عرض کیا کہ حضور ہلو گون کو بھیجا کرتے ہیں اور ہم کہیں اتر پڑتے ہیں اگر وہاں والے ہماری مہمانداری نہ کریں۔ تو اس بارہ میں حضور کی کیا رائے ہے آپ نے فرمایا جو مناسب مہمانداری تمہاری کریں تو قبول کرو اور نہ کریں تو ان سے حق مہمانداری واجب و اجبی وصول کرو۔

مہمان کی خدمت میں زبان خود ہی کرے

۳۱۶

(۷۵۴) ابن سعد نے کہا ابو اسید ساعدی نے اپنے بیاہ بن نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی دعوت کی تو انکی بیوی جو دوسری تھیں وہی مہمانوں کی خدمت میں مصروف تھیں وہ کہتی تھیں تلوگ جانتے ہو میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے لیے کیا بجا یا تھا شب کو کچھ نہ پتھلوٹی یا تعالیٰ میں جو بجا مہمان کے سامنے کھانا لگا کر خود نماز پڑھنے لگے

۳۱۷

(۷۵۵) نسیم بن قسب نے کہا۔ حضرت ابو ذر کے مہمان میں آیا ان سے ملاقات نہیں ہوئی میں نے انکی بیوی سے پوچھا ابو ذر کہاں ہیں بولیں ابھی آتے ہیں کسی کام میں ہیں تب میں انتظار میں بیٹھ گیا اتنے میں وہ بھی آہی گئے اور دو اونٹ بھی انکے ساتھ تھے ایک اونٹ نے دوسرے کے چوڑنگو بالکل تر کر دیا تھا کیونکہ دونوں کی گردن میں ایک ایک مشک لٹکی ہوئی تھی۔ پھر انھوں نے دونوں مشکیزے رکھ دیے اور رکھ کر ادھر آئے میں نے کہا ابو ذر سے بڑھ کر کسی کی ملاقات مجھے

پسند نہیں تھی اور ناپسند بھی نہیں تھی ابو ذر نے کہا اے اللہ والے! آپ کے بیٹے یہ دونوں باتیں کیونکر اکٹھی ہوئیں میں نے کہا زمانہ جاہلیت میں ایک لڑکی کو میں نے زندہ دفن کر دیا تھا مجھے یہ خوف ہوتا تھا کہ تم سے ملاقات ہوگی تو تم ہی کہو گے کہ اب تیری توبہ قبول ہوگی اور کوئی صورت اسکے مواخذہ سے نکلنے کی نہیں ہے اور یہ اٹھ بھٹی پڑتی تھی کہ یہی کہہ دو کہ ہاں توبہ قبول ہوگی اور مواخذہ سے بچنے کی راہ کھلیگی ابو ذر نے پوچھا جاہلیت میں مجھ سے یہ حرکت ہوئی میں نے کہا ہاں ابو ذر بولے خیر جو گدہ گدہ خدا ممان کرے اور اپنی بیوی سے کہا کچھ کھانے کو لاؤ انھوں نے انکار کیا پھر کہا اے پھر انکار کیا یہاں تک کہ دونوں چلانے لگے ابو ذر نے کہا اے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے جو تلوگوں کے بارے میں فرمایا ہے اس سے تم سب کیونکر ٹل سکتی ہو میں نے پوچھا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے عورتوں کے بارے میں کیا فرمایا ہے کہا کہ عورت (کیا ہے) کہ اپنی کی ہڈی ہے اگر تم اسے سیدھی کرنا چاہو تو توڑی دو گے اور اگر اچھا برتاؤ دیکھو تو اسکی ناراستی اور کچی کے ساتھ رکھنا ہوگا پھر سوچی صاحب ثرید نے آمین الیا معلوم ہوتا تھا کہ جیسے قنطرة ہین پھر حضرت ابو ذر بولے تم تو کھاؤ اور میری فکر نہ کرو میں روزہ دار ہوں پھر وہ نماز پڑھنے لگے ابھی رکوع کی تہ میں تھے کہ لوٹ آئے اور کھانا کھایا میں نے کہا انا للہ مجھے کبھی یہ وہم نہ تھا کہ آپ مجھ سے جھوٹے بولیں گے فرمانے لگے اے اللہ واسے باپ کے بیٹے جب سے تم مجھ سے ملے ہو میں جھوٹے نہیں بولا ہوں میں نے کہا آپ نے مجھے فرمایا تھا کہ میں روزہ دار ہوں فرمایا ہاں (کہا تو تھا) مگر میں اس میں تین روزے رکھ چکا ہوں اس میں سے کا ثواب میرا لکھا جا چکا اب کھانا میرے لیے حلال ہے۔

۳۱۸

رنگے بالے کا خرچ

(۶۵۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا وہ اشرفیٰ بڑے ثواب کی ہے جو لڑکے بالوں کی ذوات میں آدمی خرچ کرے اور جو اشرفیٰ راہ خدا میں اپنے دوستوں کی ذوات میں خرچ کرے اور جو اشرفیٰ راہ خدا میں اپنے جانور کے کام میں خرچ کرے ابو قتلابہ راوی نے کہا کہ آپ نے پہلے عیالی کا ذکر فرمایا اور (واقعی) چھوٹے لڑکے جب تک سیاہے ہوں تب تک اسکے واسطے خرچ کرنا اولیٰ سے بڑھکر ثواب کس کو ہو سکتا ہے۔

۳۱۸
 اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا وہ اشرفیٰ بڑے ثواب کی ہے جو لڑکے بالوں کی ذوات میں آدمی خرچ کرے اور جو اشرفیٰ راہ خدا میں اپنے دوستوں کی ذوات میں خرچ کرے اور جو اشرفیٰ راہ خدا میں اپنے جانور کے کام میں خرچ کرے ابو قتلابہ راوی نے کہا کہ آپ نے پہلے عیالی کا ذکر فرمایا اور (واقعی) چھوٹے لڑکے جب تک سیاہے ہوں تب تک اسکے واسطے خرچ کرنا اولیٰ سے بڑھکر ثواب کس کو ہو سکتا ہے۔

(۷۵۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو شخص اپنے گھر والوں کی ذات میں ثواب سمجھ کر کچھ خرچ کرتا ہے اسکو صدقہ کا ثواب ہوتا ہے

(۷۵۸) جابر نے فرمایا۔ ایک شخص نے عرض کیا یا رسول اللہ ایک اشرفی میرے پاس ہے فرمایا اپنی ذات میں خرچ کر عرض کیا اور ہے فرمایا اپنے خادم یا فرمایا اپنے لڑکے کی ذات میں خرچ کر عرض کیا اور ہے فرمایا اسکو خدا کی راہ میں لگاؤ سے اور یہ ان دونوں سے کم درجہ ہے۔

(۷۵۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا چار اشرفیان میں ایک مسکین کو دو اور ایک کسی غلام کے آزاد کرنے میں دو اور ایک خدا کی راہ میں خرچ کر دو اور ایک اپنے گھر بار کے کام میں خرچ کر دو سب سے زیادہ ثواب اسی کا ہے جو گھر بار کے کام میں خرچ ہوئی۔

دہرہات میں ثواب ہے یہاں تک کہ بیوی کو اپنے ہاتھ سے کھلاوے اس میں ثواب ہے ۳۱۹

(۷۶۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے سعد بن ابی وقاص سے فرمایا تو خدا کی رضا مندی کے واسطے جو کچھ خرچ کرتا ہے اُس میں تجھے ثواب ضرور ملے گا یہاں تک کہ بیوی کے منہ میں جو کچھ کھاوے۔
تمہاری رات رستے دعا کرنا ۳۲۰

(۷۶۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جاہل پاک پروردگار ہر رات تمہاری رات رہتے پہلے آسمان کی طرف اُتر آتا ہے پھر فرماتا ہے مجھے کوئی پکارے تو میں اسکا جواب دوں مجھ سے کوئی سوال کرے تو اسکا سوال پورا کروں مجھ سے کوئی بخشو اسے تو اُسے بخش دوں۔
نبیت ہمیں بلکہ امتیاز کے واسطے یہ کہنا کہ ظلم شخص گھونگروالا کالایا لانا یا لیت قد سے ۳۲۱

(۷۶۲) ابوہریرہ صحابی جو درخت کے نیچے والی بیعت میں شریک تھے انھوں نے فرمایا میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ نبوک کی لڑائی میں حاضر تھا ایک رات اخصر میں رہا تو ہم آپ کے قریب ہو گئے پھر حکم آگیا کہ آگے لگی تو ہم جاگنے لگے کیونکہ میرا اونٹ آپ کے اونٹ سے قریب ہو گیا تھا میں اس کے قریب ہونے سے گھبراتا تھا کہ ایسا نور کا بھینکا ہوا اور کچھ صدر پہنچے اسی خیال سے ہم اپنے اونٹ کو پیچھے بچھنے لگے یہاں تک کہ ہمیں ہیر غالب ہو گئی اور میرا اونٹ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے اونٹ کے برابر آیا اور آپ کا (مبارک) پانوں رکاب میں تھا میں آپ کے پانوں میں میرا بدن لگ گیا پھر آپ نے فرمایا جس جس سے میں جاگ پڑا

(۷۶۶) ابو الہیثم نے فرمایا کچھ لوگ عقبہ بن عامر کے پاس آکر کہنے لگے۔ ہمارے ہمسایے پیکر فساد کرتے ہیں ہم حاکم کے یہاں انکی اطلاع کریں فرمایا نہیں میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سنا ہے کہ جو شخص کسی مسلمان کا عیب دیکھ کر چھپا دے اسے گویا زندہ دفن کی ہوئی لاش قبر سے نکال کر زندہ کر دی

کوئی کہے لوگ ہلاک ہوئے

۳۲۳

(۷۶۷) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جسکو یہ کہتے ہوئے سنا کہ لوگ ہلاک ہوئے تو سب سے زیادہ ہلاکی اسی کی سمجھو۔

منافق کو سردار نہ کہے

۳۲۵

(۷۶۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ منافق کو سردار مت کہو کیونکہ اسکو سردار بنانا پروردگار کو ناراض کرنا ہے۔

جسکی تعریف کیجائے وہ کیا کہے

۳۲۶

(۷۶۹) عدی بن ارطاة نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے کسی صحابی کی کوئی شخص تعریف کرتا تو وہ یہی کہتے آئے اللہ ان لوگوں کے کہنے کا مواخذہ ہم سے مت کر اور جو میرا عیب نہیں جانتے اسے بخشو۔

(۷۷۰) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ بارہ مہینے نہ رہا آدمی کی بری سواری ہے۔

(۷۷۱) عبد اللہ بن عامر نے ابو موسیٰ سے پوچھا کہ تھے (زعمو) کے بارے میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے کیا سنا ہے کہا کہ آپ فرماتے تھے (زعمو) بری سواری ہے اور آپ نے فرمایا مسلمان پر پختہ کرنا ایسا ہی جیسے اسکو مار ڈالنا

۳۲۷

کسی بات کو اپنی دانست کے خلاف یونہی نہ کہے کہ خدا جانتا ہے

(۷۷۲) ابن عباس نے فرمایا تم میں سے کوئی شخص جو بات اس کے علم میں نہ ہو اس بات کو نہ کہے کہ خدا جانتا ہے کیونکہ (شاید) خدا کو خلاف اس کے علم ہو تو گویا جو بات خدا نہیں جانتا ہے وہ خدا کو جانتا ہے جو بات خدا کے نزدیک بہت بری بات ہے۔

۷۷۰
ع
نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
اسکی تعریف میں
جسکو سردار نہ کہیں
وہ بات اسند سے
اسکی بیان کرنا اس
تہذیب کے لوگ
کہتے ہیں اچھی بات نہیں ہے
جیسے بری سواری
بارہ مہینے
خدا جانتا ہے

۳۲۸

توس قنبر

(۷۷۳) ابن عباس نے فرمایا حجرۃ آسمان کے دروازوں میں ایک دروازہ ہے اور
توس قنبر حضرت نوح علیہ السلام کی قوم کے بعد والون کو ڈوبنے سے امان رکھنے والی ہے
حجرۃ الکمشان

۳۲۹

(۷۷۴) ابن الکوا نے حضرت علی سے مجرہ کو پوچھا آپ نے فرمایا وہ آسمان کی پوری
ہے اسی طرف سے آسمان سے دھڑلا پانی کا کھلا تھا (یعنی حضرت نوح کی قوم پر)۔
(۷۷۵) ابن عباس نے فرمایا توس زمین والون کے لیے ڈوبنے سے امان کی نشانی ہے
اور مجرہ الکمشان آسمان میں وہ جگہ ہے جہاں سے آسمان ٹپے گا۔

۳۳۰

یون دعا کرنا کسکو ناگوار ہوا۔ **اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي فِي مُسْتَقْرَرٍ رَحْمَتِكَ**

(۷۷۶) ابو حارث کرمانی نے کہا ایک شخص نے ابو جاس سے کہا۔ آپ کو سلام کرتا ہوں
اور خدا سے دعا کرتا ہوں کہ مجھے اور آپ کو اپنے مستقر رحمت میں اکٹھا کرے۔ کہا یہ کسی سے
ہو سکتا ہے تباؤ تو مستقر رحمت کیا چیز ہے ابشت۔ کہا تو نے ٹھیک نہیں بتایا۔ کہا تب
مستقر رحمت کیا ہے کہا قلب رب العالمین
زمانہ کو گالی ندے

۳۳۱

(۷۷۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا یون کوئی نہ کہے ہاے زمانہ کی خرابی اسوائے
کہ زمانہ تو خدا ہی ہے۔

(۷۷۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا یون کوئی نہ کہے ہاے زمانہ کی خرابی اللہ تعالیٰ
نے فرمایا زمانہ میں ہوں دن اور رات کو میں نے چھوڑ دیا ہے پھر جب میں چاہوں گا دو نون کو
پکڑ مار کھنڈ گا اور انگور کو گرم نہ کہنا گرم تو مسلمان آدمی ہے۔
مسلمان بھالی جاتا ہو تو اسکو تیز نظر سے نہ دیکھے

۳۳۲

(۷۷۹) مجاہد کے کہنا یہ ناپسندیدہ بات ہے کہ کوئی جانا ہو تو اسکو تیز نظر سے دیکھے یا بار
پچھے اسکے دیکھتا رہے یا اس سے پوچھے کہ تم کہاں سے آتے ہو اور کہاں جاتے ہو۔

پانچویں پارہ تمام ہوا

اس حدیث سے مفید
اور مطلب میں متوجہ
کو بہت شک ہے
اور نسخہ بھی غلط ہے
لیکن جو ترجمہ لکھا گیا
وہ بات بھی قابل قبول ہے
اور اللہ
حدیث اس سے توجہ
میں ایسا حدیث میں
جنت کے غلط ہے
پہلے گورس ۱۲
توجہ لفظ اسوائے
کیا گیا کہ یہ فتویٰ متفق
علیہ نہیں ہے
۵۵ نقل عنہ میں
یہی لفظ ہے

ادب المفرد کا چھٹا پارہ

کوئی کسی کو کچھ دیکھ کے

۳۳۲

(۷۸۰) انس نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے ایک شخص کو دیکھا بیت اللہ کے نذر کا اونٹ ہانکے لئے جاتا ہے آپ نے فرمایا سوار ہو لے اس نے عرض کیا یہ تو نذر کا اونٹ ہے فرمایا سوار ہو لے عرض کیا یہ تو نذر کا اونٹ ہے پھر فرمایا سوار ہو لے عرض کیا یہ تو نذر کا اونٹ ہے فسویا و لیلک تیری خرابی ہو سوار ہو لے

(۷۸۱) مسور بن رفاعہ نے کہا میں سن رہا ہوں ایک شخص نے ابن عباس سے پوچھا ہے کہ میں نے روئی گوشت کھایا ہے ابن عباس نے فرمایا دیجئے خرابی ہو تیری کیا تو پاک چیزوں (کے کھانے) سے وضو کرے گا۔

(۷۸۲) جابر رضی اللہ عنہ نے فرمایا فتح حنین کے روز مقام حمرانہ میں حضرت بلال اپنے دامن میں (غنیمت کا) سونائے ہو گئے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اسکو تقسیم فرما رہے تھے اتنے میں ایک شخص آکر کہنے لگا انصاف سے بانٹے آپ انصاف تو کرتے ہی نہیں آپ نو فرمایا و بیک خرابی ہو تیری میں ہی نہیں انصاف کرونگا تو پھر کون انصاف کریگا حضرت عمر نے عرض کیا یا رسول اللہ تجھورے تو میں اس منافق کی کردن ہی مارتا ہوں آپ نے فرمایا یہ اور اسکے بھارے قرآن پڑھتے ہیں مگر انکے حلق سے نیچے نہیں ماوتی ہیں میں سے ایسے نکلے ہوئے ہیں جیسے شکار سے تیر (دار پار) نکلیجائے۔

(۷۸۳) بشیر بن نہیک نے کہا بشیر بن معبد کا نام پہلے زحم بن معبد تھا جب وہ ہجرت کر کے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی طرچہ آئے آپ نے پوچھا تمہارا نام؟ عرض کیا زحم فرمایا بلکہ تم بشیر ہو انکا بیان ہے کہ میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ ساتھ چلا جاتا تھا کہ مشرکوں کو چند قبر و سپر گز رہوا آپ نے تین بار فرمایا لقد سبقن هؤلاء مسلمانوں کی چند قبر و سپر گز رہوا آپ نے تین بار فرمایا انکو گون ذہبت بہا میان حال کہیں بھرنی صلی اللہ

۷۸۰
لفظ لاسک کو
موقع میں کہا جاتا
ہے یعنی خرابی ہو
تیری

۷۸۲
جابر رضی اللہ عنہ نے
فرمایا فتح حنین کے
روز مقام حمرانہ میں

۷۸۳
بشیر بن نہیک نے
کہا بشیر بن معبد کا
نام پہلے زحم بن معبد
تھا جب وہ ہجرت کر کے
رسول اللہ صلی اللہ علیہ
وآلہ وسلم کی طرچہ آئے
آپ نے پوچھا تمہارا نام
کیا تھا عرض کیا زحم
فرمایا بلکہ تم بشیر
ہو انکا بیان ہے کہ میں
رسول اللہ صلی اللہ علیہ
وآلہ وسلم کے ساتھ
ساتھ چلا جاتا تھا کہ
مشرکوں کو چند قبر و
سپر گز رہوا آپ نے تین
بار فرمایا لقد سبقن
هؤلاء مسلمانوں کی
چند قبر و سپر گز رہوا
آپ نے تین بار فرمایا
انکو گون ذہبت بہا
میان حال کہیں بھرنی
صلی اللہ

علمہ وآلہ وسلم نے قریب سے ایک نظر فرمائی تو کیا دیکھا کہ ایک شخص قبروں کے درمیان
ہو کر جوتیا پہنے چلا جا رہا ہے اپنے پکارا اور سستی واڑا اپنے دونوں ہتھیلیاں اوتار ڈال اس شخص نے
ادھر نظر کی دیکھا تو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ہیں وہیں اوسنے جوتیوں کو اوتار کر دونوں کو پھینک دیا۔
مکان

نہ جوتیا پہنے

(۷۸۴) محمد بن ابی فدیک نے کہا محمد بن ہلال نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی ازواج مطہرات
کے حجر و نگو دیکھا تھا بال کے بنے ہوئے ٹاٹ سے مرعی ہوئی کجور کی ٹٹھوں سے بنے
ہوئے تھے میں نے اون سے حضرت عایشہ کے مکان کا حال پوچھا تو کہنے لگے کہ دروازہ
اور مکابیت المقدس کی جانب (اوترخ کا) تھا میں نے پوچھا کہ ایک ہی پردہ کا دروازہ تھا یا
یا دو پردے تھے کہا کہ ایک ہی دروازہ تھا میں نے پوچھا کس لکڑی کا تھا کہا عر کا یا سا کہو۔
(۷۸۵) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب تک لوگ مکان پر کپڑے و نکیطرح
نقاشی نکر لینگے تب تک قیامت قائم نہوگی۔
یہ کہنا نہیں تیرے باپ کی قسم

۳۳۴

(۷۸۶) ابو ہریرہ نے کہا ایک شخص نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے
حضور میں حاضر ہو کر پوچھا یا رسول اللہ کون سے صدقہ کا ثواب زیادہ ہے فرمایا ان تیرے
باپ کی قسم تجھے ضرور اسکی خبر دیجائنگی تو تندرست بھی ہو اور مال کی محبت بھی رکھتا ہو
محتاجی کا خوف ہو اور فراغت پر بھروسہ ہو ایسی حالت میں صدقہ کرنا (بہت ثواب کھتا ہے)
اور اوٹھانہ رکھ کہ جب سانس حلق پر پہنچے او سو وقت کہنے لگے فلا نے کو اتنا فلا نے کو اتنا
حالانکہ وہ حق دوسرے کا ہو گیا۔

عبد اللہ نے فرمایا
نفل کی قسم
اگر وہ صواب

۳۳۵

مانگتے ہیں خوشامد

(۷۸۷) عبد اللہ نے فرمایا جب کوئی کسیکے سامنے حاجت پیش کرے تو ہلکے طور سے مانگے
کیونکہ جو مقدر ہو وہ ملی ہی گا اور کسیکے پاس آکر اوسکی خوشامد نہ کرنے لگے کہ اوسکی پیٹھ کاٹے ڈالو۔
(۷۸۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اللہ تعالیٰ جب کسی سرزمین پر کسی بندہ
کی روح قبض کرے نیکارادہ کرتا ہے تو اوسکو وہاں جانکی حاجت پیدا کر دیتا ہے۔

عبد اللہ نے فرمایا
نفل کی قسم
اگر وہ صواب

لاہل شناہک

۳۳۶

(۷۸۹) ابو عبد الغزیز نے کہا (حضرت) ابو ہریرہ ایک دن شام کو ہلو گونگے یہاں رہے تو اپنے سامنے ایک ستارے کو دیکھ کر کہنے لگے قسم اس ذات کی جسکا ہاتھ میں ابو ہریرہ کی جان ہے بہت لوگ جنھوں نے دنیا میں حکومتیں کیں اور برسر کار سے متنا کرینگے کہ وہ لوگ اس ستارے کے پاس لٹکے رہتے اور ان حکومتوں اور کاموں کو اختیار کرتے پھر میری طرف متوجہ ہو کر فرمایا لاہل شناہک کیا یہ سب باتیں یورب والوں کی یورب میں پھیل گئیں ہیں نے کہا ہاں فرمایا قسم خدا کی خدا نے پھٹکار دیا اور ان کو ساتھ دیا کیا قسم اور ذات کی جسکے ہاتھ میں ابو ہریرہ کی جان ہے ان لوگوں کو مسخ رنگ و الم غصہ ناک کئے تھے والے سپر جیسے منہ والے لوگ نہکا نہکا تھکاتے تھکتی والوں کو اونکی کھیتوں پر اور جانوروں والوں کو اونکے جانوروں تک پہنچا دیں گے۔

۳۳۷

کوئی یون نہ کہو اللہ اور فلان شخص

(۷۹۰) ابن جریر نے کہا منیف بن عمر کو یون نے کہتے ہوئے سنا جب اس سے ابن عمر نے اس کے مولا کو پوچھا تو اس نے بتایا کہ اللہ اور فلان شخص بن عمر نے فرمایا اس طرح نکہا کر سیکو اللہ کا ساتھی مت بنا بلکہ یون کہہ اللہ کے بعد فلان شخص۔

۳۳۸

یون کہنا جو خدا چاہے اور آپ چاہیں

(۷۹۱) ابن عباس نے فرمایا ایک شخص نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے کہا کہ جو خدا چاہے اور آپ چاہیں اپنے فرمایا تو نے مجھے خدا کے برابر بنا دیا بس اکیلے خدا جو کچھ چاہے۔

۳۳۹

گانا اور کھیل کرنا

(۷۹۲) عبد اللہ بن دینار نے کہا میں عبد اللہ بن عمر کے ساتھ بازار گیا ایک چھو کری گا رہی تھی ابن عمر نے فرمایا شیطان اگر سیکو چھوڑ دیتا تو اسکو چھوڑ دیتا۔

(۷۹۳) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا بیکار باتوں سے مجھے اور بیکار باتوں کو مجھے سروکار نہیں آپکی غرض یہ تھی کہ باطل کو مجھے کچھ سروکار نہیں

۵۷
یعنی شیطان
جہاں کہ توغ
تیار ہوئی آدم
سے بڑھ کر
سے جیسے پورا
تک کو اسے
چھوڑا تو اسے
چھوڑے گا

(۷۹۴) ابن عباس نے فرمایا آیہ وَمِنَ النَّاسِ مَن كَيْشْتَرِي كَلِمَ التَّحْدِيثِ تَرْجُمَةً لِّبَعْضِ آدَمِيِّ بِيكَارٍ
بات اختیار کرتے ہیں یعنی گانا اور ازین قبیل اور باتیں -

(۷۹۵) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا سلام پھیلانا اور اس میں تمہاری
سلامتی ہے اور اسٹہ خراب بات ہے ابو معاویہ راوی فرمایا اسٹہ نجی بات -
سلیقہ اور نیک چلن ۳۴۰

(۷۹۶) ابن مسعود نے فرمایا تمہارے زمانے میں دین کے سمجھنے والے بہت
لوگ ہیں لوگوں میں بھیٹہ کر خطبہ پڑھنے والے تھوڑے ہیں مانگنے والے تھوڑے
ہیں دینے والے بہت خواہش عمل کے تابع ہے اور تھوڑا ہی دن تمہاری بعد والے
زمانے میں سمجھ والے تھوڑے ہونگے اور مجمع کے خطیب بہت ہونگے مانگنے والے
بہت ہونگے دینے والے تھوڑے ہونگے عمل خواہش کے تابع ہوگا بس تو عمل کو
جان رکھو کہ آخر زمانہ میں بعض عمل کی نسبت نیک چلنی بہت اچھی بات ہوگی -

(۷۹۷) جریری نے فرمایا میں نے ابو طفیل صحابی سے پوچھا آپ نے نبی صلی اللہ
علیہ وآلہ وسلم کو دیکھا ہے فرمایا مان اور میری دانست میں اب روے زمین پر
میرے سوا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا دیکھنے والا کوئی شخص زندہ نہیں ہے
آپ کا رنگ نورانی چہرہ مبارک نکھار تھا -

(۷۹۸) جریری نے فرمایا میں اور ابو طفیل صحابی کعبہ کا طواف کر رہے تھے
ابو طفیل نے فرمایا اب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا دیکھنے والا میرے سوا
کوئی شخص باقی نہیں ہے میں نے پوچھا کیا آپ نے حضرت کو دیکھا ہے فرمایا مان
میں نے پوچھا کیسے تھے فرمایا (نورانی) سپید رنگ نکھار میانہ روش -

(۷۹۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا نبوت لہکے پچیس حصوں میں ایک حصہ
یہ بھی ہے اچھا طریقہ اور اچھی وضع اور میانہ روی -

۳۴۱

ذَاتِكَ بِالْأَخْذِ مِنَ كَلِمَتِهِ

(۸۰۰) عکرمہ نے فرمایا میں نے حضرت عائشہ سے پوچھا آپ نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ

ابو طفیل صحابی سے پوچھا آپ نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو دیکھا ہے فرمایا مان اور میری دانست میں اب روے زمین پر میرے سوا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا دیکھنے والا کوئی شخص زندہ نہیں ہے آپ کا رنگ نورانی چہرہ مبارک نکھار تھا -

تشریف لائے میں نے عرض کیا یا رسول اللہ یہ جس سے آپ آہستہ کچھ لے رہے تھے کون آدمی
تھا فرمایا کیا تو نے بھی سن لیا عرض کیا ہاں فرمایا جبرئیل تھے میرے پاس اگر مجھ کو شخبری
دیکھے کہ میری امت کا جو آدمی مر جاوے اور اسے شکر نکلیا ہو تو وہ بہشت میں داخل ہوگا
میں نے پوچھا کیا زنا اور چوری کرے تب بھی فرمایا ہاں۔
یہ کہنا میرے مان باپ کچھ قربان

۳۴۹

(۸۱۲) علی رضی اللہ عنہ نے فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو میں نے نہیں
دیکھا کہ سعد کے سوا اور کسی کے شان میں فدا ہو نیکی فرماتے ہوں آپ فرماتے تھے
میرے مان باپ تجھ پر فدا ہوں (کافر و نکلی طرف) تیرا۔

(۸۱۳) بڑوہ نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مسجد تشریف کی گئے اور ابو موسیٰ
قرآن پڑھ رہے تھے آپ نے پوچھا یہ کون ہے میں نے عرض کیا آپ پر فدا ہو جاؤں میں ہوں بردہ
آپ نے فرمایا اسکو (یعنی ابو موسیٰ کو) داؤد پیغمبر کے خاندان کی ایک راگنی ملی ہے۔
جسکے باپ نے اسلام کا زمانہ نہیں پایا اور اسکو یون کہنا ہی میرے بچے

۳۵۰

(۸۱۴) صعب نے کہا میں عمر کی خدمت میں آیا آپ مجھے فرمانے لگے ای بھتیجے پھر
مجھے (میرا) حال پوچھنے لگے میں نے اپنا خاندان بیان کیا کہ آپکو معلوم ہو جاوے کہ میرے
باپ نے اسلام نہیں پایا تب آپ فرمانے لگے ای میرے بچے ای میرے بچے۔
(۸۱۵) انس نے کہا میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت کرتا تھا تو بڑ پوچھے
بے پکارے اندر چلا جاتا تھا ایک دن جو میں آیا تو آپ نے فرمایا ٹھہراے میرے
بچے تیرے پیچھے ایک نئی بات ہو گئی ہے اب بے اجازت اندر مت جا یا کر۔

(۸۱۶) ابو سعید خدری نے ابو سعید کو کہا اے میرے بچے۔

۳۵۱

(میرا نفس خبیث ہو گیا) بچے

(۸۱۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تمہارا کوئی شخص خجالت نفسی نہ کہے
بلکہ نقست نفسی کہے۔

(۸۱۸) اوپر والی حدیث۔

ایک دفعہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا

(۸۱۹) مانی نے کہا جب وہ اپنی قوم کے ساتھ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے خدمت میں حاضر ہوئے اور ان کے لوگ اونکو ابو حکم کینیت سے پکارتے تھے اسکو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے مسناتب اپنے اونکو بلا کر فرمایا کہ تو نے ابو حکم کینیت کیوں رکھی ہے حکم تو اللہ ہے اور حکم کی نسبت ادسی کی طرف ٹھیک ہے عرض کیا نہیں حضرت میری قوم جب کسی بات میں اختلاف کرتے تو میرے پاس آتے ہیں جو حکم اونکو دیتا اوسی پر دونوں فریق راضی ہو جاتے آپ نے فرمایا واہ یہ تو خوب ہی بات ہے تیرے بیٹے کتنے ہیں عرض کیا شریح عبد اللہ مسلم فرمایا سب سے بڑا کون ہے عرض کیا شریح فرمایا اچھا تو تو ابو شریح ہے پھر آپ نے اونکے اور اونکی اولاد کیلئے دعا فرمائی اور نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے سنا اوس جماعت میں ایک شخص گولہ کی بوک عبد الحکر پکارتے ہیں آپ نے پوچھا تیرا کیا نام ہے عرض کیا عبد الحکر فرمایا نہیں تو عبد اللہ ہے شریح کا بیان ہے جب مانی کے واپس آنے کا وقت آیا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہو کر پوچھا فرمائے جنت میرے لئے کس بات سے واجب ہوگی فرمایا اچھی بولا کر اور کھانا کھلایا کر۔

(۸۲۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا میری اس اونٹ کو کون شخص بانک لیجا لے گا یا فرمایا میرے اس اونٹ کو کون شخص پہنچا دے گا ایک شخص نے عرض کیا میں آئیو فرمایا تیرا نام کیا ہے عرض کیا یہ فرمایا بیٹھ جا پھر دوسرا شخص اٹھا اپنے پوچھا تیرا نام کیا ہے عرض کیا یہ فرمایا بیٹھ جا پھر ایک آدمی اٹھا آپ نے پوچھا تیرا نام کیا ہے عرض کیا ناجیہ فرمایا تو اس کام کا ہے لے اونٹ بانک لیجا۔

(۸۲۱) ابن عباسؓ نے فرمایا ہلوگ تمہاری ہی ہوئے تھے کہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نہایت

تیزی کے ساتھ ادھر متوجہ ہوئے کہ ہلوگ آپ کی تیز قدمی سے ڈر گئے پھر جب آپ یہاں پہنچ گئے سلام کیا پھر فرمایا میں تمہاری طرف لپکتا ہوا آیا کہ تمہیں لیلۃ القدر کی خبر کروں بس اتنی ہی دور آتی آتے بہلا دیا گیا اب اوسکو رمضان کے پچھلے عشرون میں تلاش کیا کرو۔

۳۵۵

خدا کے نزدیک سب سے پیارا نام

(۳۷۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا پیغمبروں کے ناموں پر نام رکھا کرو اور خدا کے نزدیک پیارا نام عبداللہ اور عبدالرحمن ہی اور ناموں میں سچا نام حارث اور ہمام ہے اور ناموں میں خراب نام حوب اور صق ہے۔

(۳۷۶) جابر رضی اللہ عنہ نے فرمایا ایک شخص کے یہاں بیٹا پیدا ہوا اوسنو اوسکا نام قاسم رکھا ہم لوگوں نے کہا ہلوگ تمہاری کنیت ابوالقاسم نہیں کہینگے اتنی بزرگی تمہاری نہیں ہو سکتی پھر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو اسکی خبر ہوئی آپ نے فرمایا اپنے بیٹے کا نام عبدالرحمن رکھو۔

۳۵۶

نام بدل کر دوسرا نام رکھ دینا

(۳۷۷) سہل نے فرمایا اسید کے بیٹے منذر جب پیدا ہوئے لوگ اونکو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں لائے آپ نے فرمایا اونکو اپنی (مبارک) ران پر بٹھالیا اوسوقت ابواسید بھی بیٹھے تھے پھر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو کوئی بات پیش آئی آپ مشغول ہو گئے۔ ابواسید نے کسی سے کہا اوسنو لڑکی کو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی ران سے اٹھالیا پھر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو افاقہ ہوا تو آپ نے پوچھا این لڑکا کہاں ہے ابواسید نے عرض کیا یا رسول اللہ ہم نے اسے گھر لوٹا دیا فرمایا اوسکا نام کیا ہے عرض کیا یہ فرمایا نہیں بلکہ اوسکا منذر ہے پس اسید نے اپنے اونکا نام منذر رکھ دیا۔

۳۵۷

خدا کے نزدیک سب ناموں سے بُرا نام

(۳۷۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ناموں میں نہایت بیہودہ نام خدا کے نزدیک وہ ہے جو کسی کا شانان شاہ نام رکھا جاوے۔

۳۵۸

کسی کو نام بن لکھنوی اور سکون پکارنا

(۳۷۹) طلق بن حبیب نے کہا میں شفاعت کا براہی منکر تھا میں نے جابر سے پوچھا تو انھوں نے فرمایا اے طلق بن حبیب ^{صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم} کو فرماتے ہوئے سنا ہے کہ لوگ آگ میں ڈال کر نکالے جائینگے اور جو تو پڑھتا ہے ہلوگ بھی پڑھتے ہیں۔
 آدمی کو اس نام یا خطاب سے پکارنا جو اور پسند ہو

۳۵۹

(۳۸۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو یہ بات اچھی معلوم ہوتی تھی کہ آدمی اسی نام اور اسی کنیت سے پکارا جاوے جو اسے پسند ہو۔
 عاصیہ نام کو بد لکر دوسرا نام رکھنا

۳۶۰

(۳۸۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے عاصیہ نام بدل دیا اور فرمایا تو جمیلہ ہے۔
 (۳۸۲) عمرو بن عطار کے بیٹے محمد حضرت ابو سلمہ کی بیٹی بی بی زینب کے یہاں گئے محمد کی ایک بہن تھیں زینب نے محمد سے اونکا نام پوچھا کہا بڑہ زینب نے فرمایا اسکا نام بدل دیا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے حبش کی بیٹی بی بی زینب سے نکاح کیا اونکا نام بھی بدل دیا آپ نے بد لکر زینب اونکا نام رکھ دیا پھر جب ام سلمہ سے آپ نے نکاح کیا اور وہ یہاں گئی تو اونکو سنا وہ مجھے بڑہ نام لیکر پکارتی ہیں تب آپ نے فرمایا اپنی منہ اپنی کو پاکیا کیزہ مر بنا یا کرو خدا ہی خوب جانتا ہے کہ تم میں کونسی نیکو کامی اور کونسی بدکار ہے اور سکا نام رکھ دے ام سلمہ نے عرض کیا اچھا زینب ہی ہے محمد بن عمرو راوی کہتے ہیں کہ میں زینب سے کہا میری بہن کا بھی کوئی نام رکھ دو فرمایا وہی بدل دو جو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے بدل دیا پھر بی بی زینب نے اونکا نام بھی زینب رکھ دیا۔

۳۶۱

(۳۸۳) ابو عبد الرحمن بن سعید خزرجی کا نام صرم تھا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اونکا نام سعید رکھ دیا انھوں نے کہا میرے دادا نے کہا کہ میں عثمان کو مسجد میں لگاؤ ہو کر دیکھا ہے۔
 (۳۸۴) علی رضی عنہ نے فرمایا جب (امام) حسن پیدا ہوئے میں نے اونکا نام حسن رکھا

کہ
 کہ اور میں جو بیان کرے
 یعنی اور الف و با و تہ
 طلق کو شفاعت سے
 بزرگین آیت قرآنی
 کے لئے پھر پھر
 اور نام میں
 اور ان کو سنا وہ مجھے
 بڑہ نام لیکر پکارتی ہیں
 تب آپ نے فرمایا اپنی منہ
 اپنی کو پاکیا کیزہ مر
 بنا یا کرو خدا ہی خوب
 جانتا ہے کہ تم میں کونسی
 نیکو کامی اور کونسی بدکار
 ہے اور سکا نام رکھ دے
 ام سلمہ نے عرض کیا اچھا
 زینب ہی ہے محمد بن عمرو
 راوی کہتے ہیں کہ میں
 زینب سے کہا میری بہن کا
 بھی کوئی نام رکھ دو
 فرمایا وہی بدل دو جو
 رسول اللہ صلی اللہ علیہ
 وآلہ وسلم نے بدل دیا
 پھر بی بی زینب نے اونکا
 نام بھی زینب رکھ دیا۔

پھر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم تشریف لائے اور فرمایا میرے بیٹے کو تو مجھے دکھاؤ تم نے
 اور کانام کیا رکھا ہے مجھے عرض کیا حرب فرمایا نہیں بلکہ وہ حسن ہے پھر جب امام
 حسین پیدا ہوئے تو میں نے اس کا نام حرب رکھا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے تشریف لاکر
 فرمایا میرے بیٹے کو تو مجھے دکھاؤ تم نے اس کا نام کیا رکھا ہے مجھے عرض کیا حرب فرمایا نہیں بلکہ
 وہ حسین ہے پھر جب تیسرے پیدا ہوئے تو میں نے اس کا نام حرب رکھا پھر نبی صلی اللہ علیہ
 وآلہ وسلم تشریف لائے فرمایا میرے بیٹے کو مجھے دکھاؤ تم نے اس کا نام کیا رکھا ہے مجھے عرض
 کیا حرب فرمایا بلکہ وہ محسن ہے پھر فرمایا میں نے ہارون بنی مضر کے بیٹوں شیبہ بنی مضر
 کے نام پر ان کو کانام رکھا ہے۔

غراب (کواں)

۱۳۶۲

۸۷ (۸۷) مسلم نے فرمایا میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ جنین کی لڑائی میں حاضر تھا
 نے مجھے نام پوچھا میں نے عرض کیا غراب فرمایا نہیں بلکہ تیرا نام مسلم ہے۔

شہاب

۱۳۶۳

۸۸ (۸۸) عائشہ نے فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں ایک شخص کا
 ہوا کہ وہ شہاب کہہ پکا جاتا ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا بلکہ تو ہشام ہے۔

العاص

۱۳۶۴

۸۹ (۸۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فتح مکہ کیدن فرمایا آج کے بعد سے قیامت تک
 قریش باندہ کر قتل نہ کیا جاوے گا اور اسی کہتا ہے اسکے بعد قرشی کا فروغ نہیں سے مطہج
 ہوا کسی کو اسلام حاصل نہ ہوا اور کانام عاص تھا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے
 صحیح نام رکھا۔

۱۳۶۵

اسے ساتھی کو بکارے تو اس کا نام مختصر کر دے یا کچھ گھٹا دے۔

۹۰ (۹۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا عائشہ یہ چیزیں ہیں مجھے سلام کہتے ہیں
 عرض کیا وعلیہ السلام ورحمۃ اللہ اور جو چیزیں نہیں دیکھتی اسے وہ

(۳۸۹) ام کلثوم حج کو آئیں اونکے بھائی مخارق بن ثمامہ نے اون سے کہا کہ حضرت عائشہ کے یہاں جاؤ اور اون سے حضرت عثمان کا حال دریافت کرو لوگ میرے یہاں اونکے باری میں بہت کچھ کہا کرتے ہیں ام کلثوم کہتی ہیں میں حضرت عائشہ کے یہاں حاضر ہوئی اور اون سے عرض کیا کہ آپ کے بعض بیٹے آپ کو سلام کہتے ہیں اور آپ سے حضرت عثمان کا حال دریافت کرتے ہیں حضرت عائشہ فرمایا وعلیہ السلام درحمتہ اللہ پھر فرمایا میں تو اس بات کی گواہی دیتی ہوں کہ منیٰ عثمان کو اس مکان میں دیکھا گئی کی رات تھی اور نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بھی تھے اور جب یہیل وحی لاتی تھی اور نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم عثمان کو باتے یا مونڈھے پر مار دیتے تھے کہ عثم لکھتے حضرت عائشہ نے فرمایا کہ جس شخص کو اللہ تعالیٰ اپنی نبی کے نزدیک یہ رتبہ دلو اسے وہ تو ضرور اسکے نزدیک ہی عزت رکھتا ہوگا بس تو جو شخص عثمان کو بد کہے اوس پر خدا کی لعنت۔

علم و ادب کی کجی کا پھل ہے
خوش نصیبی اور خوش حال نام

۳۹۰

زحم

(۳۹۰) بشیر نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم تشریف لائے پھر فرمایا تیرا نام کیا ہے عرض کیا زحم فرمایا بلکہ تو بشیر ہے پھر میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ ٹھہلتا چلا جاتا تھا بس اپنے فریاد اور خصاصیہ کے بیٹے تو سویرے سویرے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ ٹھل رہا ہی خدا سے تیرے ناخوش ہونے کی بات نہیں ہے میں نے عرض کیا میری ماں باپ آپ پر خدا ہوں مجھے خدا سے کچھ ناخوشی نہیں ہے ساری بہلائی مجھے حاصل ہو گئی پہر آپ مشرکوں کی قبروں پر آ کر تو فرمایا یہ لوگ بہت بہلائی چور کر گزر گئے پہر مسلمانوں کی مقبری پر آ کر تب فرمایا ان لوگوں کو بہت بہلائی حاصل کیں پہر کیا دیکھا کہ ایک شخص شبیہ جو تیری بہنو مقبری میں پھر رہا ہے بس اپنے فریاد سے شبیہ والی اپنی شبیہ اوتار بس اوسے دونوں شبیہ جو تیرا اوتار دین۔

(۳۹۱) بشیر بن خصاصیہ کا نام زحم تھا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اون

نام پیشتر رکھ دیا۔

۳۶۷

برہ

(۳۹۲) بی بی جویریہ کا نام برہ تھا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اونکا نام جویریہ رکھ دیا۔

(۳۹۳) بی بی میمونہ کا نام برہ تھا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اونکا نام میمونہ رکھ دیا۔

۳۶۸

افلح

(۳۹۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اگر میں زندہ رہا تو انشاء اللہ اپنی امت کو منع کروں گا کہ کوئی شخص برکت اور نافع اور افلح نام نہ کہے (راوی کہتا ہے) خیال نہیں کہ اپنے رافع ہی فرمایا تھا یا نہیں کوئی پوچھ گیا یہاں برکت ہے جواب بلیگا نہیں یہاں نہیں ہے پھر ہنوز منع نہیں فرمایا تھا کہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا وفات ہو گیا۔

(۳۹۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے چاہا کہ بعلے اور برکت اور نافع اور یسار اور افلح اور اسیطرح کو اور نام رکھنے سے منع فرماوین پھر آپ چپ چاپ رہ گئے اور کچھ نہیں فرمایا۔

۳۶۹

رباح

(۳۹۶) عمر بن خطابؓ نے فرمایا جب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم (خفا ہو کر) بی بی ہون سے علیہ ہو گئے تھے میری نظر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو غلام رباح پر پڑی بس میں نے پکارا ای رباح رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے میری ملاقات کیلئے تو پوچھ۔

۳۷۰

پینہرون کے نام

(۳۹۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا میرے نام پر نام تو رکھو مگر میری کیفیت پر کینیت نہ رکھو اسلئے کہ ابوالقاسم فقط میں ہی ہوں۔

(۳۹۸) انس بن مالک نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بازار میں تھے ایک شخص لولا سے ابوالقاسم بس نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اوہر منہ کیا تب اونے عرض کیا

یا رسول اللہ میں نے اوس آدمی کو پکارا ہے اس پر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا میرے نام پر نام رکھو میری کنیت پر کنیت نہ رکھو۔

(۳۹۹) یوسف بن عبد اللہ بن سلام نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے میرا نام یوسف رکھ دیا اور مجھے اپنی گود میں بٹھایا اور میرے سر پر ہاتھ پھیرا۔

(۴۰۰) جابر بن عبد اللہ نے فرمایا ہملوگ انصار یونین کیسے یہاں لڑکا پیدا ہوا میں اوسکو گردن پر اٹھائے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے یہاں لے آیا اور لوگوں نے چاہا کہ اوسکا نام محمد رکھیں آنحضرت نے فرمایا میرے نام پر نام رکھو میرے کنیت پر کنیت مت رکھو اسلئے کہ میں ہی قاسم بنایا گیا ہوں کہ تملوگوں کو درمیان تقسیم کروں حصین راوی نے کہا میں قاسم بنا کر بھیجا گیا ہوں۔

(۴۰۱) ابو موسیٰ نے فرمایا میرے یہاں ایک لڑکا پیدا ہوا میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے یہاں لے آیا آپ نے اوسکا نام ابراہیم رکھ دیا اور خرما چبا کر اوسکے تالو میں رگڑ دیا اور اوسکے لئے برکت کی دعا فرمائی اور پھر مجھے دیدیا ابو موسیٰ کے بیٹوں میں وہ سب سے بڑے تھے۔

۳۷۱

حزن

(۴۰۲) سعید بن مسیب کے دادا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہوئے آپ نے پوچھا تیرا نام عرض کیا حزن فرمایا تو سہل ہے عرض کیا میں اپنے باپ کا رکھا ہوا نام نہیں بدلوں گا ابن مسیب نے کہا جیسے ہملوگوں میں برابر ابھی تک حزن مت چلی جاتی ہے۔

(۴۰۳) اگلی حدیث۔

۳۷۲

نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا نام اور آپ کی کنیت

(۴۰۴) جابر نے کہا ہملوگوں میں ایک شخص کے یہاں لڑکا پیدا ہوا اوسنے قاسم نام رکھا انصار نے کہا ہملوگ ابو القاسم تو تیری کنیت نکرینگے اور تیری آنکھوں کو ٹھنڈک نہ پہنچائینگے تب وہ شخص نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہوا

اور جو کچھ انصار بوسے تھے آپ سے عرض کیا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا انصار نے خوب کیا تملوگ میرے نام پر نام رکھو مگر میرے کنیت پر کنیت نہ رکھو کیونکہ قاسم فقط مین ہی ہوں۔

(۲۰۵) ابن حنفیہ نے کہا حضرت علیؑ کو اجازت ہو گئی تھی اور انھوں نے پوچھا یا رسول اللہ آپ کے بعد اگر میرے یہاں لڑکا ہو تو آپ کے نام پر اور سکا نام رکھوں اور آپ ہی کی کنیت پر اور سکی کنیت کروں آپ نے فرمایا ہاں۔

(۲۰۶) ابو ہریرہ نے کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اس بات سے منع فرمایا ہے کہ ایک ہی آدمی آپ کے نام پر اپنا نام رکھے اور آپ کی کنیت پر اپنی کنیت کرے اور فرمایا ہے کہ میں ابو القاسم ہوں خدا دیتا ہے اور میں بانٹ دیتا ہوں۔

(۲۰۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بازار میں تھے ایک شخص بکارا یا ابوالقاسم نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ادھر پھرے تب اس نے عرض کیا کہ میں نے اسکو بکارا ہے اور سپر آپ نے فرمایا کہ میرے نام پر نام رکھو مگر میری کنیت پر کنیت مت کرو۔

مشرک کی کنیت

۳۷۳

(۲۰۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ایک مجلس میں پہنچے وہاں عبد اللہ بن ابی ابن سلول (منافق) بھی تھا اور سوقت تک وہ ظاہر میں بھی مسلمان نہیں تھا کہنے لگا کہ ہماری مجلس وعین آگے رکھو گو نگو تکلیف نہ دیا کیجئے پھر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم حدیث عبادہ کے یہاں گئے اور اون سے فرمایا سعد تم نہیں سنتے حجاب کیا بولتا ہے ابو حباب سے آپکی مراد عبد اللہ ابن ابی ابن سلول تھی۔

۳۷۴

یہ انس نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میرے یہاں تشریف لایا اور میرا ایک چھوٹا بھائی تھا اور سکی کنیت ابو تمیر تھی اور اس کے پاس

پالین گویا چڑیا تھی اوس سے وہ کہیلا کرتا اتفاقاً وہ مرگئی پھر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم تشریف لای تو لڑکے کو اوداسن دیکھ کر پوچھنے لگے اسکا کیا حال ہے لوگوں نے عرض کیا اسکی چڑیا مرگئی ہے تب آپ نے فرمایا ابو عمیر تیرے نغیر نے کیا کیا۔
 جسکو ہنوز لڑکا نہیں ہوا ہے اوسکی کنیت

۳۷۵

(۳۱۰) علقمہ کو ہنوز کوٹی لڑکا نہیں ہوا تھا کہ ابو شبل انکی کنیت رکھدی گئی۔
 (۳۱۱) علقمہ نے کہا قبل اسکے کہ مجھکو کوئی اولاد ہو عبد اللہ نے میری کنیت رکھدی
 عورتوں کی کنیت

۳۷۶

(۳۱۲) حضرت عائشہ نے فرمایا میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہو کر عرض کرنے لگی یا رسول اللہ آپ نے اپنی عورتوں کی کنیت رکھدی ہے میری بھی رکھ دیجئے آپ نے فرمایا تو اپنے بہانے عبد اللہ کے نام سے ام عبد اللہ اپنی کنیت کر لے۔

(۳۱۳) عائشہ رضی اللہ عنہا نے عرض کیا یا نبی اللہ آپ کچھ میری کنیت نہیں رکھ دیتے فرمایا اپنے بیٹے کے نام پر کنیت رکھ لے۔ بیٹے سے آپکی مراد عبد اللہ بن زبیر تھی بس حضرت عائشہ کی کنیت ام عبد اللہ ہو گئی

کسی شخص میں کون سی بات ہو یا اوس جگہ کے کسی میں ہوسن بات کے ساتھ کنیت رکھ سنیے

(۳۱۴) سہیل بن سعد نے کہا حضرت علی کو اپنی نامونین سے پیارا ہام ابو تراب تھا آپ اس نام سے پکارے جاتے تو نہایت ہی خوش ہوتے اور آپ کا نام ابو تراب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ہی نے رکھا تھا ایک دن حضرت فاطمہ سے خفا ہو کر مکان سے باہر اگر مسجد کی دیوار سے لگ کر لیٹ رہے اور نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اونکے پیچھے چلے آئے کسی نے بتا دیا وہ تو یہی مسجد کی دیوار سے لیٹے ہوئے ہیں بس نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم تشریف لای اسوقت حضرت علی کی پیٹھ مٹی سے بھر گئی تھی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اونکی پیٹھ سے مٹی

عائشہ نے فرمایا

عائشہ نے فرمایا

بھری تھی۔ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اونکی پیٹھ سے مٹی جھاڑنے بجائے اور فرماتی
ابو تراب بیٹھ جا۔

۳۷۸ بڑوں اور بزرگوں کے ساتھ کیونکر چلے

(۸۵۷) انس نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ابو طلحہ کے کھجور بیٹے میں
رفع حاجت کے لئے تشریف لے گئے اور بلال ہی آپکی بغل میں چلے جا رہے
تھے۔ اتنے میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ایک قبر کے متصل ہو کر گزرے
تو آپ وہاں ٹھہرے رہے یہاں تک کہ حضرت بلال بھی پہنچ گئے
آپ نے فرمایا وینحکک اے بلال جو میں سنتا ہوں تو بھی سنتا ہے
عرض کیا میں تو کچھ ہی نہیں سنتا فرمایا اس قبر والے پر عذاب ہو رہا ہے
پھر جو تفتیش ہوئی تو وہ شخص یہودی ٹھہرا۔

۳۷۹

(۸۵۸) قیس نے کہا حضرت معاویہ اپنے چہوٹے بھائی سے کہہ رہے تھے
کہ سواری پر اپنے پیچھے لڑکے کو بھی بٹھالے اوسنے انکار کیا تب معاویہ
نے فرمایا تیری تعلیم کیا ہی بڑی ہوتی ہے۔ اسپر ابوسفیان نے
ہا بھائی سے چھیڑ چھاڑ چھوڑ دے۔

(۸۵۹) عمر بن عاص نے فرمایا جب دوست بہت ہوتے ہیں تو تاوان
لے والے بہت ہو جاتے ہیں۔ یحییٰ رادی نے اپنے استاد موسیٰ سے
چھتاوان لینے والے کیا فرمایا لوگوں کے حقوق۔

بعض شعر بھی حکمت کے ہوتے ہیں

۳۸۰

(۸۶۰) ایاس بن خنیسہ عبد اللہ بن عمر کے سامنے کھڑا ہو کر کہنے لگا اے
دوق کے بیٹے میں تمہیں اپنا شعر سناؤں۔ فرمایا مان سناؤ۔ مگر اچھا
شعر سناؤ بس وہ سنانے لگا سنانے سنانے کچھ ایسی بات آگئی
کہ عمر کو ناپسند ہوئی تب آپ نے فرمایا بس رہنے دے۔

(۸۶۱) مطرف نے کہا میں کو فہ سے بصرے تک عمران بن حصین کے ساتھ رہا کم اتفاق ہوا کہ کسی منزل میں اوترے ہوں اور کوئی شعر نہ پڑھا ہو۔ اور یہ بھی فرمایا کہ بات پھیر کر بولنے میں جھوٹ سے بچنے کی خوب گنجائش ہے۔

(۸۶۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا بعض شعر حکمت کے ہوتے ہیں۔

(۸۶۳) اسود بن سریج نے عرض کیا یا رسول اللہ میں نے اپنے پروردگار کی تعریف میں بہت کچھ کہا ہے۔ آپ نے فرمایا جان لے تیرا پروردگار تعریف بہت پسند کرتا ہے۔ آپ نے اس سے زیادہ نہیں کچھ سنا یا۔

(۸۶۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا آدمی کو بیٹ میں پیپ بھری ہوئی دیکھنا اس سے بہتر ہے کہ شعر سے بھرا ہوا ہو۔

(۸۶۵) اسود بن سریج نے کہا میں شاعر تھا۔ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہو کر عرض کیا میں نے اپنے پروردگار کی بہت کچھ تعریف کی ہے حضور میں بڑھوں فرمایا تیرا پروردگار تعریف بہت پسند کرتا ہے آپ نے اس سے زیادہ کچھ نہیں فرمایا۔

(۸۶۶) حسان بن ثابت نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے مشرکوں کی اچھو کرنے کی اجازت چاہی آپ نے پوچھا میرے واسطوں کو کیا کرے گے عرض کیا آپ کو ایسا صاف بچالو گنا جیسے گوندھے ہوئے آٹے سے بال نکال لیا جاتا ہی (۸۶۷) عروہ نے کہا میں حضرت عائشہ کے پاس حسان کو برا بھلا کہنے لگا۔ حضرت عائشہ نے فرمایا اوسکو سخت سست نہ کہہ۔ وہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی طرف سے مشرکوں کو جواب دیتا تھا۔

شراچھے بھی ہوتے ہیں جیسی اچھی بات اور بعض شعر بڑی بھی ہوتی ہیں۔ ۳۸۱

(۸۶۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا بعض شعر حکمت کی ہوتی ہیں

(۸۶۹) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا شعر بھی بات کے حساب میں ہے اچھا شعر جیسے اچھی بات بُرا شعر جیسے بُری بات۔
 (۸۷۰) حضرت عائشہ فرمایا کرتی تیں۔ بعض شعر اچھے ہوتے ہیں بعض بُرے بھی ہوتے ہیں۔ اچھے کو تولے لے۔ بُرے کو چھوڑ دے کیعب بن مالک کے بہت اشعار مجھ تک پہنچے۔ بعض قصیدہ اوسمیں سے چالیس بیتوں کا ہے۔ اور بعض اس سے کم کا بھی۔

(۸۷۱) شریح نے کہا میں نے حضرت عائشہ سے پوچھا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بھی کبھی کبھی شعر پڑھتے تھے۔ فرمایا عبد اللہ بن رواحہ کا یہ شعر بھی پڑھ لیتے **وَيَا نَيْفَكَ يَا لَاحْخَارِ مَنْ كَمْ تَشْنُ وَدِدًا** اور تیرے پاس وہ شخص خبر میں لاتا ہے جسے تولے کچھ تو شہ نہیں دیا۔
 (۸۷۲) اسود بن سریع شاعر کی حدیث۔

۳۸۲

شعر پڑھوانا

(۸۷۳) شریح نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے امیہ بن ابی الصلت کے اشعار مجھے پڑھوائے ہیں نے پڑھ دیا۔ تو آپ فرمانے لگے **هَيْهَيْه** یہاں تک کہ میں نے تنو قافے پڑھ ڈالے۔ پھر آپ نے فرمایا وہ تو مسلمان ہو ہی چلا تھا۔

۳۸۳

شعر کا ظاہر اچھا نہیں

(۸۷۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تم میں کسی کا پیٹ پیپ سے بہر جانا اس سے بہتر ہے کہ شعر سے بھرے خدا فرماتا ہے۔ **وَالشُّعْرَاءُ** **يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ** بیروی تو گراہ لوگ کرتے ہیں۔

(۸۷۵) ابن عباس نے فرمایا **وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ** اور شاعر وہی ہیں جو گراہ لوگ کرتے ہیں **وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ** پھر ہاتھ کردہ لوگ جو نہیں کرتے وہ بولتے ہیں **فَرَأَى الَّذِينَ آمَنُوا إِلَى قَوْلِ لَدُنْكَ يُنْقَلِبُونَ** مگر جو کہ ایمان لائے اس قول تک لوگ جا چکے۔

۳۸۴

بعض بیان جا دو ہوتے ہیں

نبی اور ۱۲

(۸۷۶) ابن عباس نے فرمایا ایک شخص یا کہا ایک دیہاتی آدمی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہوا۔ اور خوب صاف صاف باتیں کہیں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم (اوسکی باتیں سنکر) فرمانے لگے۔ بعض بیان جا دو ہوتے ہیں۔ اور بعض شعر حکمت ہوتے ہیں۔

(۸۷۷) خلیفہ عبدالملک بن مروان نے اپنے لڑکوں کو تعلیم کے لئے شعبی کی خدمت میں بھیج دئے۔ اوہوں نے کہا انکو شعر سکھلاؤ۔ بزرگی اور شرافت حاصل کریں گے اور انکو گوشت کھلاؤ انکے دل مضبوط ہوں گے اور انکے بال کٹواؤ انکی گردنیں مضبوط ہوں گی۔ اور انکے ساتھ شریف لوگوں کو بٹھلایا کرو کہ انکی باتوں کی اصلاح کیا کریں۔

۳۸۵

براشعر

(۸۷۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا بڑا بہاری مجرم وہ شاعر ہے جو کسی خاندان بھر کی ہجو کر ڈالے اور جو شخص اپنی باپ سے انکار کرے۔

۳۸۶

بہت بولنا

(۸۷۹) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے زمانہ میں دو خطیب پورب سے آئے پھر وہ دونوں کھڑے ہو گئے اور کچھ باتیں کہیں پھر بیٹھ گئے پھر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے خطیب حضرت ثابت بن قیس کھڑے ہوئے اور کچھ بولے لوگوں کو اون دونوں کی باتیں بہت پسند ہوئیں پھر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کھڑے ہو کر خطبہ فرمانے لگے تو آپ نے فرمایا لوگو جو کہنا ہو کہہ دیا کرو۔ اور بات کی کاٹ چھانٹ شیطان کی کام ہے پھر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا بعض بیان جا دو ہوتے ہیں۔

(۸۸۰) ایک شخص نے حضرت عمر رضی اللہ عنہ کے سامنے خطبہ پڑھا اور اس میں بہت کچھ بول گیا تب حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے فرمایا خطبوں میں بہت

۵
بعض نغزوں پر غور
واسطے اظہارِ حق
و بلاغت اور قدرت
اظہار کے لئے

وسلم ابو طلحہ کا گھوڑا مندوب نام عاریتاً منگو کر سوار ہو کر اوہر تشریف لے گئے پہر اوہر سے لوٹے تو اپنے فرمایا میں نے تو کچھ بھی نہیں دیکھا اور اس گھوڑے کو تو میں نے دریا پایا۔

۳۸۹

لہجہ بگاڑنے پر مارنا

(۸۸۴) نافع نے کہا علی بن عمر اپنی لڑکوں کو لہجہ بگاڑنے پر مارا کرتے۔
(۸۸۵) دو شخص تیر اندازی کر رہے تھے اوس طرف حضرت عمرؓ کا گزریا اوئیں سے ایک نے دوسرے کو کہا اسبت اسپر حضرت عمرؓ نے فرمایا تیر اندازی میں بگڑ جانے سے لہجہ کا بگڑنا زیادہ بُرا ہے۔

یون کہے کہ یہ تو کچھ بھی نہیں اور مطلب یہ ہو کہ حق نہیں ہے

۳۹۰

(۸۸۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے لوگوں نے کاہنون کا حال پوچھا اپنے فرمایا وہ لوگ کچھ بھی نہیں ہیں اسپر لوگوں نے عرض کیا یا رسول اللہ بعض بات اون لوگوں کی ٹھیک بھی پڑ جاتی ہی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا وہ تو شیطان اوچک لاتا ہے پہر اوسکو اپنی یار کے کان میں مرغ کی طرح کر کرانے لگتا ہے پہر اوس میں یہ لوگ ستوا جو ٹھہ ملا دیتے ہیں۔

۳۹۱

بات پہیر کر بولنا

(۸۸۷) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ایک سفر میں تھے اونٹ والا کچھ گنگنا لے لگا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا انخشہ تجھیر افسوس ہے ان شیشون کے ساتھ نرمی رکھہ۔
(۸۸۸) عمرؓ نے فرمایا آدمی کے لئے یہی جو ٹھہ بہت ہے کہ جو بات سنے اوسے کہتا پہرے ابی راوی کو شک ہے کہ ابن عمرؓ نے یہی کہا تھا یا شاید یہ کہ عمرؓ نے فرمایا مان بات پہیر کر بولنے میں مسلمان آدمی کو جو ٹھہ سے بچاؤ ہو جاتا ہے۔

۴
ابن عمرؓ نے فرمایا انخشہ تجھیر افسوس ہے ان شیشون کے ساتھ نرمی رکھہ۔
۱۲

(۸۸۹) عبد اللہ بن شحیر نے کہا عمران بن حصین کا میرا بھرا تک ساتھ ہو گیا کوئی دن ایسا نہیں گذرا جس میں اونہوں نے کوئی شعر پڑھا کہ ہمیں نہ سنایا ہو اور یہ بھی بتایا کہ بات پہیر کر بولنے میں جھوٹھ سے بچاؤ ہو جاتا ہے۔

۳۹۲

راز فاش کر دینا

(۸۹۰) عمرو بن عاص نے فرمایا مجھے آدمی پر تعجب ہوتا ہے کہ وہ تقدیر سے بہا گنا چاہتا ہے اور وہ بات ضرور ہونے والی ہے اور وہ دوسرے کی آنکھ کا کہر پات غبار وغیرہ تو دیکھ لیتا ہے اور اپنی آنکھ کا چیل چوڑ دیتا ہے اور دوسرے کے دل سے کینہ نکالتا ہے اور اپنے دل میں کینہ رکھے رہتا ہے اور میں نے جب کسی کو اپنا راز دار بنایا اور کہیں اوسے اوسکو فاش کر دیا تو ہمنے اوسکی ملامت نہیں کی کیونکہ جب میں خود اپنا راز جہانہ سکا تو غیر کو ملامت کرنے کا کیا موقع ہے۔

۳۹۳

سخر اپن اور خدا کا حکم کہ کوئی قوم کسی قوم سے سخر اپن نہ کرے

(۸۹۱) عائشہ رضی اللہ عنہا نے فرمایا ایک مصیبت زدہ آدمی بعض عورتوں کی طرف ہو کر گذرا وہ عورتیں اسے دیکھ کر سخر اپن سے ہنسنے لگیں آخر بعض اونہیں سے اوسی مصیبت میں مبتلا ہو گئی۔

۳۹۴

کاموں میں درنگی

(۸۹۲) ایک شخص نے کہا میں اپنے باپ کو ساتھ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہوا آپ نے میرے باپ سے کچھ آہستہ باتیں فرمائیں میں نے اپنے باپ سے پوچھا کہ آپ نے تمہیں کیا ارشاد فرمایا اونہوں نے فرمایا کہ توجہ کسی کام کا ارادہ کیا کرتے تو بہت تامل کے ساتھ کیا کر یہاں تک کہ اللہ تعالیٰ تمہے اوس سے نکلنے کی صورت بتا دے یا فرمایا یہاں تک کہ اللہ تعالیٰ اوس سے نکلنے کی صورت تیری لئے بنا دے۔

(۸۹۳) محمد بن حنفیہ نے فرمایا ایسا ساتھی جس کا ساتھ چھوڑنا کسی طرح ہو ہی نہ سکے خدا ہی کوئی صورت نکالے تو نکلے ایسے شخص کو ساتھ جو کوئی اچھی طرح نہ رہ سکے وہ دانشمند آدمی نہیں ہے۔

۳۹۵

گلی یارہ بتا دینا

(۸۹۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو کوئی کسی کو کچھ دے یا گلی یارہ بتا دے اس کو ایک غلام آزاد کر نیکیے برابر ثواب حاصل ہوگا۔

(۸۹۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اپنی ڈول کسی مسلمان بہائی کے ڈول میں پانی ڈال دینے میں صدقے کا ثواب ہے۔ اور

اچھی بات بتا دینے اور بُری بات سے روک دینے اور مسلمان بھائی کی طرف دیکھ کر مسکرا دینے میں صدقے کا ثواب ہے اور لوگوں کو نیک راستے سے پتھر اور کانٹا اور ہڈی ہٹا دینے میں صدقے کا ثواب ہے اور بے راہ زمین پر کسی کو راہ بتا دینے میں صدقے کا ثواب ہے۔

۳۹۶

ناہینا آدمی کو ہسلا دینا

(۸۹۶) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو شخص کسی نبی بنا آدمی کو راہ سے بھٹکا دے اس پر خدا کی لعنت۔

۳۹۷

کرتشی

(۸۹۷) ابن عباس نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مکہ میں اپنے (مبارک) مکان کے باہر دیوار کے پیچھے تشریف رکھتے تھے۔ اتنے میں عثمان بن مظعون آپ کے پاس ہو کر گزرے اور نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو دیکھتے ہی مسکرانے لگے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اون سے فرمایا کیوں بیٹھتے نہیں عرض کیا میں پھر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی طرف رخ کر کے بیٹھ گئے پھر اون سے باتیں کر رہے تھے کہ ایک بار گئی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نکلی لگا کر آسمان کی طرف

دیکھنے لگے پھر فرمایا ابھی تو بیٹھا ہی ہے کہ میرے پاس خدا کا رسول (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) پہنچ گیا۔ عرض کیا اوہوں نے حضور سے کیا کہا؟ فرمایا

إِنَّ اللَّهَ بِأَمْرٍ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِبْتِغَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْجِي عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يُعْطَاكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ عثمان کا بیان ہے اور یہ وقت ایمان میرے دل میں جم گیا اور مجھے محمد (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) سے محبت ہو گئی۔

سرکشی کی سزا

۳۹۸

(۸۹۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو شخص دو لڑکیوں کی جوان ہو تو تک برابر پرورش کرتا رہے میں اور وہ شخص ان دونوں ادٹگیوں کی طرح بہشت میں جائیگا۔ اور محمد راوی نے کلمہ کی ادٹگی اور سچ کی ادٹگی ملا کر بتا دیا اور دو باتوں کا وبال دینا میں بھی پڑ جاتا ہے سرکشی اور ناتا کاٹ دینا۔

۳۹۹

ذات

(۹۰۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا خود بزرگ بزرگ کے بیٹے وہ بھی بزرگ ہی کے بیٹے حضرت یوسف پیغمبر میں جو یعقوب پیغمبر کے بیٹے وہ اسحاق پیغمبر کے بیٹے وہ ابراہیم خلیل اللہ کے بیٹے ہیں۔

(۹۰۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا قیامت کے دن فقط پرہیزگار ہی لوگ میرے دوست ہونگے اگرچہ قرابت میں کوئی کیسلی بہ نسبت زیادہ تر قریب ہو مگر ایسا نہ ہو کہ لوگ تو میرے پاس اعمال لیکر پہنچیں اور تم لوگ دنیا اپنی گردنوں پر اوٹھائے لئے پہنچو۔ پھر پکارو یا سچا پھر میں اس طرح اس طرح منہ پھیر لوں گا اور اپنے دونوں جانب منہ پھیر کر بنا ہی دیا۔

(۹۰۲) ابن عباس نے فرمایا میں اس آیت پر عمل کرتے کہ سبکو میں کہتا یا ایھا الناس انا خلقناکم من ذکر وَاُنثٰی سے یہاں تک پڑھ کر اگر تم کو خدا کے پاس سے کوئی نعمت ملے تو اس کو اللہ کے پاس سے کہتا ہے اور اگر تم کو اللہ کے پاس سے کوئی عذاب ملے تو اس کو اللہ کے پاس سے کہتا ہے۔

بزرگی رکھتا ہوں حالانکہ بجز خدا سے بچتے رہنے کے اور کسی ذریعہ سے کوئی
کسی پر بزرگی نہیں رکھتا۔

(۹۰۳) ابن عباس نے فرمایا تم لوگ بزرگی کس بات کو جانتے ہو خدا کی
تو بزرگی کو بیان کر دیا ہے کہ جو شخص تم میں بڑا پرہیزگار ہے وہی خدا کے
نزدیک بڑا بزرگ ہے۔ ذات کی بڑائی کس بات کو جانتے ہو ذات کا
بڑا وہی شخص ہے جسکی عادت اچھی ہے۔
روح کا شکر

۴۰۰

(۹۰۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا روح سب فوج فوج پیدا
کیگئی۔ پہر جس سے وہاں جان پہچان ہوئی اوس سے دنیا میں میل رہا اور
جس سے وہاں پہچان نہیں ہوئی اوس سے دنیا میں بھی اختلاف ہوا۔
(۹۰۵) اوپر والی حدیث۔

(۹۰۶) اوپر والی حدیث۔

۴۰۱

تعب کی وقت سبحان اللہ کہنا

(۹۰۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ایک چرواہا بکریاں چرا رہتا
اتنے میں ایک بھیڑ یا حملہ کر کے ایک بکری اوس میں سے لیچلا بس چرواہا بھی
اوس کے پیچھے ہوا تو بھیڑ یا اوسکی طرف پھر کر کہنے لگا بہلا جب فتنہ فساد کے
زمانے میں مویشی چھوڑ چھوڑ کر لوگ بہاگ جائینگے اور بھیڑیوں ہی کا وقت ہوگا
تب اوسکی خبر کون لیگا جبکہ میرے سوا کوئی اوسکا چرواہا نہ ہوگا یہ سنکر لوگ تعجب سے
کہنے لگے سبحان اللہ تب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا میں اس
بات کو مانتا ہوں اور ابو بکر اور عمر بھی مانتے ہیں۔

(۹۰۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ایک جنازہ پر تشریف لیگے تہو وہاں
پہنچے تو کچھ باتیں لیکر زمین کر دیے لگے پھر فرمایا تم میں سے ہر شخص کا
ٹھکانا دوزخ اور بہشت لکھا جا چکا ہے۔ لوگوں نے عرض کیا یا رسول اللہ

پھر ہم لوگ اپنے اپنے لکھے پر اطمینان کر کے عمل چھوڑ دین فرمایا عمل کئی جاؤ جو شخص جسکے لئے پیدا ہوا اوسپر وہی آسان ہو نیک بخت آدمی پر نیک بختوں کے عمل آسان ہیں اور بد بخت آدمی پر بد بختوں کے عمل آسان ہیں۔ پھر اپنے یہ آیت پڑھی **فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ**

زمین پر اتمہ پھیرنا

۴۰۲

(۹۰۹) اسید کی مان لے ابوقتاوہ سے پوچھا آپ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حدیثیں کیوں بیان نہیں فرماتے جیسا اور لوگ بیان کرتے ہیں۔ ابوقتاوہ نے فرمایا میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سنا ہی اپنے فرمایا جو شخص کسی بات کی جھوٹے نسبت میری طرف کرے وہ دوزخ میں اپنے پہلو لگانے کی جگہ بھی درست کر لے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم یہ فرماتی ہوئی زمین پر اتار پھیرنے لگے

کنکری چلانا

۴۰۳

(۹۱۰) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ڈھیللا چلانے سے منع فرمایا اور یہ فرمایا کہ نہ تو اس سے شکار مرے اور نہ دشمن کو صدمہ پہنچے البتہ وہ کسی کی آنکھ پھوڑ دے۔ اور کیسے دانت توڑ دے۔

ہوا کو گالی

۴۰۴

حضرت ابو ہریرہ نے فرمایا حضرت عمر حج کو جاتے تھے اور لوگ بھی ساتھ تھے راستے میں آندھی اٹھی پھر تیز ہوتی چلی حضرت عمر نے اپنے ارد گرد والوں سے پوچھا ہوا کیا چیز ہے لوگوں نے کچھ جواب نہیں دیا۔ میں نے اپنا اونٹ تیز کر کے اونکے پاس پہنچ کر عرض کیا معلوم ہوا کہ آپ ہوا کا حال پوچھتے تھے یعنی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سنا ہے آپ فرماتے ہوا خدا کی بارگاہ سے آتی ہے رحمت بھی لاتی ہے عذاب بھی لاتی ہے اسکو گالی دیا کرو اور خدا سے ہوا کی بہلائی طلب کرو۔ اور اوسکی بُرائی سے پناہ مانگو۔

تجارت کو
کھانا کی چیز درست

یہ کہنا کہ فلا نے فلا سے ستارے کے باعث سے پانی برسا

۴۰۵

(۹۱۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے مدینہ میں صبح کی نماز پڑھائی اتفاق سے رات کو پانی برس گیا تھا جب نماز تمام کر چکے لوگوں کی طرف متوجہ ہو کر فرمانے لگے کچھ خبر ہے تمہارے پروردگار نے کیا فرمایا لوگوں نے عرض کیا خدا اور اس کے رسول کو خوب معلوم ہے۔ فرمایا میرے بندوں میں کسے ایمان کی حالت میں صبح کی کسے کفر کی حالت میں صبح کی جسے کہا کہ خدا اگر فضل اور رحمت سے پانی برسا یہ شخص تو ہم پر ایمان رکھتا ہے اور ستاروں کا منکر ہے اور جسے یہ کہا کہ فلا نے فلا سے ستاروں کے سبب سے پانی برسا تو وہ شخص میرا منکر ہے اور ستاروں پر ایمان رکھتا ہے۔

بدلی دیکھ کر کیا بولے

۴۰۶

(۹۱۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جب بدلی طوفان وغیرہ دیکھتے تو اندر جاتے باہر آتے آگے جاتے پیچھے جاتے اور آپ کا چہرہ متغیر ہو جاتا پھر جب پانی برس جاتا تو وہ حالت جاتی رہتی۔ حضرت عائشہ نے اسکو دریافت کیا تو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا مجھے کیا معلوم شاید وہی معاملہ ہو جیسا اللہ تعالیٰ نے فرمایا فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ۔

(۹۱۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا بدشگونی ماننا شرک ہے اور ہم میں ہر سیکو بدشگونی سے ایک کھٹکا ضرور ہو جاتا ہے مگر توکل کر لینے سے اللہ تعالیٰ اسکو مٹا دیتا ہے۔

بدشگونی

۴۰۷

(۹۱۵) نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا بدشگونی کے ذکر میں فرمایا فال سب سے بہتر ہے لوگوں نے پوچھا فال کیا فرمایا اچھی بات کوئی سن لے۔

بدشگونی نہیں ماننے کی فضیلت

۴۰۸

(۹۱۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا حج کے موسم میں استون کا مجھے ملاحظہ کر آگیا

یہ آیت سورہ بقرہ کی ہے
مطلب یہ ہے کہ اس کے
جب لوٹا تو اس کی
قوم پر خدا کا
غضب نازل ہوا
تو ایک بدلی نظر
ہوتی وہ سب کو
بے حال کر دیا
اس میں غلاب الہی
نانک سواتی
بدلی لدا لدا لدا
غلاب الہی کا
دنا جا ہی ابو ہریرہ
بعضوں کو نزدیک
یہاں سے نزدیک
نیک عبد اللہ بن
سوداوی کا
قول ہے
نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم
نشا ہر سیکو بدشگونی
میں توکل کر لے
تو اسکی شرابی جانی
ہو گیا

مجھے اپنی امت کی کثرت بہت خوش آئند معلوم ہوئی۔ میری امت تمام زمین اور پہاڑ پر بھری ہوئی تھی پوچھایا مجھ آپ راضی ہو کر۔ عرض کیا ہاں اور میرے پروردگار حکم ہوا کہ انکے سوا ستر ہزار اور ہیں وہ لوگ بحساب بہشت میں چلے جائیں گے وہ لوگ چھاڑ پھونک نہیں کرتے تھے اور بدن نہیں داغ کراتے تھے اور بدشگونی نہیں مانتے تھے اور اپنے پروردگار ہی پر بھروسہ رکھتے تھے عکاشہ نے عرض کیا خدا سے دعا فرمائے کہ مجھے اوسی جماعت میں داخل کرے۔ آپ نے دعا کی اور اللہ اسکو اوسی جماعت میں داخل کر۔ پھر دوسرے شخص نے عرض کیا خدا سے دعا فرمائے کہ مجھے بھلی دوسری جماعت میں داخل کرے۔ فرمایا عکاشہ تم سے پہلے مانگ چکا۔

(۹۱۷) پہلی حدیث۔

جن کی بدشگونی

۲۰۹

(۹۱۸) جب لڑکے پیدا ہوتے تو حضرت عائشہؓ کے پاس لا کر جاتے۔ آپ اونکے لئے برکت کی دعا فرماتیں۔ ایک دفعہ ایک لڑکا اونکو بیان لوگ لو آئے آپ اوسکا تکیہ درست کرنے لگیں تو کیا دیکھا کہ اوسکے سر کے نیچے استرہ رکھا ہوا ہے۔ لوگوں سے استرہ کو پوچھا اوہوں نے عرض کیا ہم لوگ اسکو جن کے سبب رکھ دیتے ہیں بس اپنے استرہ لیکر پھینک دیا اور دن لوگوں کو اس کام سے منع کیا اور فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بدشگونی ماننا ناپسند فرماتے بلکہ دشمن رکھتے اور حضرت عائشہؓ اس کام سے منع کیا کرتیں۔

سال

۲۱۰

(۹۱۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا دوسرے کو عارضہ لگ جانا اور بدشگونی کوئی چیز نہیں ہے۔ اچھی بات سے نیک فالی مجھے پسند ہے۔

(۹۲۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ہوا میں چڑیا ہیں کوئی شہوت نہیں ہے اور فال بہت سچا شگون ہے اور نظر لگ جانا ٹھیک بات ہے۔

عائشہؓ کے پاس لائے جاتے تھے

(۹۲۱) سال حدیبیہ میں جسوقت نبی صلی اللہ علیہ وسلم حضرت عثمان بن عفان کا ذکر کرنے لگے سہیل کو اوسکی قوم نے آنحضرت کی پاس بھیجا اور اسے اون لوگوں نو اس بات پر صلح کر لی کہ آپ اس سال واپس لوٹ جائیں آئندہ سال قریش مکہ کو تین دن آپکے لئے خالی کر دینگے بس جسوقت سہیل آیا اور خبر ہوئی کہ آگیا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا خدانے تمہارا کام سہل کر دیا عبد اللہ بن سائب اس حدیث کے راوی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا زمانہ پایا ہے۔
گھوڑے میں نخوت

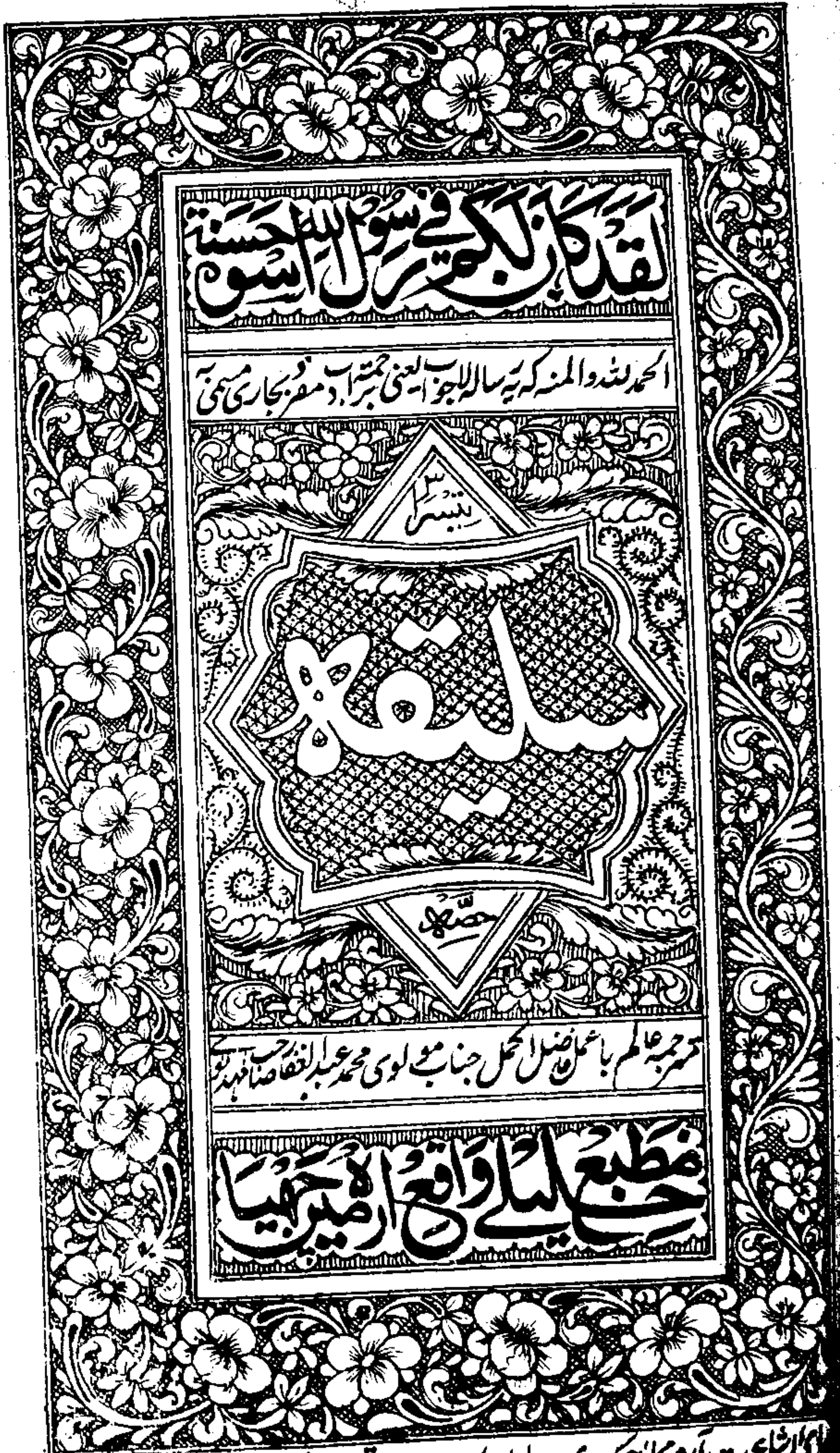
(۹۲۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا۔ مکان اور عورت اور گھوڑے میں نخوت ہے۔

(۹۲۳) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا (نخوت) اگر کسی چیز میں ہے تو عورت اور گھوڑے اور مکان میں ہے۔

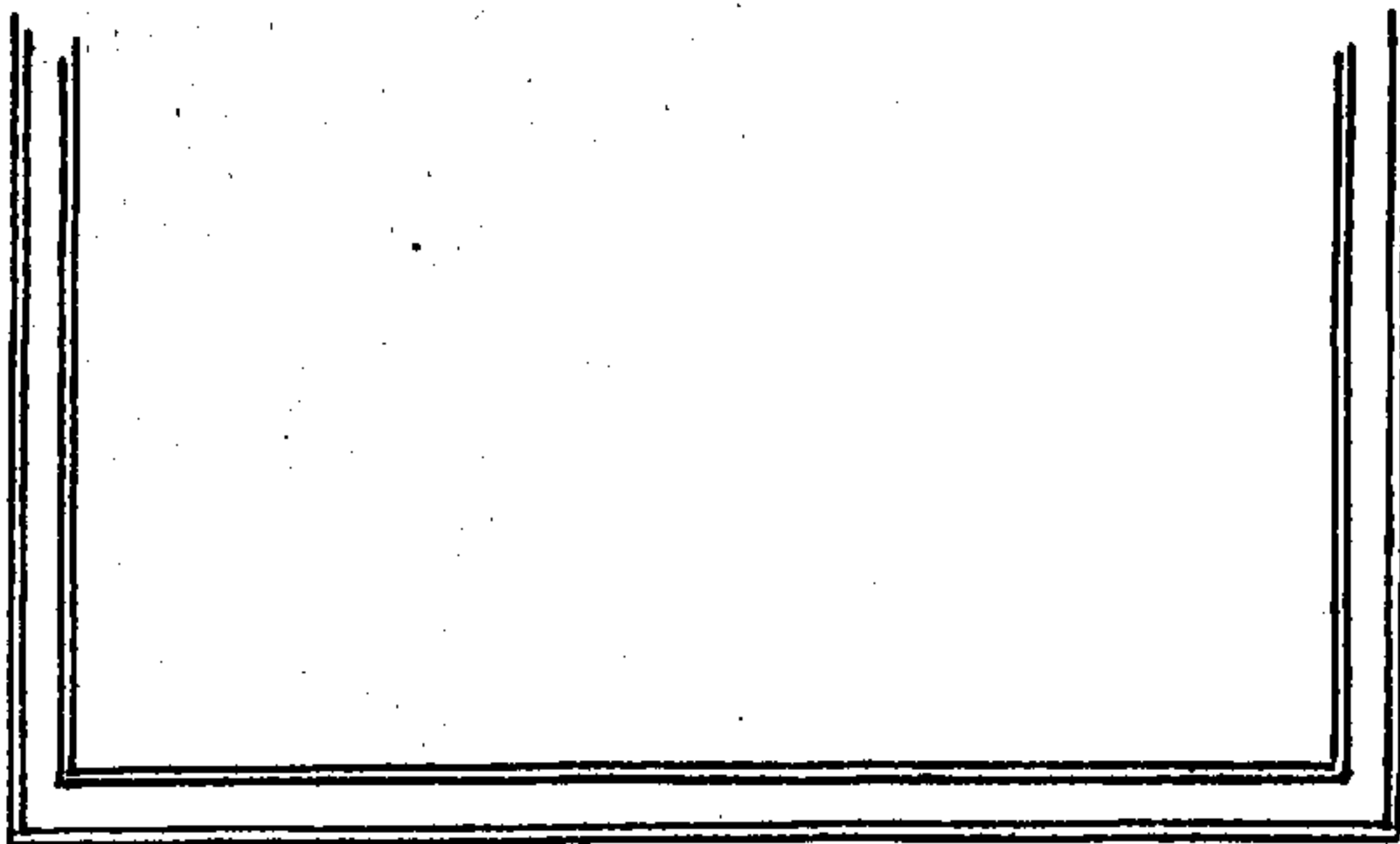
(۹۲۴) ایک شخص نے عرض کیا یا رسول اللہ پہلے ہلوگ جس مکان میں تھے وہاں ہمارے لوگ بھی بڑھے اور مال میں ہی ترقی ہوئی پھر اوس مکان سے ہلوگ دوسرے مکان میں چلے آئے۔ تو یہاں میرے لوگ بھی گھٹ گئے اور مال میں یہی کمی ہو گئی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اوس مکان کو پھیر دو یا فرمایا اوس مکان کو چھوڑ دو اور وہ مکان خراب ہے۔ ابو عبد اللہ نے کہا اس حدیث کے اسناد میں تامل ہے۔

تمام ہو اچھٹان پرہ ادب لمفرد کا اور حصہ دوسرا

ابو عبد اللہ نے فرمایا کہ اگر کوئی شخص عورت اور گھوڑے اور مکان میں ہے تو اس کی حالت خراب ہے۔



اشاعت آره محله چوک سید باد اول ۵۰۰ اجلد قیمت فی جلد ۷۰۰ محصل ذم خریدار



بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

۴۱۳

چھینک

(۹۲۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اللہ تعالیٰ کو چھینک پسند ہے اور جانی ناپسند ہے۔ جب کوئی چھینک کر سبحان اللہ کہے تو جو مسلمان سے اوپر حق ہے کہ اس کی شہیت کرے اور جانی شیطانی بات ہے حتیٰ الوسع اسکو ٹالے جمانی لینے میں جب کوئی ہا کا کہتا ہے تو شیطان ہنسے لگتا ہے۔

۴۱۴

چھینک کر کیا کہے۔

(۹۲۶) ابن عباس نے فرمایا جب کوئی تم میں سے چھینک کر الحمد للہ کہتا ہے فرشتہ کہتا ہے رب العالمین اگر او سے رب العالمین بھی کھا فرشتہ کہتا ہے یرحمک اللہ۔ (۹۲۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب کوئی چھینکے تو سبحان اللہ کہے پھر اسکا ہنشین کہے یرحمک اللہ جب وہ سبحان اللہ کہدے تو پھر چھینکنے والا کہے یرحمک اللہ ویصلیٰ علیک والیٰک ابو عبد اللہ بخاری نے کھا ہے اس باب میں یہی حدیث صالح بن اسمان کی روایت سب سے زیادہ ثابت ہے۔

۴۱۵

چھینکنے والی کی شہیت۔

(۹۲۸) زیاد بن العنقریقی نے کھا ہنوگ امیر معاویہ رضی اللہ عنہ کے عہد میں دیا

۱۰
۱۱
۱۲
۱۳
۱۴
۱۵
۱۶
۱۷
۱۸
۱۹
۲۰
۲۱
۲۲
۲۳
۲۴
۲۵
۲۶
۲۷
۲۸
۲۹
۳۰
۳۱
۳۲
۳۳
۳۴
۳۵
۳۶
۳۷
۳۸
۳۹
۴۰
۴۱
۴۲
۴۳
۴۴
۴۵
۴۶
۴۷
۴۸
۴۹
۵۰
۵۱
۵۲
۵۳
۵۴
۵۵
۵۶
۵۷
۵۸
۵۹
۶۰
۶۱
۶۲
۶۳
۶۴
۶۵
۶۶
۶۷
۶۸
۶۹
۷۰
۷۱
۷۲
۷۳
۷۴
۷۵
۷۶
۷۷
۷۸
۷۹
۸۰
۸۱
۸۲
۸۳
۸۴
۸۵
۸۶
۸۷
۸۸
۸۹
۹۰
۹۱
۹۲
۹۳
۹۴
۹۵
۹۶
۹۷
۹۸
۹۹
۱۰۰

کی راہ جہاد کو چلے میری کشتی ابو ایوب انصاری کی کشتی سے ملگنی پھر جب کھانیکا وقت
 ہوا ہلوگوں نے اونکو بلا بھیجا وہ آئے تو مگر فرمایا کہ تم لوگوں نے تو مجھے بلایا اور میں
 روزہ دار ہوں مگر مجھ کو بغیر آئے چارہ بھی نہیں تھا کیونکہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
 سے سنا ہے آپ نے فرمایا مسلمان پر مسلمان کے چھہ حق ہیں اگر کسی ایک کو بھی اور
 سے چھوڑا تو ایک مسلمان کا واجب حق جو اسکے ذمہ لازم تھا اوسکو چھوڑا (وہ حقوق یہ
 ہیں) ملاقات ہو تو سلام کرے اور بلا دے تو جاوے اور چھینکے تو اوسکے تسمیت کرے
 اور بیمار ہو تو اوسکی عیادت کرے اور مر جاوے تو جنازہ پر حاضر ہو اور خیر خواہی چاہے
 تو اوسکی خیر خواہی کرے راوی نے کہا اور ہلوگوں کے ساتھ ایک دنگی باز آدمی تھا
 وہ کہنے لگا اصْطَاطَعْنَا جَزَاءَ اللَّهِ حَيْدًا وَبَرًّا بس جب اوسنے بار بار یہ کلمہ کھا تو وہ اوسپر
 خفا ہوئے تب اوسنے ابو ایوب سے پوچھا کیوں حضرت ایسے شخص کے بارے میں آپکے کیا
 رائے ہے کہ ہم اوسکو کہیں خدا تجھے اچھا اور نیک بدلا دے اوسپر وہ ہم سے خفا
 ہو اور ہمیں گالی دینے لگے ابو ایوب نے جواب دیا کہ ہم لوگوں میں یہ بات مشہور
 ہے کہ جو بھلائی سے ٹھیک نہیں ہوتا وہ برائی سے درست ہو جاتا ہے تو تو
 بھی اوسپر لوٹا دے اوسکے بعد جب وہ آئے تو اوس شخص نے کھا خدا تجھے برا
 اور خراب بدلا دے اوسپر وہ ہنسنے لگے اور خوش ہو گئے اور کھا کہ تم اپنی دنگی نہیں
 چھوڑتے اوس شخص نے جواب دیا کہ خدا ابو ایوب انصاری کا پھلا کرے۔

(۹۲۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا مسلمان پر مسلمان کے چار حق
 ہیں بیمار ہو تو اوسکی عیادت کرے اور مر جاوے تو اوسکے جنازہ پر حاضر ہو اور
 پکارے تو اوسکا جواب دے اور چھینکے تو تسمیت کرے۔

(۹۳۰) برابر بن عارب نے کھا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ہلوگوں کو سنا
 باتوں کا حکم دیا اور سات سے منع فرمایا بیمار پر سی اور جنازے کا ساتھ دینا اور چھینکنے
 والے کی تسمیت اور کوئی قسم کھا بیٹھے تو قسم پوری کر دینا اور مظلوم کی مدد اور سلام
 کا پھیلانا اور بلا ہٹ منظور کرنا ان سات باتوں کا حکم دیا اور سونے کی انگھوٹھی اور

۱۔ اس جگہ کا
 مطلب
 علوم میں
 اور اس واسطے
 دیکھنا نظر رکھنا
 کیا تسمیت یعنی کتاب
 کی جو واجب
 نہیں واسطے علم

کچھ نہیں فرمایا تب اوسنے عرض کیا یا رسول اللہ دوسرے آدمی کو آپ جو جواب دیا
تھا اور مجھے کچھ نہیں فرمایا آپ نے فرمایا اوسنے الحمد للہ کہا تھا اور تو چپکارنا۔
چھینکنے والا الحمد للہ کچھ تو سنے والا تثمیت بھی نکری ۲۱۸

(۹۳۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس دو شخصوں نے چھینکا آپ نے
آپنے ایک شخص کی تثمیت کی اور ایک کی تثمیت نہ فرمائی اوسنے عرض کیا حضور
اوسکی تثمیت کی اور مجھے تثمیت نہ فرمائی آپ نے فرمایا اسنے تو الحمد للہ کہا تھا
اور تو نے نہیں کہا تھا۔

(۹۳۸) دو شخص نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس حاضر ہو کر بیٹھے دو نو نہیں
ایک شخص دوسرے سے زیادہ شریف تھا کہین اوسکو چھینک آگئی مگر اوسنے
الحمد للہ نہیں کہا تو آپ نے اوسکی تثمیت بھی نہیں فرمائی پھر اوس دوسرے شخص کو
بھی چھینک آئی اوسنے الحمد للہ کہا تو آپ نے تثمیت فرمائی اس پر اوس شریف نے
عرض کیا میں نے آپ کے سامنے جسکا تو حضور نے تثمیت نہیں فرمائی اور اس دوسرے
چھینکا تو آپ نے تثمیت کی فرمایا اس دوسرے نے خدا کو یاد کیا تو میں نے بھی اوس
یاد کیا اور تو خدا کو بھول گیا بس میں بھی تجھے بھول گیا۔

۲۱۹

چھینک والا شروع کیا ہے۔

(۹۳۹) عبد اللہ بن عمر کو چھینک آئی اور اونکو کوئی بوجھ اللہ کہتا تو وہ فرماتے
بِرَحْمَتِ اللَّهِ ذَرَأْنَاكُمْ وَنَغِضُ لَنَا وَلَكُمْ۔
خدا پر اور تجھ پر رحم فرماتے اور ہمیں اور تمہیں غم دے۔

(۹۴۰) عبد اللہ نے فرمایا جب تم میں کسی کو چھینک آوے اور اوسکو چاہے کہ الحمد للہ
رَبِّ الْعَالَمِينَ کہے پھر جو شخص اوسکا جواب دے اور اوسکو کہنا چاہے بَرَ حَمَلِ اللَّهِ
تَبِ بَعْرٍ مَّحْنِكَةٍ وَالْيَكُو كَهْنَا جَاهِي بَغْفِرُ اللَّهُ لِي وَ لَكُمْ۔

(۹۴۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس ایک شخص کو چھینک آئی تو آپ نے
فرمایا بَرَ حَمَلِ اللَّهِ پھر دوبارہ اوسکو چھینک آئی تب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
نے فرمایا اس شخص کو زکام ہو گیا ہے۔

کوئی یون کہے اگر تو نے محمد ﷺ کہا تو نہ حَمَلُ اللّٰهِ

۲۲۰

(۹۲۲) کھول ازوی نے کہا میں ابن عمر کے بغل میں تھا گوشہ مسجد سے ایک شخص کے چھینکے کی آواز آئی ابن عمر نے فرمایا۔ یُرْحَمُكَ اللّٰهُ اِنْ كُنْتَ حَمَلْتَ اللّٰهَ۔
اب نکلے

۲۲۱

(۹۲۳) عبد اللہ بن عمر کے ایک بیٹے ابو بکر بنون یا عمر او نکو چھینک آئی بس ابو بکر نے (بے اختیار) اب کہہ دیا سپر ابن عمر بولے (این) اب کہا اب تو شیطانوں میں ایک شیطان کا نام ہے چھینک اور الحمد للہ کے بیچ میں لیکر اوسکو ڈال دیا۔
جب کوئی بار بار چھینکے۔

۲۲۲

(۹۲۴) سلمہ نے کہا میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس تھا ایک شخص کو چھینک آئی اب فرمایا یُرْحَمُكَ اللّٰهُ اَوْ نَسِيَ بِحَرْفٍ دُوَابْرَهُ جَهِنَّمَ تَبَّ اَبُو نَسِيَ
فرمایا اسکو زکام ہے۔

(۹۲۵) ابو ہریرہ نے کہا ایک دفعہ دو دفعہ تین دفعہ تک چھینکنے والے کی تشمیت کر کے اسکے بعد پھر تو زکام ہے۔
اگر چھو دی چھینکے

۲۲۳

(۹۲۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں یہودی لوگ اس امیر پر چھینکتے تھے کہ آپ انکے لئے یُرْحَمُكَ اللّٰهُ فرمادیں مگر آپ فرمایا کرتے۔ يَهْدِيْكُمْ اللّٰهُ وَيُصَلِّحُ بَايْكُمْ
(۹۲۶) حدیث ۹۲۶

۲۲۴

مردوغورت کی تشمیت کرے

(۹۲۸) ابو بردہ نے کہا میں ابو موسیٰ کے یہاں گیا اور وہ اسوقت فضل ابن عباس کی ماں کے گھر میں تھے بس مجھے چھینک آئی تو ابو موسیٰ نے میری تشمیت نہ کی اور فضل کی ماں نے چھینکا تو اونکی تشمیت کی پھر میں نے اپنی ماں کو اسکی خبر کی پھر جب وہ انکی یہاں آئی تو وہ اون سے اوجھیں اور کھا کہ میرے بیٹے نے

لے
پندرہ سال بن رہا ہے
بکر بن عمر بن عباس
اختیار پاپر بابا پاپ
کھدی تین شاید سی
مجھ عرب میں
اب کھدی تین

مے خدا تمہیں
پایت کرے اور
تھارے دلونکو
چھیک بنا دے

چھینکا تب تو آپ نے تشمیت لگی اور فضل کی مان نے چھینکا تو آپ نے تشمیت کی اسپر وہ اون سے بولے کہ میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو فرماتے ہوئے سنا ہے کہ جب کوئی تم میں سے چھینکے پھر **اللهم** کہے تو اسکی تشمیت کرو اور اگر **اللهم** نہ کہا تو اسکی تشمیت نکر و تیرے پٹے کو چھینک آئی تو اسنے **اللهم** نہ کہا میں بھی اسکی تشمیت نہیں کی اور فضل کی مان کو چھینک آئی تو اسنے **اللهم** نہ کہا تب میں بھی اسکی تشمیت کی یہ شکر میری مان نے کہا تو بخوبی کیا

انگریزی

۲۲۵

تشریح

(۹۴۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تم میں کسی کو انگریزی آوے تو حتیٰ التو او سکورو کے۔

جواب میں لبیک کھنا

۲۲۶

(۹۵۰) معاذ نے کہا میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ ایک ہی جانور پر سوار تھا آپ نے فرمایا اے معاذ میں نے عرض کیا **اللهم** و **سعد** آپ نے ایسی ہی تین بار پکارا اور معاذ نے وہی جواب دیا فرمایا مجھے خبر ہے بندوں پر خدا کا کیا حق ہے بس اوسکو پوجیں اور کسی چیز کو اوسکے ساتھ شریک نہ کریں پھر تھوڑی دیر چلے پھر فرمایا اے معاذ میں نے عرض کیا **اللهم** و **سعد** فرمایا مجھے خبر ہے کہ بندے اگر ایسا کریں تو اونکا خدا پر کیا حق ہے بس ہی کہ انکو خذاب نکرے۔

مسلمان بھائی کے لئے کھڑا ہونا

۲۲۷

(۹۵۱) حضرت کعب جب انکھوں سے معتد در ہو گئے تو اونکے بیٹوں میں عبد اللہ بن کعب ہی باپ کا ہاتھ پکڑا نے ساتھ پھر اکر لے انہیں عبد اللہ کا بیان ہے کہ کعب بن مالک اپنا قصہ بتوک کی لڑائی میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ سے رہ جانے کا بیان کرتے تھے کہ اللہ تعالیٰ نے جو اونکا قصہ معاف فرمایا اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فجر کی نماز پڑھنے کے بعد پہلو گون کو خدا کے احسن ہو جانیکی خبر دی بس لوگ فوج فوج میرے پاس آ آ کر مجھے توبہ کی مبارکباد دینے لگے یہی

کہتے تھے کہ خدا کا تجر جوع ہونا تجھ مبارک ہو یہاں تک کہ ہم مسجد میں پہنچ کر کیا دیکھتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ہیں اور آپ کے ارد گرد لوگوں کی بھٹی ہو طلحہ بن عبد اللہ کھڑی ہو کر میرے طرف دوڑے مجھے مصافحہ کیا مجھے مبارکباد کہی قسم خدا کی اونکے سوا حجاجین میں سے کوئی نہیں میرے طرف اٹھا مجھے طلحہ کی یہ بات پہنچتی ہی نہیں (۹۵۲) ابو سعید خدری نے فرمایا کہ لوگوں نے سعد بن معاذ کی پچایت منظور کی پس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اونکو بلا بھیجا وہ گدھے پر سوار ہو کر حاضر ہوئے جب مسجد کے قریب پہنچے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اپنے پہلے آدمی یا فرمایا اپنے سردار کی خدمت میں چلو پھر فرمایا سعد ان لوگوں نے تمہارا حکم منظور کیا ہے سعد نے عرض کیا میرا حکم تو ان لوگوں کے بارے میں یہی ہے کہ انکے لڑنیوالے سپاہی مار ڈالے جائیں اور اونکی اولاد گرفتار کر لی جائے اس پر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تم نے خدا کے حکم کے موافق حکم دیا یا فرمایا فرشتے کے حکم کے موافق حکم دیا۔

(۹۵۳) انس نے فرمایا صحابہ جتنا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی دیدار کے خواہشمند تھے ویسے اور کیسے نہ تھے اسپر بھی جب آپ کو دیکھتے تو آپ کے واسطہ اوٹھ کھڑے نہیں ہوتے تھے کیونکہ جانتے تھے کہ یہ بات آنحضرت کو ناپسند ہے۔

(۹۵۴) حضرت عائشہ نے فرمایا۔ بولنے میں بات کرنے میں بیٹھنے میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا مشابہ ہمنے فاطمہ سے زیادہ کسی کو نہیں دیکھا اور نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جب اونکو دیکھتے مرجا فرماتے پھر اونکی طرف اوٹھ کھڑی ہوتی پھر اونکو چومتے پھر اونکا ہاتھ پکڑ کر ہونے لے چلے آتی یہاں تک کہ اپنی جگہ اونکو بیٹھا دیتی اور اونکا بھی یہی طور تھا کہ جب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اونکے یہاں جاتے مرجا فرماتے پھر آپکی طرف اوٹھ کھڑی ہوتی پھر آپکو چومتے اور جس مرض میں آنحضرت فرمایا ہی حضرت فاطمہ آپکو یہاں آئیں اپنے مرجا فرمایا اور اونکو چوما اور اونے کچھ آہستہ باتیں کہیں اسپر وہ

روئے لگیں پھر آپ نے دوبارہ اون سے کچھ باتیں کہیں تب تو وہ سننے لگیں اسپرینے عورتوں سے کھا کہ میں تو ان بی بی کو عورتوں میں ممتاز جانتی تھی مگر انکو دیکھتی ہوں کہ ابھی روزی روئے سنسے لگیں پھر میں نے ان سے پوچھا کہ آنحضرت نے تم سے کیا فرمایا انھوں نے کہا کہ میں بتا دوں تب تو میں پھوٹ پھری پھر حیب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے وفات فرمائی تب فاطمہ نے بتایا کہ مجھ آپ نے پہلے فرمایا تھا کہ اب میں مرنا والا ہوں اسپر میں روئے لگی پھر مجھ سے فرمایا کہ میرے لوگوں میں سب سے پہلے تو ہی مجھ سے ملو والی ہے اسپر میں خوش ہو گئی اور یہ بات مجھے بھت پسند آئی۔
بیٹھے ہوئے آدمی کیلئے کسی کا کھڑا رہنا۔
۴۲۸

(۹۵۵) جاہل نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کچھ بد مزہ ہوئے بس آپ نے بیٹھ کر نماز پڑھائی ہلوگ آنحضرت کو بھیجے نماز پڑھتے اور ابو بکر لوگوں کو آنحضرت کا بگیر سنا کر تھے بس آنحضرت نے ہلوگوں تکلیف التفات فرمایا دیکھا کہ ہلوگ کھڑے ہیں بس آپ نے ہلوگوں کو اشارہ فرمایا ہلوگ بیٹھ گئے اور آپ کے ساتھ بیٹھ کر نماز پڑھی پھر حیب آپ نے سلام پھیر فرمایا کہ تھوگ تو فارس اور روم والوں کا کام کرنے لگے تھو کہ اون کے بادشاہ تو بیٹھے ہوتے ہیں اور وہ اونکی خدمت پر کھڑے ہوتے ہیں ایسا نکلیا کرو اپنے اماں والی اقتہ اگر وہ سے کھڑے ہو کر نماز پڑھیں تو سب کھڑے ہوں گے پڑھو اور بیٹھ کر پڑھیں تو بیٹھ کر پڑھو۔

۴۲۹

جمالی نے تو منہ پر ہاتھ رکھ لیا کرے

(۹۵۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تم میں کوئی جمالی ہے تو اپنے منہ پر ہاتھ بھی رکھ لیا کرے اسلئے کہ شیطان منہ میں گھس جائیگا۔
(۹۵۷) ابن عباس نے فرمایا کوئی جمالی ہے تو منہ پر ہاتھ رکھ لیا کہ اسلئے کہ جمالی شیطان کے باعث ہے۔

(۹۵۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کوئی تم میں جمالی ہے تو اپنا منہ تمام حصے اسلئے کہ او میں شیطان گھس جائیگا
(۹۵۹) اگلی حدیث۔

(۹۶۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم طحان کے بیٹا ام حرام کے بیان جایا کرتے وہ ایک بچہ کھلایا کرتے اور وہ عبادہ بن صامت کے نکاح میں تھیں ایک دفعہ آنحضرت ﷺ نے ان کے آگے اونٹوں نے ایک بچہ کھلایا اور آپ کے مبارک سر کی عین دیکھنے لگیں بس آپ سو گئے پھر سوتے ہوئے جگ پڑے۔

(۹۶۱) قیس ابن عاصم سعدی نے کہا میں رسول اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہوا آپ نے فرمایا اونٹ والوں کو سوار کیا ہے میں نے عرض کیا یا رسول اللہ وہ کتنے اونٹ ہیں جن میں ہمیر نہ مانگنے والے کا مواخذہ ہونہ وہاں کا آپ نے فرمایا بان اونٹ چالیس تک تو خیر اور ساتھ بہت ہے اور دو سو والوں کی تو خرابی ہے مگر جو شخص قیمتی اونٹ عطا کرے اور بڑی دودھار اونٹ دودھ کھانی کو دے اور موٹی اونٹنی فسخ کرے آپ کھائے اور حاجتمندوں کو کھلا دے میں نے عرض کیا یا رسول اللہ یہ اخلاق تو نہایت خوب ہیں مگر آپ جانوروں کی کثرت سے جس حیثیت میں میں نے رہنا اختیار کیا وہاں گزارا اونکا نہیں تب آپ نے پوچھا داد ہمیش میں تیرا کیا طریقہ ہے میں نے عرض کیا جو ان جانور بھی دیتا ہوں بڑھا جانور بھی دیتا ہوں پوچھا دودھ کھلانے میں تیرا کیا طور ہے عرض کیا دودھار اونٹنی دودھ کھانی کو دے دیتا ہوں فرمایا گابھ دینے والے نہ جانور نہیں کیا طور ہے عرض کیا لوگ سویرے اپنی اپنی ڈوڑھی رسی لیکر آتے ہیں اور جس جانور کو چاہتے ہیں ناتھ لیتے ہیں کوئی روکا نہیں جاتا پھر جب تک مناسب سمجھتے ہیں اپنے بیان رکھتے ہیں بیان تک کہ خود ہی لوٹا دیتے ہیں تب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا بھلا تیرا مال مجھے زیادہ پیارا ہے یا اپنے ورثہ کا آپ نے فرمایا تیری مال میں تیرا تو وہی ہے جو تو کھانی کے چھٹی کرے یاد سے ولا کے خرچ کر ڈالے اور باقی تو تیرا ورثہ کا ہے تب میں نے کھا کہ اگر کچھ گھروٹ جانا ہو تو ضرور بالضرور جانور کا عدد کم کر دینگے۔ (راوی کا بیان ہے) پھر جب قیس کے مرتبہ کا وقت آیا اپنے بیٹوں کو اکٹھا کر کے کہنے لگے میرے بیٹو مجھے حاصل کر لو مجھے بڑھ کر کوئی خیر خواہ تمہارا تمہیں نہیں ملیگا جس سے حاصل کرو گے تمہیں نوحہ نکرنا رسول اللہ صلی اللہ

(۹۶۴) ابو زین نے کہلینے ابو ہریرہ کو دیکھا اپنی پشتانی پر ہاتھ مارتے تھے اور کہتے تھے اے عراق والو تلوک بولتے ہو کہ ابو ہریرہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر جھوٹا باندھنا ہے کیونکہ تم تو مزے میں رہو اور ہم پر گناہ ہو میں گو اہی دیتا ہوں کہ بیشک میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سنا ہے آپ فرماتے کہ جسکی جوتی کا تسمہ ٹوٹ جائے وہ جب تک دوست درست نہ کرے تب تک دوسرے پاؤں میں جوتی بھر کر چل بھر کرے۔
برائی کا ارادہ نہو اور کسی دوسرے کو زانو پر ہاتھ مارے۔
۴۳۳

(۹۶۵) ابو عالیہ برار نے فرمایا عبداللہ بن صامت میرے پاس ہو کر گذرے میں نے اونکے لئے گرسی بچھا دی وہ بیٹھ گئے پھر میں نے اون سے کہا کہ ابن زیاد نے نماز میں تاخیر کا معمول کر لیا ہے آپ کیا فرماتے ہیں اونھوں نے میرے زانو پر ایک ہاتھ مارا راوی کا بیان ہے کہ میں سمجھتا ہوں برار نے کہا کہ میں ضرب کا نشان پڑ گیا پھر عبداللہ بن صامت نے فرمایا تو نے جس طرح مجھے پوچھا ہے بھی ابو ذر سے پوچھا تھا اس پر جیسے میں تیرے زانو پر مار دیا اونھوں نے بھی میرے زانو پر مار دیا پھر کہا کہ تو وقت پر نماز پڑھ لیا کر پھر اگر ان حاکموں کا ساتھ پڑ جاوے تو اونکے ساتھ بھی پڑھ لے اور یہ نہ کہنا کہ میں تو پڑھ چکا ہوں اب نہیں پڑھوں گا۔

(۹۶۶) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم چند صحاب کے ساتھ جنین عمر بن خطاب بھی تھے ابن صیاد کے طرف چلے جاتے جاتے نبی معالہ کے خاطر میں لڑکوں کے گھمیلتا ہوا اوسے پایا اور ابن صیاد اون دنوں قریب بلوغ کے بھونچ چکا تھا اوسے ان کے آنکلی کچھ خبر بھی نہ ہونی یہاں تک کہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے پوچھا کہ اوسکی بیٹی ایک ہاتھ مارا پھر فرمایا کیوں بے تو گو اہی دیتا ہے کہ میں خدا کا رسول ہوں تب ان کی ایک طرف دیکھ کر کہا کہ میں گو اہی دیتا ہوں کہ آپ ان پڑھوں کے رسول ہیں ابن صیاد نے کہا کیوں آپ گو اہی دیتے ہیں کہ میں خدا کا رسول ہوں بس نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اوسے دبا کر فرمایا میں خدا اور اوسکے رسول پر ایمان لایا پھر اوس سے فرمایا تبا تو تو کیا دیکھتا ہے ابن صیاد نے کہا میرے پاس سچی خبر بھی آتی ہے۔

اور جوٹی خبر بھی آتی ہے اس پر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تجھ بات گڑباز گئی
 پھر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا میں تیرے لئے کچھ دیکھیں ضمیر رکھتا ہوں اوستے کھا
 وہ دُخ ہے آپ نے فرمایا بس چپ تو اپنے انداز سے نہیں بڑھا ہے حضرت عمر
 نے عرض کیا یا رسول اللہ اسکے بارے میں مجھے اجازت ہوتی ہے کہ میں اوسکی گڑباز
 ماروں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ اگر یہ وہی شخص ہے تو اسپر تیرا قابو نہیں
 چلے گا اور اگر وہ شخص نہیں ہے تو اسکا قتل کرنا تیرے لئے بھتر نہیں سالم راوی کہتا
 ہے کہ عبداللہ بن عمر کہتے تھے کہ اسکے بعد ایک دن نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اور ابی بکر
 کعب انصاری کھجور کے جس باغ میں ابن صیاد رہتا تھا اُدھر چلے جو وقت نبی صلی
 اللہ علیہ وآلہ وسلم باغ کے اندر داخل ہوئے ابن صیاد اپنے بستر پر لیٹا ہوا انگنٹا
 تھا بس نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کھجورون کی شاخ میں چھپ کر چلنے لگے کہ جب تک
 ابن صیاد آپ کو دیکھے آپ پہلے ہی کچھ بات اوسکے موندھ سے سن لیں مگر ابن صیاد
 کی مان لے اچو چھپ چھپ کر چلے ہوئے دیکھ لیا تب ابن صیاد کو اوسکے نام سے
 پکار کر بولی ارے صاف یہی محمد بس ابن صیاد تم گویا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
 نے فرمایا اگر کھجور دیتی تو بتا لگ جانا عبداللہ بن عمر نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
 مجمع میں کھڑے ہو گئے پھر جو خدا کی شان کے مناسب، خدا کی تعریف کی پھر دجال کا
 ذکر چھڑا اور فرمایا کہ میں بھین دجال کی خردیتا ہوں اور جتنے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
 اپنی قوم کو اوسکی خبر دی ہے نوح پیغمبر نے بھی اپنی قوم کو اوسکی خبر دی ہے مگر میں
 تم لوگون سے ایک ایسی بات کہے دیتا ہوں کہ وہ بات کسی نبی اپنی قوم کو نہیں بتانی
 تم جان لو کہ دجال کا نام ہے اور اللہ کا نام نہیں ہے۔

(۹۶۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو جب نجانے کی ضرورت ہوتی تین چلو پانی سر پر
 اوٹیل لیر حسن بن محمد بن حنفیہ نے جابر راوی سے کہا اے ابو عبداللہ میرے
 بال بس ہلنگڑ سے نیا وہ ہین جاؤ نے حسن کے زانو پر ہاتھ مار کر فرمایا تجھے نبی صلی
 اللہ علیہ وآلہ وسلم کے بال تیرے بال سے کہیں زیادہ اؤ گھین خوشبو تھے۔

(۹۶۸) مدینہ میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ایک کھجور کی سٹی پر گھوڑے سے گر پڑے آپ کا ہاتھ اٹھ گیا تو ہلوگ بی بی عایشہ کے بالا خانہ پر آپ کی عبادت کینے حاضر ہوئے ایک دفعہ آئے تو اس وقت آپ بیٹھے ہوئے نماز پڑھ رہے تھے ہلوگوں نے کھڑے ہو کر نماز پڑھ لے پھر دوسری دفعہ آئے اس وقت آپ بیٹھے ہوئے فرض نماز پڑھ رہے تھے ہلوگ آپ کے پیچھے کھڑے ہو کر پڑھنے لگی بس آپ نے ہلوگوں کو اشارہ فرمایا کہ بیٹھ جاؤ پھر تب نماز تمام کر چکی فرمایا اگر امام نماز بیٹھ کر پڑھے تو سب کے سب بیٹھ کر پڑھو اور کھڑا ہو کر پڑھئے تو کھڑے ہو کر پڑھو اور جب امام بیٹھا ہو اس وقت کھڑے مت رہا کرو جیسے فارس وائے اپنے سرداروں کے ساتھ کرتے ہیں۔

اور انصار میں کسی نوجوان آدمی کے لڑکا پیدا ہوا اوسنے اوسکا نام محمد رکھا انصار نے اوس سے کہا کہ تم تجھے رسول اللہ کی کنیت سے کہی نہ پکارینگے بعد اسکے ہلوگ رستہ میں بیٹھ گئے کہ اب سے قیامت کا حال پوچھیں آپ نے فرمایا ہلوگ مجھ سے قیامت کا حال پوچھنے آئے ہو عرض کیا ہاں فرمایا کسی شخص پر تئو برس کا زمانہ گزرنے نہیں پاویگا ہلوگوں نے عرض کیا انصار میں ایک نوجوان آدمی کے یہاں لڑکا پیدا ہوا اوسنے لڑکے کا نام محمد رکھا تب انصار نے کہا کہ ہلوگ تجھے رسول اللہ کی کنیت سے کبھی نہ پکارینگے آپ نے فرمایا انصار نے خوب کیا میرے نام پر نام رکھو اور میری کنیت پر کنیت مت رکھو۔

(۹۱۹) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بعض اونچان کی آبادی سے بازار میں آگئے اور لوگ آپکے دونوں جانب سے بھرے ہوئے تھے ان میں ایک بوچی بکری پر گزر رہا آپ نے ہاتھ بڑھا کر اسکا کان پکڑ لیا پھر فرمایا تم میں کوئی بھی چاہتا ہے کہ یہ بکری اوسکو ایک درم پر لیا سے لوگوں نے عرض کیا ہلوگ اسکے بدلے کچھ دینا نہیں چاہتے اور ہلوگ اسکو لیکر کیا کریں فرمایا اچھا یہ چاہتے ہو کہ تمہیں مفت

۱۵
 جہت کے طور
 یوں کہ انصار
 کا دوا کی طرف سے
 اس کا جائزہ لیتے ہوئے
 اس کا جائزہ لیتے ہوئے

پہلے عرض کیا نہیں آپ نے تین بار اونکو کون سے پوچھا سب لوگوں
 لے عرض کیا قسم خدا کی نہیں اگر یہ زندہ بھی ہوتی تو بوجی ہونا اور میں عیب
 تھا یعنی دونوں کان ہی ندر دچہ جا کے آنگہ وہ مردار بھی ہے آپ نے فرمایا
 قسم خدا کی دنیا خدا کے نزدیک اس سے بھی زیادہ لے حقیقت ہے
 جتنی یہ ہلوگوں کے نزدیک بے حقیقت ہے۔

(۹۴۰) ابی کے پاس ایک شخص نے جاہلیت کے طور پر فریاد کی
 بس ابی نے اوسکو بلا کنا یہ فحش لفظوں میں سخت کہا اونکے ساتھی لوگ انکا منہ
 دیکھنے لگے ابی نے کھا معلوم ہوتا ہے کہ تلوگوں کو یہ بات بری معلوم ہوئی پھر
 فرمایا کہ تم تو اس بات میں کسیکا لحاظ خیال نہیں کرتے ہیں میں نے خود نبی صلی اللہ
 علیہ وآلہ وسلم کو فرماتے ہوئے سنا ہے کہ جو شخص جاہلیت کے وضع پر فریاد کرے
 اوسکو بلا کنا یہ صاف صاف گالی دو۔

(۹۴۱) وہی حدیث۔

کسیکا پانوں سن ہو جاوے تو کیا کہے

۲۳۶

(۹۴۲) ابن عمر کے پانوں سن ہو گئے ایک شخص نے اون سے کھا جس
 شخص کو تم سب سے زیادہ پیار کرتے ہو اوسکو یاد کرو اور سپراونھوں نے فرمایا اے محمد
 ۲۳۷

(۹۴۳) مدینہ کے کسی باغ میں ابو موسیٰ صحابی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ساتھ اور نبی صلی اللہ
 علیہ وآلہ وسلم (پیار) باغ میں ایک چھری تھی آپ کی پیر میں اوس سے شغل کر رہے تھے اتنے
 میں ایک شخص دروازہ کھولوانے لگا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا دروازہ
 کھول اور اوسکو بہشت کی خوشخبری دے میں ادھر گیا تو وہ حضرت ابو بکر تھے میں نے دروازہ
 کھول دیا اور اوسکو بہشت کی خوشخبری سنا دی پھر دوسرے شخص نے دروازہ
 کھولوایا حکم ہوا دروازہ کھول اور اوسکو بہشت کی خوشخبری سنا دے تو وہ حضرت
 عمر تھے میں نے دروازہ کھولا اور اوسکو بہشت کی خوشخبری سنا دی پھر اور ایک شخص نے

دروازہ کھلوا یا آپ اس وقت تک ٹیکے ہوئے تھے بس بیٹھ گئے اور فرمایا دروازہ کھول دے اور اسکو ایک بولے میں مبتلا ہو جانے پر بہشت کی خوشخبری سنا دے میں گیا تو وہ عثمانؓ تھے میں نے دروازہ کھل دیا اور جو کچھ آنحضرتؐ نے فرمایا تھا اون سے کھلوا وہ بولے خدا کی مدد چاہئے۔

۲۳۸

لڑکوں کا مصافحہ

(۹۷۴) سلمہ بن وردان نے کھانینے انسؓ کو دیکھا لوگوں سے مصافحہ کر رہے تھے مجھے پوچھا تو کون ہے میں نے عرض کیا بنی لیت کا ازاد غلام بس آپ نے میرے سر پر تین بار ہاتھ پھیرا اور فرمایا خدا تمہیں برکت دے۔

۲۳۹

مصافحہ

(۹۷۵) میں والے جب حاضر ہوئے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا میں کے لوگ آگئے یہ لوگ ہلوگوں سے زیادہ نرم دل ہیں پہلے پہلے مصافحہ کی لوگ ملائے۔ (۹۷۶) براہ بن عازبؓ کو کھا پورا سلام تب ہی ہے کہ مسلمان بھائی سے مصافحہ بھی کر لیا عورت لڑکی کے سر پر ہاتھ پھیرے

۲۴۰

(۹۷۷) ابی اسد نے کھا عبد اللہ بن زبیر انی ہان بی بی اسما بنت ابی بکر کے پاس مجھو بھیجا کر میں اونکو حجاج کی کارروائی یونکی خبر دیتا اور وہ میرے لئے دعا کرتی اور میرے سر پر ہاتھ پھیرتی اور میں اوندنوں غلام تھا۔

۲۴۱

مصافحہ

(۹۷۸) جابر بن عبد اللہ کو خبر ملی کہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ایک صحابی کوئی حدیث روایت کرتے ہیں جابر کا بیان ہے کہ میں نے ایک اونٹ خرید کر کے ایک مہینے کا سفر کیا یہاں تک کہ ملک شام میں آیا یکایک عبد اللہ بن انیس سے ملاقات ہو گئی اونھوں نے انکی پاس کھلا بھیجا کہ دروازے پر جابر کھڑے ہیں یہ خبر دیکر آدمی واپس آیا اونھوں نے کھا جابر بن عبد اللہ بن زبیر نے کھا ہاں بس وہ نکل آئے پھر مجھے ہاتھ کھینچنے کہا

مجھے ایک حدیث کی خبر ملی تھی اسے نہیں سنا ہے مجھے خوف ہوا کہ شاید میں مر جاؤں
یا آپ مر جائیں اور انھوں نے فرمایا بیٹے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو فرماتے ہوئے سنا
کہ اللہ تعالیٰ بندہ نکال دیا تو نکاح حشر اس طرح سے فرمایا گا کہ لوگ ننگے غیر محتون بہیم
ہونگے ہلوگوں نے عرض کیا یہ کچھ کیا فرمایا اور لوگوں کے پاس کچھ مال نہیں ہوگا پھر لوگوں
ایسی آواز سے پکارے گا کہ لوگ دور سے بھی دیکھیں گے یہ ایسا ہے کہ فرمایا کہ میں
بادشاہ ہوں کسی بہشتی کو مناسب نہیں ہے کہ جسکے ذمہ کسی دوزخی کو اپنے حق کا مطالبہ
ہو وہ بہشت میں داخل ہوا ورنہ کوئی دوزخی جسکے ذمہ کسی بہشتی کو اپنی حق کا مطالبہ دوزخ
میں جاوے میں نے عرض کیا ایسا کچھ کیونکہ ہوگا کیونکہ لوگ ننگے ہونگے مفلس بے جائداد ہو کر خدا
کے سامنے حاضر ہونگے فرمایا نیکی اور بدی سے۔

۴۴۳

بیٹی کو جو منا

(۹۷۹) عائشہ نے فرمایا بولنے میں اور بات کرنا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
کا مشابہ بی بی فاطمہ سے بڑھ کر ہے کیونکہ نہیں دیکھا جب حضرت کے یہاں آئیں آپ
اور ان کی طرف کھڑے ہو کر مر جبا فرماتے اور انکو جو متے اور اپنی جگہ بیٹھا دیتے اور
جب آپ اونکے گھر تشریف لیا جاتے وہ بھی آپ کی طرف اٹھ کر آپکا ہاتھ پکڑ لیتیں
اور مر جبا کہتیں اور انکو جو متے اور اپنی جگہ بیٹھا دیتیں پھر جس مرض میں آپ
کا انتقال ہوا آپ کے یہاں آئیں آپ نے مر جبا فرمایا اور انکو جو ما۔

۴۴۳

ہاتھ جو منا

(۹۸۰) ابن عمر نے فرمایا ہلوگ ایک لڑائی میں تھے یکبارگی لوگ ہلاک کئے گئے
ہلوگوں نے کہا ہلوگ تو بھلاک کھڑے ہوئے اب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے
کس موذی سے ملاقات کرینگے پس یہ آیت اتری اَلْمُتَحَرِّفَاتِ الْقِتَالِ بِحَرِّ هَلْوِ كُونَ
نے صلاح کی کہ اب مدینہ نہ جائیں گے نہ کسی سے ملاقات ہوگی پھر کہا کہ چلے تو بس
نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جو کی نمار پڑھ کر نکلے ہلوگوں نے عرض کیا کہ ہلوگ تو
بھگوتے نکلے آپ نے فرمایا (نہیں) ہلوگ پھر لوٹ آؤ اور پھر ہلوگوں نے آپ کے

دست مبارک کا بوسہ لیا آپ نے فرمایا تم تمہاری جماعت ہیں۔

(۹۸۱) عبدالرحمن بن رزین نے فرمایا بزدہ میں ہلوگوں کا گزرو اور لوگوں نے بتایا کہ یہاں سلمہ بن الاکوع صحابی ہیں میں اونکے یہاں حاضر ہوا اور انکو سلام کیا۔ اونھوں نے اپنا ہاتھ نکال کر فرمایا کہ انہیں ہاتھوں سے نبی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے بیعت کی ہے حضرت سلمہ نے جو ہاتھ نکالا ایسا بھاری ہاتھ تھا جیسے ٹھیک اونٹ کا ہاتھ بس ہلوگ اوٹھ کھڑے ہوئے اور اونکے ہاتھ پر بوسہ دیا۔

(۹۸۲) ثابت نے انس سے پوچھا آپ ذی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو اپنے ہاتھ سے چھوا بھی تھا فرمایا ہاں بس اونھوں نے انس کا ہاتھ چوم لیا۔

۲۲۲

پانوں چومنا

(۹۸۳) واریع بن عامر نے فرمایا ہلوگ بچوں کے لوگوں نے بتایا یہی رسول اللہ ہیں بس ہلوگ اچکا دونوں ہاتھ اور پانوں بکڑ کر چومنے لگے۔

(۹۸۴) صہیب نے فرمایا نبی حضرت علی کو حضرت عباس کا ہاتھ اور پانوں چومتے ہوئے دیکھا۔ کسی کی تعظیم کو کوئی کھڑا ہے

۲۲۵

(۹۸۵) امیر معاویہ باہر آئے عبداللہ بن عامر اور عبداللہ بن زبیر بھی بیٹھے ہوئے تھے ابن عامر تو دیکھ کر کھڑے ہو گئے اور ابن زبیر بھاری وزن کے آدمی تھے۔ وہ بیٹھے ہی رہے امیر معاویہ نے کھانی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جسکو یہ بات اچھی معلوم ہو کہ بندگان خدا اور سبکی تعظیم کو کھڑے رہیں وہ دوزخ میں گھر ٹھہرائے

سلام کی ابتدا

۲۲۶

(۹۸۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اللہ تعالیٰ نے حضرت آدم صلی اللہ علیہ وسلم کو سناٹھہ ہاتھ لانا پیدا کیا اور ایک جماعت فرشتوں کی بیٹھی ہوئی تھی حضرت آدم کو فرمایا جا اس جماعت کو سلام کر پھر اونکے جواب کو کان لگا کر سن لے وہی تیرا اور تیری اولاد کا ملتے وقت سلام کلام ہو گا حضرت آدم نے جا کر کہا السلام علیکم اور

نے جواب دیا السلام علیک ورحمۃ اللہ ونعمون نے ورحمۃ اللہ بڑھا دیا بس بہشت
میں جائیو اے سب حضرت آدم ہی کی صورت پر ہونگے مگر اسوقت سے اسوقت
تک خلقت میں برابر کی ہوتی رہی۔

۲۴۷

سلام پھیلانا

(۹۸۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا سلام پھیلادو سلامتی سے رہو گے۔
(۹۸۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب تک مومن نہ بنو گے بہشت میں نہ
پاؤ گے اور جب تک آپس میں محبت نہ ہیں پیدا کرو گے مومن نہ بنو گے محبت پیدا
کر نیکا طور میں تمہیں بتاؤں لوگوں نے عرض کیا یا رسول اللہ بتائے فرمایا
آپس میں سلام پھیلادو۔

(۹۸۹) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم فرمایا ^{بہر ان حد} عبادت کرو اور کھانا کھلاؤ
اور سلام پھیلادو بہشت میں چلے جاؤ
پہلے سلام کرنا

۲۴۸

(۹۹۰) ابن عمر کو پہلے کوئی شخص سلام کرنے نہیں پاتا تھا بلکہ ابن عمر ہی سلام کرتے ہیں
سبقت کرتے تھے

(۹۹۱) جابر نے فرمایا سوار آدمی پیدل چلنے والے کو سلام کرے اور پیدل چلنے
والا بیٹھے ہوئے آدمی کو اور پیدل چلنے والے ہوں تو جو پہلے سلام کرے وہی
افضل ہے

(۹۹۲) قبیلہ مرزنیہ کے اغرنام ایک صحابی کا کئی وقت خرا قبیلہ بنی عمر بن عوف کے
ایک شخص کے ذمہ باقی تھا وہ بار بار اسکے بیان آئے گئے بس میں نبی صلی اللہ علیہ
وآلہ وسلم کے بیان حاضر ہوا آپ نے ابو بکر صدیق کو میرے ساتھ کیا تو جو لوگ
رستی میں ملتے گئے سب لوگوں کو سلام کرنے گئے تب ابو بکر نے فرمایا دیکھتا نہیں لوگ ہی
پہلے تجھے سلام کرتے ہیں بس اونہیں کو ثواب ہوتا ہے پہلے تو سلام کیا کر کہ تجھ بھی ثواب

حاصل ہو رادوی کھتا ہے کہ ابن عمر نے یہ اپنا ہی قصہ بیان کیا ہے۔
 (۹۹۳) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کسی مسلمان کو حلال نہیں ہے
 کہ کسی مسلمان بھائی کو تین دن سے زیادہ چوڑے کسے کہ دونوں سے راہ میں ملاقات
 ہو جائے تو یہ اس سے منہ پھیرے وہ اس سے منہ پھیرے اور دونوں میں
 جو پہلے سلام کرے وہ دوسرے سے اچھا ہے۔

۴۴۹

سلام کی بزرگی

(۹۹۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ایک مجلس میں تھے ایک شخص کا ادھر
 گزر ہوا اور نے کہا سلام علیکم آپ نے فرمایا وٹس نیکیاں ہوئیں پھر دوسرا شخص
 گزرا اور نے کہا السلام علیکم ورحمۃ اللہ آپ نے فرمایا بتیں نیکیاں ہوئیں پھر ایک اور
 شخص گزرا اور نے کہا السلام علیکم ورحمۃ اللہ و برکاتہ آپ نے فرمایا بتیں نیکیاں ہوئیں
 پھر مجلس سے ایک شخص اٹھا اور اسے سلام نہیں کیا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
 نے فرمایا کیا جلد یہ شخص (کام کی بات) بھول گیا جب کوئی مجلس میں آوے تو سلام کرے
 پھر بیٹھنا چاہی تو بیٹھ جاوے اور جب اٹھے تب بھی سلام کرے پہلے سلام کو پچھلے سلام سے
 کچھ ترجیح نہیں ہے۔

(۹۹۵) عمر نے فرمایا میں ابو بکر کے ساتھ جانور پر سوار تھا جب کچھ لوگوں کے
 قریب گزر ہوتا ابو بکر فرماتے السلام علیکم لوگ جواب دیتے السلام علیکم ورحمۃ اللہ
 ابو بکر فرماتے السلام علیکم ورحمۃ اللہ لوگ جواب دیتے السلام علیکم ورحمۃ اللہ و برکاتہ
 آخر ابو بکر نے فرمایا آج تو لوگ ہم سے بہت بڑے رہے۔

(۹۹۶) وہی حدیث۔

(۹۹۷) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ہو تمہاری کسی بات سے
 اتنا نہیں بڑھتے جتنا سلام اور آمین کہنے پر چڑھتے ہیں
 خدا کے ناموں میں ایک نام سلام بھی ہے۔

۴۵۰

(۹۹۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اللہ کے ناموں میں ایک نام سلام بھی ہے

خدا اور سکوزمین پر رکھ دیا ہے بس تم لوگ سلام خوب پھیلاؤ۔
 (۹۹۹) ابن مسعود نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پیچھے لوگ نماز پڑھ رہے
 تھے ایک شخص بولا اَللّٰهُمَّ عَلَي السَّلَامِ عَلَي اللّٰهِ جِبْنِي صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نماز سے فارغ ہوئے
 آپ نے پوچھا اَللّٰهُمَّ عَلَي السَّلَامِ عَلَي اللّٰهِ جِبْنِي صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم تو خود ہی سلام سے یوں التبتہ کھا کر والصلوات
 لِلّٰهِ وَالصَّلٰوٰتِ وَالطَّيِّبٰتِ السَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيَّا
 وَعَلَىٰ عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
 زاوی نے کہا لوگ اس تشہد کو بھی قرآن کی سورہ کی طرح سیکھتے تھے۔
 مسلمان کا مسلمان پر یہ حق ہے کہ ملاقات کے وقت اوس سلام کرے ۲۵۱

(۱۰۰۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا مسلمان کے مسلمان پر پانچ حق ہیں لوگوں
 نے پوچھا وہ کیا کیا ہیں فرمایا جب ملاقات ہو تو سلام کر اور بلاؤ سے تو منظور کر اور خیر
 خواہی چاہے تو خیر خواہی کر اور مہینک کر الحمد للہ کہے تو اوسکی شہیت کر اور جب بیمار پڑے
 تو عیادت کر اور مر جاوے تو قبر تک اوسکے ساتھ جا۔
 چلتا آدمی بیٹھے ہوئی کو سلام کرے ۲۵۲

(۱۰۰۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا سوار پیدل کو سلام کرے اور پیدل
 چلنے والا آدمی بیٹھے ہوئے کو سلام کرے اور ہلکی جماعت بھاری جماعت کو سلام کرے پھر
 جو سلام کا جواب دے وہ اوسکا سلام ہوا اور جنہے جواب نہیں دیا اوسکو کچھ بھی نہیں
 (۱۰۰۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا سوار پیادے کو سلام کرے اور پیادہ
 چلنے والا بیٹھے ہوئے کو سلام کرے اور تھوڑے لوگ بہت کو سلام کرین جابر نے
 کہا کہ دو چلنے والے جب مجھ اور میں تو جو پہلے سلام کرے وہ افضل ہے
 بیٹھے ہوئی آدمی کو سوار آدمی سلام کرے ۲۵۳

(۱۰۰۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا سوار آدمی پیدل چلتے ہوئے کو سلام
 کرے اور چلتا ہوا بیٹھے ہوئے کو اور چھوٹی جماعت بڑی جماعت کو۔
 (۱۰۰۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا گھوڑے پر سوار آدمی بیٹھے ہوئے

کو سلام کرے اور تھوڑے لوگ بہت لوگوں کو سلام کریں۔

پیدل سوار کو سلام کرے

۲۵۲

(۱۰۰۵) شعبی سے ایک سوار سے ملاقات ہوئی اونہوں نے اسے سلام کیا
میں نے کہا آپ اسے بھی سلام کرتے ہیں اونہوں نے کہا میں نے شریح کو دیکھا پیدل چلنے
ہوئے سلام کرتے تھے۔

چھوٹی جماعت بڑی جماعت کو سلام کرے۔

۲۵۵

(۱۰۰۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا سوار پیدل کو سلام کرے اور پیدل
بیٹھے ہوئے کو سلام کرے اور تھوڑے لوگ بڑی جماعت کو سلام کریں۔

(۱۰۰۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا سوار پیدل کو سلام کرے اور پیدل چلنے
والا کھڑے ہوئے آدمی کو سلام کرے اور تھوڑے لوگ بہت کو سلام کریں۔

۲۵۶

چھوٹا آدمی بڑی آدمی کو سلام کرے

(۱۰۰۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا سوار پیدل کو سلام کرے
اور چلتا ہوا بیٹھے ہوئے کو سلام کرے اور تھوڑے لوگ بہت کو سلام کریں۔

(۱۰۰۹) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا چھوٹا بڑے کو اور چلتا ہوا
بیٹھے ہوئے کو اور تھوڑے لوگ بہت کو سلام کریں۔

۲۵۷

سلام کی حد

(۱۰۱۰) ابو الزناد نے کہا خارجہ حضرت زید کے خطیبین یون سلام لکھتے
السلام علیکم یا امیر المؤمنین ورحمة اللہ وبرکاتہ ووعفوتہ وطلبت صلواتہ۔
قیہ سلام اگر سردار مسلمانوں کو اور اللہ کی رحمت اور اس کی برکتیں اور اس کی بخشش اور اس کی اچھی درود

۲۵۸

اشارے سے سلام

(۱۰۱۱) ہبیاج بن بسام نے کہا انس ہلوگون کی طرف گزرتے تو ہاتھ
کے اشارے سے سلام کرتے اور وہ حضاب لگاتے ہوتے اور حسن زرق
حضاب کرتے اور سیاہ عمامہ باندھے ہوتے اسما نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ
وسلم نے عورتوں کو ہاتھ کے اشارے سے سلام کیا۔

(۱۰۱۲) سعد حضرت عبداللہ بن عمرو قاسم بن محمد کے ساتھ چلے جب سفر میں بھوکا اور ترسے عبداللہ بن زبیر کا گزر ہوا اونہوں نے ان لوگوں کو اشارے سے سلام کیا ان دونوں نے ان کے سلام کا جواب دیا۔

(۱۰۱۳) عطار بن ابی رباح نے کہا وہ لوگ ہاتھ سے سلام کرنا کروہ جانتے تھے یا کما وہ ہاتھ سے سلام کرنا کروہ جانتے تھے۔

۲۵۹

سنا کے سلام کرے

(۱۰۱۴) ثابت بن عبید نے کھان میں ایک جلسہ میں پہنچا وہاں عبداللہ بن عمر بھی تھے اونہوں نے فرمایا سلام ایسا پکار کے کیا کرو کہ آدمی سن لے کیونکہ سلام خدا کی طرف بکرت والی پاکیزہ دعا ہے۔

۲۶۰

جو لوگ گھڑی نکلے وہ لوگوں کو سلام کری اور لوگ اسی سلام کریں۔

(۱۰۱۵) طفیل بن ابی بن کعب عبداللہ بن عمر کے یہاں آئے اور سویرے اونکے ساتھ بازار جاتے وہ کہتے ہیں کہ ہلوگ جو صبح بازار جاتے تو عبداللہ بن عمر کا جس کسی گریے پڑے آدمی یا سوداگر یا مسکین یا کسی پر گزر ہوتا وہ اوسکو ضرور سلام کرے طفیل نے کہا ایک دن میں عبداللہ بن عمر کے یہاں آیا وہ مجھے اپنے ساتھ بازار لے چلے تو میں نے عرض کیا آپ بازار جا کر کیا کریں گے آپ نہ تو کوئی سودا کرتے ہیں اور نہ کسی مال کا حال پوچھتے ہیں نہ دام کام کرتے ہیں نہ بازار کے جلسوں میں بیٹھتے ہیں تو انہی میں بیٹھنے باتیں کریں راوی کہتا ہے کہ طفیل تو نبیل آدمی تھے عبداللہ بن عمر نے کہا یا ابابطن ہم تو فقط اسی واسطے صبح بازار جاتے ہیں کہ جس سے ملاقات ہو اوس سے صاحب سلامت کریں۔

۲۶۱

جلسہ میں آدمی تو سلام کرے

(۱۰۱۶) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب کوئی مجلس میں آوے تو چاہے کہ سلام کرے پھر اگر لوٹ جاوے تب بھی سلام کرے کیونکہ پہلے کو پہلے پر کچھ ترجیح نہیں ہے۔

(۱۰۱۶) ایضاً

۴۶۲

مجلس سے اٹھتے تو سلام کریں۔

(۱۰۱۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کوئی شخص مجلس میں آوے تو چاہئے کہ سلام کرے پھر اگر جلسہ اٹھنے کے پہلے اوسکو جانا ہو تب بھی سلام کرے کیونکہ پہلے

۴۶۳

کو پھیلے پر کچھ ترجیح نہیں ہے۔
مجلس اٹھنے کے وقت سلام کریں تو اوسکا کیا حق ہے

(۱۰۱۹) معاویہ بن قیس نے کہا میرے باپ نے مجھے لکھا کہ اے میرے بیٹے بچے اگر تو کسی نیک جلسہ میں شریک ہو جسکے ثواب کی امید رکھتا ہو پھر کسی حاجت کے سبب جلد ہی اٹھنا پڑے تو کہہ دے سلام علیکم۔ تب اوس مجلس میں جتنے کام ہونگے سب کی شرکت کا تجھے ثواب ملیگا اور جو لوگ کوئی جلسہ کرتے ہیں پھر بغیر ذکر خدا کے متفرق ہو جاتے ہیں گویا وہ مردار گھا کھا پی کر متفرق ہوئے۔

(۱۰۲۰) ابو ہریرہ نے فرمایا جو شخص مسلمان بھائی سے ملے اوسکو سلام کرے پھر اگر دونوں کے درمیان درخت یا دیوار حائل ہو جائے پھر ملے تو پھر سلام کرے۔

(۱۰۲۱) انس بن مالک نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے اصحاب ساتھ ساتھ چلتے ہوئے اور سامنے اونکو کوئی درخت آ جانا ایک جماعت اوسکے واسطے ہو کر نکلتی اور دوسرے جماعت بائیں طرف ہو کر نکلتی پھر جب ملتے تو ایک دوسرے کو سلام کرتے۔

مصافحہ کر لیں ہاتھ میں خوشبو لگانا

۴۶۴

(۱۰۲۲) ثابت بنانی نے کہا انس کا معمول تھا کہ صبح اوسکو مسلمانوں سے مصافحہ کر لیا جائے اور ہاتھ میں عمدہ خوشبو لگا لیا کرتے۔

پہانے اور پہنجانے کو صحت و سلامت۔

۴۶۵

(۱۰۲۳) ایک شخص نے پوچھا یا رسول اللہ کون سلام اچھا ہے فرمایا کھانا

کھلاؤ۔

ہر پیمانہ بڑھان والو کو سلام کیا کرو

۴۶۶

(۱۰۲۴) ابو ہریرہؓ نے کہا مکانوں کے یا ہر میدانوں اور راہوں پر بیٹھنے سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے منع فرمایا مسلمانوں نے عرض کیا یہ تو ہلو گون سے نہیں ہو سکتا تب آپ نے فرمایا نہیں ہو سکتا تو اس کا حق بھی ادا کیا کرو عرض کیا اس کا حق کیا ہے فرمایا آنکھیں نیچی رہیں مسافر کو ٹھیک راہ بتانا کوئی چھینک کر اللہ کے تو اس کا جواب سلام کا جواب۔

(۱۰۲۵) ابو ہریرہؓ نے کہا جو شخص سلام میں بجا لے کرے وہ نہایت بخیل آدمی ہے اور جو سلام کا جواب نہ دے اس کا تو خسار ہوا اور اگر چلتے چلتے تیرے اور کسی مسلمان کے درمیان درخت حائل ہو جائے اور تجھے ہو سکے کہ تو ہی اسے سلام کرے وہ نگرے پاوے تو ایسا ہی کیا کر۔

(۱۰۲۶) سالم نے کہا عبد اللہ بن عمر کا معمول تھا کہ سلام کا جواب بڑھا کر دیتے بس وہ بیٹھے ہوئے تھے میں آیا اور کہا السلام علیکم اونھوں نے جواب دیا علیکم السلام ورحمۃ اللہ بھرمیں دوبارہ آیا اور کہا السلام علیکم ورحمۃ اللہ جواب دیا و علیکم السلام ورحمۃ اللہ و برکاتہ اسکے بعد میں پھر آیا اور کہا السلام علیکم ورحمۃ اللہ و برکاتہ اونھوں نے کہا السلام علیکم ورحمۃ اللہ و برکاتہ و طیب صلواتہ۔

فاسق کو سلام نہ کرو

۴۶۷

(۱۰۲۷) عبد اللہ بن عمرو بن عاص نے فرمایا شرا بیو کو سلام نہ کیا کرو۔

(۱۰۲۸) حسن نے فرمایا تیرے اور فاسق کے درمیان کچھ حرمت نہیں۔

(۱۰۲۹) علی بن عبد اللہ شطرنج کو مکروہ جانتے اور فرماتے شطرنج کھیلنے والی کو سلام نہ کیا کرو اور وہ توجوئے کے قسم سے ہے۔

۴۶۸

زعفران لگاؤ اور بیباک گناہ کرنے والوں سے سلام ترک کرنا

(۱۰۳۰) علی بن ابی طالبؓ نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ایک قوم کی طرف گزرا وہ ان میں

ایک شخص زعفران کا رنگ لگاؤ ہوئے تھا آپ فرماؤ تو گوئی طرف دیکھ کر اور ون کو سلام کیا اور اس شخص سے منہ پھیر لیا اور منہ عرض کیا اپنے مجھ سے منہ (کیون) پھیر لیا آپ نے فرمایا تیرے آنکھوں کے درمیان میں انگارہ ہے۔

(۱۰۳۱) ایک شخص سوئیگی انگوٹھی ہاتھ میں پہنے ہوئے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہوا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اس کی طرف سے منہ پھیر لیا جب اس نے دیکھا کہ آپ کو ناگوار ہوا چلا گیا اور اس انگوٹھی کو اتار دیا اور لوہے کی انگوٹھی پہن کر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہوا آپ نے فرمایا یہ نہایت بد ہے یہ دور خیون کا زیور ہے تب وہ شخص پھر لوٹ گیا اور اس کو پھینک کر چاندی کی انگوٹھی پہنی تب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم چپ چاپ رہ گئے۔

(۱۰۳۲) بحرن سے ایک شخص نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہوا اور آپ کو سلام کیا یہ شخص ریشمی جبہ اور سوئیگی انگوٹھی پہنے ہوئے تھا آپ فرماؤ تو سلام کا جواب نہیں دیا۔ وہ غمگین ہو کر چلا گیا اور اپنی بیوی سے شکوہ کیا بیوی نے کہا کہ شاید رسول اللہ (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کو تیرا جبہ اور انگوٹھی ناگوار ہوئی تو ان دونوں کو اتار دے اور پھر جاؤ نے ایسا ہی کیا تب آپ نے سلام کا جواب دیا اور منہ عرض کیا کہ ہم بھی حاضر ہوئی تھے تو حضور نے مجھ سے منہ پھیر لیا تھا آپ نے فرمایا تیرے ہاتھ میں آگ کا شعلہ تھا تب اس نے عرض کیا کہ تب تو ہم اب بھی بہت سا شعلہ لینے اور ہیں آپ فرمایا کہ اب جو لایا ہے وہ اور حرہ کے سنگرنیے (معلوم ہوتا ہے کہ اونکو پیر جواہرات تھے) برابر ہیں لیکن اتنا ہے کہ وہ دنیاوی زندگی کا فائدہ حاصل کرتا ہے اور منہ عرض کیا تب میں کس چیز کی انگوٹھی پہنوں فرمایا چاندی یا پتیل کی یا لوہے کی بنالے۔

۲۶۹

حاکم کو سلام کرنا

(۱۰۳۳) خلیفہ عمر بن عبد العزیز نے ابو بکر بن سلیمان سے پوچھا کہ ابو بکر صدیق یوں کیوں لکھتے تھے من ابی بکر خلیفۃ رسول اللہ پھر عمر فاروق لکھنے لگے من عمر بن الخطاب خلیفۃ ابی بکر اور امیر المؤمنین پہلے پہلے کہہ لیا ابو بکر بن سلیمان نے

جواب دیا کہ میری دادی نبی نبی شفاء جو پہلے ہجرت کر نیوالی عورتوں میں تھیں اور حضرت عمر بن خطاب کا معمول تھا کہ جب بازار جاتے تو اونکے یہاں بھی جاتے وہ کہتی تھیں کہ حضرت عمر بن خطاب نے عراقین کے حاکم کو لکھا کہ میرے پاس دو دانشمند بہادر آدمی روانہ کرو کہ میں اونسے عراق اور وہاں کے لوگوں کا حال پوچھوں حاکم عراقین نے لبید بن ربیعہ اور عدی بن حاتم کو روانہ کیا وہ دونوں مدینہ پہنچے اور صحن میں مسجد میں اونٹ بٹھلایا پھر دونوں مسجد میں گئے وہاں عمرو بن عاص ملے اون دونوں نے عمرو سے کہا عمرو! امیر المومنین عمر کو ہملو گونکے ملاقات کی اطلاع کرو بس عمرو لپکے اور حضرت عمر کے حصوں میں حاضر ہو کر بولے السلام علیک یا امیر المومنین تب حضرت نے فرمایا ابن عاص اس نام کی تجھ کو کیا سوچھی یہ جو تو نے کہا تجھے اسکی جواب دہی کرنی ہوگی اونہوں نے عرض کیا ہاں سنتے لبید بن ربیعہ اور عدی بن حاتم آتے ہیں اون دونوں نے مجھے کہا کہ امیر المومنین کو ہملو گونکی اطلاع کرو تب ہم نے کہا کہ وائے تم دونوں نے نام تو اونکا ٹھیک تجویز کیا وہ امیر ہیں اور ہملوگ مومنین ہیں اسسین سے یہ نام لکھنا جاری ہو گیا۔

(۱۰۳۴) عبید اللہ نے کہا امیر معاویہ اپنے زمانہ خلافت میں پہلے پہلے حج کو جو آئے عثمان بن صفین انصاری اونکی ملاقات کو گئے اور کہا السلام علیک ایہا الامیر ورحمۃ اللہ شام والوں کو یہ بات ناگوار گذری اور کہنے لگے یہ کون منافق آدمی ہے کہ امیر المومنین کو خطاب و سلام میں کجی کرتا ہے بس عثمان زانو کے بل بیٹھ گئے اور عرض کیا یا امیر المومنین ان لوگوں کو میری بات جو ناگوار ہوئی ہے اسے آپ ان لوگوں سے زیادہ جانتے ہیں قسم خدا کی میں نے اسطور سے حضرت ابوبکر اور حضرت عمر اور حضرت عثمان کو سلام کیا مگر اونہیں سے کسی نے بھی انکار نہ کیا تب امیر معاویہ نے اون شامیوں سے جو اس بار میں کلام کرتے تھے کہا کہ ٹھہر دینے جو کہتے ہیں کہ سیدر ٹھیک ہے لیکن شام والوں نے یہ قتنے ایجاد کئے ہیں یہ کہتے ہیں کہ ہمارے سامنے بیجا ہے خلیفہ کا سلام کم مت کرو مگر میں خیال کرتا ہوں کہ تملوگ اہل مدینہ صدقہ کے تحصیلدار کو ایہا الامیر کہا کرتے ہو۔

(۱۰۳۵) حضرت جابر نے فرمایا میں حجاج کو یہاں گیا تو اسے سلام نہیں کیا۔
 (۱۰۳۶) تمیم بن حذیم نے کہا مجھے یاد ہے پہلے پہلے کوفہ میں حکومت کا سلام کسکو
 کیا گیا تھا مغیرہ بن شعبہ باب الرجبہ سے نکلے بس قبیلہ کندہ کا ایک شخص اونکے پاس آیا
 لوگ کہتے تھے کہ وہ ابو قرہ کنذی تھا اوسنے آکر اونکو یون سلام کیا **السَّلَامُ**
عَلَيْكَ أَيُّهَا الْمِيرُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ مگر یہ اونکو ناگوار ہوا تب اوسنے کہا **السَّلَامُ**
عَلَيْكُمْ أَيُّهَا الْمِيرُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ۔

(مغیرہ بن شعبہ نے کہا کہ) ہم اونکو گو نہیں شامل ہیں یا نہیں سماک راوی نے کہا کہ
 اسکے بعد پھر اوسنے بھی سلام مقرر کیا۔

(۱۰۳۷) قبیلہ حمیر کا ایک خاندان کا آدمی زیاد بن عبد ذکھار و نفع انطا بس کا حکم تھا ہملوگ
 اوسکے دربار میں گئے بس ایک شخص آیا اور سلام کیا عجبہ دوسرا راوی کہتا ہے کہ اوسنے
 کہا **السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا الْمِيرُ وَنَفْعُ ذَاوَسٍ** سے کہا کہ اگر تو ہمیں سلام کرتا تو ہم بھی سلام کا
 جواب دیتے لیکن تو نے مسلمہ بن مخد کو البتہ سلام کیا ہے اور مسلمہ مھر کا حاکم تھا کہا کہ اوسکو
 یہاں چلا جا وہی تیرے سلام کا جواب دیگا زیاد راوی نے کہا کہ ہملوگ جب آکر
 سلام کرتے اور وہ بھی مجلس میں ہوتے تو ہملوگ بھی کہتے **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ**۔
 سو تو کو سلام کرنا۔

(۱۰۳۸) اسود نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم شبکو جو تشریف لائے تو اسطرح
 سلام فرماتے کہ سوتا ہوا آدمی جاگ جائے اور جاگتا ہوا آدمی سنے۔
جِئَاكَ اللَّهُ

(۱۰۳۹) حضرت عمر نے عدی بن حاتم کو کہا **جِئَاكَ اللَّهُ مَعْرِفَةً** یعنی اللہ تجھ کو
 زندہ رکھے۔

مرجا

(۱۰۴۰) عائشہ نے فرمایا فاطمہ آئیں اونکی چال ٹھیک نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
 کی چال تھی فرمایا میری بیٹی مرجا پھر اونکو اپنے واسنے یا بائیں طرف

بیٹھا لیا۔

(۱۰۴۱) حضرت علی نے فرمایا عمار نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے یہاں حاضر ہو کر پکارا آپ نے اونکی آواز پہنچا کر فرمایا مَرَّ حَبَابًا بِالطَّيِّبِ الْمَطِيبِ -

۲۶۳

سلام کا جواب

(۱۰۴۲) عبداللہ بن عمر نے فرمایا مکہ مدینہ کے درمیان ایک درخت کے سایہ میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں ہملوگ بیٹھے تھے اتنی میں ایک دیہاتی گنوار خلقت آکر بولا السلام علیکم لوگون نے کہا وعلیکم۔

(۱۰۴۳) ابو حمزہ نے کہا ابن عباس کو جب کوئی سلام کرتا تو وہ یوں جواب دیتے وعلیک ورحمۃ اللہ اور نبی قیلہ کا بیان سے ایک شخص نے کہا السلام علیک یا رسول اللہ آپ نے فرمایا وعلیک السلام ورحمۃ اللہ۔

(۱۰۴۴) ابو ذر نے کہا میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہوا اسی وقت آپ نماز سے فارغ ہوئے تھے میں نے ہی پہلے پہلے آپ کو سلام طریقہ کا سلام کیا آپ نے فرمایا وعلیک ورحمۃ اللہ تم کون لوگ ہو میں نے عرض کیا قبیلہ غفار کا ہوں۔

(۱۰۴۵) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا عایشہ بھی جبریل ہیں تجھے سلام کرتے ہیں عایشہ فرماتی ہیں میں نے جواب دیا وعلیہ السلام ورحمۃ اللہ ویرکاتہ آپ دیکھتے ہیں میں تو دیکھتی نہیں حضرت عایشہ نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو مراد لیا۔

(۱۰۴۶) معاویہ بن قرہ نے کہا مجھے میرے باپ نے فرمایا اے میرے بچے جب تیرے پاس سے کسی کا گزر ہو اور وہ السلام علیک کہے تو تو وعلیک پر بس مت کر جیسے تو نے فاصکرا کیلے اوسیکو سلام کیا ہو کیونکہ وہ اکبلا نہیں ہے بلکہ یوں کہا کرو والسلام علیکم۔

۲۶۴

اگر کوئی سلام کا جواب دے

(۱۰۴۷) عبداللہ بن صناعت نے فرمایا میں نے ابو ذر سے کہا عبد الرحمن بن ام الحکم کے پاس میرا گذر ہوا میں نے اسے سلام کیا مگر اس نے کچھ جواب نہیں دیا ابو ذر نے فرمایا اسے بھتیجے تمہارا اسمین کیا حج ہے اس سے بہتر شخص نے تمہارے سلام کا جواب دیدیا اسکے دلہنے کا ایک فرشتہ۔

(۱۰۴۸) عبداللہ نے فرمایا خدا کے ناموں میں ایک نام سلام بھی ہے اللہ نے اس نام کو زمین پر رہنے دیا ہے اسکو تملوگ آپس میں پھیلاؤ کوئی آدمی جب لوگوں کو سلام کرتا ہے اگر ان لوگوں نے اسکا جواب دیا تب تو اس شخص کو اونکو گو پیر ایک درجہ کی بزرگی حاصل ہوتی ہے کیونکہ اس نے اونکو سلام یاد دلایا اور اگر اونہوں نے جواب نہیں دیا تو اس کے سلام کا جواب ایسا شخص دیتا ہے جو اسے بہتر اور پاکیزہ ہے۔

(۱۰۴۹) حسن بصری نے فرمایا سلام کرنا اپنی خوشی کا ہے مگر جواب دینا فرض ہے۔
سلام میں بخل

(۱۰۵۰) عبداللہ بن عمرو نے فرمایا جو شخص قسم کہا کر جھوٹے بولے وہ بڑا جھوٹا ہے اور جو شخص سلام میں بخیلی کرے وہ بڑا بخیل ہے اور جو شخص نماز کو چراوے وہ بڑا ہی چور ہے۔

(۱۰۵۱) ابو ہریرہ نے فرمایا جو شخص سلام میں بخل کرے وہ نہایت بخیل آدمی ہے اور جس سے دعا کرتے بن پڑے وہ نہایت نکم آدمی ہے۔
لڑکوں کو سلام

(۱۰۵۲) انس کا لڑکوں پر گذر ہوا تو اونہوں نے لڑکوں کو سلام کیا اور فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم لڑکوں کو سلام فرماتے تھے۔
عورتیں سلام کریں مردوں کو

(۱۰۵۳) ام ہانی نے فرمایا میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے یہاں گئی آپ غسل فرما رہے تھے میں نے سلام کیا آپ نے پوچھا یہ کون عورت ہے میں نے عرض کیا ام ہانی فرمایا میرا

(۱۰۵۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مسجد میں گزرے وہاں عورتوں کی ایک جماعت بیٹھی ہوئی تھی آپ نے ہاتھ سے اونٹوں کو نگو سلام کیا پھر فرمایا خبردار نبی بیوا احسان والوں کی ناشکری سے بچتی رہیوا احسان والوں کی ناشکری سے بچتی رہیوا و نہیں سے ایک عورت بولی یا نبی اللہ خدا کی نعمتوں کی ناشکری سے خدا ہی پناہ میں رکھے آپ نے فرمایا مان مان تم میں سے کسی عورت پر بے شوہری کا زمانہ زیادہ گزرتا ہے بس او سکو غصہ آجاتا ہے تب کہنے لگتی ہے خدا کی قسم میں نے کبھی ایک ساعت بھی اوس سے بھلائی نہیں دیکھی بس یہی خدا کی نعمتوں کی ناشکری ہے اور احسان والوں کی ناشکری ہے۔

(۱۰۵۵) یزید کی بیٹی نبی بیوا انصاریہ نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ہمارے پاس ہو کر گزرے اور میں اپنی ہم عمر لڑکیوں کے ساتھ تھی آپ نے ہملوگو نگو سلام کیا اور فرمایا احسان کرنیوالوں کی ناشکری سے بچتی رہو اور میں اون لڑکیوں میں آپ سے پوچھتے مات کرنے میں زیادہ جرات والی تھی پس میں نے پوچھا یا رسول اللہ احسان کرنیوالوں کی ناشکری کیا اپنے فرمایا شاید اتفاقاً کوئی تم میں سے اپنے مان باپ کے سبب سے زیادہ دن تک بے شوہر رہی رہے پھر خدا او سکو شوہر روزی کرے اور اوس سے او سکو لڑکے بالے ہوں پھر کبھی عورت غصہ میں آوے تو شوہر سے کہے کہ تجھے کبھی میرا بھلا نہوا۔

(۱۰۵۶) طارق نے کہا ہملوگ عبد اللہ کے پاس بیٹھے تھے اتنے میں اونکے خبر دینو ا نے نے خبر دی کہ نماز کھڑی ہو گئی بس عبد اللہ اٹھے اور اونکے ساتھ ہملوگ بھی اٹھے پھر ہم سب مسجد کے اندر آئے لوگ مسجد کے پیشین میں رکوع میں تھے بس عبد اللہ نے تکبیر کہی اور رکوع میں گئے ہملوگ بھی گئے اور جیسے جیسے او نہوں نے کیا ہملوگ بھی کر ڈی گئے اس درمیان میں ایک قبیح آدمی کا گزر ہوا او نے کہا علیکم السلام یا عبد اللہ حضرت اس پر عبد اللہ بولے سچ فرمایا اللہ نے اور پہونچا دیا او کے رسول نے پھر جب ہملوگ نماز پڑھ چکے تب عبد اللہ پھر سے اور اپنے مکان کے اندر چلے گئے اور ہملوگ اپنی اپنی جاہ پر

اونکے انتظار میں بیٹھے رہے کہ دیکھیں کتنک باہر آتے ہیں اسی میں ہلو گو نہیں کسی نے کسی سے پوچھا کہ عبداللہ سے کوئی شخص پوچھیا طارقؓ کو کہا کہ ہم پوچھینگے پھر طارق نے پوچھا تو عبداللہؓ فرمایا ہرگز نہیں فرمایا ہرگز کہ قریب قیامت لوگ تخصیص کر کے سلام کرینگے اور تجارت خوب پھیلے گی یہاں تک کہ تجارت کے کاروبار میں کہ عورت اپنے خاوند کی مدد کرے اور نالتے کٹنگے اور قلم (یعنی دفتر) خوب پھیلے گا اور جھوٹی گواہی ظاہر ہوگی اور سچی گواہی مخفی کرینگے۔

(۱۰۵۷) ایک شخص نے پوچھا یا رسول اللہؐ کونسا اسلام بہتر ہے فرمایا کھانا کھانا کھلا

اور پہچان بے پہچانے کو سلام کیا کر۔
پردہ کی آیت کیونکر اوتری

۴۸۰

(۱۰۵۸) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مدینہ منورہ میں تشریف لائے اور وقت میں حضرت انسؓ دس برس کے تھے اور نکاح بیان ہے کہ مجھے میری ماں سب برابر آپ کی خدمت میں رہنے دیا میں نے دس برس تک آپ کی خدمت کی پھر آپکا انتقال ہوا تو اس وقت میری عمر بیس برس کی تھی اسلئے پردہ کا حکم اوترنے کی حالت مجھے سب لوگوں سے زیادہ معلوم ہے پہلے پہلے آیت حجاب وہی نازل ہوئی جو آپ نے حضرت زینب بنت جحش کے ساتھ پہلے خلوت فرمائی ہے آپ نے بیاہر صبح کو اوتھو پھر لوگوں کی دعوت کی لوگ کھانا کھا کر چلتے ہوئے اور ایک جماعت نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس دیر تک ٹھہری رہی بس آپ اوتھو اور باہر چلے آئے اور میں بھی چلا آیا جس میں وہ لوگ بھی چلے جاوے پھر آپ آگے چلے اور میں بھی ساتھ چلا یہاں تک کہ حضرت عائشہ کے حجرے کے دروازے تک آگے تے آپ نے گمان کیا کہ وہ لوگ چلے گئے ہوں گے آپ وہاں سے پھرے اور میں بھی پھر یہاں تک کہ نبیؐ بی زینب کے یہاں پہنچ گئے تو دیکھا کہ وہ لوگ بیٹھے ہی ہوئے ہیں پھر آپ وہاں سے پھرے اور میں بھی پھر اور حضرت عائشہ کے حجرے کے دروازے تک پہنچے اور آپنی خیال کیا کہ وہ لوگ گئے

تب آپ پھر سے اور میں بھی پھر اوس وقت وہ لوگ جا چکے تھے بس آپ نے میرے اور اپنے درمیان میں پر وہ کہنچہ یا اور آیت حجاب نازل ہوئی۔

۲۸۱

تخلیے کے تیئوں وقت

(۱۰۰۵۹) عبداللہ بن سوید تخلیے کے تیئوں وقت پر عمل آدر کہتے تھے عبداللہ بن ملاک قرظی اسکی تحقیقات کو اوسکے یہاں سوار ہو کر گئے اونہوں نے کہا تمہارا کیا مطلب ہے عرض کیا میں بھی ان پر عمل کرنا چاہتا ہوں اونہوں نے بتایا کہ جب دوپہر کو میں اپنے کپڑے اوتار دیتا ہوں اوس وقت میرے لوگوں میں جو شخص بالغ ہو چکا ہو بغیر اجازت لے کر میرے پاس نہیں آتا یا میں خود اوسے بلاؤں تو اوسکے لئے بلانا ہی اجازت ہے اور دوسرے جب صبح کا پہلا چہا ہو جائے اور لوگ پہچان میں آئے لگے بس نماز تمام ہونے کے پہلے اوس وقت ہی نہیں تیسرے عشا پڑھنے کے بعد بھی نہیں جب میں سونیکے واسطے اپنے کپڑے اوتار چکوں۔

۲۸۲

اپنی بیوی کے ساتھ کہانا

(۱۰۰۶۰) عائشہ رضی اللہ عنہا نے فرمایا میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ عیس کھا رہی تھی اتنے میں عمر کا گذر ہوا آپ نے اونہیں بھی بلا یا وہ بھی کھانے لگے بس اونکا ہاتھ میری اذگلی سے چھو گیا آپ نے فرمایا حس اگر تم (عورتوں) کے بارے میں میری بات مانی جاوے تو تمہرے کی نظر نہ پڑے۔ بس پر دیکھا حکم نازل ہو گیا جب غیر آباد مکان کے اندر جاوے

۲۸۳

(۱۰۰۶۱) عبداللہ بن عمر نے فرمایا جب کسی غیر آباد مکان کے اندر جائے تو یہ کہنا چاہئے **السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَىٰ عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ**
 (۱۰۰۶۲) ابن عباس نے فرمایا اللہ تعالیٰ نے جو فرمایا ہے کہ اپنے گہروں کے

سوا پر اٹے گھرون میں بے اذن گھر والوں سے صاحب سلامت کتے اذن گھرون کے اندر بجاؤ اس حکم سے مستثنیٰ بھی کر دیا ہے کہ غیر آباد گھرون میں جس میں کچھ تمہارا اسباب ہو جائیں تم پر کچھ گناہ نہیں ہے۔
 لوٹنی غلام اذن لے لیا کریں

۴۸۴

(۱۰۶۳) ابن عمر نے فرمایا قرآن میں آیه لیسْتَ اذْنًا لِّلَّذِیْنَ مَلَکَتْ اَیْمَانُکُمْ مَّرْءُوْمًا واسطے ہے عورتوں کے واسطے نہیں۔

۴۸۵

خدا کا فرمانا کہ جب تمہارے ام کے بالغ ہو جاویں۔

(۱۰۶۴) ابن عمر کے لڑکوں میں جب کوئی بالغ ہو جاتا تو اسے علیحدہ رکھتے اور بے پکارے ہوتے اندر نہیں آنے پاتا۔

۴۸۶

مان کے یہاں بھی پکار کر جاوے۔

(۱۰۶۵) عبداللہ بن مسعود سے ایک شخص نے پوچھا کہ مان کی ملاقات کو بھی پکار کر جا یا کروں فرمایا تجھے ہر حال میں اسے دیکھنا نہیں پسند ہوگا۔
 (۱۰۶۶) ایک شخص نے حدیث سے پوچھا کہ مان کے یہاں بھی پکار کر جا یا کروں فرمایا اگر نہیں پکار لیا کریگا تو کوئی نکر وہ بات دیکھنے میں آجائگی۔
 باپ کے یہاں پکار کر جاوے

۴۸۷

(۱۰۶۷) موسیٰ بن طلحہ نے کہا میں اپنے باپ کے ساتھ بن کے یہاں چلا وہ اندر چلے گئے میں بھی اذن کے پیچھے پیچھے چلا اونہوں نے پھر کر جو دیکھا تو میرے سینے میں ایسا دکھ دیا کہ مجھے سرین کے بل بٹھا دیا پھر کہا میں بے پکارے گھر چلا آتا ہے۔
 اپنے باپ اور اپنے لڑکوں کے یہاں پکار کر جاوے

۴۸۸

(۱۰۶۸) جابر نے فرمایا آدمی اپنے لڑکوں کے پاس نان کے پاس جانے میں پکار لیا کرے اگرچہ نان بڑھیا ہو اور بھائی وہین اور باپ کے یہاں جانے میں بھی۔
اپنی بہن کے یہاں پکار کر جائے۔

۴۸۹

(۱۰۶۹) عطلک نے کہا میں نے ابن عباس سے پوچھا کہ میں اپنی بہن کے یہاں بھی پکار کر جایا کروں اور انہوں نے فرمایا ہاں میں نے دوبارہ اس طرح پوچھا کہ ہماری پرورش میں دو بہنیں ہیں میں دونوں کی کفالت کرتا ہوں اور دونوں کا خرچ میرے اوپر ہے کیا ان دونوں کے دیکھنے کو پکار کر جایا کروں فرمایا ہاں کیا تجھے پسند ہے کہ اون دونوں کو تنگی دیکھ لے پھر یہ آیت پڑھی **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْرُبُوا أَهْلَ آبَائِكُمْ بِرِضْوَانِهِمْ مِنْ أُمَّهَاتِكُمْ أُولَئِكَ مِثْلُ آبَائِكُمْ** اور یہ آیت پڑھی **وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنُ الَّذِينَ اسْتَأْذَنُوا مِنْكُمْ وَأُولَئِكَ مِثْلُ آبَائِكُمْ** پکارنا واجب ہے ابن جریج راوی نے اتنا بڑا دیا کہ ہر شخص پر۔
اپنی بھالی کے یہاں پکار کر جاوے۔

(۱۰۷۰) عبداللہ نے فرمایا آدمی اپنے باپ اور مان اور بھائی اور بھینوں کے یہاں پکار کر جایا کرے۔

۴۹۱

نہیں بار پکارے

(۱۰۷۱) ابو موسیٰ اشعری نے حضرت عمر کی ملاقات کو پکارا شاید وہ کسی کام میں مشغول تھے بس انہیں کچھ جواب نہیں ملا تو حضرت ابو موسیٰ لوٹ آئے اتنے میں حضرت عمر کو خیال ہوا تو وہ گھبراتے اور کہا میں نے عبداللہ بن قیس کی آواز نہیں سنی تھی انہیں بلا لو لوگوں نے عرض کیا وہ تو واپس گئے تب حضرت عمر نے اونکو بلایا ابو موسیٰ نے عرض کیا مجھے ایسا ہی حکم دیا جاتا تھا (یعنی آنحضرت کے وقت میں) حضرت عمر نے

فرمایا اسپر تجھے میرے پاس گواہ لانا ہوگا تب ابو موسیٰ انصاری کی مجلس میں چلے گئے پھر اون سے پوچھا اونہوں نے کہا کہ اس بات کی گواہی تو جو ہم میں سب سے چھوٹا ہے ابو سعید خدری وہ بیان کر گیا بس ابو موسیٰ ابو سعید کو لے گئے تب حضرت عمر نے فرمایا ابن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا بعض حکم ہے پوشیدہ رہ گیا ہے یا زاری سحلا یعنی سوداگری کے دوڑ دھوٹے مجھے پھینا رکھا۔

۲۹۲

اجازت لینا سلام کے علاوہ ہے۔

(۱۰۰۰۶۲) جو شخص سلام سے پہلے اجازت چاہے اس کے بارے میں حضرت ابو ہریرہ نے فرمایا ہے کہ جب تک ابتدا یہ سلام نہ کرے اس کو اجازت نہ دیجائے (۱۰۰۰۶۳) ابو ہریرہ نے فرمایا جب کوئی اندر آوے اور السلام علیکم نکہ چکا ہو اس سے کہہ دو کہ جب تک سلام کی کنجی نہ لاوے تب تک تجھے اجازت نہیں ہے۔ کوئی بے اجازت جھانکے تو اس کی آنکھ پھوڑ دیجائے۔

۲۹۳

لے
بڑا ایک ٹکڑی
پوتی تو جیسا
سرکابل برابر کرتے
ہیں ۱۲ عسرا

(۱۰۰۰۶۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اگر کوئی شخص تیرے مکان کے اندر جھانکے اس پر تو اس کی کنکری پھینک کر اس طرح مارے کہ اس کی آنکھ پھوڑوے تو تجھے کچھ گناہ نہیں ہے۔

(۱۰۰۰۶۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کھڑے ہوئے نماز پڑھ رہے تھے ایک شخص مکان کے اندر جھانکنے لگا بس آپ نے اپنے ترکش سے ایک تیز کالا اور اس کی آنکھ کے مقابل برابر سیدھا کیا۔

۲۹۴

اجازت لینا نظری کے سبب سے ہے

(۱۰۰۰۶۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم در اسے مبارک کھلا ہے تھے کہ ایک شخص دروازے کے دروازے سے مکان کے اندر جھانک نے لگا پھر جب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ

وسلم نے اس شخص کو دیکھا تو فرمایا اگر میں جانتا کہ تو مجھے جھانکتا ہے تو میں اسے تیری آنکھ میں گزادیتا اور نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ دیکھنے ہی کو سبب سے تو اجازت لے لینا مقرر ہوا۔

(۱۰۰۷۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حجرے میں دروازے سے ایک شخص جھانک کر لگا بس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے تیرسیدھا نکالیا تو اس شخص نے اپنا سر مٹالیا۔

جب کوئی شخص گھر میں ہو اور باہر سے آوے تو اس کو سلام کرے

۲۹۵

(۱۰۰۷۸) ابو موسیٰ نے کہا میں نے حضرت عمر کے دروازے پر اندر آنیکو پکارا مگر مجھے جواب ملا تین بار یہی اتفاق ہوا بس میں لوٹ گیا تب حضرت عمر نے مجھے بلا بھیجا اور کہا کہ عبداللہ میرے دروازے پر توقف کرنا تجھ پر جبر گذرتا ہے یہ بھی جان لے کہ تیرے دروازے پر بھی دیر ہونا لوگوں پر ایسا ہی جبر گذرتا ہے اسکے جواب میں میں نے عرض کیا نہیں جبر نہیں بلکہ میں نے تو آپ کے یہاں تین بار آواز دی جب اجازت نہ ہوتی تو میں واپس چلا آیا حضرت عمر نے فرمایا تو نے یہ کس سے سنا عرض کیا میں یہ بات نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سنی ہے تب حضرت عمر نے فرمایا کہ آہن جوابات میں نہیں سنی وہ تو نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سنی لی اگر تو بائیکا گواہ نہیں لاویگا تو میں تیری سزا کر دینگا بس میں نکلا اور کچھ انصاری لوگ مسجد میں بیٹھے تھے میں اونکے پاس چلا آیا اور اون لوگوں سے اسباٹکو پوچھا اون لوگوں نے جواب دیا کہ بھلا اس میں بھی کسکو شک ہوگا تب میں نے اون لوگوں کو حضرت عمر کی بات کی خبر دی تو اون لوگوں نے کہا جو ہم میں سب سے چھوٹا ہے وہی تیرے ساتھ جائیگا بس ابو سعید خدری یا ابو سعود میرے ساتھ حضرت عمر کی طرف چلے اور بیان کیا کہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سعد بن عبادہ کے یہاں چلے جلوگ بھی آپ کے ساتھ ہوئے آپ جب اونکے یہاں پہنچے سلام کیا اندر سے اجازت نہیں ہوئی آپ نے

دوبارہ سلام کیا سہ بارہ سلام کیا مگر اجازت نہ ملی تب آپ نے فرمایا کہ میرے ذمے جو کرنا تھا وہ میں کہ چکا پھر آپ پھر چلے تب بعد آپ کے پاس لپکے اور عرض کیا یا رسول اللہ قسم دے سکتی جسے آپ کو حق بات لیکر بھیجا ہے آپ کا ہر بار کا سلام بیٹے سنا اور جواب بھی دیا مگر مجھے یہ خواہش تھی کہ آپ مجھ پر اور میرے گھر والوں پر بہت دفعہ سلام فرمادیں (اسلئے میں چکا تھا) تب ابو موسیٰ نے حضرت عمر سے عرض کیا کہ قسم خدا کی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی بات کا میں امانت دار ہوں اور انہوں نے فرمایا یا ہاں لیکر میری خواہش ہوئی کہ خوب ثابت کر لوں۔

۲۹۶

کسی کو پکارنا اسکے لئے اذن ہے

(۱۰۷۹) عبد اللہ نے فرمایا جب کوئی پکارا جاوے تو اسکو اجازت ہوگی۔

(۱۰۸۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اگر کسی کو بلا بھیجا اور وہ قاصد کے ساتھ چلا آیا تو اس کے لئے یہی اجازت ہے۔

(۱۰۸۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا آدمی بھیج کر کسی کو بلا بھیجا یہی اس کو اجازت ہے

(۱۰۸۲) ابو العلامیہ نے کہا میں ابو سعید خدری کے یہاں آیا اور (باہر سے) سلام

کیا مگر مجھے اجازت (اندر آنیکی) نہ ملی بیٹے دوبارہ سلام کیا پھر بھی اجازت نہ ملی

پھر تیسری بار بلند آواز سے سلام کیا اور کہا السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا أَهْلَ الدَّرِيءِ گھر والو

اسلام علیک اسپر بھی اجازت نہ ملی تب میں ہٹ کر ایک گوشہ میں بیٹھ گیا

بس ایک لڑکا اندر سے آکر بولا کہ اندر چلو میں گیا تو مجھے ابو سعید نے فرمایا سننے اگر

تو اور بھی پکارتا رہتا تب بھی تجھے اجازت نہ ملتی پھر بیٹے اون سے برتنوں کا مسئلہ

پوچھا تو جس تن کو پوچھا انہوں نے کہا کہ حرام ہے یہاں تک کہ بیٹے اون سے مشک

کو پوچھا کہا حرام ہے محمد راوی کہتے ہیں کہ اس کے سر پر ایک چمڑا لگا کر باندھ دیا جاوے۔

۲۹۷

دروازے کے پاس کس طرح کہنا ہو۔

(۱۰۸۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے صحابی حضرت عبداللہ بن بسر نے فرمایا
کیسے دروازے پر اگر اجازت لینا چاہتا ہو تو دروازے کے آٹھ سائے نہ آوے
بلکہ داہنے بائیں آوے پھر اگر اجازت ملے تو بہتر نہیں تو پھر چاہے۔
اجازت چاہنی پھر اندر سے کوئی کہو کہ کھڑو آتا ہوں تب کہاں بیٹھو۔ ۴۹۸

(۱۰۸۴) معاویہ بن صدیق نے کہا میں عمر بن خطاب کے یہاں آیا اور اندر آنی کی
اجازت چاہی لوگوں نے کہا کھڑے رہو وہیں آتے ہیں میں دروازے کے قریب
بیٹھ گیا پھر حضرت عمر باہر آئے اور پانی طلب کیا پھر وضو کیا تو موزوں پر مسح کی
معاویہ نے پوچھا یا امیر المؤمنین کیا پیشاب کرینگے بعد وضو کر نہیں مسح کیا جاتا ہے فرمایا
پیشاب کے بعد ہو یا پیشاب کے سوا۔

۴۹۹

دروازہ ٹھونکنا

(۱۰۸۵) انس بن مالک نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے دروازے ناخنوں
سے ٹھونکے جاتے تھے۔

۵۰۰

بے پکارے مکان کے اندر چلا جانا

(۱۰۸۶) زمانہ فتح مکہ میں صفوان بن امیہ نے کلدہ کو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ
وسلم کے حضور میں دودھ اور بکری کا بچہ اور کچھ ٹٹیا کہیر لیکر بھیجا اور نبی صلی اللہ
علیہ وآلہ وسلم مکہ کے اوجان کی آبادی میں اترے ہوئے تھے کلدہ کا بیان ہے
کہ میں جو حضور میں پہنچا تو نہ سلام کیا اور اذن مانگا اسپر اپنے فرمایا پھر جا اور یوں کہہ
السلام علیکم من اندر آؤں اور یہ واقعہ صفوان کے مسلمان ہونے کے بعد واقع ہوا۔

(۱۰۸۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب آنکھ کو اندر گھسا دیا تو اب
اُس کے لئے اذن نہیں ہے۔

(۱۰۰۸۸) ابو ہریرہ نے فرمایا جب کوئی سلام نکرے اور پوچھے کہ میں اندر آؤں تو کہدے کہ بغیر کبھی لاتے ہوئے نہیں عطا راوی کہتا ہے میں نے ابو ہریرہ سے پوچھا کہ سلام کہا جان۔

(۱۰۰۸۹) بنی عامر کا ایک شخص نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے یہاں حاضر ہوا اور پوچھا کہ اندر آؤں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے لونڈی سے فرمایا کہ اس شخص نے اچھی طرح استیذان نہیں کیا تو باہر جا کر اسے بتادے کہ یوں کہہ سلام علیکم میں اندر آؤں اس شخص کا بیان ہے کہ لونڈی باہر آئی تھی نہ تھی کہ میں نے خود سن لیا اور عرض کیا السلام علیکم میں اندر آؤں آپ نے فرمایا علیک چلا آپھر میں اندر گیا اور پوچھا کہ آپ کیا لائے ہیں فرمایا میں تلوگوں کے پاس اچھی ہی بات لیکر آیا ہوں میں اسے تلوگوں کو کچھ پاس آیا ہوں کہ تم اکیلے خدا کو پوجو جس کا کوئی شریک نہیں اور لات و عزی کی عبادت چھوڑ دو اور رات نہین پانچ مرتبہ نماز پڑھا کرو اور سال بھر میں ایک مہینے کا روزہ رکھو اور خانہ کعبہ کا حج کرو اور اپنے امیرون سزۃ کا مال لیکر اپنے محتاجوں کو دیا کرو پھر میں نے عرض کیا کوئی ایسی بات بھی ہے جو آپ کو معلوم نہ ہو فرمایا اللہ نے اچھی بات سکھائی ہے اور بعض بات ایسی ہی ہے جسکو خدا کے سوا کوئی نہیں جانتا پانچ باتیں ہیں جسکو خدا کے سوا کوئی نہیں جانتا قیامت کا علم خدا ہی کو ہے اور پائی وہی برساتا ہے اور باؤ نکرم میں جو ہوتا ہے اور کا علم خدا ہی کو ہے اور کوئی نہیں جانتا کہ کدوہ کیا کریگا اور کوئی نہیں جانتا ہے کہ کس سرزمین پر وہ مرے گا۔

(۱۰۰۹۰) عمر نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے یہاں حاضر ہو کر

استیذان کیا تو یوں کہا السلام علی رسول اللہ السلام علیکم عمر اندر آوے۔
 کہنے پوچھا کون کہا میں

۵۰۳

(۱۰۹۱) جابر نے کہا میرے باپ پر کچھ قرض تھا اوس کے بارہ میں عرض کر نیکی
 لئے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہو کر بیٹے دروازہ کھڑکھڑایا
 آپ نے پوچھا کون عرض کیا میں آپ نے فرمایا میں میں جسے آپ کو یہ کہنا ناگوار ہوا۔
 (۱۰۹۲) بریدہ نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مسجد میں تشریف لائے اوقت
 ابو موسیٰ قرآن پڑھ رہے تھے آپ نے مجھے پوچھا یہ کون ہے میں نے عرض کیا آپ پر
 خدا ہو جاؤں میں ہوں بریدہ آپ نے فرمایا حضرت داؤد کی راگنیوں میں سے ایک
 راگنی اسکو (یعنی ابو موسیٰ کو) ملی۔

جب کوئی پکارے اور اندر سے کوئی کہو اذخل بسلام

۵۰۴

(۱۰۹۳) عبد الرحمن بن جعدان نے کہا میں عبد اللہ بن عمر کے ساتھ تھا اونہوں نے
 ایک مکان پر پہنچ کر استیذان کیا اندر سے لوگوں نے کہا اذخل سبلا یعنی سلامتی
 کے ساتھ چلے آؤ تب عبد اللہ نے اون لوگوں کے یہاں جانے سے انکار کیا۔
 گھر وینچن جھاکننا

۵۰۵

(۱۰۹۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب آنکھ کو اندر گھسایا
 تب اذن نہیں مل سکتا۔

(۱۰۹۵) مسلم بن نذیر نے کہا حضرت حذیفہ کے یہاں آنکھو ایک شخص نے
 اذن چاہا اور مکان کے اندر جھانک کر پوچھا کہ اندر آؤں حضرت حذیفہ نے فرمایا
 آنکھ تیری تو گھس جا، سر میں تیری البتہ نہیں آئی ہے اور ایک شخص نے کہا
 کہ میں اپنی ماں کے یہاں جانے کو پکار لیا کہ دن اونہوں نے جواب دیا کہ تم
 اگر نہیں پکارو تو تم ایسی بات دیکھو گے جو تمہیں بڑی معلوم ہوگی۔

(۱۰۹۶) ایک دیہالی آدمی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے مکان پر
 حاضر ہوا اور دروازے کے دروازے سے آنکھو نکولگایا بس آپ نے ایک تیریاؤں کو

لکڑی اوتھا کر اوسکو دیکھنے لگے کراوسکی آنکھ بھوڑ دین بس وہ چل دیا تب اپنے فرمایا ستتا ہے اگر تو پھٹتا تو میں تیری آنکھ بھوڑ ہی ڈالتا۔

(۱۰۰۹۷) عمر بن خطاب نے فرمایا جس شخص نے اجازت سے پہلے کسی مکان کو صحن سے اپنی آنکھ بھری اوسنے فسق کا کام کیا۔

(۱۰۰۹۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کسی مسلمان آدمی کو حلال نہیں ہے کہ بغیر اجازت لٹی ہوئے کسی گھر کے اندر نظر کرے کیونکہ جسے یہ کیا وہ تو مکان کے اندر گھس گیا اور جب کسی قوم کی امامت کرے تو جب تک نماز پڑھ کر پھر بجائے تب تک اوسکو چھوڑ کر خاص اپنے لئے دعا کرے اور پیشاب پانچا نہ روک کر نماز نہ پڑھے جب تک حاجت سے فراغت نہ کرے۔

۵۰۴

گھر میں سلام کر کے داخل ہو نیکی فضیلت

(۱۰۰۹۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا میں شخصوں کی خدا پر ضمانت ہے کہ زندہ رہیں تو اوسکی کفایت کیجاوے اور مرین تو بہشت میں داخل ہوں جو شخص سلام کے ساتھ اپنے مکان میں داخل ہواوسکی ضمانت خدا پر ہے اور جو شخص مسجد کو جاوے اوسکی ضمانت خدا پر ہے اور جو شخص راہ خدا میں گھر سے نکلے اوسکی ضمانت خدا پر ہے

(۲۰۰۰) ابو زبیر نے جابر رضی اللہ عنہ کو فرماتے ہوئے سنا کہ جب اپنے گھر والوں میں جاؤ تو اون پر خدا کے پاس کا برکت والا پاک تحفہ سلام کہو ابو الزبیر نے کہا میں سمجھتا ہوں کہ وہ اس آیت کا مطلب بولتے ہیں **وَإِذْ أَحْسِنُوا تَحِيَّةً** **حَيُّوا بِأَحْسَنِ مِمَّا أُرِدُّوا**

جب کانیں جانیکے وقت خدا کا ذکر کرے اوس گھر میں شیطان شب باشن بنتا ہے

(۲۰۰۱۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب کوئی اپنے مکان میں جانیکے اور کہا ناگھانیکے وقت خدا کا ذکر کر لیتا ہے تو شیطان اپنی جماعت سے کہتا ہے کہ تمہارا یہاں ٹھکانا کھانا اور اگر مکان میں جاؤقت خدا کا ذکر نہیں کیا تب شیطان کہتا ٹھکانا تو نہیں ملا اگر کھانا کیوقت بھی خدا کا ذکر نہیں کیا تب شیطان کھانا لو بارے رہنے کا ٹھکانا اور کھانا دونوں ملا۔

۱۰
اور جب تک کوئی دعا
دعا کو تو تم بھی دعا
دعا دوس سے
بہتر یا وہی کھو ۱۱

(۲۰۰۲) اعدین خوارزمی نے کہا ہلوگ انس بن مالک کے یہاں آئے وہ اکیلے ڈیوڑھی میں بیٹھے تھے میرے ساتھی نے اونکو سلام کیا اور کہا اندرون انس نے فرمایا چلے آؤ ایسی جگہ کے لئے کوئی اجازت نہیں لیا کرتا پھر ہماری طرف کچھ کھانا بڑھا دیا ہلوگوں نے کھایا پھر ایک بڑا پیالہ لاتے اوس میں خرابا جھگو کر مشرب بنا یا تھا اونہوں خود بھی پیا اور ہلوگوں کو بھی پلایا۔

۵۰۹

دوکانوں میں استیذان۔

(۲۰۰۳) مجاہد نے کہا ابن عمر بازاری مکانوں میں استیذان نہیں کرتے تھے۔
(۲۰۰۴) عطاء نے کہا ابن عمر بزاز کے ساتھ ان میں جان نہیں بھی استیذان کرتے تھے۔

۵۱۰

اہل فارس کے یہاں کس طرح استیذان کرے

(۲۰۰۵) عاصم بن عمر کی بی بی ام مسکین کے غلام عبد الملک نے کہا مجھے میری آقابی بی ام مسکین نے ابو ہریرہ کو بلانے کے لئے بھیجا ابو ہریرہ میرے ساتھ چلے آئے جب دروازے پر کھڑے ہوئے پوچھا اندر آئیم بی بی نے فرمایا اندرون پھر فرمایا ابو ہریرہ لوگ نماز عشا کے بعد میری ملاقات کو آتے ہیں کیا اون سے باتیں کروں ابو ہریرہ نے فرمایا جب تک وتر نہ پڑھی ہو تب تک بات چیت کیجئے پھر جب وتر پڑھ لی تب بولنا چاہنا نہیں۔

۵۱۱

مسلمان کے کافر رعایا خط میں سلام لکھیں تو اوس کا جواب

(۲۰۰۶) ابو موسیٰ صحابی نے ایک پادری کو خط لکھا اوس میں اوسکو سلام بھی لکھا کیسے پوچھا کہ وہ تو کافر ہے اوسکو آپ سلام لکھتے ہیں آپ نے فرمایا اوس نے مجھے خط لکھا تھا اوس میں مجھے سلام لکھا تھا اس لئے میں بھی اوس کے سلام کا جواب لکھا۔

۵۱۲

ذمی سے ابتدا سلام نہ کرے

(۲۰۰۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا صبح میں یہود کی طرف سوار ہو کر جاؤنگا تم لوگ دن سے ابتدا سلام نہ کرنا مان اگر وہ تمہیں سلام

کرین تو کہدینا و علیکم۔

(۲۰۰۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اہل کتاب سے ابتدا
سلام نکرنا اور راہین او نکو کنارے چلنے کو مجبور کرو۔

۵۱۳

ذمی کو اشارے سے سلام۔

(۲۰۰۹) علقمہ نے کہا عبد اللہ نے وہ ہتھیانوں کو اشارے ہی سے سلام کیا

۵۱۴

(۲۰۱۰) انس نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس سے

ایک یہودی گذرا اور کہا السلام علیکم آپ کے ساتھیوں کے لئے اوسکو سلام کا

جواب دیا آپ نے فرمایا اوسنے السلام علیکم کہا ہے تب وہ یہودی پکڑا گیا

اور اقرار بھی کیا آپ نے فرمایا جو اوسے کہا ہے وہی اوسپر لوٹا دو۔

۵۱۴

ذمی کو سلام کا کیا جواب دے۔

(۲۰۱۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کوئی یہودی جب

تم (مسلمان) لوگوں کو سلام کرتا ہے تو یہی کہتا ہے السلام علیکم تم لوگ بھی

فقط وہ علیکم کہدیا کرو۔

(۲۰۱۲) ابن عباس نے فرمایا سب کے سلام کا جواب دیا کرو کوئی ہو

یہودی ہو یا نصرانی ہو یا مجوسی ہو کیونکہ اللہ تعالیٰ فرماتا ہے جب تمہیں سلام

کیا جاوے تو اوس سے اچھا جواب دیا اوسیکو لوٹا دو۔

۵۱۵

جس جلسہ میں مسلمان بھی ہوں اور مشرک بھی ہوں اوسپر سلام کرنا

(۲۰۱۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سعد بن عبادہ کی عیادت کو تشریف

لیچلے تو ایک گدھے پر زین کسوا کر فدکی زین پوش رکھا اوسپر سوار ہوئے

اور اسامہ بن زید کو اپنے پیچھے بیٹھا لیا جاتے جاتے ایک مجلس میں گذرے

وہاں عبد اللہ بن ابی بن سلول بھی تھا اور اوسوقت تک یہ دشمن خدا اسلام نہیں

لاچکا تھا کیا دیکھتے ہیں کہ اوس مجلس میں ملے جلے مسلمان اور مشرکین اور بت پرست

لوگ بیٹھے ہوئے ہیں اپنے اوس جماعت پر سلام فرمایا۔

(۲۰۰۲۳) ابن عباس رضی اللہ عنہما نے فرمایا روم کے بادشاہ ہرقل نے ابوسفیان بن حرب کو بلا بھیجا پھر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا خط منگوایا جو آپ نے وحیہ کلبی کی معرفت ربیع بن بصرہ کے پاس بھیجا تھا اور اس نے ہرقل کے پاس بھیج دیا تھا اور اس خط کو منگو کر ہرقل نے پڑھا تو اس میں لکھا تھا بسم اللہ الرحمن الرحیم عبد اللہ کے پیئے خدا کے پیغامبر محمد (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کی طرف سے روم کے بادشاہ ہرقل کو معلوم ہو سیدھی راہ کے چلنے والوں پر سلام اسکے بعد میں تجھے اسلام کی بلا ہٹ سے بلاتا ہوں اسلام لا اسی میں تیری سلامتی ہے اللہ تعالیٰ تجھے دونا تو اب دیگا اور اگر تو نے نہ مانا تو ساری رعایا کا گناہ تجھی پر ہوگا اور اسے کتاب والو ایسی بات کی طرف آتے جاؤ جو ہمارے اور تمہارے درمیان میں برابر ہی ہے آیت یہاں تک لکھی تم لوگ گواہ رہو کہ یہ لوگ مسلمان ہیں۔

(۲۰۰۲۵) جابر رضی اللہ عنہ نے فرمایا کچھ یہودیوں نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو سلام کیا تو یوں کہا السلام علیک اپنے فرمایا وعلیکم حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے کہا اور کہہ لگین اپنے سنائیں انہوں نے کیا کہا آپ نے فرمایا ہاں سننا تو وہی اون پر لوٹا دیا ہماری بات اون پر پڑ جائیگی اور ان کی بات تم پر نہیں پڑے گی۔

(۲۰۰۲۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اگر مشرکوں سے راہ میں ملاقات ہو جائے تو اون سے ابتدا سلام نکلیا کرو اور اون کو مجبور کرو کہ راہ میں کتنا سے ہو کر چلیں۔

(۲۰۰۲۷) ایک شخص پر عقبہ بن عامر جہنی کا گزر ہوا اور اسکی ہتھیلیاں مس کی گئیں مٹی اور اس نے عقبہ کو سلام کیا اور انہوں نے جواب دیا وعلیک ورحمۃ اللہ وبرکاتہ غلام نے عقبہ سے کہا یہ تو نصرانی ہے تب عقبہ اون سے اور اسکا چچا کیا یہاں تک کہ اسکو

پایا اور کہا کہ خدا کی رحمت اور برکت ایمان والوں پر ہوتی ہے لیکن خدا شیری زندگی
در از کرے اور تجھے مال اور اولاد بہت دے۔

(۲۰۰۱۸) ابن عباس نے فرمایا اگر مجھے فرعون کہتا بَارَكَ اللهُ فَبَيْتِكَ - تو میں بھی کہتا وَفِيكَ
حالانکہ فرعون مر گیا ہے۔
الذبحہ میں برکت دے ۱۲ اور بچہ بھی ۱۳

(۲۰۰۱۹) ابو موسیٰ نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس بیٹھ کر ہو و
لوگ اس امید پر چھینکتے تھے کہ آپ ان کے حق میں بوجہ اللہ فرما دیں مگر آپ یہ فرمایا
کرتے يَهْدِيكُمْ اللهُ وَيُصَلِّحْ بِالْكَلِمِ
خدا تیرا رحم کرے ۱۴
نادانستگی میں ہماری کو سلام کرنا۔
۵۲۰

(۲۰۰۲۰) ابن عمر کا ایک نفرانی کے قریب سے گزر رہا تھا اس نے انکو سلام کیا انہوں
نے سلام کا جواب دیا پھر انکو خبر ہوئی کہ یہ تو نفرانی ہے جب یہ معلوم ہوا تو وہیں سے
لوٹے اور کہا کہ میرا سلام پھر دے۔

۵۲۱ جب کوئی کہے کہ فلان شخص تمہیں سلام کہتا ہے

(۲۰۰۲۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے حضرت عائشہ سے فرمایا جبریل
تمہیں سلام کہتے ہیں انہوں نے کہا وعلیہ السلام اور حمد اللہ۔
خط کا جواب
۵۲۲

(۲۰۰۲۲) ابن عباس نے فرمایا میرے نزدیک جواب سلام کی طرح
خط کا بھی جواب دینا ایک حق ہے۔
عورتوں کے نام خط لکھنا اور ان کا جواب آنا
۵۲۳

(۲۰۰۲۳) عائشہ بنت طلحہ نے کہا مجھے بی بی عائشہ نے پرورش کی تھی میں انہیں
کے یہاں رہتی تھی اور لوگ ان کے یہاں ہر شہر سے آیا کرتے ہم پر ان کی مہربانی دیکھ کر
بوڑھے لوگ نوبت بہ نوبت میرے یہاں آتے اور جوان لوگ شہروں سے مجھے خط
لکھتے اور میرے پاس تحفہ بھیجتے میں بی بی عائشہ سے کہتی خالہ یہ فلا نے آدمی کا خط ہے
اور اس کا تحفہ ہے بی بی عائشہ فرماتیں میں اس کے خط کا جواب لکھ اور تحفہ کا بدلہ تحفہ

۱۵
شاید یہ مطلب ہو
کہ فرعون کا مرنا
کفر پر معلوم ہے
اور اسے سزا دینے کا حلال
پر تاحادی تو جیسا کہ
ہو اور انہیں معلوم
ہو اس کے ساتھ اور
بھی بد ظنی نہیں
چاہئے ۱۶
خدا انہیں ہدایت کرے
اور تمہارے دونوں
اصلاح کرے ۱۷

صحیح اور تیرے پاس بدلہ بھیجنے کو کچھ نہ تو میں تجھے دونوں بی بی عائشہ مجھے دینی تھیں۔
خط کے شروع میں کیا لکھے۔

۵۲۲

(۲۰۰۰۲۲) عبداللہ بن عمر نے خلیفہ عبدالملک بن مروان کو اپنی بیعت کا خط اس طرح
لکھ بھیجا بسم اللہ الرحمن الرحیم مسلمانوں کے سردار عبدالملک کو عبداللہ بن
عمر کی طرف سے سلام علیک میں لکھے اوس خدا کی تعریف کرتا ہوں جس کے سوا کوئی
معبود نہیں اور اقرار کرتا ہوں کہ تیری بات سنو گا اور جہانت تک مجھے ہو سکے گا
خدا اور اوس کے پیغامبر (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کے طریقہ کی موافقت میں حکم مانوں گا
ابا بعد

۵۲۵

(۲۰۰۰۲۵) زید بن اسلم نے کہا مجھے میرے باپ نے ابن عمر کے یہاں بھیجائے
دیکھا وہ لکھ رہے تھے بسم اللہ الرحمن الرحیم ابا بعد
(۲۰۰۰۲۶) ہشام بن عروہ نے کہا میں نے کسی خط نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے
دیکھے جس خط کا لفظ کہولا ابا بعد لکھا ہوا پایا۔

۵۲۶

خطوں کا سرنامہ بسم اللہ الرحمن الرحیم سے

(۲۰۰۰۲۷) اولاد زید بن ثابت کے بڑوں سے معلوم ہوا کہ زید نے یہ خط لکھا بسم اللہ
الرحمن الرحیم۔ خدا کے بندے مسلمانوں کے سردار معاویہ کو زید بن ثابت کی طرف
سے مسلمانوں کے سردار سلام علیک و رحمتہ اللہ میں لکھے اوس خدا کی تعریف
کرتا ہوں جس کے سوا کوئی معبود نہیں ابا بعد۔

(۲۰۰۰۲۸) ایک شخص نے امام حسن (بصری) سے بسم اللہ الرحمن الرحیم
کی قرأت کا مسئلہ پوچھا انہوں نے فرمایا یہ تو خطوں کا سرنامہ ہے۔
خط میں کس سے شروع کرے۔

۵۲۷

(۲۰۰۰۲۹) ابن عمر کو امیر معاویہ سے ایک ضرورت پیش آئی چاہا کہ اون کو لکھنے میں
لوگوں نے کہا کہ خط کو انہیں سے شروع کیجے چنانچہ ہاں لوگ اصرار کرتے رہے یہاں تک
کہ اونکو لکھنا پڑا بسم اللہ الرحمن الرحیم سے معاویہ۔

(۲۰۰۳۰) انس بن سیرین نے کہا میں ابن عمر کا ایک خط لکھ کر لگاؤ نہوں نے فرمایا لکھ بسم اللہ الرحمن الرحیم ابعد الی فلان۔

(۲۰۰۳۱) انس بن سیرین نے کہا ایک شخص نے ابن عمر کے سامنے لکھا بسم اللہ الرحمن الرحیم فلان ابن عمر نے اسے منع کیا اور کہا کہ بسم اللہ یہ اس کے لئے ہے۔
(۲۰۰۳۲) باب ۵۲۶ کی پہلی حدیث۔

(۲۰۰۳۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ایک شخص نبی اسرائیل کا اور راوی نے حدیث کا ذکر کیا اور اس کے یار نے اس کو لکھا فلا نے کی طرف نظر اٹھانے کیف اصبحت صبح کو تیرا کیا حال ہا۔
۵۲۸

(۲۰۰۳۴) جنگ مذق کے دن حضرت سعد کے رگ بہت اندام پر جو زخم پہنچا اور وہ ذی فراس ہوتے لوگ اون کو ایک عورت کے یہاں لے گئے اس کا نام زینہ تھا زخمیوں کا علاج کیا کرتی تھی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جب وہ صحت گذرتے تو اون سے شاہ کہ حال پوچھتے کيف اصبحت اور صبح کو پوچھتے کيف اصبحت وہ آپ کو اپنے حال کی خبر دیتے۔
شاہ کو تیرا کیا حال رہا۔
صبح کو تیرا کیا حال رہا۔

(۲۰۰۳۵) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے جس بیماری میں انتقال فرمایا ہے حضرت علی آپ کے پاس سے اٹھ کر باہر آئے لوگوں نے پوچھا ابو الحسن صبح کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا کیا حال رہا جواب دیا خدا کا شکر ہے صبح کو تو آپ اچھے رہے پھر حضرت عباس بن عبدالمطلب نے اون کا ہاتھ پکڑ کر کہا کچھ تمہیں اپنی خبر ہے قسم خدا کی تین ہی دن کے بعد تم لاہی کو فلام بن جاؤ گے قسم خدا کی میں سمجھتا ہوں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اس بیماری سے قریب میں انتقال فرمائیں گے۔
میں عبدالمطلب کی اولاد کے مرتے وقت کا رخ پہچانتا ہوں ہلوگ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس چلیں اور آپ سے پوچھ لیں کہ خلافت کس خاندان میں رہے گی اگر ہمیں لوگوں میں رہے تو ہم لوگوں کو یہ بات معلوم ہو جائے اور اگر دوسروں میں جائے تو ہلوگ آپ سے کہہ کر اپنے لئے کچھ وصیت کرالیں۔

حضرت علی نے فرمایا قسم خدا کی اگر ہم آپ سے اس بارہ میں پوچھیں اور کہیں
آپ نے پہلو گونکو اوس سے روکا پھر تو آنحضرت کے بعد لوگ ہم کو بھی خلافت ندینگے
ہم تو قسم خدا کی اس بات کو آنحضرت سے کبھی نہ پوچھینگے۔
خط کے آخر میں یوں لکھنا السلام علیکم ورحمۃ اللہ علیہ کی دس دن باقی رہے پھر ظاہر لکھا ۵۲۹

(۲۰۳۶) ابن ابی الزناد نے کہا میرے باپ نے خارجہ بن زید اور زید بن ثابت
کی اولاد میں بڑوں سے یہ خط لیا بسم اللہ الرحمن الرحیم خدا کے بندے مسلمانوں کو
سردار معاویہ کو زید بن ثابت کی طرف سے سلام علیک امیر المؤمنین ورحمۃ اللہ علیہم سے
اوس خدا کی تعریف کرنا ہوں جس کے سوا کوئی معبود نہیں اما بعد تم نے مجھے وہ
اور بجا تو نکلی میراث کا مسئلہ پوچھا ہے پھر آگے راوسی نے خط کا مضمون بیان
کیا اور خدا سے ہم ہدایت اور حفاظت اور اپنے ہر کام میں ثابت قدمی چاہتے
ہیں اور اگر اسی سے اور جہالت سے اور جو بات ہمیں معلوم نہیں اوس کو تکلف
کرنے سے خدا کی پناہ چاہتے ہیں والسلام علیک امیر المؤمنین ورحمۃ اللہ علیہ
برکاتہ و مغفرتہ اور وہیب نے لکھا روز پشنبہ رمضان ۲۲ گھنٹہ کے بارہ دن باقی
۵۳۰
تمہارا کیا حال ہے

(۲۰۳۷) حضرت عمر کو ایک شخص نے سلام کیا آپ نے سلام کا جواب دیکر
پوچھا تیرا حال کیا ہے اوس نے عرض کیا میں آپ سے خدا کی تعریف کرنا ہوں حضرت
عمر نے فرمایا میں یہی بات تجھے چاہتا تھا۔
کوئی پوچھے کہ صبح کو تیرا کیا حال رہا تو کیا جواب دے
۵۳۱

(۲۰۳۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے کسی نے پوچھا کہ حضور نے کس حال میں
صبح کی فرمایا جو لوگ نہ کسی جنازہ پر حاضر ہوئے اور نہ کسی بیمار کی عیادت کی ا دن لوگو نے
بہت اچھی طرح۔

(۲۰۳۹) مہاجر نام ایک کاریگر نے کہا کہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے اصحاب
میں حضرت موت کے رہنے والوں میں ایک صحابی موئے آدمی تھے میں اونکے پاس

بیٹھا کرتا جب اون سے کوئی پوچھتا آپ نے کس حال میں صبح کی نماز اس حال میں کہ ہم خدا کا شریک نہیں بھنہہاتے۔

(۲۰۲۰) سیف بن وہب نے کہا مجھے ابو طفیل نے کہا تیری کیا عمر ہے میں نے کہا تینتیس برس کا ہوں فرمایا میں نے ایک حدیث حدیفہ ابن یمان سے سنی ہے تجھ سے بیان کروں ایک شخص قبیلہ محارب خضفہ بن کا نام عمر بن صلیح تھا اور وہ صحابی تھے اور اونکی عمر اون دنوں آجکل کی میرے عمر تھی اور میری عمر آجکل کی تیری تھی ہم لوگ حدیفہ کے پاس مسجد میں آئے میں تو سبکے پیچھے بیٹھ گیا اور عمر و جا کر اونکے سامنے کھڑے ہو گئے اونہوں نے کہا بندہ خدا کس حال میں تو نے صبح کی یا کہا کس حال میں تو نے شام کی انہوں نے جواب دیا خدا کا شکر بخا لاتا ہوں عمر و نے پوچھا یہ کیا باتیں تمہاری میرے پاس آئی ہیں حدیفہ نے فرمایا عمر و میری کیا خبر تمکو پہنچی کہا وہ حدیثیں جنکو میں نے سنا انکے نہیں حدیفہ نے کہا قسم خدا کی جو کچھ میں سنا ہوں تم لوگوں سے بیان کروں تو تم لوگ میرے بارے میں رات آنیکا بھی استفار نہ کرو گے لیکن اسے عمر و بن صلیح جب قیس کو دیکھو کہ اوسنے شام پر متواتر حملے کئے اوسوقت بچنا چاہتے کیونکہ قسم خدا کی قیس بہر بندہ خدا ہونکو بغیر ڈرائے یا قتل کئے پھوڑیگا قسم خدا کی اون لوگوں پر ایسا زمانہ آئیوالا ہے کہ وہ لوگ قیس سے تلک کی دم بھی نہیں روک سکیں گے عمر و بن صلیح نے پوچھا خدا تم پر رحم کرے اوسوقت تم اپنی قوم کی کیا مدد کرو گے جواب دیا کہ یہ میرے علاقے ہے پھر عمر و بیٹھ گئے۔

۵۳۲

جلسوں میں فراغت کی جگہ بہتر ہے۔

(۲۰۲۱) ابو سعید خدری کو ایک جنازے کی اطلاع دیکتی راوی کہتا ہے شاید وہ کس قدر چھے رہ گئے یہاں تک کہ لوگ اپنی اپنی جگہ بیٹھ گئے پھر ساتھ ہی وہ بھی پہنچے اونکو دیکھ کر جلدی جلدی سر کئے لگے بعض اپنی جگہ سے اٹھ گئے جو حسین ابو سعید بن ابی سعید نے فرمایا نہیں بیٹے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سنا ہے آپ نے فرمایا مجلسوں میں فراغت کی جگہ سب سے بہتر ہے پھر ابو سعید بت کر ایک

لا
تو باقی پڑھو
ذی شیب و ہون
الا صدقہ ۱۲۰ ص ۱۲۰
بیشک باقی پڑھو
بہتر جگہ ہے

کشاوہ جگہ میں بیٹھ گئے۔

قبیلہ روہونا

۵۳۳

(۲۰۲۲) عبد اللہ بن عمر اکثر قبلیں نبیؐ کا کرتے ایک دفعہ یزید بن عبد اللہ بن قسیط نے طلوع آفتاب کی وقت سجدہ کی آیت پڑھی اور سجدہ کیا اور عبد اللہ بن عمر کے سوا اور سب لوگوں نے بھی سجدہ کیا پھر جب آفتاب نکل چکا عبد اللہ نے اپنا گوت کھولا پھر سجدہ کیا اور کہا تو نے اپنے ساتھ نیک سجدہ نہیں دیکھا کہ ان لوگوں نے نماز کے خلاف وقت میں سجدہ کیا

مجلس سے اٹھ کر پھر لوٹ آؤ

۵۳۴

(۲۰۲۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب کوئی تم میں سے اپنی جگہ سے اٹھ جائے اور پھر لوٹ آوے تو اس جگہ کا وہی زیادہ مستحق ہے۔

ماہ پر بیٹھنا۔

۵۳۵

(۲۰۲۴) انس نے کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ہم چند لڑکوں کے پاس تشریف لائے اور ہلوگوں کو سلام فرمایا اور مجھے ایک ضرورت کو بھیجا اور جب تک میں پھر آیا برابر راہ پر بیٹھے میرا انتظار فرماتے رہے اس میں ام سلیم کے یہاں پہنچے میں مجھے دیر ہو گئی ام سلیم نے کہا تجھے دیر کیوں ہوئی میں نے کہا مجھ کو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے ایک کام کو بھیجا تھا اور اسے پوچھا کس کام کو میں نے کہا وہ راز کی بات ہے کہنے لگی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے راز کی حفاظت کرنا مجلس کو وسعت دینا۔

۵۳۶

(۲۰۲۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو جہان بیٹھا ہو کسی کو وہاں سے اٹھ کر آپ بیٹھے لیکن پھیلاؤ کرو اور وسعت دو۔

جہان تک پہنچنے کے وہیں بیٹھ جائے۔

۵۳۷

(۲۰۲۶) جابر بن سمرہ نے فرمایا ہلوگ جب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہوتے جو جہان پہنچ سکتا وہیں بیٹھ جانا۔

۱۰
۱۱
۱۲
۱۳
۱۴
۱۵
۱۶
۱۷
۱۸
۱۹
۲۰
۲۱
۲۲
۲۳
۲۴
۲۵
۲۶
۲۷
۲۸
۲۹
۳۰
۳۱
۳۲
۳۳
۳۴
۳۵
۳۶
۳۷
۳۸
۳۹
۴۰
۴۱
۴۲
۴۳
۴۴
۴۵
۴۶
۴۷
۴۸
۴۹
۵۰
۵۱
۵۲
۵۳
۵۴
۵۵
۵۶
۵۷
۵۸
۵۹
۶۰
۶۱
۶۲
۶۳
۶۴
۶۵
۶۶
۶۷
۶۸
۶۹
۷۰
۷۱
۷۲
۷۳
۷۴
۷۵
۷۶
۷۷
۷۸
۷۹
۸۰
۸۱
۸۲
۸۳
۸۴
۸۵
۸۶
۸۷
۸۸
۸۹
۹۰
۹۱
۹۲
۹۳
۹۴
۹۵
۹۶
۹۷
۹۸
۹۹
۱۰۰

(۲۰۲۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کسی کو حلال نہیں ہے کہ

دو آدمیوں کو بغیر اجازت دونوں کے جدا کرے۔

لوگوں کی گردنیں لٹکتے ہوئے صاحب مجلس تک چل جانا

(۲۰۲۷) ابن عباس نے فرمایا حضرت عمر جب زخمی کئے گئے میں بھی اوتکے

اوتھانے والوں میں تھا ہلوگوں نے اونکو گھر پہنچا دیا مجھے فرمایا بیٹھے جا کر دیکھ

تو مجھے کئے زخمی کیا اور میرے ساتھ کس کو کس کو زخم لگا۔ بس میں گیا جا کر آپ کو

خبر دینے پھر آیا دیکھا کہ مکان لوگوں سے بھر گیا ہے میں کم سن آدمی اوتھانے والوں کی گردنوں کو

لٹکتا ہوا جانا مجھے نامناسب معلوم ہوا بس میں بیٹھ گیا اور حضرت عمر جب کسی کو

اسی کام کے لئے بیٹھے تو یہ بھی حکم دیتے کہ مجھے اوسکی خبر دینا اونکو دیکھا تو وہ چادر اوڑھے

ہوتے بیٹھے تھے اتنے میں کعب اگر کہنے لگے قسم خدا کی اگر امیر المؤمنین دعا کریں گے

تو خدا اونکو ضرور زندہ رکھے گا اور انکو اس امت کو ضرور اوتھاویگا کہ وہ اس میں ایسا

اور ایسا کریں گے یہاں تک کہ کعب نے منافقوں کا ذکر چھیڑا کسی کا نام لیا کسی کی کنیت

بولی میں نے کہا تم جو بول رہے ہو خدا امیر المؤمنین تک پہنچا دیتا اس پر کعب نے

کہا ہنسنے تو اسی مطلب سے کہا ہے کہ اس بات کو تم اون تک

پہنچا دو تب تو میں نے بھی جرات کی اور کھڑا ہو گیا پھر میں لوگوں کی لڑائی تڑپتا ہوا اون سے

سراہنے پہنچا کر بیٹھ گیا اور کہا کہ آپ نے اس کام کو بھیجا تھا اور آپ کے ساتھ تیرہ آدمی

زخمی ہوئے ہیں اور کلب جزائر پتھر کے بڑے تنگ کے پاس وضو کر رہے تھے وہ بھی

زخمی ہوئے اور کعب ایسی ایسی بات پر خدا کی قسم کھا رہے ہیں عمر نے فرمایا

کعب کو بلاؤ پھر وہ بلا کر آئے فرمایا تم کیا بولتے ہو کعب نے کہا ہم ایسا

کہتے ہیں عمر نے فرمایا نہیں قسم خدا کی ہم دعا کریں گے لیکن اگر عمر کو اللہ نے

بخشا نہیں تو یہ اوسکی بد نصیبی کی بات ہے۔

(۲۰۲۸) عبد اللہ بن عمرو کے پاس لوگ بیٹھے ہوئے تھے ایک شخص

لوگوں کو لانا لگتا ہوا اور انکی طرف چلا لوگوں نے اسکو روکا عبد اللہ نے فرمایا اسکو چھوڑ دو تب وہ آگراونکے پاس بیٹھ گیا اور عرض کیا آپ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سنی ہوئی کوئی بات مجھے بتائیے عبد اللہ نے فرمایا یہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو فرماتے ہوئے سنا ہے مسلمان وہی ہے جس کی زبان سے اور ہاتھ سے مسلمان لوگ سلامت رہیں اور مہاجر وہ شخص ہے کہ خدا نے جن باتوں کو منع فرمایا ہے انکو چھوڑ دے۔

۵۲۰

ہمیشہ کا رتبہ آدمی پر سب سے زیادہ ہے

(۲۰۴۹) ابن عباس نے فرمایا میرے ہمیشہ کا مرتبہ ٹھہر چکے زیادہ ہے۔

(۲۰۵۰) ابن عباس نے فرمایا میرے ہمیشہ کا مرتبہ ٹھہر سب سے زیادہ کہ لوگوں کی گردنیں تڑپنا ہوا میرے پاس آکر بیٹھ جائے۔

۵۲۱

اپنی ہمیشہ کے آگے اپنا پاؤں بڑھاوے یا نہیں

(۲۰۵۱) کثیر بن مرہ نے کہا جمعہ کے دن میں مسجد میں گیا عوف بن مالک اشجی کو ایک حلقہ میں پایا اپنے دونوں پاؤں سامنے پھیلائے ہوئے بیٹھ تھے جب مجھے دیکھا اپنے دونوں پاؤں سمیٹ لئے پھر مجھے فرمایا تو جانتا ہے میں کیوں اپنے پاؤں پھیلا دیتے تھے اسلئے کہ کوئی نیکی نہ ہو تو وہ میں پھر جمع میں بیٹھے ہوتے تھو کنا۔

۵۲۲

(۲۰۵۲) حارث بن عمرو بھی نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مٹی یا عرفات میں تشریف رکھتے تھے اور لوگ آپکو گھیرے ہوئے تھے اور دیہاتی لوگ آتے تھے اور جب آپکے پاک چہرہ کو دیکھتے بس کہتے کہ یہ چہرہ مبارک چہرہ ہے میں نے عرض کیا یا رسول اللہ میرے لئے دعائے مغفرت فرماتے آپ نے فرمایا یا اللہ ہلوگوں کو بخندے پھر میں گھوم کر آیا اور عرض کیا یا رسول اللہ میرے لئے دعائے مغفرت فرماتے فرمایا یا اللہ ہلوگوں کو بخندے پھر میں گھوم کر آیا اور عرض کیا یا رسول اللہ میرے لئے دعائے مغفرت فرماتے فرمایا یا اللہ ہلوگوں کو

بے
بیچنے میں نے اس لئے
کلمہ پھیرا
کہ اپنی اجازت آویجا
تو پاؤں سمیٹنے لگا
وہ وہاں بیٹھ گیا

نیک چلن

بخشدے پھر آپ نے اپنا تھوک ہاتھ میں لیکر اپنی جوئی میں مل دیا آپ کو یہ بات
نا پسند تھی کہ آپ کے آس پاس والو سپر پڑ جائے۔
خارج مکان پشتون اور چوترون پر بیٹھنا۔

۵۴۳

(۲۰۵۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے مکان کے باہر پشتون اور چوترون
پر جلسہ کرنے سے منع فرمایا لوگوں نے عرض کیا یا رسول اللہ گھروں کے اندر
بیٹھنا تو ہلوگوں کو بہت جبر ہو گا آپ نے فرمایا اچھا بیٹھو تو اس بیٹھنے کا حق
ادا کیا کرو عرض کیا یا رسول اللہ اس بیٹھنے کا حق کیا ہے فرمایا پوچھنے والے کو بتانا
اور سلام کا جواب دینا اور نگاہ نیچی رکھنی اور اچھی بات بتانی برسی بات سے روکنا
(۲۰۵۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا خبردار راستون پر بیٹھنے سے
احتیاط کیا کرو لوگوں نے عرض کیا یا رسول اللہ راستون پر بیٹھنا تو ہلوگوں کو لا بدی ہے
وہیں تو ہلوگ بات چیت کرتے ہیں تب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
نے فرمایا اچھا جب نہیں مانتے ہو تو راستے کو راستے کا حق دیا کرو عرض کیا یا
رسول اللہ راستے کا حق کیا ہے فرمایا آنکھ نیچی رکھی اور اونٹ وینے والی چیزوں سے
احتیاط کرنا اور اچھی بات بتانی اور برسی بات سے روکنا۔

۵۴۴

کنوئین میں پاؤں لٹکا کر اور پھیلے ہونے کو کھول کر بیٹھنا۔

(۲۰۵۵) ابو موسیٰ اشعری نے فرمایا ایک دن نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
کسی ضرورت کو مدینہ کے ایک باغ کی طرف چلے اور آپ کے پیچھے پیچھے میں بھی چلا
جب آپ باغ کے اندر تشریف لے گئے میں دروازے ہی پر بیٹھ گیا اور کہا کہ
آج میں دروازے پر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا پہرہ دون اور آپ نے بیٹھے
اس کا حکم نہیں دیا تھا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے جا کر اپنے کام سے فراغت
فرمائی اور کنوئین کی جگت پر بیٹھ گئے اور دونوں پھلیوں کو کھول دیا اور دونوں
پاؤں کوئین میں لٹکا دیا پھر ابو بکر من آئے اور چاہا کہ اندر جانے کے لئے استیذان
کرین میں نے کہا بس جیسے کھڑے ہو کھڑے رہو میں تمہارے لئے پوچھ آؤں وہ تو

چھڑ گئے میں نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہو کر عرض کیا
 یا رسول اللہ ابو بکر حاضر ہونے کو اذن طلب کرتے ہیں فرمایا کہ اذن کو اذن دو
 اور بہشت کی بشارت دید و پھر ابو بکر اندر آئے اور نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
 کے دائیں آگرائی پھلیوں کو کھولا اور دونوں پاؤں کنوئین میں لٹکادیا پھر عمر
 آئے بیٹے کہا بس جیسے کھڑے ہو کھڑے رہو میں تمہارے لئے پوچھ آؤں نبی
 صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اسے اذن دے اور بہشت کی خوشخبری سنا دو
 پھر عمر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے بائیں آئے اور دونوں پھلیوں کو کھول دیا اور
 دونوں پاؤں کنوئین میں لٹکادیا بس جگت بھر گئی اور اوسط بیٹھنے کی
 جگہ نہ رہی پھر عثمان آئے بیٹے کہا بس جیسے کھڑے ہو کھڑے رہو میں تمہارے
 لئے پوچھ لوں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اذن کو اذن دے اور
 بہشت کی خوشخبری دے اور اسکے ساتھ اسپر ایک بلا بھی آئیگی پھر عثمان اندر
 گئے اور اذن لوگوں کے ساتھ بیٹھنے کی جگہ نہ پائی تب وہ گھوم کر اذن لوگوں کو
 مقابل کنوئین کے لب پر آگئے اور دونوں پھلیوں کو کھول دیا اور دونوں پاؤں کنوئین میں
 لٹکادیا میں تمنا کرنے لگا کہ میرا بھائی بھی آجاتا اور خدا سے دعا مانگنے لگا
 کہ اوسکو آوے مگر نہیں آیا یہاں تک کہ جلسہ برخواست ہو گیا
 ابن مسیب راوی کہتا ہے کہ میں اس قصہ سے اونکی قبروں کی تاویل کی کہ
 تین صاحبوں کی قبریں تھیں اور عثمان ایک لے پڑ گئے۔

(۲۰۵۶) ابو ہریرہ نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ایک جماعت
 کے ساتھ چلے نہ آپ مجھ سے بولتے اور نہ میں آپ سے بولتا تھا چلتے چلتے
 ادار نبی قیام میں پہنچے اور حضرت فاطمہ کے مکان کے کنارے بیٹھ گئے
 اور فرمایا وہاں بچے ہے وہاں بچے ہے بی بی فاطمہ نے ذرا ابرو کے کوٹھڑا یا میں
 بچا کہ آپ اذن کو سنبال پہناری ہیں یا نہ ہلاری ہیں اتنے میں دوڑنے
 سے پہنچے آپ نے اذن کو گلے لگایا اور اذن کا بوسہ لیا اور فرمایا امیر اللہ

تو اسے دوست رکھ اور جو اسے دوست رکھے اسے دوست رکھ۔

آٹھواں پارہ تمام ہوا

ادب المفرد کا نواں پارہ

کوئی کسیکے واسطے اپنی جگہ سے اٹھو تو وہ وہاں نہ بیٹھے۔ ۵۲۵

(۲۰۵۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے منع فرمایا ہے کہ کسیکو اسکی جگہ سے اڑھا کر آپ وہاں بیٹھے ابن عمر کے لئے اگر کوئی اپنی جگہ سے اڑھتا تو وہ وہاں نہ بیٹھتے۔

۵۲۶

امانت

(۲۰۵۸) انس نے فرمایا ایک دن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

کی خدمت انجام دیکر میں نے سمجھا کہ اب مجھے فراغت ہو گئی میں نے کہا کہ اب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم قبیلہ فرمایا تنگے بس میں آپ کے پاس سے چلا گیا نکلا کر کیا دیکھا کہ چند لڑکے کھیل رہے ہیں میں کھڑا ہو کر اون لڑکوں کو اور اونکو کھیل کو دیکھنے لگا اتنے میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم تشریف لائے اور لڑکوں کے پاس پہنچا اور انکو سلام فرمایا پھر مجھے بلا کر ایک ضرورت کو بھیجا گویا وہ بات میرے منہ میں موجود ہے وہ کام کر کے میں آپ کے پاس آیا اس سبب سے مان کے یہاں جانے میں مجھے توقف ہوا اسنے پوچھا تجھے دیر کیوں ہوتی میں نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے مجھے ایک ضرورت کو بھیجا تھا بولی کون کام میں نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے راز کی بات ہے تب مجھے کہا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے راز کی حفاظت کرنا چنانچہ میں نے کیسے اس باتکو بیان نہیں کیا انس نے ثابت راوی سے کہا

اگر بیان کرنا ہوتا تو میں تجھے بیان کر دیتا۔

موندھ پھیر کر دیکھنا ہو تو پورا پھر جاے

۵۴۷

(۲۰۵۹) ابو ہریرہ رضی اللہ عنہما سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی صفت بیان کرتے تھے کہ آپ میانہ قد مائل بہ درازی بہت گو رے ڈاڑھی کے بال کالے سر کے بال خوبصورت پلکوں کے بال لائے دونوں موندھوں کے درمیان کی قدروری تھی پیشانی برابر چلنے میں پورا پانوں پڑتا تھا تلوون میں گھرا جی نہ تھی سارے بدن سے متوجہ ہوتے اور سارے بدن سے پھر جاتے میں آپ کے ایسا کوئی نہ پہلے دیکھا نہ پیچھے دیکھا۔

۵۴۸

جب کسی کو کسی کا کھیل بھیجے تو اسے خبر نہ کرے۔

(۲۰۶۰) عبداللہ بن سلم کے باپ نے کہا مجھے عمر نے فرمایا جب میں تجھے کسی کو بلا بھیجوں تو تو اسے سلامت کہہ دے کہ مجھے اس کے بلانے کو بھیجا کیونکہ شیطان اس کے لئے ایک جھوٹی بات قائم کر دیتا ہے۔

۵۴۹

کیا پوچھے کہہ دے کہ اسے اسے ہو

(۲۰۶۱) مجاہد مکرور کہتے تھے کہ کوئی کسی کو نظر گزار کر دیکھے کسی پاس سے ادھر چلے تو اس کے پیچھے آنکھ لگائے رہے یا پوچھے تم کہاں سے آ کر یا کہاں جاؤ گے۔

(۲۰۶۲) مالک بن زبید نے کہا ربہ گادون میں حضرت ابو ذر کے یہاں جھوگوں کا گزر ہوا انہوں نے پوچھا تلوگ کہاں سے آتے ہو جھوگوں نے کہا مکہ سے یا کہا بیت عتیق سے کہا تلوگوں کا یہی کام ہے جھوگوں نے کہا ہاں کہا کیا اسکے ساتھ کوئی تجارت یا فریاداری نہیں ہے جھوگوں نے کہا نہیں فرمایا تم نے سر سے غسل کرو۔

جو لوگ سچا ہیں کہ ہماری بات دوسرے سزاؤں کی بات پر کان لگانا۔

۵۵۰

(۲۰۶۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو شخص تصویر بنا دیکھا اس سے حکم ہو گا کہ اس میں روح بھونکے اور اسکے لئے اسکی سزا ہوگی اور وہ ہرگز بھونکے

یعنی جب اسکے وہ
طلب معلوم ہو جائیگی
تو وہ اسکا جواب بھیجے
لیگا اور اصل بات کا
پتہ نہ لگے گا اور اللہ اعلم

نہ سکیگا اور جو کوئی بنا کر خواب بیان کرے گا اور جو حکم ہو گا کہ دو نوین گرد و دیکر باندھ دے اور اسکے لئے اوسکی منزا ہوگی اور اون دونوں میں ہرگز گره نہ دے سکے گا اور جو شخص ایسے لوگوں کی بات سنا چاہے جو لوگ اوس سے بھاگتے ہوں اوسکو کانٹیں سیہ گلا کر ڈالا جائیگا۔

۵۵۱

تخت پر بیٹھنا۔

(۲۰۶۳) عریان بن ہبیر نے کہا امیر معاویہ کے زمانہ انارت میں میرے باپ اپنی قوم کی طرف سے امیر معاویہ کے یہاں آئے میں اوس وقت میں اردکا صاحب میرے باپ اندر گئے اونہوں نے کہا مرجا مرجا اور ایک شخص اوسکے ساتھ چارپائی پر بیٹھا ہوا تھا اوسے کہا یا امیر المؤمنین یہ کون ہیں جنہیں آپ مرجا مرجا کہہ رہے ہیں کہا پورب والوں کے رئیس یہ ہیشم بن اسود ہیں بیٹے کہا یہ کون ہے لوگوں نے بتایا یہ عبداللہ بن عمرو بن عاص ہیں میں نے اوس سے کہا یا ابا فلان و جمال کہاں سے خروج کر گیا اونہوں نے جواب دیا تیرے شہر والوں سے زیادہ سمجھنے کسی شہر والے کو نہیں دیکھا کہ در کی بات تو خوب پوچھینگے اور نزدیک کی بات بالکل چھوڑینگے پھر فرمایا ملک عراق سے نکلیگا جہاں درخت اور کھجور ہو اگر تیرے۔

(۲۰۶۵) ابو العالیہ نے کہا ابن عباس کے ساتھ میں چارپائی پر بیٹھا۔

(۲۰۶۶) ابو جمرہ نے کہا میں ابن عباس کا ہنشین تھا وہ مجھ اپنے چارپائی پر بیٹھا با کرتے مجھے کہا کہ تو میرے یہاں ٹھہر میں انہی میں سے تیرا بھی کچھ حصہ کر دوں گا چنانچہ میں دو مہینے تک اوسکے یہاں مقیم رہا۔

(۲۰۶۷) بصرہ کے حاکم حکم کے ساتھ انس بن مالک چارپائی پر بیٹھے فرماتے تھے کہ میں نے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ٹھنڈے وقت نماز پڑھتے تھے اور جاڑو نہیں سویرے پڑھا کرتے تھے۔

(۲۰۶۸) انس بن مالک نے فرمایا میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں حاضر ہوا دیکھا کھجور کی جھال کی بنی ہوئی چارپائی پر آپ میں میرے بچے چڑھ چکا

ابو جمرہ نے فرمایا کہ میں نے اس سے کچھ حصہ کر دیا

تکلیف ہے اوس میں بھی کجور کی مجال بھری ہوئی ہے اور چار پائی پر کچھ بچھا دن نہیں ہے اتنے میں حضرت عمر حاضر ہوئے اور رونے لگے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے پوچھا عمر تیرے رونے کا کیا باعث ہے عرض کیا قسم خدا کی فقط اس پر روتا ہوں کہ مجھے معلوم ہے کہ خدا کے نزدیک آپکی وجاہت کسری اور قیصر سے کہیں زیادہ ہے وہ دونوں دنیا میں کس طرح عیش کر رہے ہیں اور یا رسول اللہ آپکی یہ حالت ہے جو اس وقت میرے پیش نظر ہے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا عمر کیا تجھے یہ پسند نہیں کہ اونکو دنیا ملے اور ہمارے لئے آخرت ہو عرض کیا ہاں یا رسول اللہ فرمایا تب یہی بات تھی۔

(۲۰۶۹) ابو رفاعہ عدوی نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم خطبہ فرما رہے تھے اس وقت میں آپکے پاس پہنچا اور عرض کیا یا رسول اللہ ایک مسافر آدمی حاضر ہوا ہے اپنے دین کو پوچھتا ہے اوسے خبر نہیں کہ دین اوسکا کیا ہے بس آپ میری طرف متوجہ ہو گئے اور خطبہ کو چھوڑ دیا پھر لوگ ایک کرسی لاتے میں سمجھتا ہوں اوسکی پاسے لوہے کے تھے حمید راوی کہتا ہے میں سمجھتا ہوں کالی لکڑی تھی اوسیکو اونٹانے لوہا خیالی کیا پھر آپ اوسپر بیٹھے اور خدا نے جو کچھ اونہیں بتایا تھا مجھے بھی بتانے لگے پھر آخر تک اپنا خطبہ پورا کیا۔

(۲۰۷۰) موسیٰ بن وہبان نے کہا میں نے ابن عمر کو دیکھا وہ ایک دولہ کی چار پائی پر بیٹھے تھے کہ ۱۲ اونکا شیخ تھا۔

(۲۰۷۱) عمران بن مسلم نے کہا میں نے انس کو دیکھا پاؤں پر پاؤں چڑھائے ایک چار پائی پر بیٹھے تھے۔

۵۵۲

کچھ لوگ آہستہ باتیں کرتے ہوں تو اونہیں جلا جاتے

(۲۰۷۲) سعید مقبری نے کہا ابن عمر ایک شخص سے باتیں کر رہے تھے اودہر کہیں میرا گذر ہوا میں اُنہوں کے سبب سوکھڑا ہو گیا بس ابن عمر نے میرے سینہ میں ایک ٹنگا مارا اور فرمایا جب دو آدمی کو باتیں کرتے پاؤں تو اون دونوں کے

ساتھ کھڑا مت ہو جایا کر اور اونکے ساتھ بیٹھ بھی مت پہلے اون سے پوچھنے سے تب
مضائقہ نہیں بیٹھے عرض کیا یا ابو عبد الرحمن خدا تمہارا بھلا کرے میں اس امید پر کھڑا
ہو گیا تھا کہ تم دونوں سے کچھ اچھی بات سنوں۔

(۲۰۶۳) ابن عباس نے فرمایا جو شخص لوگوں کی بات کی طرف کان لگا دے اور
وہ لوگ چاہتے نہ ہوں اوسکے دونوں کانوں میں سیسہ گلا کر ڈالا جائیگا اور جو شخص
جھوٹے خواب بیان کرے اوسے حکم ہوگا کہ جو میں گرہ دی۔

تیسرے کو چھوڑ کر آدمی آہستہ بات نکرین۔

۵۵۳

(۲۰۶۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب میں ہی آدمی ہوں
تب بغیر تیسرے آدمی کے فقط دو شخص آہستہ آہستہ بات نکرین۔

۵۵۴

جب چار آدمی ہوں

(۲۰۶۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب تم تین ہی آدمی ہو تب تیسرے
کو چھوڑ کر فقط دو شخص آہستہ آہستہ بات نکرین اس سے اوسکو رنجیدگی ہوگی۔

(۲۰۶۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا وہی پہلی حدیث ہلوگوں نے پوچھا
اگر چار آدمی ہوں فرمایا تب نقصان نہیں۔

(۲۰۶۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ایک کو چھوڑ کر دو شخص آہستہ
بات نکرین جب تک لوگوں میں مل جل جائیں کیونکہ اس سے اوسکی رنجیدگی ہوگی۔

(۲۰۶۸) ابن عمر نے فرمایا چار ہوں تب کچھ پروا نہیں۔

۵۵۵

کوئی کسیکے پاس آکر بیٹھے تو پوچھ کر ادرے۔

(۲۰۶۹) ابو بردہ بن ابوسوی نے کہا میں عبد اللہ بن سلام کے پاس بیٹھا اونہوں کی
فرمایا تم تیسرے پاس آکر بیٹھے اور میرے ادرے کا وقت آگیا بیٹھے کہا جب آپ چاہیں
بس ادرے کھڑے ہوتے اور میں بھی دروازے تک اونکے پیچھے پیچھے گیا۔

۵۵۶

دھوپ کے کنارے نہ بیٹھیں۔

(۲۰۷۰) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم خطبہ میں تھے فیس کے باپ آکر دھوپ

میں کھڑے ہو گئے بس آپ نے اونکو فرمایا تب سایہ میں چلے آئے۔
کپڑے میں گوٹ مار کر بیٹھا۔

۵۵۷

(۲۰۸۱) دو قسم کے پھراوے تھے اور دو قسم کی بیج سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے منع فرمایا ہے خرید و فروخت میں مست اور منابذت سے منع فرمایا یہ کہ مشتری بائع کے کپڑے کو چھو دے اور منابذت اسطرح کہ اپنا کپڑا دوسرے کی طرف پھینک دے بس اتنی ہی پر بے دیکھے بھالے سودا ہو گیا اور دونوں پھراوا ایک تو شمال صفا اسطرح کہ کپڑا کنارہ ایک موٹھے پر رکھ لے اور ایک جانب کھل جائے گا دوسرے کپڑا نہوا اور دوسرا پھراوا یہ کہ اپنے کپڑے میں گوٹ مار کر بیٹھا جاوے اور اسکی نظر سگاہ پر کچھ کپڑا نہو۔

کوئی کسکو تکیہ دے۔

۵۵۸

(۲۰۸۲) عبد اللہ بن عمرو نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے لوگوں نے میرے روزے کا ذکر کیا آپ میرے یہاں تشریف لائے بیٹے آپکو ایک تکبہ چمڑیکا دیا جس میں کھجور کی جھال بھری تھی مگر آپ زمین ہی پر بیٹھ گئے اور تکبہ میرے اور آپ کے بیچ میں رکھیا۔ پھر آپ نے فرمایا ہر مہینے میں روزے تجھے کافی نہیں بیٹے عرض کیا یا رسول اللہ فرمایا پانچ بیٹے عرض کیا یا رسول اللہ فرمایا سات بیٹے عرض کیا یا رسول اللہ فرمایا نو بیٹے عرض کیا یا رسول اللہ فرمایا گیارہ بیٹے عرض کیا یا رسول اللہ فرمایا داؤد پیغمبر کے روزے سے بڑھ کر روزہ نہیں آدھی عمر کا روزہ ایک دن روزہ ایک دن انظار

(۲۰۸۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کبھی کبھی گزرے انہوں نے آپکے لئے چادر بچھا دی آپ اس پر بیٹھ گئے۔

فرصتاً۔

۵۵۹

(۲۰۸۴) بی بی قیلہ نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو بیٹے دیکھا آپ فرمادے کشت بیٹھے ہیں بیٹے جو نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو خاکسارانہ بیٹھے ہوتے دیکھا

۱۰
۱۱
۱۲
۱۳
۱۴
۱۵
۱۶
۱۷
۱۸
۱۹
۲۰
۲۱
۲۲
۲۳
۲۴
۲۵
۲۶
۲۷
۲۸
۲۹
۳۰
۳۱
۳۲
۳۳
۳۴
۳۵
۳۶
۳۷
۳۸
۳۹
۴۰
۴۱
۴۲
۴۳
۴۴
۴۵
۴۶
۴۷
۴۸
۴۹
۵۰
۵۱
۵۲
۵۳
۵۴
۵۵
۵۶
۵۷
۵۸
۵۹
۶۰
۶۱
۶۲
۶۳
۶۴
۶۵
۶۶
۶۷
۶۸
۶۹
۷۰
۷۱
۷۲
۷۳
۷۴
۷۵
۷۶
۷۷
۷۸
۷۹
۸۰
۸۱
۸۲
۸۳
۸۴
۸۵
۸۶
۸۷
۸۸
۸۹
۹۰
۹۱
۹۲
۹۳
۹۴
۹۵
۹۶
۹۷
۹۸
۹۹
۱۰۰

میں تو مارے ڈر کے پتھر پتھر گئی
چار زانو بیٹھنا

۵۶۰

(۲۰۸۵) حنظلہ بن خذیم نے کہا میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے یہاں
حاضر ہو کر آپ کو دیکھا چار زانو بیٹھے ہوتے ہیں۔

(۲۰۸۶) ابو زریق نے علی بن عبد اللہ بن عباس کو دیکھا داہنا پاؤں بائیں پاؤں پر
چڑھائے چار زانو بیٹھے ہیں۔

(۲۰۸۷) عمران بن مسلم نے کہا میں انس بن مالک کو اسطرح چار زانو بیٹھے ہوتے
دیکھا ایک پاؤں دوسرے پر رکھے ہوتے ہیں۔

۵۶۱

گوٹ مار کر بیٹھنا

(۲۰۸۸) سلیم بن جابر بھی نے کہا میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے
یہاں حاضر ہوا آپ اس وقت چادر سے گوٹ مارے ہوئے بیٹھے تھے اور اس
چادر کے گوشے آپ کے دونوں پاؤں پر پڑے تھے میں نے عرض کیا یا رسول اللہ
مجھے وصیت فرماتے فرمایا خدا سے ضرور برابر ڈرتا رہ اور اچھی بات کو ملکی مت جاز
اپنے دُول سے کسی پانی مانگنے والے کی برتن میں بھوڑا پانی ہی ڈال دینا سہی یا
مسلمان بھائی سے کشادہ روی سے بولنا سہی اور خبردار تمہاری سچی کہی نہ رکھنا
یہ شیخی کی بات تیار نماز کی بات کو دوست نہیں رکھنا اور اگر کوئی شخص تیرا عیب
جانتا ہو اور اس عیب کی تجھے شرم دلاوے تو تو اس کے بدلے اس کے عیب
سے جو تجھے معلوم ہو اس کو شرم مت دلانا اس کا وبال اس کے اوپر ہوگا اور تجھے
ثواب ملے گا اور ہرگز کسی کو گالی مت دینا سلیم کہتے ہیں اس کے بعد کبھی میں نے
کسی جانور کو گالی دی اور نہ کسی آدمی کو۔

(۲۰۸۹) ابو ہریرہ نے فرمایا میں نے جب کبھی (امام) حسن کو دیکھا ضرور میری
آنکھوں سے آنسو بہنے لگے قصہ یہ ہوا کہ ایک دن نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
گھر سے نکلے مجھے مسجد میں پایا پس میرا ہاتھ پکڑ لیا پھر میں آپ کے ساتھ چلا آپ مجھے

گوٹ مار کر بیٹھنا ہے
کہ دونوں زانو کھڑا
کر کے سرین کے بین
بیٹھے اور ہاتھ سے
پاؤں سے دونوں
زانو پیٹ سے

کچھ بولے بس اتنے میں نبی ﷺ کے بازار میں پہنچے آپ اوس میں گھومے اور دیکھا پھر پھرے اور میں ہی ساتھ تھا یہاں تک کہ مسجد کو آگئے اور گوٹ مار کر بیٹھ گئے پھر فرمایا کلمہ کہاں ہے ہمیں کلمہ کو بھلا دو بس (امام) حسن دوزخی ہوئے آئے اور آپ کے گود میں بیٹھ گئے پھر اپنا ہاتھ آپ کی داڑھی میں ڈالا پھر نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اونکا مونہہ کھو لکر اپنا مونہہ اون کے مونہہ میں ڈالنے لگے پھر فرمایا اے اللہ میں اسے دوست رکھتا ہوں تو بھی اسے دوست رکھ اور جو اسے دوست رکھے اسے بھی دوست رکھ۔

گھنٹوں کے بل بیٹھنا۔

۵۴۲

(۲۰۹۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے صحابہ کے ساتھ ظہر کی نماز پڑھی پھر نمبر پر کھڑے ہو گئے اور قیامت کا ذکر فرمایا اور یہ ذکر فرمایا کہ قیامت میں بڑی بڑی باتیں ہونے والی ہیں پھر فرمایا جو کوئی کچھ پوچھنا چاہتا ہو تو اسکو پوچھ سے قسم خدا کی جب تک میں اپنی اس جگہ پر ہوں جس بات کو پوچھو گے ضرور بتا دوں گا لوگوں نے جو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے اس بات کو سنا خوب روئے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بار بار فرمانے لگے پوچھو تب عمر گھنٹوں کے بل بیٹھ گئے اور عرض کیا ہلوگ خدا کے رب ہونے سے اور اسلام کے دین ہونے سے اور محمد کے رسول ہونے سے راضی ہیں جب عمر نے یہ کہا تب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے سکوت فرمایا پھر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اچھا سنو اوس کی قسم جسکے ہاتھ میں محمد کی جان ہے میں جو نماز پڑھا تھا بس اسی دیوار کے مقابل بہشت اور دوزخ میرے روبرو لائی گئی میں نے آج کے ایسی بھلائی اور بڑائی کبھی نہیں دیکھی۔

چت لٹنا۔

۵۴۳

(۲۰۹۱) عباد بن یتم کے چچا نے کہا میں نے اونکو دیکھا ہے چت لیٹے ہوئے ایک پاؤں دوسرے پر رکھے مالک بن اسمعیل نے ابن عتیبہ سے پوچھا نبی صلی اللہ

علیہ وآلہ وسلم کو کہا ہاں۔

(۲۰۹۲) مسور نے کہا میں عبدالرحمن بن عوف کو دیکھا چت لیٹے ہوئے

ایک پاؤں دوسرے پر چڑھائے ہوئے

مونہہ کے بل لیٹنا۔

۵۴۴

(۲۰۹۳) طحفة غفاری اصحاب صفہ میں تھے انہوں نے کہا رات کے آخر

وقت میں مسجد میں سویا تھا اتنے میں کوئی آنیوالا آیا تو اس وقت میں پیٹ پر

لیٹا ہوا تھا بس اس نے اپنے پاؤں سے مجھے حرکت دی اور کہا اٹھ اس طرح

دینا خدا کے نزدیک مبغوض ہے میں نے سر چاڑھا یا کیا دیکھتا ہوں کہ نبی صلی اللہ

علیہ وآلہ وسلم میرے سر ہانے کھڑے ہیں۔

(۲۰۹۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مسجد میں ایک شخص کے

پاس ہو کر گزرے وہ مونہہ کے بل لیٹا ہوا تھا اپنے اسکو پاؤں سے مار کر

فرمایا اٹھ یہ جہنمی لیٹنا ہے۔

۵۴۵

دینا دینا دینا ہی ہاتھ سے کیا کرے

(۲۰۹۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کوئی تم میں بائین ہاتھ

سے نکھائے اور نہ بائین ہاتھ سے پتے اسوائے کہ شیطان بائین ہی ہاتھ سے

کھاتا ہے اور بائین ہی ہاتھ سے پیتا ہے نافع اس حدیث میں اتنا اور زیادہ کرتی

تھے کہ نہ بائین ہاتھ سے کچھ لے اور نہ بائین ہاتھ سے دے۔

۵۴۶

بیٹھے تو جوئی کہاں رکھے۔

(۲۰۹۶) عبداللہ بن عباس نے فرمایا مشنون طریقہ یوں ہے کہ جب کوئی

بیٹھے تو اپنی جوئی اوتار لے اور اپنے پہلو میں رکھے۔

۵۴۷

شیطان لکڑی و کڑی کچھ لاکر بچاؤں پر ڈال دیتا ہے

(۲۰۹۷) ابوامامہ نے کہا گھر والے جب بچاؤں بچھا چکے ہیں اور درست

کر رکھتے ہیں تب شیطان آتا ہے اور اس پر لکڑی یا پتھر یا کچھ چیز ڈال دیتا ہے

ہلوگو کو ملا اور سلام کیا۔ چنے سلام کا جواب دیا پھر وہ شخص بھٹہرا اور کہنے لگا کون لوگ
 میں ہلوگوں سے بتایا وفد عبدالقیس بولا تمہیں مرحبا ہے تم اپنے ہی لوگوں میں آ کر
 تمہیں لوگوں کو میں تلاش کرتا ہوں تمہیں خوشخبری دینے آیا ہوں جو نبی صلی اللہ
 علیہ وآلہ وسلم نے کل فرمایا تھا آپ نے پورب طرف دیکھا فرمایا کہ اس
 طرف یعنی پورب سے کل بہترین وفد عرب آویں گے جس میں کسی طرح رات
 کمانی پھر سویرے اٹھا اور اپنا اونٹ تیار کیا اور خوب تیز روانہ ہوا یہاں تک
 کہ دن چڑھ گیا اور یہ پھر چلنے کا قصد کیا پھر تمہارے اونٹوں کے سر نظر آنے لگے
 یہ سب کچھ اوسے اونٹ کی باگ پھیری اور لوٹنے میں آنے سے بھی تیز روانہ
 ہوا یہاں تک کہ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس پہنچا اور آپ کے گرد آکر
 اصحاب ہاجرین اور انصار حاضر تھے اوسے عرض کیا میرے مان باپ آپ پر
 خدا ہوں میں وفد عبدالقیس کی خوشخبری لیکر حضور میں حاضر ہوا ہوں آپ نے
 فرمایا اے محمد اوسے کہاں ملاقات ہوئی اوسے عرض کیا وہ لوگ ہمارے
 پیچھے پیچھے آ ہی ہوئے پھر سب قصہ بیان کیا آپ نے فرمایا خدا تجھے اچھی
 خبر سناوے اور لوگ اپنی اپنی جگہ تیار ہو گئے اور نبی صلی اللہ علیہ علیہ بیٹھے ہوئے
 سر آپ نے اپنی چادر کا کنارہ ہاتھ کے نیچے رکھا اوسے پر تکیہ کیا اور اپنے
 دو ہون پائوں پھیلا دیئے پھر وفدا گیا اوسے آنے سے ہاجر اور انصار سب لوگ
 بہت خوش ہوئے جب اون لوگوں سے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اور
 آپ کے اصحاب کو دیکھا اپنی سواری کے جانور و نکو خوشی کے مارے کو دانے
 جانے لگے اور تیزی سے متوجہ ہوئے لوگوں نے جگہ کو وسیع کیا اور نبی صلی اللہ
 علیہ وآلہ وسلم تکیہ لگائے ہوئے تھے اور اسی پیچھے رینگتے اونکا نام منذر بن علی
 بن اعمال بن زید بن عمرو بن عدس بن اذین بن اذین بن اذین بن اذین بن اذین
 اور زید بن اذین بن اذین بن اذین بن اذین بن اذین بن اذین بن اذین بن اذین
 اور ایک شخص ہستی سے چلتے ہوئے اور متوجہ ہوئے نبی صلی اللہ

علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تمہارا سردار اور تمہارا چودھری اور تمہارا حاکم کون ہے
 سچوں نے اونہیں کی طرف اشارہ کیا آپ نے فرمایا یہ تمہارا سردار کیونکر
 ہوا لوگوں نے عرض کیا اونکے باپ دادا کے جاہلیت میں ہمارے سردار تھے
 اور وہ اسلام کی طرف ہمارے رامبرہن پھر جب اشج آپہونچے چاہا کہ ایک کنارے
 بیٹھ جائیں بس نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سیدھے بیٹھ گئے فرمایا اشج اوج
 آجاؤ اور یہ پہلا دن تھا جو اونکا نام اشج رکھا گیا جب تجھے میں نکا دو دھم
 چھڑا گیا تھا اونہیں دونوں ایک گدھے نے اونکولت مار دی تھی اوسکا نشان
 اونکے مونہہ میں چاند کی طرح موجود تھا آپ نے اونکو اپنے پہلو میں بٹھایا اور اون
 پر بہت لطف فرمایا اور اونکی بزرگی اون لوگوں پر ثابت کی پھر لوگ نبی صلی اللہ
 علیہ وآلہ وسلم کی طرف متوجہ ہو کر پوچھنے لگے آپ اونکو بتانے لگے یہاں تک
 کہ جب بات تمام ہو گئی آپ نے پوچھا تم لوگوں کے پاس تمہاری راد کا تو شہ
 کچھ ہے عرض کیا ہاں پھر جلدی جلدی سب کے سب اپنے اپنے اسباب
 کی طرف اٹھے اور خرمونکے کیسے اپنے ہاتھوں میں لیکر آئے پھر چڑے کو
 خوان پر آیکے سامنے رکھا گیا اور آپ کے سامنے کھجور کی ایک چھتری تھی دو ہاتھ
 دو ہاتھ سے پھوٹی اور ایک ہاتھ سے بڑی اس چھتری پر آپ ٹیک لگا با کرتے
 کم ہوتا تھا کہ آپ اوسے جدا فرماتے آپ نے اوس لکڑی سے خرمے کے
 ایک ٹکڑے کی طرف اشارہ فرمایا کہ اوسکو تلوگ قعضوض کہتے ہو عرض کیا ہاں فرمایا
 اوسکو صوفان بھی بولتے ہو عرض کیا ہاں فرمایا اسکا نام پر فی رکھتے ہو عرض کیا ہاں
 فرمایا تمہارے خرمون میں یہ سب سے بہتر اور تمہارے لئے فائدہ مند ہے
 اور قبیلہ کے بعض بوڑھوں نے بیان کیا کہ ہمیں بڑی برکت ہے اور مجاہدوں کے
 یہاں اسکا یہ اوار خوب تھا اسکیو ہلوگ اونٹوں اور گدھوں کو کہا جا کرتے جب
 ہلوگ اس سفارت سے گھر پر آئے ہلوگوں کی رعیت اوسکی طرف متوجہ
 اور جنت اوسکی درخت لگائی یہاں تک کہ اوسین خوب پھل کھا اور ہلوگوں اوسیں برکت دیکھی

(۳۰۰۱۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جب تک تبارک لذی اور الم تیز السجدہ
بڑھنے لیتے تب تک آپ سوتے ہی نہ تھے۔

(۳۰۰۱۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب کوئی تم میں سے اپنے
بچاؤن پر جائے تو اپنے تمہت کی چون کھو کر اپنا بچاؤن اوس سے جھاڑ لے کیونکہ
اوس سے کیا خبر ہے کہ اوس کے جانے پر اوس کے بستر پر کیا چیز آگئی ہے اور اپنی اپنی
کروٹ پر سورے اور یہ کہہ لے بِاسْمِكَ وَضَعْتَ جَنْبِي فَإِنْ أَحْتَبَسْتُ نَفْسِي فَأَنْ
رَحْمَهَا وَإِنْ أُرْسَلَتْهَا فَأَحْفَظْهَا بِمَا أَحْفَظُ بِهِ الصَّالِحِينَ ۵ یا فرمایا عِبَادِ
الصَّالِحِينَ ۵۔

(۳۰۰۱۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جب اپنے بستر پر جاتے اپنے دل سے
کروٹ لیٹ کر فرماتے اللَّهُمَّ وَجْهِي إِلَيْكَ وَوَجْهِي إِلَيْكَ وَأَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ
وَأَجَابَكَ ظَهْرِي إِلَيْكَ وَرَغْبَةُ الْيَاكُ لَمْ يَجْأَوْلْهَا مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ أَمَنْتُ
بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَنَبِيِّكَ الَّذِي أُرْسَلْتَ آپ نے فرمایا ان کلمات کو رات کی وقت
کوئی کہہ لے اور مر جائے تو اوسکی موت فطرت پر ہوگی۔

(۳۰۰۱۷) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جب اپنے بستر پر جاتے یہ فرماتے
اللَّهُمَّ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَرَبِّ كُلِّ شَيْءٍ فَالِقَ الْغَابِ وَالنُّوِي مَنْزِلِ التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ
وَالْقُرْآنِ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ ذِي شَرٍّ أَنْتَ أَحَدٌ بِنَا صِدْقِهِ أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ
شَيْءٌ وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ
الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ اقْضُ عَنِّي الدَّيْنَ وَأَغْنِنِي مِنَ الْفَقْرِ ۵

۵۷۵

سولنے کی وقت دعائی فضیلت

(۳۰۰۱۸) حدیث باب عتہ

(۳۰۰۱۹) جاہل نے فرمایا جب آدمی اپنے گھر میں آتا ہے یا بستر پر جاتا ہے ایک
فرشتہ اور ایک شیطان اوسکی طرف لپکتے ہیں فرشتہ کہتا ہے نیکی پر حالت
آگرا اور شیطان کہتا ہے بُرائی پر غامتہ کرنا اگر اوس نے خدا کی تعریف کی اور اوسکا

ذکر کیا تب تو شیطان کو فرشتے نے بہکا دیا اور رات کو سوتے میں اسکی نگہبانی کرتا رہا
 پھر جب وہ بیدار ہوا ایک فرشتہ اور ایک شیطان اسکی طرف لپکتے ہیں اور وہی بات
 کہتے ہیں اگر اوسنے خدا کا ذکر کیا اور یوں دعا کی **الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي رَدَّ إِلَىٰ نَفْسِي
 بَعْدَ مَوْتِي وَلَمْ يَمَيِّتْهَا فِي مَنَامِي مَا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي يَمْسُكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
 أَنْ تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ بَعْدِهِ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا الْحَمْدُ لِلَّهِ
 الَّذِي يَمْسُكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ إِلَىٰ رُؤُوفٍ الرَّحِيمِ**
 تب اگر مر گیا شہید مر گیا اور اگر اٹھا اور نماز پڑھی نہایت بزرگیوں میں نماز پڑھی
 ہفتہ پر گال رکھنا

۵۷۱

(۳۰۰۲۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جب ارادہ کرتے کہ اب سورہ میں اپنا ہاتھ
 مانتے رخسار کے نیچے رکھتے اور فرماتے **اللَّهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ**
 (۳۰۰۲۱) حدیث بالا۔

۵۷۲

(۳۰۰۲۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا مسلمان آدمی دو باتوں کا قید رکھے
 تو ضرور بہشت میں داخل ہو باتیں تو دو دنوں آسان ہیں مگر کرنے والے دو دنوں کے تھوڑے
 لوگ ہیں لوگوں نے عرض کیا یا رسول اللہ وہ دو دنوں کیا باتیں ہیں فرمایا یہ نماز کے
 بعد اس بار اللہ اکبر اور دس بار الحمد للہ اور دس بار سبحان اللہ کوئی شخص کہہ
 لیا کرے تو زبان پر تویہ ڈیر تھی سوہن مگر ترازو میں پندرہ سوہن راوی کہتا ہے
 میں نے دیکھا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ان کلمات کو ہاتھ سے گن کرتے تھے اور
 جب اپنے بستر پر آوے اسوقت سبحان اللہ اور الحمد للہ اور اللہ اکبر کہہ لے
 یہ سو بار تھا ہاں پر سوہن اور ترازو میں ایک ہزار میں پھر ہر گون میں سے رات دن میں
 بچیس سو برائی کون کرتا ہو گا لوگوں نے عرض کیا یا رسول اللہ آدمی ان دو باتوں کا
 قید کیوں نہ رکھے گا فرمایا اسکی نماز میں شیطان آویگا اور اسکو فلان فلانی
 ضرورت یا دولا دیگا بس یہ اوسے یاد نہ آئے گا۔

بستر سے اٹھے اور جا کر پھر اوی تو اسکو چھاڑ کر

۵۷۸

(۳۰۲۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب کوئی اپنے بستر سے اٹھے تو اپنا تہمت اندر سے لیکر اس سے اپنا بستر چھاڑ لے اور بسم اللہ کہہ کر کیونکہ اس سے معلوم نہیں اوسکے جانیکے بعد اوسکے بستر پر کیا چیز آگئی ہے پھر جب لیٹنا چاہی تو اپنے ہاتھ کوٹ پر لیٹے اور یہ کہے۔ سُبْحَانَكَ رَبِّيَ بَكَ وَضَعْتَ جَنَّتِي وَبِكَ أَرْفَعَهُ إِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَأَغْفِرْ لَهَا وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَأَحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ۔

۵۷۹

راٹکو بیدار ہو تو کہیے

(۳۰۲۴) ربیعہ بن کعب نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے دروازے کے قریب ہی میں راٹکو سوتا اور آپکے وضو کو پانی لا دیا کرتا رات کی وقت آپکی آواز سمع اللہ لمن حمداً کہنے کی اور آواز الحمد للہ رب العالمین کہنے کی سنا کرتا۔

۵۸۰

کسی کے ہاتھ میں چکنائی لگی ہو اور اوی طرح سو رہی

(۳۰۲۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کسی کو ہاتھ میں چکنائی لگی ہو اور وہ بغیر دھو کر دھو کر سو رہے اس میں کوئی آفت اوسکو پہنچے تو اپنی ہی کو ملامت کرے۔

۵۸۱

چراغ بجھانا

(۳۰۲۶) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا دروازوں کو بند کر دیا کرو اور مشکیزوں کے دہانے باندھ دیا کرو اور ظالی برتنوں کو اوندھا دیا کرو اور بھری برتنوں کو ڈھانک دیا کرو اور چراغ بجھا دیا کرو اسوا سے کہ شیطان بند مکان کو نہیں کھولتا اور بندھے ہوئے مشک اور چھپایا ہوا برتن نہیں کھولتا اور چوہے (وغیرہ شرچہ شرعات الارض) کھر جلا دیتے ہیں جس سے لوگوں کا نقصان ہوتا ہے۔

(۳۰۲۷) ابن عباس نے فرمایا ایک چوہا آیا اور چراغ کی بتی کھینچ لے چلا لوٹا اوسکو دتکار نے لگی تب نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اوسکو چھوڑ دے

وہ چوہا بتی کو لئے ہوئے جس چادر پر آپ بیٹھے تھے لاکراوسی پر ڈال دیا وہ چادر
ایک درم کے حلقے کے برابر جل گئی تب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
نے فرمایا جب تلوگ سوئے لگو تو اپنے چراغوں کو بجھا دیا کرو نہیں تو شیطان
ایسے جانور و نکو ایسی ایسی بات سکھا دیا کر گیا بس یہ نہیں جلا ہی ڈالینگے۔

(۳۰۲۸) ابو سعید نے فرمایا ایک رات نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی نین ٹوٹی کیا دیکھتے
ہیں کہ ایک چوہا بتی لئے چھت پر چڑھا جاتا ہے کہ لوگوں کا گھر جلا دے تب نبی صلی اللہ
علیہ وآلہ وسلم نے اسکو لعنت کی اور احرام باندھی ہوئے آدمی کو بھی اسکا مار ڈالنا حلال فرما
سویکے وقت گھر میں آگ نہ بنی اور۔

۵۸۲

(۳۰۲۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا سونے کے وقت اپنے گھر و زمین
آگ رہنے نہ دیا کرو۔

(۳۰۳۰) عمر رضی اللہ عنہ نے فرمایا آگ دشمن ہے اس سے بچتے رہو ابن عمر کا
معمول تھا کہ گھر کی آگ ڈھونڈ ڈھونڈ کر سونے کے پہلے بجھا دیا کرتے۔
(۳۰۳۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اپنی گھر و زمین آگ مت چھوڑو
کرو اسلئے کہ آگ دشمن ہے۔

(۳۰۳۲) ابو موسیٰ نے فرمایا ایک رات مدینے میں ایک مکان اس مکان
والوں کے ہوتے ہوئے جل گیا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حضور میں اسکا
بیان ہوا تو آپ نے فرمایا آگ پہلو گونگی دشمن ہے جب سونے لگو تو اسکو بجھا دیا
برستے پانی کی برکت لینا۔

۵۸۳

(۳۰۳۳) ابن عباس کا معمول تھا جب پانی برسنے لگتا فرماتے او چھو کری
میرا زین نکال لا میرے کپڑے نکال لا اور کہتے وانزلنا من السماء ماء مبارکاً
گھر میں چابک لٹکا دینا

۵۸۴

(۳۰۳۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے گھر میں چابک لٹکا دینے کا حکم دیا،
 تاکہ دروازہ بند کر دینا

۵۸۵

(۳۰۳۵) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا رات کے سنانے
 میں باتیں نہ کیا کرو تمہیں خبر نہیں اللہ اپنی کس مخلوق کو (اوس وقت) پھیلاتا ہے
 دروازوں کو بند کر دیا کرو اور مشکونے کے دہانے باندھ دیا کرو اور خالی برتنوں کو اوندھا دیا کرو
 اور چراغوں کو بجھا دیا کرو۔

۵۸۶

سانکی آگ کی جوش کی وقت بچو نہ مٹنا۔

(۳۰۳۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب تک عشا کی تاریکی یا جوش
 جاتا رہے اوس وقت اپنے اوکو نکوروس کے رہو وہ شیاطین کے حرکت کا وقت ہے۔
 جانوروں کو کبیرہ دینا

۵۸۷

(۳۰۳۷) جانوروں کو کبیرہ یا ابن عمر کر دہ جانتے تھے۔

۵۸۸

تکے کا بھونکنا اور گدے کا چلاتا

(۳۰۳۸) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب رات سنانی ہو جاوے
 اوس وقت کم نکلا کرو اللہ کے جانور میں اوس وقت اونکو پھیلاتا ہے اگر کوئی شخص کتا
 بھونکنے کی آواز یا گدے کے چلانے کی آواز سنے تو شیطان سے بچنے کو خدا سے
 پناہ طلب کرے کیونکہ یہ جانور وہ چیزیں دیکھتے ہیں جو تم نہیں دیکھتے۔

(۳۰۳۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب تلوگ رانگو کتے کے
 بھونکنے کی آواز یا گدے کے چلانے کی آواز سنا کرو تو خدا سے پناہ طلب کرو کیونکہ
 یہ جانور وہ چیزیں دیکھتے ہیں جو تم نہیں دیکھتے اور خدا کا نام لیکر دروازوں کو بند
 کر دیا کرو کیونکہ جو دروازہ خدا کا نام لیکر بند کیا جاتا ہے شیطان اوسے نہیں کھولتا اور
 مشکونوں کو ڈانک دیا کرو اور مشکونے کے دہانے باندھ دیا کرو اور خالی برتنوں کو اوندھا دیا کرو۔

(۳۰۴۰) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا رات کے سنانے
 کے بعد کم نکلا کرو کیونکہ خدا کی ایک مخلوق ہے جنکو (اوس وقت) پھیلاتا ہے تو جب

کہتے ہیں جھوٹے یا گدھے کے چلانے کی آواز سنو تو شیطان سے بچنے کو خدا سے
پناہ طلب کرو۔

جب مرغ کی آواز سنے

۵۸۹

(۳۰۲۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جب رات کی وقت
مرغ کی آواز سنو تو اوسے کسی فرشتے کو دیکھا ہے اوس وقت خدا سے خدا کا فضل
مانگو اور جب رات کو گدھے کی آواز سنو تو اوسے شیطان کو دیکھا ہے اہ سو وقت
شیطان سے بچنے کو خدا سے پناہ طلب کرو۔

پسو گو بڑا نہ کہے

۵۹۰

(۳۰۲۲) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس ایک شخص نے پسو لوعنت
کی آپ سے فرمایا اوسکو لعنت نکرا اے نماز کے لئے ایک پیچیر کو جگا دیا تمہارا۔
قیلولہ

۵۹۱

(۳۰۲۳) قریشی لوگ اکثر عبداللہ بن مسعود کے دروازے پر بیٹھا کرتے تھے
جب سایہ جھک جاتا فہ مارتے بس اوتھتے جاؤ کیونکہ اب جو کچھ باقی ہے سو
شیطان کا ہے پھر جس شخص پر گذر ہوتا اسکو اوتھا دیتے اسی درمیان میں کہ وہ اوتھا
رہے تھے کہینے کہا یہی بنی محاس کامولی ہے شعر کیا کرتا ہے اوتھوں نے
اوسے بلا کر پوچھا تو نے کیا کہا ہے اوسنے کہا ودع سلیمی ان تمہوزت غا دیا:
لغی اللیب والاسلام للعننا ہیا: اوتھوں نے فرمایا اب بس تو نے
سچ کہا تو نے سچ کہا۔

(۳۰۲۴) سایب بن زید نے کہا دو پہر یا قریب دو پہر حضرت عمر مملوکہ ان کے
پاس ہو کر گذرتے اور فرماتے اوتھتے جاؤ اور لیٹ رہو کیونکہ اب جو باقی ہے وہ
شیطان کا ہے۔

(۳۰۲۵) انس نے کہا صحابہ جمعہ پڑھتے اوسکے بعد قیلولہ کرتے۔

(۳۰۲۶) انس نے کہا جب شراب حرام ہوتی ہے اوس وقت فرمایا اور انگور

(۳۰۵۵) ام جہا جرنے کہا روم کی چھو کر یوں میں میں بھی قید ہو کر آئی عثمان رضی اللہ عنہ نے اہلو کو پیر اسلام پیش کیا مگر میں اور ایک عورت اور دو کے سوا کوئی بھی مسلمان نہ ہوئی تب عثمان رضی اللہ عنہ نے فرمایا جاؤ ان دونوں کا خفض کرو اور دو تو نکو پاک کرو۔
ختمہ میں دعوت

۵۹۶

(۳۰۵۱) سالم نے کہا ابن عمر نے میرا ختمہ کرایا میں تھا اور نعیم تھا اہلو کون کی اس تقریب میں ایک دنبہ بچ ہوا اور ہم اپنے آپ کو دیکھتے تھے کہ اہلو گ لڑ کو نہیں اس بات پر خوش ہوتے ہیں کہ ہمارے ختمہ میں ایک دنبہ بچ ہوا۔
ختمہ میں تماشا

۵۹۷

(۳۰۵۲) ام علقمہ نے کہا حضرت عائشہ کی کھتیجیاں تھیں کسی نے حضرت عائشہ سے کہا آپ کسی تماشا کریں والے کو نہیں بلو الیتین فرمایا ان بس او انھوں نے عدی کو بلو بھی اور وہ اون لڑکیوں کے پاس آگیا پھر حضرت عائشہ مکان میں اسی طرف سے گذریں او سکو دیکھا کہ گارنا ہے اور خوشی کے مارے اپنا سر ہار رہا ہے اور اس کے سر میں بال بہت تھے یہ کیفیت دیکھ کر حضرت عائشہ نے فرمایا ان یہ تو شیطان ہے اسکو نکال دو اسکو نکال دو۔
ذمی دعوت کری۔

۵۹۸

(۳۰۵۳) حضرت عمر کے آزاد غلام اسلم نے کہا جب حضرت عمر کے ساتھ اہلو گ ملک شام میں آئے ایک دہقانی اون کے پاس آیا اور کہنے لگا یا امیر المؤمنین میں نے آپ کے لئے کچھ کھانا تیار کیا ہے میں چاہتا ہوں کہ آپ چند ممتاز شخصوں کو ساتھ میرے یہاں تشریف لائے اس میں میرے کام کی مضبوطی ہے اور میری عزت کا باعث ہے حضرت عمر نے فرمایا اہلو گ تمہارے ان عبادت خانوں میں ان تصویروں کے ہوتے ہوئے جو ان میں ہیں نہیں آسکتے۔
لونڈون کا ختمہ

۵۹۹

حدیث ۳۰۵۰ باب ۵۹۵

(۳۰۵۴) ابو ہریرہ نے فرمایا ابراہیم صلی اللہ علیہ وسلم نے ایک سو بیس برس کی عمر میں اپنا ختنہ کیا اور اسکے بعد اسی برس اور زندہ رہے سعید زادی نے کہا حضرت ابراہیم ہی نے پہلے پہلے ختنہ کیا ہے اور پہلے پہلے ہمانداری کی ہے اور پہلے پہلے مونچھ کتری ہے اور پہلے پہلے ناخن لیا ہے اور پہلے پہلے انہیں کابل پکا ہے اور سوت کہنے لگے اے پروردگار یہہ کیا فرمایا یہہ وقار ہے عرض کیا اے پروردگار میرا وقار اور زیادہ کر۔

(۳۰۵۵) حسن نے کہا تملوگ اس شخص پر کچھ تعجب نہیں کرتے یعنی مالک ابن منذر پر کسکروالون میں چند بوڑھے آدمی اسلام لائے اسنے اون لوگوں کی تفتیش کر کے حکم دیا بسا دھنوں کا ختنہ کر دیا گیا اور یہ جاڑے کا دن آخر ہمارے پاس خبر پہنچی ہے کہ بعض اون میں سے مر گئے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ روم والے اور حبش والے اسلام لاتے گئے مگر اونکی کچھ تفتیش نہیں ہوئی۔

(۳۰۵۶) ابن شہاب نے کہا معمول تھا کہ جب کوئی اسلام لاتا اگرچہ بڑا بھی ہوتا اسکے ختنہ کا حکم دیا جاتا۔

(۳۰۵۷) بلال بن کعب نے کہا میں اور ابراہیم بن ادہم اور عبدالعزیز ابن قید اور موسیٰ بن یسار چاروں آدمی ایک گاؤں میں یحییٰ بن حسان کی ملاقات کو گئے وہ لوگوں کے لئے کچھ کھانا لائے موسیٰ روزہ دار تھے وہ متال ہوئے تب یحییٰ نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے صحابی قبیلہ نبی کفانہ کے ایک بزرگ نے جنگی کنیت ابو قریصافہ تھی چالیس برس تک اس مسجد میں چلو گونکی امامت کی ہے وہ ایک دن روزہ رکھتے ایک دن افطار کرتے اتفاقاً میرے باپ کے یہاں ایک لڑکا پیدا ہوا میرے باپ نے ابو قریصافہ کی اور سعید بن دعوت کی جو اونکے

ملک عراق میں
ایک گاؤں کا نام
ہے

روزہ رکنے کا دن تھا آخر اونھوں نے روزہ کھول دیا اسکے بعد براہیم اٹھے اور اپنے
 کمل سے اوس جگہ کو جھاڑ دیا اور موسیٰ نے روزہ کھول دیا ابو عبد اللہ بخاری نے
 کہا ابو قریصافہ صحابی کا نام جنڈہ بن خیشہ ہے۔
 رکو نکو خنیٹ کرنا

۶۰۲

(۳۰۵۸) انس نے فرمایا عبد اللہ ابن ابی طلحہ حسن پیدا ہوئے میں اول کو
 نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے پاس لیکیا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اور وقت
 ایک کمل اوڑھے ہوئے اپنے اونٹ کو دوادلو اسے تھے مجھے پوچھا تیرس پاس
 کچھ خرمنے میں نے عرض کیا ہاں پھر میں نے چند خرمنے آپ کو دئے آپ نے اونہیں
 چبایا پھر ارد کے کامو نہہ چیر کر خرمنو نکو اوسے چوسایا لڑکا اپنا ہونٹھہ چاٹنے لگا تب
 نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا یہ خرمنو نکلی طرف انصار کی رغبت ہے
 اور لڑکے کا نام عبد اللہ رکھ دیا۔

ولادت کی دعوت میں دعا

۶۰۳

(۳۰۵۹) معاویہ بن قرہ نے کہا جب میرا لڑکا ایسا پیدا ہوا میں نے نبی صلی اللہ
 علیہ وآلہ وسلم کے چند صحابیوں کی دعوت کی اور انکو کھانا کھلایا بعد اسکے اول کو لڑکے
 نے دعا کی یعنی کہا تم لوگ تو دعا کر چکے خدا تمہاری دعاؤں میں برکت دے اب
 میں دعا کرتا ہوں تم لوگ آمین کہو معاویہ کا بیان ہے کہ میں نے اوسکے لئے
 بہت دعائیں کیں دین کی اور عقل کی اور بہت کچھ آخر اوس دن کی دعا کے آثار
 اب میں پاتا بھی ہوں۔

جب بچہ پورا پیدا ہو خدا کا شکر کرے اسکی پرناہ نکرے کہ بیٹا ہی یا بیٹی

۶۰۴

(۳۰۶۰) حضرت عائشہ کا معمول تھا جب اوسکے کو کو ہمیں کوئی بچہ پیدا ہوتا ہے
 نہیں پوچھتی تھیں کہ لڑکا پیدا ہوا یا لڑکی یہی پوچھتی تھیں کہ صحیح سالم پیدا ہوا جب
 کہیں کہہ دیا کہ ہاں تب کہتیں۔ الحمد للہ رب العالمین (خدا ساری جہاں پر بکاشگر ہے)
 اسنو لینا باگی لینا

۶۰۵

عربین میں جب بچہ پیدا ہوتا
 ہے تو پورا لڑکے کا اور
 لڑکی کی کا نام لگاتے ہیں
 خدا کی تعریف ہے
 کہ جہاں تک بچہ درگاہ
 ہے

(۳۰۶۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا پانچ باتیں فطرت کی ہیں
موجھ کتر ناخن لینا شرمگاہ کا بال کرنا موندنا بغل کے بال اوکھاڑنا۔
ان کاموں کا وقت

۴۰۶

(۳۰۶۲) نافع نے کہا ابن عمر پندرہ رات پر اپنے ناخن لیا کرتے اور ہمیں ہمیں
سترہ لیتے۔

۴۰۷

قمار

(۳۰۶۳) ابن عباس نے کہا کہدیا جاتا تھا کہ اونٹ کی بازی والے کہاں ہیں
بس دنل آدمی اٹھے ہو کر اونٹ کے دس دودھ چھوڑنے والے بچوں کے
بدلے ایک جوان اونٹ خرید کرتے پھر تیر پھینک کر قرعہ ڈالتے بس نو شخصوں کا
ہو کر ایک آدمی کا ہو جاتا اور نو آدمی کو ایک ایک دودھ چھوڑنے والا بچہ تاوان
دیتا ہوتا ہی جو اسے۔

(۳۰۶۴) ابن عمر نے کہا میسر جو اسے۔

۴۰۸

مخ کا جوا

(۳۰۶۵) حضرت عمر کے زمانہ خلافت میں دو شخصوں نے دو مخ پر جو سے کی
بازی لگائی عمر نے مخ کے قتل کرنیکا حکم دیا تب اون سے ایک انصاری فری
کہا آپ ایسی گروہ کو قتل کرتے ہیں جو تسبیح کرتی ہے تب حضرت عمر نے اوس
چھوڑ دیا۔

گوئی اپنی ساتھی سے کہے آؤ جوا کھیلنے جائیں

۴۰۹

(۳۰۶۶) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تم میں جو کوئی اپنی قسم میں
یوں کہے لات وغیرہ کی قسم اوسے چاہئے کہ یہ کہے کہ لا الہ الا اللہ۔
اور اگر کوئی اپنے ساتھی سے کہے آؤ ہم تم جوا کھیلنے جائیں اوسکو چاہئے کہ صدقہ کرے
کہوتی کی بازی

۴۱۰

(۳۰۶۷) ابو ہریرہ سے ایک شخص نے کہا کہ ہلوگ دو کبوتروں میں

یعنی نو آدمی کا نام
تالی جاتا اور ایک آدمی
کے نام وہ اونٹ
نکلتا وہ شخص
کو لے لیتا اور ایک
شخص اوس
دیکھو اوس کی قیمت
دیکھو اور اوس
بھی دیکھو اور ایک
تاوان ہوتا اور ایک
شخص بچہ کو بے
اونٹ لیتا۔
لات غیری کی
زبان کی لغزش اور
شک کرنا ایسے
تھے ایسے لوگ
کفار تھے اور جو اپنے
قریبیاں اور جو اپنے
میں معافی معافی تھا
اور ان بھی ایک
تھا۔ اسے اوس کا
تھا۔ اسے اوس کا
تھا۔ اسے اوس کا
تھا۔ اسے اوس کا
تھا۔ اسے اوس کا
تھا۔ اسے اوس کا
تھا۔ اسے اوس کا

کھینتا ہے اور سکی مثال ایسی ہے جیسے سور کے خون میں ہاتھ ڈبو تا ہے اور جو شخص اس کے پاس بیٹھا ہو اسکو دیکھتا ہے اور سکی مثال ایسی ہے جیسے سور کا گوشت دیکھ رہا ہے۔

(۳۰۸۱) عبداللہ بن عمرو بن عاص نے فرمایا غصین سے جو کھینے والا آدمی جیسے سور کا گوشت کھانے والا اور بغیر جو سے کھینے والا سور کے خون میں اپنا ہاتھ ڈبوتے والا۔

ایماندار آدمی ایک سو زخ سے دو بار نہیں کاٹا جاتا

۴۱۴

(۳۰۸۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ایماندار آدمی ایک سو زخ سے دو بار نہیں کاٹا جاتا۔

راکتو تیر اندازی

۴۱۵

(۳۰۸۳) بنی صلعم نے فرمایا جو شخص راکتو تیر اندازی کرے وہ میری جماعت سے نہیں ہے۔
(۳۰۸۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جو شخص ہم پر ہتھیار اٹھاوے وہ میری جماعت سے نہیں ہے۔

(۳۰۸۵) حدیث مذکورہ بالا۔

و خدا جب کسی سز میں پر کسی بندہ کو پڑنا چاہتا ہے وہ ان اسکو کوئی ضرورت پیدا کر دیتا ہے

۴۱۸

(۳۰۸۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا خدا جب کسی بندہ کو کسی خاص سز میں پڑنا چاہتا ہے وہ ان اس بندہ کے لئے کوئی ضرورت پیدا کر دیتا ہے۔
کپڑے میں ناک شکننا

۴۱۹

(۳۰۸۷) ابو ہریرہ نے اپنے کپڑے میں ناک شکنی بھر کہا سچ (یعنی وہ وہاں ابو ہریرہ کتان میں ناک شکننا ہے میں اپنے کو دیکھ چکا ہوں حضرت عائشہ کے حجرے اور ممبر کے درمیان گرا پڑا رہتا تھا لوگ کہتے تھے دیوانہ ہو گیا ہے اور میری یہ نوبت فقط بھوک سے تھی۔

وسواس

۴۲۰

یہ حدیث صحیح ہے
عبداللہ بن عمرو
نہیں کرتا ہے

سلطان جماعت

(۳۰۸۸) صحابہ نے عرض کیا یا رسول ہملو گون کے دلون میں کچھ ایسی باتیں آتے ہیں کہ ساری دنیا بھی ہملو ملجاوے تب بھی اوسکا زبان پر لانا ہمیں منظور نہیں فرمایا کیا یہ بات تمہیں حاصل ہوئی عرض کیا مان فرمایا یہ صیرح ایمان ہے۔

(۳۰۸۹) شہر بن حوشب نے کہا میں اپنے مامون کے ساتھ حضرت عائشہ کے یہاں گیا اور عرض کیا ہم میں کیسے سینہ بین بعض ایسی بات کھٹکتی ہے کہ اوسکے بولنے میں آخرت رخصت ہوتی ہے اور ظاہر ہو تو لوگ مار ہی ڈالیں حضرت عائشہ نے تین بار اللہ اکبر کہا پھر فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے بھی یہ بات پوچھی گئی تھی آپ نے فرمایا جب کسی کو یہ امر پیش آوے تو تین بار اللہ اکبر کہے یہ بات مومن کے سوا کسی کو محسوس نہیں ہوتی (۳۰۹۰) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا لوگ برابر ناشدہ باتوں کو پوچھا کریں گے یہاں تک کہ یہ بھی کہیں گے ہر چیز کا پیدا کرنا تو اللہ ہے بھلا اللہ کو کسے پیدا کیا۔

۶۲۱

گمان

(۳۰۹۱) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا گمان سے بچتے رہنا جھوٹھی سے جھوٹی بات گمان کرنا ہے اور عیب جوئی نکر و اور ہسکا نکر و اور آپس میں ایک دوسرے کی طرف سے منہ موڑ کر پیٹھ پھیر کر مانکر و اور حسد نکر و اور بغض نہ رکھو اور اے بندگان خدا بھائی بھائی بن جاؤ۔ (۳۰۹۲) انس نے کہا اپنی بیویوں میں کسی بیوی کے ساتھ نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم تھے اتنے میں ایک شخص اودہر سے گذرا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اوسکو بلا کر فرمایا میان فلا نے یہ عورت میری فلا می بیوی ہے اوس شخص نے عرض کیا میں کسے ساتھ گمان کرتا آپکے ساتھ تو میں گمان کبھی نکرتا اپنے فرمایا آدمی کے بدن میں خون کی طرح شیطان دوڑا پھرتا ہے۔

(۳۰۹۳) عبداللہ نے فرمایا جسکا مال چوری جاتا ہے برابر گمان کرتا رہتا ہے یہاں تک کہ چور سے بھی بڑھ جاتا ہے۔

(۳۰۹۴) امیر معاویہ نے حضرت ابو درد اسحاقی کو لکھ بھجیا کہ دمشق کے بد معاشوں کی فہرست میرے پاس بھیج دیجئے حضرت ابو درد اسحاقی نے فرمایا مجھے اور دمشق کے بد معاشوں سے کیا واسطہ میں کہاں سے اونہیں پہچانوں گا حضرت ابو درد اسحاقی نے بلال نے کہا میں اونکی فہرست لکھتا ہوں پھر اونہوں نے لکھ ڈالا ابو درد اسحاقی نے کہا تو نے کہاں سے معلوم کیا تو بھی اونہیں بد معاشوں میں ہے اسی سے تو اونکو پہچانتا ہے اپنے ہی سے شروع کر اور حضرت ابو درد اسحاقی نے وہ اسم نویسی نہیں بھیجی۔

لوند کی یا بی بی شوہر کا بال مونڈے

۴۲۲

(۳۰۹۵) عبید الغزیز نے کہا عبید اللہ بن عمر کے یہاں میں گیا دیکھا کہ لوند کی بال مونڈ رہی ہے اور کہا کہ نورہ سے چمڑا پتلا ہو جاتا ہے۔

بغل کا بال اوکھاڑنا

۴۲۳

(۳۰۹۶) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا پانچ باتیں فطرت کی ہیں خستہ کرنا استرہ لینا بغل کے بال اوکھاڑنا اور مونچھ کترنا اور ناخن لینا۔

(۳۰۹۷) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا پانچ باتیں فطرت کی ہیں خستہ کرنا اور زیر ناف مونڈنا اور ناخن لینا اور بغل کے بال اوکھاڑنا اور مونچھ کترنا۔

(۳۰۹۸) ایضاً۔

اچھا برتاؤ

۴۲۴

(۳۰۹۹) ابو طفیل نے کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو میں نے دیکھا آپ حجرات میں گوشت تقسیم فرماتے تھے اور میں اون دنوں لڑکا تھا اونٹ کا ایک ٹکڑا اونٹھائے ہوئے تھا اتنے میں آپ کے پاس ایک عورت

۹۵
مثل شہد ہے
مال دار کا مال کا
ساتھ اسکی بیان
جائے ۱۲

۹۷
بال اوکھاڑنا
سخت وغیرہ
۱۲

آئی آپ نے اوسکے لئے اپنی چادر بچھا دی میں نے پوچھا یہ کون عورت ہے
کسی نے بتایا کہ یہ آپکی ماں ہے اس نے آپکو دودھ پلایا ہے۔

۴۲۵

جان پہچان

(۴۰۰۳) مغیرہ بن شعبہ نے کہا ایک شخص بولا خدا امیر کا بھلا کرے آپکا
کان جن لوگوں کو پہچان تا ہے اونھیں کو اجازت میں تہیج دیتا ہے جو اب دیا
خدا اوسے معذور رکھے جان پہچان سے تو کٹا ہے کتے اور بگڑے ہوئے
اونٹ کے پاس فائدہ ہوتا ہے۔

۴۲۶

لڑکوں کا لیند کھیلنا

(۴۰۰۱) ابراہیم نے کہا ہمارے لوگ ہلو گونکو کتے کے سوا سب کھیل
کھیلنے کی اجازت دیتے تھے بخاری نے کہا یعنی لڑکوں کو۔
(۴۰۰۲) ابو عقبہ نے کہا ایک دفعہ میں ابن عمر کے ساتھ ایک رستے
پر گذرا حبشوں کی ایک جماعت پر اونکا گذر ہوا دیکھا کہ وہ لوگ کھیل رہے ہیں
ابن عمر نے دودرم نکال کر اونکو دئے۔

۴۲۷

(۴۰۰۳) عائشہ نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میرے ساتھ والی
چھوٹی چھوٹی لڑکیوں کو میرے پاس بھیج دیتے تھے وہ گڑیاں کھیلتی تھیں۔
گبوتر فوج کرنا

۴۲۸

(۴۰۰۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ایک شخص کو دیکھا ایک گبوتر
کا پیچھا کرتا ہے فرمایا ایک شیطان ایک شیطانہ کے پیچھے لگا ہوا ہے۔
(۴۰۰۵) حضرت عثمان ہر جمعہ کے خطبے میں کتابارنیکا اور گبوتر فوج
کرنے کا حکم دیتے تھے۔

۴۲۹

(۴۰۰۶) ایضا تہقا و متاسیر
اگر کسی سے ضرورت ہو تو ضرورت والی کو جانا مناسب ہے

۴۳۰

(۴۰۰۷) ایک دن حضرت عمر نے زید بن ثابت کے یہاں آکر اندرائیکی

اجازت چاہی اور بخون نے اجازت دی اور وقت اونکا سر ایک لونڈی کو
 ہاتھ میں تھا وہ کنگھی کر رہی تھی زید نے اپنا سر ہٹا لیا حضرت عمر نے فرمایا
 اسے کنگھی کرنے دے پھر زید نے کہا یا امیر المؤمنین مجھے بلا بھیجتے ہیں
 حاضر ہوتا فرمایا ضرورت ہمیں کو تھی۔

لوگوں کے ساتھ ہو اور اس وقت کھنکھارے

۶۲۹

(۲۰۰۸) ابو ہریرہ نے فرمایا جب لوگوں کے روبرو کھنکھار پھکے تو اپنی دونوں
 ہاتھ کا اوٹ کر لے حسین اسکا کھنکھار زمین ہی پر پڑے اور جب روزہ رکھی
 تو تیل لگائے تاکہ روزہ کا اثر ظاہر نہ ہو۔

۱۲ منہین جب جماعت سے باتیں کریں تو ایک کی جانب متوجہ نہ ہو۔

۶۳۰

(۲۰۰۹) انکے لوگ اس بات کو پسند کرتے تھے کہ جب کوئی باتیں کرے تو
 ایک شخص کی طرف متوجہ نہ ہو بلکہ خطاب عام رکھے۔

فضول نظر

۶۳۱

(۲۰۱۰) عبداللہ ایک شخص کی عیادت کو چلے اونکے ساتھ ایک آدمی
 اونکے مصاحبوں میں سے بھی تھا جب مکان کے اندر گئے اونکے ساتھی
 ادھر ادھر دیکھنے لگے عبداللہ نے فرمایا قسم خدا کی اگر میں تیری دونوں
 آنکھیں پھوڑ ڈالتا تو تیرے لئے بہت بہتر تھا۔

(۲۰۱۱) عراق والوں کی ایک جماعت ابن عمر کے یہاں گئی پھر اونلوگوں
 نے دیکھا تو اونکا ایک خادم سونیکا طوق پہنے ہوئے تھا تب بعض اونہیں
 سے بعض کو دیکھنے لگا اسپر ابن عمر نے فرمایا تم لوگ برائی کو کیا ہی
 خوب سمجھتے ہو۔

فضول گوئی

۶۳۲

(۲۰۱۲) ابو ہریرہ نے فرمایا فضول گوئی میں کچھ خبری نہیں۔

(۲۰۱۳) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا میری امت میں گال

پھولا پھولا کر مونہہ پھاڑ پھاڑ کر بہت بک بک کرنے والے لوگ نہایت
برے لوگ ہیں اور میری امت میں بہت اچھے وہ لوگ ہیں جنکی
عادات اچھی ہیں۔

دور خا آدمی

۶۳۳

(۴۰۱۴) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ گون میں
دور خا آدمی بہت بُرا آدمی ہے کہ اس جماعت میں ایک ڈھنگ لاتا ہے
دوسری جماعت میں دوسرا ڈھنگ لاتا ہے۔

دور خا آدمی کی برائی

۶۳۴

(۴۰۱۵) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا دنیا میں جو آدمی دور خا ہوتا ہے
قیامت کے دن آگ کی دوزبانیں اوسکی ہونگی اتنے میں ایک موٹا آدمی
اودھر سے گزرا آپ نے فرمایا یہ اونہیں لوگوں میں ہے۔
جسکے شر سے بچنا چاہیں وہ بہت برا آدمی ہے

۶۳۵

(۴۰۱۶) حضرت عایشہ نے فرمایا ایک شخص نے نبی صلی اللہ علیہ
وآلہ وسلم کے یہاں حاضر ہو نیکی اجازت چاہی آپ نے فرمایا آگرو
یہ شخص اپنے خاندان میں کیا بد آدمی ہے پھر جب وہ اندر آیا آپ نے
اوس سے نرم کلامی کی میں نے عرض کیا یا رسول اللہ آپ نے جو فرمایا
سو تو فرمایا پھر اوس سے نرم کلامی فرمائی فرمایا اسے عایشہ جس آدمی کو لوگ
اوسکی شرارت کے سبب سے چھوڑ دین وہ نہایت بُرا آدمی ہے۔

۶۳۶

جیسا

(۴۰۱۷) عمران بن حصین صحابی نے فرمایا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم
نے فرمایا ہے جیسا پہلائی ہی ہوتی ہے تب بشیر بن کعب نے کہا حکمت
میں لکھا ہے کہ جیسا سے وزن ہوتا ہے جیسا سے سکون ہوتا ہے تب عمران
نے بشیر سے کہا میں تجھے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حدیث

ایمان کرتا ہوں اور تو مجھے اپنے سفینہ کی بات بولتا ہے۔

(۴۰۱۸) ابن عمر نے فرمایا حیا اور ایمان ایک دوسرے کا جوڑ ہے جب دونوں میں کوئی ایک جاٹا تو دوسرا بھی جاتا ہی رہتا ہے۔

۴۳۷

جفا

(۴۰۱۹) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا حیا ایمان کی بات ہے اور ایمان بہشت میں ہے اور بد زبانی جفا کی بات ہے اور جفا دو رخ میں ہے۔

(۴۰۲۰) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا سر مبارک بھاری تھا آنکھیں دونوں بڑی تھیں چلتے تھے تو جھکے چلتے تھے جب اونچے پر چلتے ہوں جب ٹرتے تھے تو سارے بدن سے ٹرتے تھے۔

جب شرکے نہیں تو جو چاہ سو کر

۴۳۸

(۴۰۲۱) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا اگلی نبوت کی باتوں میں یہ بات لوگوں میں پہنچ گئی ہے کہ جب تو شرکے نہیں تو جو چاہ سو کر۔

۴۳۹

غصہ

(۴۰۲۲) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کشتی باز آدمی مضبوط نہیں ہوا کرتا مضبوط وہی ہے جو غصہ کی وقت اپنا اور پر اختیار رکھو۔

(۴۰۲۳) ابن عمر نے فرمایا کوئی شخص خدا کی رضا مندی کے لئے غصہ کی گھونٹ پی جائے اس گھونٹ سے زیادہ ثواب کے قابل خدا کے نزدیک کوئی گھونٹ نہیں ہے۔

۴۴۰

غصہ میں کیا بولے

(۴۰۲۴) نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے روبرو دو شخصوں نے آپس میں گالی گفتم کیا ایک آدمی لگا غصہ کرنے اور دوسرا چہرہ مسخ ہوتے لگا

نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اوسکی طرف نظر کی اور فرمایا مجھے ایک بات معلوم ہے اگر یہ لوگ کہے تو یہ کیفیت جاتی رہے یعنی اعن باللہ من الشیطان الرجیم

۹۷
ایم ایم فاروقی

بس ایک شخص اوسکے پاس اوٹھ کر گیا اور کہا تجھے خبر ہے آپ نے کیا فرمایا
فرمایا ہے کہ کہہ اعدوہ باللہ من الشیطان الرجیم اوس شخص سے کہا کیا تو مجھے
دیوانہ سمجھتا ہے۔

(۴۰۲۵) سلیمان بن مروان نے کہا میں نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے
حضور میں بیٹھا ہوا تھا اور دو آدمی گالی گلوچ کر رہے تھے دونوں میں ایک کا
مٹہ سرخ ہو گیا اور گردن کی رگ پھول گئی نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے
فرمایا میں ایک ایسی بات جانتا ہوں کہ اگر یہ اوستے کہہ لے تو اسکی یہ حالت
جاتی رہے لوگوں نے اوس سے جا کر کہا نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں
اعدوہ باللہ من الشیطان الرجیم کہہ دے اوسنے کہا کیا مجھے جنون ہے
غصہ میں چپ رہو

۴۲۱

(۴۰۲۶) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا سیکھاؤ
اور آسانی کر دیکھاؤ اور آسانی کرو تین بار فرمایا جب غصہ آوے تو چپ چاپ
ہو جاؤ یہ آپ نے دو بار فرمایا۔

۴۲۲

سنبھل کر دوستی کرے۔

(۴۰۲۷) حضرت علی رضی اللہ عنہ ابن الکوا سے فرماتے تھے تجھے خبر ہے
انگلوں نے کیا کہا ہے دوست سے سنبھل کر دوستی کر شاید
سیدن تیرا دشمن ہو جائے اور دشمن سے سنبھل کر دشمنی کر
شاید سیدن تیرا دوست ہو جائے۔

۴۲۳

دشمنی تباہی کا سبب نہو

(۴۰۲۸) حضرت عمر نے فرمایا تیری دوستی تکلیف کا موجب نہو اور تیری
دشمنی تباہی کا سبب نہو۔ اسلم راوی کہتا ہے میں نے کہا یہ کیونکر فرمایا
یہ اس طرح کہ جب دوستی کرے تو لڑکونکی طرح تکلیف دیا کرے اور جب

کو ایسا سمجھتا ہے
کہ دشمنی میں تباہی
ہو جاتی ہے اور
دوستی میں سنبھل
کرنا چاہیے اور
دشمنی سے بچنا
چاہیے اور
دوستی سے
بچنا نہیں چاہیے

کسی سے نامنی کرے تو اسکی تباہی کا خواہان ہو ایسا ہونا نہیں چاہئے۔

خاتمہ کتاب

لکھنؤ احمد ہر آن چیز کہ خاطر میخواست
آخر آمد ز پس پردہ تقدیر پدید

الکھ لکھ کہ ۱۰ اصفہان ۱۳۰۰ ہجری کو درمیان ظہر اور عصر کے ترجمہ ادب المفرد کا
تمام ہوا بعد اسکے کہ بندہ عاجز محمد عبد الغفار اسکے تمام ہونے سونا امید
ہو چکا تھا سو جہ سے کہ اس ترجمہ کے شریع کر نیکے تھوڑے ہی عرصہ بعد
انواع ترددات میں مبتلا ہو گیا اللہ تعالیٰ جناب احی مولوی ابو محمد براہم
صاحب آدی کو جزا سے خیر دے اور اونکے اعمال حسنین برکت عطا کرے
اور اپنے فضل سے قبول فرماوے اور اونکی گناہوں سے درگزرے کہ انکی
تحریکات بیہم نے اس عاجز کے ارادے اور ہمت کو متزلزل ہونے ندیا اور
ماالنفق تھوڑا تھوڑا لکھتے لکھتے آخر انجام کو پہنچا اللہ تعالیٰ اپنے فضل و کرم سے
اس ترجمہ کو قبول فرماوے اور اسکو خاص بوجہ الکریم ہونیکے عزت بخشے اور جو کچھ
شائبہ نفس کا اسمین شریک ہوا ہوا اسکو مٹاوے اور میرے لئے اسکو
ذخیرہ آخرت فرماوے اور مجھے اور میرے مان باپ اور میرے استاذہ فاضلہ
سیدنا مولانا سید محمد نذیر حسین صاحب کو اسکی جزا سے خیر سے پورا
حصہ عطا کرے اور جن بزرگوں نے اسپر نظر ثانی کی بھی تصحیح فرمائی ہو لکھا ہے
چھاپا ہے سبکو بخشدے اور اس کتاب سے روز قیامت میں مجھ حجت قائم فرماوے
بلکہ مجھ اسپر عمل کی توفیق دے کہ قیامت کے دن یہ کتاب خدا کے سامنے
میری حجت ہو اور اپنے ہندو نکو اسکے دیکھنے اور اسپر عمل کرنیکے توفیق دے۔

آمین باری العالمین

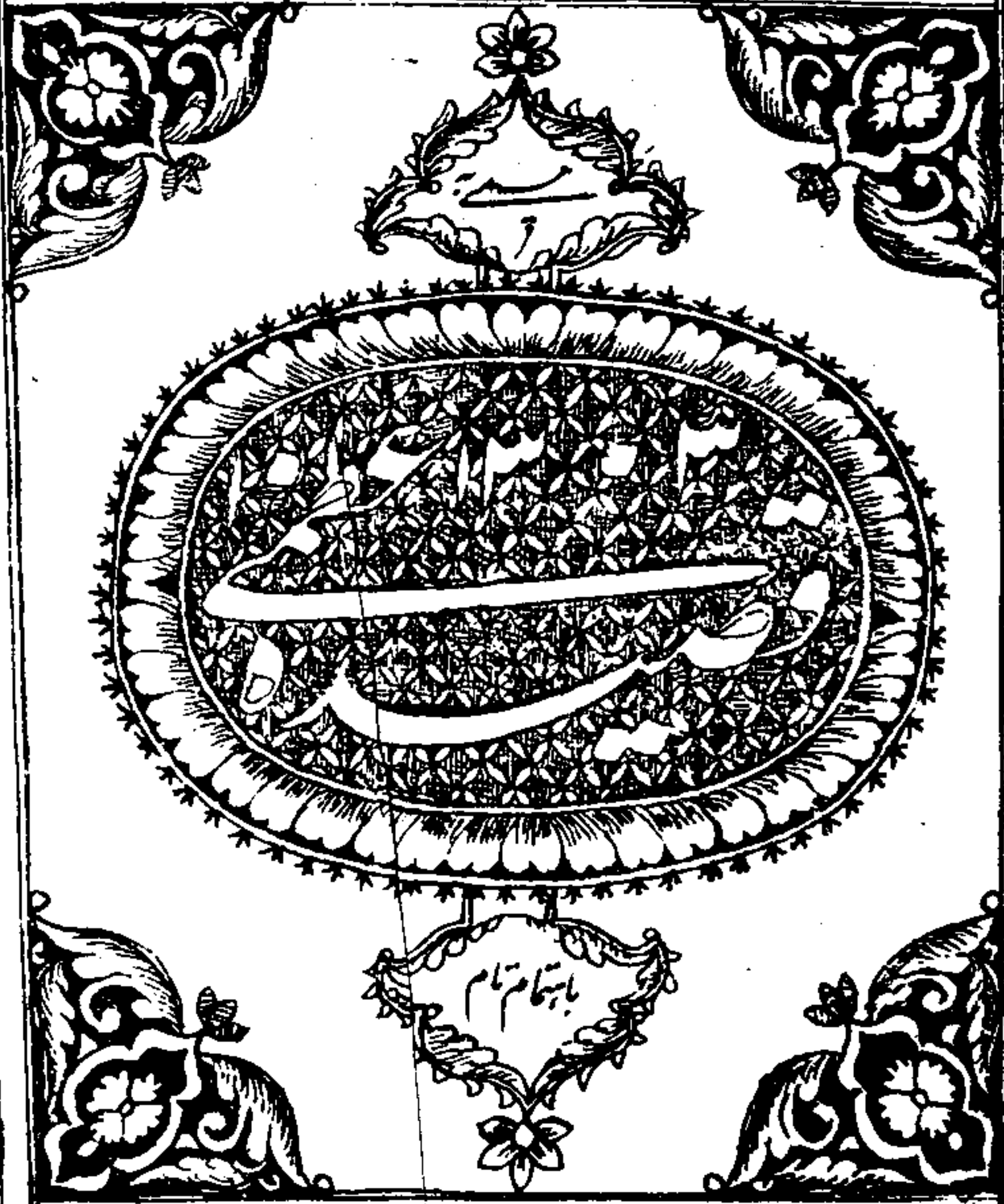
ہا کریمان کار باوشوارست





اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرًا لِّوَالِيْ بَصِيْرًا

الحمد لله والثناء له رساله مؤلفه قاضى اعظم علامه مير مولانا امين ادم مرحوم مؤلفه - امين -



قاضى اعظم اهل عالم بنى بديل مولانا مولوى تملطف حسين سلمه الله تعالى فى الدارين

دَمَّعَ اَنْصَارًا وَقَعَ فِى بَيْتِكَ دَلَامًا